साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

"Sahitya Akademi Dwara Anudit Hindi Balkathaon Ka Manovaigyanik Adhyayan"

Thesis Submitted for the Award of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

HINDI

By

POONAM
Reg.No.41801034

Supervised By
Dr. Vinod Kumar

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, PUNJAB

2023

DECLARATION

I, hereby declared that the presented work in the thesis entitled "**Sahitya Akademi Dwara Anudit Hindi Balkathaon Ka Manovaigyanik Adhyayan**" in fulfillment of degree of **Doctor of Philosophy (Ph.D.)** is outcome of research work carried out by me under the supervision **Dr. Vinod Kumar**, working as **Associate Professor**, in the **School of Social Sciences and Languages**_of Lovely Professional University, Punjab, India. In keeping with general practice of reporting scientific observations, due acknowledgments have been made whenever work described here has been based on findings of other investigator. This work has not been submitted in part or full to any other University or Institute for the award of any degree.

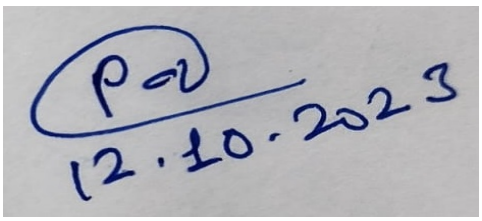

(Signature of Scholar)

Name of the scholar: Poonam

Registration No.: 41801034

Department/school: School of Social Sciences and Languages_

Lovely Professional University,

Punjab, India

CERTIFICATE

This is to certify that the work reported in the Ph.D. thesis entitled "**Sahitya Akademi Dwara Anudit Hindi Balkathaon Ka Manovaigyanik Adhyayan**" submitted in fulfillment of the requirement for the reward of degree of **Doctor of Philosophy (Ph.D.)** in the : School of Social Sciences and Languages is a research work carried out by Poonam, Registration no. 41801034, is bonafide record of his/her original work carried out under my supervision and that no part of thesis has been submitted for any other degree, diploma or equivalent course.

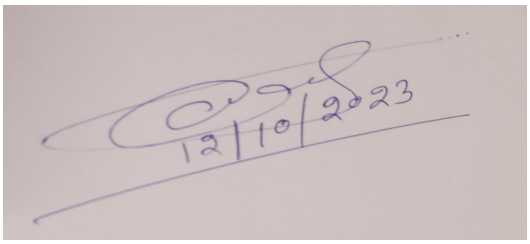

(Signature of Supervisor)

Name of supervisor: Dr. Vinod Kumar

Designation: Associate Professor

Department/school: School of social sciences and languages

University: Lovely Professional university

प्राक्कथन

एक सुविकसित समाज की प्राप्ति हेतु उस तटस्थ एवं निरपेक्ष भाव वाले बालक के मनोविज्ञान का उचित अध्ययन करके, उसका सही निर्देशन व मार्गदर्शन करके, उसकी सोच को, उसकी रुचि को, उसकी क्षमताओं को उत्तम दिशा प्रदान की जाए तो वह एक प्रखर व्यक्तित्व का धनी तथा न सिर्फ स्वयं बल्कि समाज का सर्वागीण विकास करने वाला सफल इन्सान बन सकता है। वर्तमान समय में बच्चों के सर्वागीण विकास में बाल साहित्य का विशेष महत्व है।

मनोविज्ञान अर्थात मन का विज्ञान। भारतीय विद्वानों ने मनोविज्ञान को दर्शन की ही शाखा मानते हुए कहा कि मानव मन का अध्ययन प्राचीन काल से ही किया जा रहा है, जिसका उल्लेख हम वेदों, उपनिषदों व दर्शन शास्त्रों में देख सकते हैं। उनका मानना है कि मनोविज्ञान के अंतर्गत मानव मन का, उनके व्यवहार के साथ-साथ मन की प्रकृति एवं क्रियाकलापों का, मन की विभिन्न अवस्थाओं का तथा उस पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। तत्पश्चात पाश्चात्य विद्वानों में M c. Dougal ने मनोविज्ञान को दो शब्दों आत्मा और विज्ञान का योग बताते हुए इच्छाओं का विज्ञान एवं व्यवहार का विज्ञान कहा है। अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने इसे शुद्ध पश्चिमी पद्धति बताते हुए इसे मानसिक क्रियाओं, शारीरिक व्यवहार तथा उनका निरीक्षण, प्रतिक्रियाओं का अध्ययन, मानसिक जीवन की घटनाओं का अध्ययन मानते हुए इसे व्यवहार का विज्ञान माना है।

प्रथम अध्याय- बाल मनोविज्ञान को परिभाषित करने से पहले मनोविज्ञान के विकास क्रम को जानना बहुत आवश्यक है। इसलिए इस अध्याय में सर्वप्रथम विभिन्न मनोवैज्ञानिकों जैसे फ्रायड, युंग आदि के सिद्धांतों के अध्ययन के अलावा अनेक सिद्धांतकारों के माध्यम से मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में मनोविज्ञान एवं बालमनोविज्ञान के सिद्धांत के पक्ष को समझने का प्रयास, इसके अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप का विस्तृत वर्णन करके किया गया है। तत्पश्चात मनोविज्ञान के भेदों को स्पष्ट किया गया है। साथ ही बाल मनोविज्ञान के विकास के सोपनों पर भी विस्तृत चर्चा की गई है। जिसमें यह जानने का प्रयास किया गया है कि बाल मनोविज्ञान को कौन-कौन से कारक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। जिसमें वंशानुक्रम, परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, वैज्ञानिक, नैतिक और काल्पनिक संदर्भों आदि अनेक कारकों के सैद्धांतिक पक्ष का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस

अध्याय में आगे बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर भी विचार किया गया है। इस अध्याय में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, आलोचनात्मक एवं समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

द्वितीय अध्याय- द्वितीय अध्याय में हिंदी बाल कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन के माध्यम से इसके विभिन्न पक्षों पर विस्तृत विमर्श किया गया है जिनमें वंशानुक्रम, परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संदर्भों का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है। जिसमें वहाँ के वातावरण का, वहाँ के रीति-रिवाजों का, त्योहारों का, समाज में व्याप्त बुराइयों का, किसी भी प्राणी के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया गया। हिन्दी बाल कहानियों में मुंशी प्रेमचंद की कहानी कजाकी, ईदगाह, गुल्ली डंडा, बड़े भाई साहब, रामलीला, अमनदीप कौर की कहानी परवरिश, मन्नू भंडारी की कहानी सजा, विष्णु प्रभाकर की कहानी धरती अब भी घूम रही है, रहमान का बेटा, जयशंकर प्रसाद की कहानी छोटा जादूगर, जैनेंद्र कुमार जैन की कहानी अपना अपना भाग्य, संजीव की कहानी आरोहण आदि कहानियों में साफ-साफ दर्शाया गया है कि बालक का लालन-पालन जिस तरह के परिवेश में होता है, उसका सीधा प्रभाव उसके मनोविज्ञान पर परिलक्षित होता है। मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी गुल्ली डंडा में व्याप्त अमीर गरीब का अंतर, ईदगाह में अपनी दादी के लिए त्याग, बड़े भाई साहब में छोटे भाई का बड़े भाई के प्रति सम्मान, धरती अब भी घूम रही है में भ्रष्टाचार का, छोटा जादूगर कहानी में छोटा जादूगर की जिम्मेदारी को दर्शाया गया है, जिनसे स्पष्ट हो रहा है कि सामाजिक संदर्भ बच्चे के मनोविज्ञान को प्रभावित करते हैं। इसी तरह से मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी रामलीला में व्याप्त बुराइयों, ईदगाह में ईद का त्योहार, मुस्लिम संस्कृति, विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित कहानी रहमान का बेटा में हिंदू मुस्लिम संस्कृति का मिलाजुला रूप, वही जैनेंद्र कुमार द्वारा रचित कहानी अपना-अपना भाग्य में पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं और इन कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भों का बालक के मनोविज्ञान पर गहरा प्रभाव होता है। संजीव द्वारा रचित आरोहण कहानी का एवं जैनेंद्र कुमार कुमार जैन द्वारा रचित अपना अपना भाग्य कहानी में पर्वतीय इलाके का बालक के मन पर पड़े प्रभाव को दर्शाया गया है। इस अध्याय में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, आलोचनात्मक एवं समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

तृतीय अध्याय- तीसरे अध्याय में विभिन्न भाषाओं से हिन्दी भाषा में अनुदित बाल कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। जिसके अंतर्गत वंशानुक्रम संदर्भ के अध्ययन के माध्यम से यह

जानने का प्रयास किया गया है कि बालक के मनोविज्ञान को वंशानुक्रम किस तरह से प्रभावित करता है। परिवेशगत संदर्भ में परिवार एवं स्कूल का बच्चों के मनोविज्ञान पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है, साथ ही सामाजिक संदर्भ में स्वार्थ का चित्रण, संघर्ष की भावना एवं सहयोग, प्रेम भाव का चित्रण, भूख व गरीबी का चित्रण, पारिवारिक विघटन का चित्रण एवं बेरोजगारी कारकों का अध्ययन अनूदित बाल कथाओं के माध्यम से किया गया है। सांस्कृतिक संदर्भ के अंतर्गत विभिन्न पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज, मेले, किस्सागोसाई एवं लोक कथाओं का अध्ययन इन कथाओं में किया गया है। इसके साथ ही भौगोलिक संदर्भ के अंतर्गत पहाड़ी व मैदानी इलाकों का प्रभाव, विभिन्न क्षेत्रों की जलवायु, वहाँ के अलग-अलग व्यवसाय, पेड़ पौधों, वहाँ का रहन-सहन आदि का बालक के मनोविज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन इस अध्याय के अंतर्गत किया गया है और इससे परिलक्षित हुआ कि इन बाल कथाओं में प्रयोग किए गए परिवेशगत संदर्भ, सामाजिक संदर्भ, सांस्कृतिक संदर्भ एवं भौगोलिक संदर्भों का बालक के मनोविज्ञान पर गहन प्रभाव पड़ा हैं। इस अध्याय में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- चतुर्थ अध्याय में हिंदी बाल कथाओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन में ऐतिहासिक संदर्भ एवं पौराणिक संदर्भ का अध्ययन किया गया है। इन अनुदित कथाओं में इतिहास के बारे में तो ज्यादा कहानियाँ नहीं दी गई, लेकिन राजा महाराजाओं की कहानियाँ काफी मात्रा में दी गई है जिनके माध्यम से बच्चों को राजा महाराजाओं, उनकी शासन व्यवस्था, रहन-सहन, उनकी वीरता, साहस, त्याग, अनुशासन, कर्तव्य परायणता, जिम्मेदारी, भाईचारा की जानकारी दी जा सकती है। इन अनुदित हिन्दी कथाओं में पौराणिक कथाओं में धार्मिक कथाओं को संकलित किया गया है, जिसमें प्रेम, सम्मान, वीरता, साहस, अपनत्व, भाईचारा को दर्शाया गया है। जिसका अध्ययन करने के बाद बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ प्रकृति के रहस्य व विकास के बारे में भी दृष्टिकोण विकसित होगा। इनका अध्ययन दो भागों में विभाजित करके किया गया है कथा विश्लेषण एवं कथ्य विश्लेषण। कथा विश्लेषण जिसमें कथा का विश्लेषण किया गया, वहीं कथ्य विश्लेषण के माध्यम से इन कहानियों के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

पंचम अध्याय- वर्तमान युग में विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्वक प्रगति हुई है। एक तरफ जहाँ समाज में वैज्ञानिक सोच व तरीके से समस्याओं के समाधान के प्रयास बढ़े हैं, वहीं दूसरी तरफ इसके दुष्प्रभाव भी बढ़े हैं। इसका प्रकृति पर, समाज पर बालक पर क्या-क्या प्रभाव हो रहे हैं, इन सब का अध्ययन बाल अनूदित कहानियों के माध्यम से किया गया है। बच्चों को काल्पनिक कहानियाँ अर्थात् परियों की, पशु पक्षियों की, जादू की कहानियाँ बहुत प्रभावित करती है इसी तरह की कहानियों का अध्ययन इस अध्याय में काल्पनिक संदर्भ के अंतर्गत किया गया है। एक बेहतर नागरिक बनने के लिए बच्चों में नैतिकता के गुण होने अति आवश्यक है इन्हीं गुणों का अध्ययन नैतिक संदर्भ के अंतर्गत किया गया है और बच्चों के मनोविज्ञान पर इसका पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

षष्ठम अध्याय- अनुदित बाल कथाओं की भाषा शैली अत्यंत ही सरल, सहज एवं सारगर्भित रही है। ये कथाएँ अनुवाद के उपरांत भी अपने मूल भाषा के सार को अपने आप में संजोए हुए हैं तथा अनुदित भाषा में भी पाठक को न सिर्फ प्रभावित किया है बल्कि उसे पूर्णतया आत्मसात करवाने में सक्षम है। अनुदित बाल कथाओं में भाषा शैली को पाठक के अनुकूल एवं विशिष्ट बनाने के लिए अलग-अलग स्थानों पर सरल एवं सहज वाक्यों का, ध्वन्यात्मकता का, युग्म शब्दों का, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू के शब्दों का, सुविचारों का ग्राम्यता को दर्शाने वाली ग्राम्य शब्दों का, वैज्ञानिक शब्दावली का, मुहावरे और लोकोक्तियाँ का, कविता की लाइनों के साथ-साथ मूल भाषा को इंगित करने वाले शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। बालकों की रुचि व मनोविज्ञान को मध्य नजर रखते हुए इन कथाओं में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है। इन कथाओं को बच्चों के लिए रुचि पूर्ण व मनोरंजक बनाने के लिए इन कहानियों में शब्दों के चित्र प्रस्तुत करते हुए चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। बच्चों को कविताएँ बहुत पसंद है। इन अनुदित कथाओं में अनेक कहानियों में कविताओं का प्रयोग किया गया है। जिसके कारण यह बच्चों के लिए बहुत ही आकर्षक व रुचि पूर्ण बन गई है। जहाँ एक तरफ किस्सा गोसाई व बाल कथा का प्रयोग करके बालकों को नैतिकता का पाठ पढ़ाया गया है, वही संवादात्मक व खंडों में विभक्त शैली का प्रयोग करके इन्हें सरल व सहज एवं बच्चों के अनुकूल भी बनाया गया है। ये कथाएँ सरल, सहज, रुचिपूर्ण तथा मनोविज्ञान के अनुकूल होने के साथ-साथ उपदेशात्मक भी हैं। अत: इस अध्याय में कलात्मक सदर्भ के भाषा व शैली पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

सप्तम अध्याय- सातवें अध्याय में अनुदित हिंदी बाल कथाओं में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का व्यावहारिक अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम इन कहानियों में समाहित मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन किया गया, तत्पश्चात सर्वेक्षण के माध्यम से बालकों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का एवं उनके निवारण का पता लगाया गया। जिसके अंतर्गत एक प्रश्नोत्तरी माता-पिता के लिए थी, वहीं दूसरी प्रश्नोत्तरी बालकों के लिए थी। इसमें अहम् की समस्या, प्रतिबल की समस्या, समायोजन की समस्या, कुंठा की समस्या, अंतर्द्वंद की समस्या, चोरी की समस्या, पिछड़ेपन की समस्या, झूठ बोलने की समस्या, हीन भावना की समस्या आदि प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्याएँ थीं, जिनका विश्लेषण सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया। इन समस्याओं का व्यवहारिक अध्ययन करने के लिए अभिभावकों और बच्चों से प्रश्नोत्तरी के माध्यम से इन समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव माँगे गए। जिसमें अधिकतर बालकों ने यह सुझाव दिया कि वे इन समस्याओं को अपने अभिभावकों से साझा करेंगे और इनके समाधान के लिए उनसे उचित परामर्श लेंगे। अभिभावकों ने भी यही सुझाव दिया कि वे अपने बच्चों की इन समस्याओं के कारणों का पता लगाकर इनका समाधान करने की कोशिश करेंगे और बच्चे को इन समस्याओं को दूर करने के लिए इस योग्य बनाएँगे कि वे भी इन समस्याओं का उचित समाधान ढूंढ कर इन्हें दूर कर सकें। इस अध्याय में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, समाजशास्त्रीय एवं सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

धन्यवाद ज्ञापन

शोध प्रबंध प्रस्तुत करना मेरे शैक्षिक जीवन की एक विशेष अभिलाषा थी, जिसे आज मैं पूर्ण कर प्रस्तुत करने में सक्षम हुई हूँ। इसके लिए सर्वप्रथम मैं मेरी जननी मेरी माँ श्रीमती सुमित्रा देवी एवं मेरे पिताजी श्री राम अवतार यादव को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे यह स्वप्न दिखाया और मैं इस शोध के लिए प्रेरित हो सकी।

प्रस्तुत शोध प्रबंध श्रद्धेय डॉ. विनोद कुमार जी एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय जालंधर के सुयोग्य एवं आत्मीय पूर्ण निर्देशन में संपन्न हुआ है। इस कार्य के प्रारंभ से लेकर अंत तक उन्होंने इस शोध साहित्य के विषय से जुड़ी मेरी समस्याओं का निराकरण किया है। मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं आदरणीय डॉ. सुनील कुमार एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभाग अध्यक्ष हिंदी गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर की हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होंने इस शोध कार्य के लिए मुझे समय दिया और शोध के विषय से संबंधित मुझे अमूल्य सुझाव भी दिए और मेरा कुशल मार्गदर्शन भी किया। मैं यह शोध प्रबंध अपने माता-पिता एवं सास-ससुर को समर्पित करती हूँ जिन्होंने मुझे इस शोध कार्य को पूरा करने का अवसर दिया और मेरी आर्थिक जरूरतों की पूर्ति करते रहे।

मैं मेरे पति परमेश्वर श्री राजकुमार यादव जी के प्रति भी अत्यंत कृतज्ञ हूँ, जिनके हिंदी साहित्य के विस्तृत शब्दकोश से मैं यह शोध प्रबंध पूरा करने में सक्षम रही। उन्होंने प्रस्तुत शोध कार्य के लिए हर पल मेरा साथ एक सहपाठी, एक कुशल शिक्षक एवं एक कुशल मार्गदर्शक के रूप में दिया। मैं अगर आज यह शोध प्रबंध प्रस्तुत करने जा रही हूँ तो इसका श्रेय उनका सहयोग भी है।

मैं मेरी बेटी मेघा गुनिवाल और मेरे बेटे तपस्वी गुनिवाल के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरे संपूर्ण शोध कार्य के दौरान तकनीकी आवश्यकताओं में विशेष मदद की।

मैं आभार प्रदर्शन के इस अवसर पर मेरे परिवार के अन्य सदस्यों को कैसे विस्मृत कर सकती हूँ जिनके स्नेह एवं आशीर्वाद से मैं इस मंजिल तक पहुँची हूँ। मातृतुल्य भाभी श्रीमती सुमन, दीदी श्रीमती सीमा, बड़े

भैया श्री सत्येंद्र यादव जी की मैं बहुत बहुत आभारी हूँ, उनका ये स्नेह एवं आशीर्वाद मुझ पर सदैव बना रहे। प्रिय मोनू व रीना भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस कार्य में मुझे बहुत सहयोग दिया।

मैं अपने विद्यालय डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर जहाँ पर मैं अध्यापक पद पर कार्यरत हूँ की प्रधानाचार्या एवं अन्य शिक्षकगणों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय समय पर मेरे इस शोध कार्य में पूरा सहयोग दिया।

अंत में मैं उन सभी विद्वानों एवं स्नेहजनों की आभारी हूँ, जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग इस कार्य में मुझे प्राप्त हुआ है।

विषयानुक्रमणिका

1 प्रस्तावना

2 समस्या कथन

3 समस्या औचित्य

4 शोष कार्य के उद्देश्य

5 शोध प्रविधि

6 शोध कार्य में चुनौतियाँ

7 परिकल्पना

8 परिसीमांकन

9 पूर्व सम्बन्ध साहित्यावलोकन

10 शोध अन्तराल

1 प्रस्तावना

मनोविज्ञान की विभिन्न परिभाषाओं व अर्थ का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि मनोविज्ञान का अध्ययन प्राचीन काल से ही किया जा रहा था, लेकिन प्राचीन काल में इसे दर्शनशास्त्र की शाखा के रूप में जाना जाता था। 16वीं शताब्दी में इसे आत्मा का, 17वीं शताब्दी में मन का, 19वीं शताब्दी में चेतना का विज्ञान एवं 20वीं शताब्दी में व्यवहार का विज्ञान कहा गया। फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषण में काम प्रवृत्ति को महत्वपूर्ण माना है। विभिन्न विचारकों के सिद्धांतों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि मनोविज्ञान के अंतर्गत मन का, आत्मा का, चेतना का, व्यवहार का, व्यवहार की क्रियाओं का, मन की अवस्थाओं का मन पर पड़ने वाले प्रभाव का, मानसिक जीवन की घटनाओं का अध्ययन किया जाता है अर्थात् इसके अंतर्गत किसी भी प्राणी के सर्वांगीण विकास का अध्ययन किया जाता है।

2 समस्या कथन

साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

साहित्य पर अनेक भाषाओं में रचित रचनाओं को हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा हिन्दी भाषा में अनुवाद किया गया है । इन अनुदित पुस्तकों में बाल मनोविज्ञान एक महत्वपूर्ण घटक रहा है। बाल मनोविज्ञान का सिर्फ एक ही पहलू या औचित्य नहीं होता है, यह एक बालक के सर्वांगीण विकास से संबंधित है। किसी भी बालक के विकास में बाल मनोविज्ञान का क्या महत्व है इसको जानने का प्रयास इस शोध में करेंगे। इसमें बहुत से अलग-अलग बाल पात्रों के व्यवहार, और उनके द्वारा किए गए निर्णय से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि किस तरह से बाल मनोविज्ञान एक बालक को उसके जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण देता है और उस दृष्टिकोण के द्वारा वह किस तरह से समाज में अपना योगदान देता है। इसी के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि किसी बालक की परिस्थितियों को इस तरह से परिवर्तन करके क्या उसके व्यवहार में अनुवांशिक परिवर्तन ला सकते हैं इसी विषय से सम्बन्धित यह शोध किया जाएगा।

3 समस्या औचित्य

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इस प्रकृति में यदि कुछ स्थाई है तो वह है परिवर्तन। 21वीं सदी भी परिवर्तनों से अछूती नहीं रही और ये आधुनिक परिवर्तनों से परिपूर्ण सदी रही है। बाल साहित्य के संदर्भ में शोधार्थियों ने आज तक हुए परिवर्तनों को अपने शोध के माध्यम से उजागर करने का भरसक प्रयास किया है, तथा बाल साहित्य में कविता, कहानी एवं उपन्यास में बाल मनोविज्ञान से संबंधित अनेक गुणकारी शोध हुए हैं। भारत एक बहुभाषी देश है यहाँ पर अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। साहित्य अकादमी द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं में रचित साहित्य का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया है। इस शोध के माध्यम से साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य एवं क्षेत्रीय भाषाओं से अनुदित बालकथाओं में बाल मनोविज्ञान का अध्ययन करना ही इस शोध का औचित्य है।

4 शोध उद्देश्य

"साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन" नामक विषय पर प्रस्तावित शोध प्रबंध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं

1 बाल मनोविज्ञान के विकास क्रम को रेखांकित करना ।

2 बाल मनोवैज्ञानिक विकास को बढावा देने वाले कारकों की समीक्षा करना ।

3 हिन्दी बालकथाओं में मनोविज्ञान के बिन्दुओं की तलाश करना।

4 अनुदित बालकथाओं के संदर्भ में बाल मनोवैज्ञानिक विकास का अध्ययन करना ।

5 अनुदित बालकथाओं में विषय एवं अभिव्यंजना पक्ष की विवेचना करना।

6 अनुदित बालकथाओं में निहित समस्याओं का सर्वेक्षण तथा सांकेतिक समाधान का मूल्यांकन करना ।

5 शोध प्रविधियाँ

अनुसंधानकर्ता को अपना अनुसंधान कार्य पूर्ण करने के लिए विभिन्न विधियों एवं प्रविधियों की आवश्यकता होती है ताकि अपने शोध प्रबंध को एक सही दिशा प्रदान कर सके। शोध कार्य की सफलता, सार्थकता एवं गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि शोधार्थी ने इसके लिए उपयुक्त शोध प्रविधि का उपयोग किया है अथवा नहीं। क्योंकि यदि शोध कार्य अथवा समस्या समाधान के लिए उपयुक्त शोध प्रविधि का उपयोग नहीं हो तो परिणामों की प्राप्ति की संभावना कम हो सकती है और विश्वसनीयता मे भी कमी रहती है इसलिए प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भी संभावित शोध प्रविधियों की पहचान की गई है। हम न तो किसी एक विधि से सभी कार्य कर सकते हैं और न ही किसी एक कार्य में सभी विधियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध प्रस्ताव में निम्नलिखित शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा -

ऐतिहासिक प्रविधि- समाज एक गतिशील व्यवस्था है इसमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं ऐसी स्थिति में समाज की संरचना और प्रकार्यों को ठीक से समझने के लिए इसमें हो रहे परिवर्तनों को समझना भी आवश्यक है। ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं को आधार बनाकर आधुनिक चीजों को समझना सहज हो जाता है इसलिए ऐतिहासिक प्रविधि बहुत महत्वपूर्ण है।

आलोचनात्मक प्रविधि- आलोचना शब्द अंग्रेजी के 'क्रिटिसिजम' शब्द से बना हुआ है। आलोचना शब्द का शाब्दिक अर्थ निंदा ग्रहण किया जाता है लेकिन आलोचना शब्द का अर्थ इतना संकुचित नहीं होता बल्कि रचना के गुण व दोषों दोनों की जाँच की जाती है। आलोचना प्रविधि के कारण ही शोध अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर सका है। प्रस्तुत शोध साहित्य अकादमी द्वारा हिन्दी में अनुदित बाल कथाओं पर आधारित है। इस प्रविधि के माध्यम से बाल कथाओं में विद्यमान मनोवैज्ञानिक विकास का अध्ययन किया जाएगा।

मनोवैज्ञानिक प्रविधि- शोध प्रबंध के नाम से ही ज्ञात हो रहा है कि इसमें बालकथाओं में बाल मनोविज्ञान का अध्ययन करना है। मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा जाता है। मनोविज्ञान प्रविधि के अंतर्गत लेखक की मनोस्थिति और उसकी मनोस्थिति के आधार पर कृति के पात्रों की मनोस्थिति का अध्ययन किया जाता है। मनोवैज्ञानिक विधि भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। विभिन्न पात्रों की मनोस्थिति का वर्णन किया गया है इसलिए इस प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

<u>समाजशास्त्रीय प्रविधि</u>- हिन्दी का 'समाजशास्त्र' शब्द अंग्रेजी के 'सोशलॉजी' का हिन्दी रूपांतरण है। सोशलॉजी शब्द की उत्पत्ति लेटिन के सोशियस और ग्रीक के शब्द लागस शब्दों से मिलकर हुई है जिनका अर्थ है- समाज और अध्ययन। समाजशास्त्रीय पद्धति के अधीन सामाज की सभी इकाइयों का अध्ययन किया जाता है ,जैसे- परिवार, समाज के लोगों का रहन- सहन एक दूसरे के प्रति उनका व्यवहार आदि यह सब सामाजिक इकाइयों के अधीन आता है, इसलिए कहा जा सकता है कि साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन बहुत जरूरी है। साहित्य में व्यक्ति, परिवार ,समुदाय आदि का वर्णन किया जाता है। हमारे जीवन में कोई भी घटना होती है तो उस घटना का हमारे समाज के साथ संबंध अवश्य होता है, क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में बालकथाओं में बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया है। बालक जो कि समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बालकथाओं में बाल मनोविज्ञान का अध्ययन समाज के बिना असंभव है। अतः समाजशास्त्रीय विधि का प्रयोग किया जाएगा।

<u>तुलनात्मक प्रविधि</u>- इस प्रविधि में कृतियों अथवा प्रवृत्तियों का सम और विषम तत्वों की दृष्टि से अध्ययन किया जाएगा किसी भी विधा में रचनाकर किन परिस्थितियों में किस प्रकार की रचना करते हैं, उन कार्यों का भी अध्ययन करते हुए शोधकर्ता अपने निष्कर्षों को तुलनात्मक विवेचन द्वारा प्रतिपादन करने का प्रयास करेगा ।

<u>सर्वेक्षण प्रविधि</u>- सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत तथ्य की वर्तमान स्थिति का अध्ययन प्रश्नोतरी तथा साक्षात्कार के माध्यम से किया जाता है, जिसमे वर्तमान में उस तथ्य के स्वरूप को ज्ञात किया जाता है। प्रश्नोतरी से लाभ यह होता है कि कम से कम आर्थिक व्यय पर थोड़ा सा प्रयास करने पर इस विधि के माध्यम से शोधार्थी द्वारा अधिक से अधिक सूचनाएँ एकत्र की जा सकती है। इसके अलावा बुद्धिजीवी व्यक्तियों या व्यक्ति समूहों से सम्पर्क कर उनकी सोच एवं अनुभवों से सम्बन्धित आंकड़ों को एकत्र किया जाता है, जो कि शोधार्थी के लिए महत्त्वपूर्ण होता है अत: प्रस्तुत शोध के लिए यह उपयुक्त विधि है ।

6 शोध कार्य में चुनौतियाँ

हर एक शोध कार्य की एक सीमा होती है। उन्ही सीमाओं में रहते हुए अपने शोध को सही दिशा व सही समय में परिपूर्ण करना होता है। अपने शोध कार्य को सही दिशा और सही समय में लक्ष्य तक पहुँचाना एक सबसे बड़ी चुनौती है। बहुत से शोधकर्ताओं व विद्वानों ने इस विषय से संबंधित कार्य किया है। उन सब तक पहुँचना व अब तक उपलब्ध शोध कार्य से भिन्न व समाज के लिए सहायक शोध लिखना एक विशाल चुनौती है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से अनुदित बालकथाओं में बाल मनोविज्ञान का विश्लेषण करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है।

7 परिकल्पना

परिकल्पना जैसा कि नाम से परिलक्षित हो रहा है किसी भी कार्य का पूर्वानुमान लगाना। प्रस्तावित शोध साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य व क्षेत्रीय भाषाओं से अनुदित बाल कथाओं पर आधारित है। इससे संबंधित परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं-

- विभिन्न साहित्य ग्रंथों का अवलोकन व अध्ययन करके पाया कि बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किये बिना बाल साहित्य की रचना करना असंभव है।
- साहित्य अकादेमी द्वारा अनुदित पुस्तकों के माध्यम से बालमनोविज्ञान का विस्तृत अध्ययन के द्वारा इसको बढावा देने वाले कारकों का पता लगाया गया।
- अनुदित बालकथाओं के संदर्भ में बालमनोविज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएँ है जिनका समाधान करना आवश्यक है।
- साहित्य अकादेमी द्वारा अनुदित पुस्तकों के माध्यम से बालमनोविज्ञान का विवेचन कर, उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया ।
- प्रस्तुत अनुदित बाल साहित्य में भाषा बालको के स्तर के अनुरूप सरल ,विषय बच्चों के अनुकूल मनोरंजक , रोचक ,उत्साहवर्धक ,प्रेरणादायक है और यह सब बालको के मनोविज्ञान के अध्ययन से ही संभव है ।

8 परिसीमांकन

किसी भी कार्य को सीमित क्षेत्र, दिशा व सीमा निर्धारण में पूरा करना एक सुव्यवस्थित शोध के लिए आवश्यक है। हिन्दी बाल साहित्य में अनेक विधाओं जैसे- कहानी, नाटक, उपन्यास, काव्य, आदि में विभिन्न प्रवृत्तियों पर शोधकर्ताओं ने शोध प्रस्तुत किए हैं। अनेक शोधार्थियों ने मनोविज्ञान से संबंधित विषय पर भी शोध लिखे हैं। बाल साहित्य से भी संबंधित अनुसंधान का कार्य हो चुका है लेकिन प्रस्तावित शोध में 2000 से 2020 तक साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य व क्षेत्रीय भाषाओं से अनुदित बालकथाओं का चयन किया गया है ताकि शोध कार्य चयनित समय -सीमा में संपूर्ण किया जा सके।

9 विषय से सम्बन्धित शोध कार्य

हिन्दी बाल काव्य में मूल्य चेतना
जीवाजी विश्वविद्यालय, दतिया (म. प्र.)
शोधार्थी- सरिता
2018

शोधार्थी ने इस शोध में बाल साहित्य में बाल कविता की शुरुआत, विभिन्न कवियों का वर्णन, विभिन्न भाषाओं में रचित बाल कविता का वर्णन करते हुए, सूरदास व तुलसीदास जैसे महाकवियों के प्रेरणादायक बाल काव्य का वर्णन किया है। बाल व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक मूल भाव- उदारता, दया, करुणा, परहित, नीति मूल्य आदि के विकास को दर्शाया है । इन्होंने बाल काव्य में भाषा शैली में विभिन्न अलंकारों(प्रमुख रूप से उपमा अलंकार का प्रयोग) छंद, कोमल व सरल भाषा वीभत्स रस का प्रयोग बताया। बाल काव्य के विकास में मूल रूप से मूल्यों जैसे- विनम्रता, जिज्ञासा ,आदर भाव, निर्भिकता, सृजनशीलता आदि का विस्तार से वर्णन किया है।

हिन्दी बाल कविता में प्रकृति चित्रण
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
शोधार्थी -नीरज कुमार बरौलिया
(2018)

इस शोध में शोधार्थी ने परशुराम शुक्ला जी के द्वारा विभाजित बाल साहित्य के पाँच भागों का वर्णन किया है। उन्होंने अपने शोध में परशुराम शुक्ला जी के 25 काव्य संग्रहों में रचित कविताओं में मूल प्रवृत्तियों का वर्णन किया है। उन्होंने प्रकृति वर्णन के साथ साथ मनोरंजन, आस्था, विश्वास, प्रेरणादायक सभी कविताओं को अपने शोध में प्रयोग किया है। आज के समाज में व्याप्त नई-नई तकनीकी व फैशन के दौर का वर्णन भी किया है। उनकी कविताओं के माध्यम से प्रकृति का चित्रण अपने शोध में किया है।

हिन्दी बाल कविता की परंपरा और परशुराम शुक्ल का योगदान
जीवाजी विश्वविद्यालय
शोधार्थी -पंकज कुमार
(2017)

इस शोध में शोधार्थी ने अपने शोध में हिन्दी बाल साहित्य में हिन्दी बाल कविता का योगदान दर्शाया है। एक बच्चे के जीवन में बाल कविता का बहुत बड़ा महत्व है। दुनिया में नई तकनीकी के विकास का वर्णन करते हुए बालक को लक्ष्य को हासिल करने पर जोर देते हुए, इसमें भी परशुराम शुक्ल जी की कविता का एक महत्वपूर्ण योगदान बताया। परशुराम शुक्ल जी की कविता संग्रह के माध्यम से हिन्दी बाल कविता में व्याप्त तकनीकी व उनका बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

हिन्दी बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
शोधार्थी- श्रीमती कीर्ति खांडवे
(2016)

इस शोध में शोधार्थी ने अपने शोध को पाँच भागों में विभक्त करते हुए मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान और बाल साहित्य के अर्थ और परिभाषा को स्पष्ट करते हुए बाल मनोविज्ञान का विकास (1991 से 2000) एवं उसके सिद्धांत को स्पष्ट किया है। बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे- कहानी, बाल नाटक, बाल गीत तथा बाल उपन्यास को उदाहरण सहित स्पष्ट करते हुए, उसको बालकों के मनोविज्ञान से संबंधित किया है। वर्तमान युग में दृश्य माध्यम एवं प्रिंट माध्यम का तुलनात्मक अध्ययन व बाल साहित्य की परिस्थिति में स्थिति स्पष्ट करते हुए बालकों पर पड़ने वाले प्रभाव को भी प्रस्तुत किया है।

हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल
शोधार्थी- सीमा अरोरा
(2015)

इस शोध में शोधार्थी ने अपने शोध में आत्मकथा का उद्भव विकास व इसकी उपयोगिता बताते हुए इसमें मनोविज्ञान को भी स्पष्ट किया है। इस शोध में विभिन्न लेखिकाओं जैसे- मैत्रेयी, पुष्पा, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, कृष्णा अग्निहोत्री, कुसुम अंसल, सुशीला टॉकमोरे की आत्मकथाओं के माध्यम से आधुनिक युग में उनकी प्राचीन युग की बजाय बेहतर स्थिति को दर्शाते हुए प्रस्तुत किया कि कैसे लेखिकाओं ने समाज की सोचने की दिशा ही बदल दी। इस शोध में लेखिकाओं की आत्मकथाओं में निहित जीवन दृष्टि व मूल्यों का

भी अध्ययन किया है। इन आत्मकथाओं में व्याप्त नारी के जीवन से संबंधित मनोविज्ञान का अध्ययन करते हुए भाषागत विशेषताओं का वर्णन किया है।

हिन्दी बाल कथा साहित्य का अध्ययन
कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल
शोधार्थी- कु. आशा बिष्ट
(2010)

इस शोध में शोधार्थी ने बाल साहित्य में बाल कथा से संबंधित पुस्तकों का विश्लेषण करते हुए उनमें व्याप्त विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला है। इन्होंने अपने शोध में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रयोग किया है। बाल साहित्य से संबंधित विभिन्न प्रवृत्तियां जैसे- मनोवैज्ञानिकता, धार्मिकता, सामाजिकता तथा वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला है। इन्होंने अपने शोध में चलचित्र, फिल्म आदि का भी बाल साहित्य के विकास में बहुत बड़ा योगदान बताया है।

हिन्दी बाल नाटक और रंगमंच परंपरा और स्वरूप
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय
शोधार्थी - अनुराधा
(2009)

इस शोध में शोधार्थी ने अपने शोध में नाटक परंपरा का उद्भव व विकास का वर्णन करते हुए बाल नाटक की शुरुआत भारतेंदु युग से बताया। इन्होंने लिखा कि पहले नाटक सिर्फ बड़ों के लिए था। अब बाल नाटक का भी विस्तार हुआ है, और बड़े-बड़े शहरों में रंगमंच भी है। बाल नाटकों में मनोरंजन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

हिन्दी बाल नाटक एवं रंगमंच: एक अध्ययन (स्वतान्त्रोकाल के विशेष संदर्भ में)
पुणे विश्वविद्यालय
शोधार्थी- नेहा राकेश बोरसे
(2009)

इस शोध में शोधार्थी ने स्वतंत्रता के बाद जो भी बाल नाटकों की रचना हुई उनका क्षेत्र काफी विस्तृत बताते हुए परंपरिक कथाओं में नए-नए प्रसंगों के साथ नए नए विषयों की संरचना को प्रस्तुत किया। इन्होंने अपने शोध में लिखा कि विभिन्न संस्थाओं ने इसको परंपरा बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाल नाटक को मंच पर प्रस्तुत करने के लिए बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन फिर भी हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक भी बच्चों की मानसिकता के अनुरूप नाटक लिखने लगे और उनकी प्रस्तुति मंच पर भी होने लगी।

हिन्दी बाल साहित्य का मूल्यगत विवेचन

छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय
शोधार्थी- निष्ठा अवस्थी
(2007)

इन्होंने अपने शोध में बाल साहित्य को दो भागों में विभाजित करके, आधुनिक युग से पहले की रचनाकार तथा आधुनिक युग के बाद के रचनाकारों के माध्यम से बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं पर प्रकाश डाला है, तथा बाल साहित्य में विभिन्न जीवन मूल्यों के बारे में बताते हुए समय परिवर्तन के साथ बाल साहित्य के मूल्यों में क्या क्या परिवर्तन आया उन पर भी प्रकाश डाला है।

हिन्दी बाल साहित्य की विविध विधाएँ
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी
शोधार्थी- संगीता गुप्ता आत्मजा श्री कृष्ण दास गुप्ता
(2002)

इस शोध में शोधार्थी ने बाल साहित्य का क्रमिक विकास प्रस्तुत करते हुए अन्य भाषाओं में रचित बाल साहित्य के वर्गीकरण को दर्शाया है। बाल साहित्य की विविध विधाएं, कुछ प्रमुख शिशु गीतकार, बाल गीतकार, बाल कहानीकार, बाल नाटककार व बाल उपन्यासकारों के जीवन परिचय के साथ-साथ उनके द्वारा रचित बाल साहित्य को प्रस्तुत किया है।

हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक क्षण, ग्रंथियों, समस्याओं एवं काम कुंठाओं का चित्रण
म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात
शोधार्थी- श्रीमती मनीषा केतनकुमार ठक्कर
(2002)

इस शोध में शोधकर्ता ने उपन्यास शब्द की व्याख्या, उसका उद्भव, विकास व प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करते हुए कुछ मनोवैज्ञानिक उपन्यासों जैसे- त्यागपत्र, परख, सुनीता, पानी बीच मीन प्यासी आदि में व्याप्त मनोवैज्ञानिक क्षण, मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों का निरूपण, मनोवैज्ञानिक समस्याओं एवं मनोवैज्ञानिक काम कुंठाओं का निरूपण किया है। मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों में लघुता ग्रंथि, प्रभुत्व ग्रंथि, बद्धत्व ग्रंथि, इलेक्ट्रा ग्रंथि, इडियस ग्रंथि व फोबिया ग्रंथि आदि का वर्णन किया है।

हिन्दी कहानी में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चेतना का विश्लेषण
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
शोधार्थी- सुमन कुमारी
(2002)

इन्होंने अपने शोध में कामकाजी महिलाओं की गृहस्थ जीवन को सुचारू रूप से व्यतीत करने में एक अहम भूमिका प्रदर्शित की है तथा जब घर में उनको सही स्थान जिस सम्मान की वह अधिकारी होती है, वह अगर नहीं मिल पाता तो उनकी मनोदशा को मनोविज्ञान के माध्यम से दर्शाया है। उन्होंने कामकाजी महिलाओं में आत्मविश्वास होने के कारण उनमें जागृत होने वाली प्रवृत्तियां स्वाभिमान, अहम, जागरूकता एवं प्रबुद्धता की भावना को प्रस्तुत किया है। उन्होंने कामकाजी महिलाओं के परंपरागत सामाजिक बंधनों को नकारती हुई व स्वतंत्रता पूर्वक जीवन यापन करने की प्रवृत्ति को प्रस्तुत किया है।

हिन्दी के मनोविज्ञानपरक कथा साहित्य में इलाचंद्र जोशी के कृतित्व का योगदान
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
शोधार्थी- मनोज कुमार वाजपेयी
(2000)

इस शोध में शोधार्थी ने मनोविज्ञान का स्वरूप विश्लेषण भारतीय दृष्टि से तथा पाश्चात्य दृष्टि से प्रस्तुत करते हुए और विभिन्न ग्रंथों का प्रयोग करते हुए, उपन्यास में कहानी की परिभाषा, स्वरूप ,विकास एवं वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। अपने अगले अध्याय में इन्होंने इलाचंद्र जोशी का जीवन परिचय का वर्णन करते हुए उनके उपन्यास, साहित्य एवं कथा साहित्य का परिचय प्रस्तुत किया व उनमें व्याप्त मनोविज्ञान को भी स्पष्ट किया है तथा उनके साहित्य का अन्य मनोवैज्ञानिक कथाकार जैनेंद्र कुमार जैन, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, व देवराज के साथ तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

हिन्दी बाल साहित्य के संदर्भ में श्री चंद्रपाल सिंह यादव मयंक की साहित्य साधना का मूल्यांकन
फिरोज गांधी कॉलेज, रायबरेली
शोधार्थी- श्री कंचनलता यादव
(1988)

इस शोध में शोधार्थी ने श्री चंद्रपाल सिंह यादव मयंक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं का वर्णन किया है। उनके द्वारा रचित बाल साहित्य की विभिन्न विधाएं- शिशु गीत, कविता, पंचकथा, बालोपयोगी खंडकाव्य, एकांकी, जीवनी, यात्रा वर्णन आदि में व्याप्त विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए उनकी कविता में व्याप्त मनोविज्ञान पर भी प्रकाश डाला है उन्होंने अपने शोध में महंत जी की भाषा शैली जो कि श्रेष्ठ श्रेणी की है। उन्होंने लिखा कि ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

10 शोध अन्तराल

उपलब्ध शोध प्रबंधो की समीक्षा करने के बाद यह निष्कर्ष सामने आया है कि अब तक जो शोध कार्य हुआ है वह अधिकांश बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे बाल कथा, बाल नाटक, बाल काव्य में प्रकृति चित्रण, बाल साहित्य में पत्रकारिता का महत्व, हिन्दी उपन्यासों, हिन्दी कहानियों में मनोविज्ञान व बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान को केंद्र में रखकर शोध कार्य हुआ है। विभिन्न भाषाओं जैसे उड़िया, गुजराती, कन्नड़ आदि भाषाओं के बाल साहित्य पर भी शोध कार्य हुआ है, लेकिन प्रस्तुत शोध इन्ही भाषाओं से हिन्दी में अनुदित बाल कथाओं में मनोवैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है। अभी तक इस अनुदित बाल साहित्य पर शोधार्थियों की दृष्टि नही पड़ी है। निश्चय ही प्रस्तावित शोध कार्य शोध अन्तराल को पूर्ण करते हुए, शोध की दृष्टि से नया कार्य होगा

अध्यायीकरण

अध्याय-1

1 मनोविज्ञान एवं बाल मनोविज्ञान: सैद्धांतिक संदर्भ

1.1 मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.2 मनोविज्ञान के भेद

1.3 बाल मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.4 बाल मनोविज्ञान के विकास के सोपान

1.5 बाल मनोविज्ञान को प्रभावित करने वाले कारक-

1.5.1 वंशानुक्रम कारक **1.5.2 परिवेशगत कारक**

1.5.3 सामाजिक कारक **1.5.4 सांस्कृतिक कारक**

1.5.5 भौगोलिक कारक **1.5.6 ऐतिहासिक कारक**

1.5.7 पौराणिक कारक **1.5.8 वैज्ञानिक कारक**

1.5.9 काल्पनिक कारक **1.5.10 नैतिक कारक**

1.6 अनुदित हिन्दी कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: कलात्मक संदर्भ

1.6.1 भाषा

1.6.2 शैली

1.7 मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

अध्याय-2

2 हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वंशानुक्रम, परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं भौगोलिक संदर्भ

2.1 वंशानुक्रम संदर्भ

2.2 परिवेशगत संदर्भ

2.2.1 परिवार

2.2.2 स्कूल

2.3 सामाजिक संदर्भ

2.4 सांस्कृतिक संदर्भ

2.5 भौगोलिक संदर्भ

अध्याय-3

3 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वंशानुक्रम, परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संदर्भ

3.1 वंशानुक्रम संदर्भ

3.2 परिवेशगत संदर्भ

3.2.1 परिवार

3.2.2 स्कूल

3.3 सामाजिक संदर्भ

3.3.1 स्वार्थ का चित्रण

3.3.2 संघर्ष की भावना एवं सहयोग
3.3.3 प्रेमभाव का चित्रण
3.3.4 भूख व गरीबी का चित्रण
3.3.5 पारिवारिक विघटन का चित्रण
3.3.6 बेरोजगारी
3.4 सांस्कृतिक संदर्भ
3.4.1 पर्व या त्योहार
3.4.2 रीति-रिवाज
3.4.3 मेले
3.4.4 किस्सा गोसाई
3.4.5 लोक कथाएँ
3.5 भौगोलिक संदर्भ

अध्याय-4

4 अनुदित हिन्दी बाल कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भ
4.1 ऐतिहासिक संदर्भ
4.1.1 कथा विश्लेषण
4.1.2 कथ्य विश्लेषण
4.2 पौराणिक संदर्भ
4.2.1 कथा विश्लेषण
4.2.2 कथ्य विश्लेषण

अध्याय-5

5 अनुदित हिन्दी बाल कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वैज्ञानिक, नैतिक व काल्पनिक संदर्भ

5.1 वैज्ञानिक संदर्भ

5.1.1 कथा विश्लेषण

5.1.2 कथ्य विश्लेषण

5.2 काल्पनिक संदर्भ

5.2.1 कथा विश्लेषण

5.2.2 कथ्य विश्लेषण

5.3 नैतिक संदर्भ

5.3.1 कथा विश्लेषण

5.3.2 कथ्य विश्लेषण

अध्याय-6

6 अनुदित हिन्दी बाल कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: कलात्मक संदर्भ

6.1 भाषा

6.1.1 सरल और सहज वाक्यों का प्रयोग

6.1.2 ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग

6.1.3 मुहावरों का प्रयोग

6.1.4 लोकोक्तियों का प्रयोग

6.1.5 युग्म शब्दों का प्रयोग

6.1.6 कविता की लाइनों का प्रयोग

6.1.7 अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग

6.1.8 संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग

6.1.9 उर्दू के शब्दों का प्रयोग

6.1.10 सुविचारों का प्रयोग

6.1.11 ग्राम्य शब्दों का प्रयोग

6.1.12 वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग

6.1.13 संस्कृत के शब्दों का प्रयोग

6.1.14 मूल भाषा को इंगित करने वाले शब्दों का प्रयोग

6.1.15 सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग

6.1.16 ग्लानि सूचक शब्दों का प्रयोग

6.1.17 वैमनस्य सूचक शब्दों का प्रयोग

6.2 शैली

6.2.1 चित्रात्मक शैली

6.2.2 किस्सागोसाई शैली

6.2.3 संवादात्मक शैली

6.2.4 आत्मकथात्मक शैली

6.2.5 खंडों में विभक्त शैली

6.2.6 लोककथात्मक शैली

6.2.7 काव्यात्मक शैली

6.2.8 पत्रात्मक शैली

6.2.9 वर्णनात्मक शैली

अध्याय-7

अनुदित हिन्दी बालकथाओं में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का व्यावहारिक अध्ययन

7.1 अहं की समस्या

7.2 प्रतिबल की समस्या

7.3 समायोजन की समस्या

7.4 कुंठा की समस्या

7.5 अंतर्द्वन्द्व की समस्या

7.6 चोरी की समस्या

7.7 पिछड़ेपन की समस्या

7.8 झूठ बोलने की समस्या

7.9 हीन भावना की समस्या

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

अध्याय-1

1 मनोविज्ञान एवं बाल मनोविज्ञान: सैद्धांतिक संदर्भ

1.1 मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.2 मनोविज्ञान के भेद

1.3 बाल मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.4 बाल मनोविज्ञान के विकास के सोपान

1.5 बाल मनोविज्ञान को प्रभावित करने वाले कारक-

1.5.1 वंशानुक्रम कारक
1.5.2 परिवेशगत कारक
1.5.3 सामाजिक कारक
1.5.4 सांस्कृतिक कारक
1.5.5 भौगोलिक कारक
1.5.6 ऐतिहासिक कारक
1.5.7 पौराणिक कारक
1.5.8 वैज्ञानिक कारक
1.5.9 काल्पनिक कारक
1.5.10 नैतिक कारक

1.6 अनुदित हिन्दी कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: कलात्मक संदर्भ

1.6.1 भाषा

1.6.2 शैली

1.7 मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

1 मनोविज्ञान एवं बाल मनोविज्ञान: सैद्धांतिक संदर्भ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। शिशु जन्म के समय न तो सामाजिक होता है और न ही असामाजिक, बल्कि वह समाज के प्रति उदासीन, तटस्थ होने के साथ ही उसके प्रति निरपेक्ष भाव रखता है। उसका जीवन निष्कपट, निश्छल, निर्मल एवं कोरे कागज की तरह होता है। वह समाज में जैसे आचरण, व्यवहार तथा सामाजिक ताने बाने से बुने हुए वातावरण में जो अनुसरण करता है उसका सामाजिक विकास भी उसी समाज की प्रथाओं, सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप होता है। उसे समाज में रहते हुए न सिर्फ सामाजिक जीवन जीने के लिए एवं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे पर आश्रित रहना पड़ता है बल्कि उसे अपने व्यक्तिगत, मानसिक एवं बौद्धिक ज्ञानार्जन हेतु भी समाज पर ही निर्भर रहना पड़ता है। बालक समाज के भविष्य की न केवल नींव के पत्थर है बल्कि वे बालक ही भावी समाज की आकृति एवं स्वरूप निर्धारित करने वाले कर्णधार होते है। वे जितने ज्यादा समझदार विवेकशील, बुद्धिमान, परिपक्व एवं गहन सोच तथा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी होंगे, समाज उतना ही अनुशासित, पारदर्शी सुदृढ़ विकसित तथा प्रगतिशील होगा। परन्तु एक सुविकसित समाज की प्राप्ति हेतु उस तटस्थ एवं निरपेक्ष भाव वाले बालक के मनोविज्ञान का उचित अध्ययन करके उसका सही निर्देशन व मार्गदर्शन करके उसकी सोच को उसकी रुचि को उसकी क्षमताओं को उत्तम दिशा प्रदान की जाए तो वह एक प्रखर व्यक्तित्व का धनी तथा न सिर्फ स्वयं बल्कि समाज का सर्वागीण विकास करने वाला सफल इन्सान बन सकता है। वर्तमान समय में बच्चों के सर्वागीण विकास में बाल साहित्य का विशेष महत्व है। बाल साहित्य बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके चरित्र निर्माण में भी सहयोग देता है। वर्तमान युग में भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, धन का बढ़ता महत्व, मनोरंजन के साधनों की कमी, धर्म का व्यवसायीकरण इतना बढ़ गया है कि बच्चे के चरित्र निर्माण की समस्या एक गहन

समस्या बन गई है। आज का युग प्रयोग व जागरण का युग है आज बच्चों की मनःस्थिति यही नहीं रह गई जो पचास वर्ष पहले थी। आज उसके जीवन, व्यवहार और सोचने के तरीकों में अंतर आ गया है। बाल साहित्य बच्चों के चरित्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाल साहित्य की रचना का अर्थ है -बालकों की मनोस्थिति, मनोदशा तक पहुँचकर उनकी रुचि, उनके सर्वांगीण एवं बहुमुखी विकास के लिए साहित्य का सृजन करना। लगभग सवा सौ वर्षों से लगातार बाल साहित्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हुआ इक्कीसवीं सदी में अप्रत्याशित सक्रियता व मौजूदगी दर्शा रहा है। प्रस्तुत शोध बाल साहित्य पर आधारित है। बाल साहित्य का अध्ययन करने के लिए बालको की मनोदशा उनकी रुचि व उनके सर्वागीण विकास के लिए उनके मनोविज्ञान के बारे में जानना अति आवश्यक है, और यह सब उनके बाल मनोवैज्ञानिक विकास के अध्ययन से ही संभव है। बाल मनोवैज्ञानिक विकास की जानकारी से न केवल बालक के आंतरिक मनःस्थिति, उसके व्यवहार बल्कि उसकी शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के प्रत्येक स्तर को पहचान कर उसी के अनुकूल शिक्षा प्रदान कर सकते हैं

1.1 मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा-

मन के विज्ञान को मनोविज्ञान कहते हैं। मनोविज्ञान दो शब्दों के मेल से बना है- (मन+विज्ञान) अर्थात् मन का विज्ञान। आंग्ल भाषा में इसे साइकोलोजी (psychology) कहा जाता है, जो लेटिन भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। साइकी (psyche)+लोगस (logas) – साइकी का अर्थ है- आत्मा (soul) और लोगस का अर्थ है- विज्ञान (science) अर्थात आत्मा के विज्ञान को मनोविज्ञान कहते हैं। मनोविज्ञान के अर्थ को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न मत दिए हैं –

भारतीय विद्वानों के अनुसार-

प्राचीन काल से मनोविज्ञान का अध्ययन किया जाता रहा है, लेकिन प्राचीन काल में इसे दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में पढ़ा जाता था। उस समय भी इसके अंतर्गत मन, चेतना व आत्मा का अध्ययन किया जाता था।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में मनोविज्ञान की उपलब्धता के बारे में इलाचंद्र जोशी अपनी पुस्तक *विश्लेषण* में लिखते हैं:

> कहा जाता है कि मनुष्य के अचेतन मन के अस्तित्व की सूचना पहले-पहल फ्रायड ने संसार को दी। यह दावा कितना भ्रामक है, भारतीय मनोविज्ञान से, परिचित पाठकों से यह छिपा न होगा। हमारे यहाँ मन के जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्त अवस्थाओं का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। कालिदास के *अभिज्ञान शाकुंतलम्* में मनोविश्लेषण के कुछ ऐसे उदाहरण मिलते है, जिनसे पता चलता है कि अवचेतन मन के रहस्यों का पता हमारे कवि को था। (103)

देवराज उपाध्याय ने अपनी पुस्तक *आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान* में मनोविज्ञान की प्राचीन परम्परा का उल्लेख इस रूप में किया है :

> मानव मन का अध्ययन अति प्राचीन काल से होता आ रहा है। चेतना के साथ ही मानव व उसके सहधर्मियो में अभिरुचि भी जागृत हुई होगी। उसमें अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को समझने की प्रवृति उत्पन्न हुई होगी और उसी समय मनोविज्ञान का अध्ययन किसी न किसी प्रकार प्रारम्भ हो गया होगा। मानव के प्राचीनतम चिंतन की व्यवस्थित झलक वेदों में मिलती है, उनमें ही मनोविज्ञान के अध्ययन की अनेक सामग्रियाँ उपलब्ध होती है।

> उपनिषदों में, सांख्य दर्शन में, योगदर्शन में, न्यायदर्शन में तथा बोद्ध दर्शन की अनेक शाखाओं में मानव मन संबंधी उत्पत्तियाँ प्राप्त है। उनके अध्ययन के द्वारा मनोविज्ञान सम्बन्धी अनेक बातें उपलब्ध हो सकती है। (41)

सीताराम जायसवाल ने अपनी पुस्तक *मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा* में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है:

> भारतीय मनोविज्ञान आध्यात्मिक चिंतन का फल है। वह जीव, आत्मा और मन में भेद करता है। भारतीय चिंतक अति सामान्य तथ्यों और पुनर्जन्म जीवन के आवागमन इत्यादि के प्रति निष्ठावान है। (67)

सीताराम जायसवाल मनोविज्ञान को दर्शन की शाखा के रूप में बताते हुए कहते हैं: "भारतीय मनोविज्ञान दर्शन की एक शाखा के रूप में पल्लवित-पोषित हुआ है, जबकि आधुनिक पाश्चात्य काव्य शास्त्र का उद्गम स्त्रोत यूनानी मनोविज्ञान में खोजा जाता है।"(68)

एस.एस. माथुर की पुस्तक *शिक्षा मनोविज्ञान* से उद्धृत नगेंद्र का कथन है: "मनोविज्ञान के अन्तर्गत मस्तिष्क की विविध क्रियाओं एवं शक्तियों का तथा मानव स्वभाव एवं कार्यों की मूल प्रवृतियों एवं प्रेरणाओं का अध्ययन किया जाता है।" (6)

रानाडे ने अपनी पुस्तक *ए कंस्ट्रक्टिव सर्वे ऑफ उपनिषद फिलॉसफी* में मनोविज्ञान को उपनिषद से संबंधित करते हुए कहा है:

> यदि हम बाद के यौगिक दर्शन के यम और नियम को प्राचीन उपनिषदों में वर्णित योग के विभिन्न तत्व यथा- आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान में जोड़ दें तो जो कि समाधि के पूर्वांग है तो योग की पूर्ण अष्टांग योजना बन जाती है। (188)

लक्ष्मी शुक्ला अपनी पुस्तक *भारतीय मनोविज्ञान* में लिखते हैं:

> दोनों का विषय है व्यक्ति का मन एवं व्यवहार; और उद्देश्य है व्यक्ति का स्वयं को जानना, अपने वास्तविक स्वरूप से परिचित होना, अज्ञान के अंधकार से मुक्त हो, प्रकाश की ओर बढ़ना। (11)

धनराज मानधने अपनी पुस्तक *हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास* में मनोविज्ञान को मन का विज्ञान मानते हुए लिखा है: "मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। वेद मंत्रों में व्याख्या करते हुए बताया गया है कि मानव मन जाग्रत एवं स्वप्न दोनों ही अवस्थाओं में गतिमान रहता है।" (46)

जयप्रकाश बलोदी अपनी पुस्तक *शैक्षिक मनोविज्ञान* में अपने मत को स्पष्ट करते हुए कहते हैं:" मैंने अपने अनुभव में यह पाया कि मनोविज्ञान को शुद्ध रूप से व्यवहार का ही विज्ञान कहा जाना चाहिए।" (7)

शिव प्रसाद भारद्वाज अपने *मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश* में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं: मनोविज्ञान "मन की प्रकृति एवं क्रियाकलापों का विवेचन करने वाला विज्ञान है।" (740)

रामचंद्र वर्मा अपने *प्रमाणित हिन्दी कोष* में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखते हैं: मनोविज्ञान: "वह शास्त्र जिसमे चित्त की वृतियों या मन में उठने वाले विचारों आदि का विवेचन होता है।" (882)

रामचंद्र वर्मा अपने दूसरे *मानक हिन्दी कोश* में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं: "मनोविज्ञान वह विज्ञान या शास्त्र है जिसमें मनुष्य के मन, उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा क्रियाओं, उस पर पड़ने वाले प्रभावों आदि का अध्ययन तथा विवेचन होता है।" (293)

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार-

M. C. Dougall अपनी पुस्तक *Psychology* में मनोविज्ञान को दो शब्दों का योग बताते हुए कहते हैं:

> The word psychology was formed from the Greek words for soul and science respectively and was designed to mark off the study of the soul or of souls as a special department of science. (2)
>
> अर्थात् मनोविज्ञान शब्द का निर्माण ग्रीक शब्द आत्मा और विज्ञान के योग से हुआ था और इसे विज्ञान के विशेष विभाग के रूप में आत्मा या आत्माओं के अध्ययन के लिए बनाया गया था।

William Mc. Dougall ने अपनी एक अन्य पुस्तक *An outline of psychology* में मनोविज्ञान को हमारा ज्ञान बढ़ाने वाले विज्ञान के रूप में परिभाषित करते हुए कहा है: “Psychology is our aspires to become a science a systematically organised and growing body of knowledge.” (1)

अर्थात् मनोविज्ञान हमारी इच्छाओं का विज्ञान है जो कि व्यवस्थित एवं हमारे ज्ञान को बढ़ाने वाला है ।

William Mc. Dougall ने अपनी एक अन्य पुस्तक *Psychological Psychology* में मनोविज्ञान को धनात्मक विज्ञान के रूप में परिभाषित करते हुए कहते हैं “Psychology be best and most comprehensively defined as the positive science of the conduct of living creatures.” (5)

अर्थात् यह समस्त जीवों के व्यवहार का अध्ययन करता है|

E.B. Tichner ने अपनी पुस्तक *A textbook of psychology* में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है: “The subject matter of psychology is human experience considered as dependent upon the individual.” (28)

अर्थात् मनोविज्ञान का विषय मानव अनुभव है जिसे व्यक्ति पर निर्भर माना जाता है।

S.A. Jalota अपनी पुस्तक *Text book of psychology* में मनोविज्ञान को शुद्ध पश्चिमी पद्धति बताते हुए कहते हैं: “Psychology is defined as the study of mental process as expressed in bodily behavious and or observed in direct experience.” (35)

अर्थात् आधुनिक मनोविज्ञान शुद्ध पश्चिमी पद्धति है। मनोविज्ञान उन मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है जिसका प्रदर्शन शारीरिक व्यवहारों में होता है, तथा उसका निरीक्षण प्रत्यक्ष अनुभवों के द्वारा होता है।

Charles E. Skinner ने अपनी पुस्तक *Educational psychology* में मनोविज्ञान को निम्न शब्दों में परिभाषित किया है:

> Psychology deals with responses to any and every kind of situation that life presents, by responses or behaviour is meant all forms of processes, adjustments, activities and expressions of the organism. (1)

अर्थात् मनोविज्ञान जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्राणी की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार और प्रतिक्रिया जिसका अर्थ सभी प्रकार की प्रक्रियाओं के समायोजन, गतिविधियों और जीवों की अभिव्यक्ति है

William James अपनी पुस्तक *Principle of psychology* में लिखते हैं:

> Psychology is the science of mental life both of its phenomena's and their conditions. The phenomena's are such things as we call feelings, desires, cognitions, reasoning decisions and the like. (1)

अर्थात् मनोविज्ञान मानसिक जीवन की घटनाओं और उनकी स्थितियों दोनों का विज्ञान है। इन घटनाओं को हम अपनी भावनाएँ, इच्छाएँ, निर्णय एवं तर्क की अनुभूति कह सकते हैं ।

R. S. Woodworth ने अपनी पुस्तक *Psychology* में मनोविज्ञान को कार्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान बताते हुए कहा है: “Psychology is the science of the activities of the individual in relation to the environment psychology.” (16)

अर्थात् मनोविज्ञान वातावरण के अनुसार व्यक्ति के कार्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

Woodworth ने अपनी एक अन्य पुस्तक *Contemporary school of Psychology* में मनोविज्ञान का विश्लेषण करते हुए कहा है: Psychology that attempt to give an accurate and systematic answer to the questions ‘what do men do’ and ‘why they do’ is called a functional psychology. (13)

अर्थात् मनोविज्ञान जो प्रश्नों का सटीक और व्यवस्थित उत्तर देने का प्रयास करता है कि पुरुष क्या करते हैं और क्यों करते हैं, इसे एक कार्यात्मक मनोविज्ञान कहा जाता है।

वैलेंटाइन ने अपनी पुस्तक *Psychology and its bearing education* में मनोविज्ञान को मन का वैज्ञानिक अध्ययन कहा जिसमें न केवल बौद्धिक बल्कि संवेगात्मक अनुभव भी आते हैं तथा प्रेरक शक्तियाँ, क्रियाएँ तथा व्यवहार भी शामिल है। (6)

वाटसन ने अपनी पुस्तक *Behaviorism* में मनोविज्ञान की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है- मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की शुद्ध वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक शाखा है। इसका सैद्धांतिक उद्देश्य व्यवहार का अंदाजा लगाना तथा उसका नियंत्रण करना है। अंतर्दर्शन पद्धति जो कि एक मनोवैज्ञानिक पद्धति ही नहीं है बिल्कुल त्याज्य है और इस तरह मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान न होकर व्यवहार का विज्ञान है। (9)

James and Ross अपनी पुस्तक *Grand Work of Educational Psychology* में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं: “We must define it as the science which seeks to interpret in physical or mental terms the behavior of living organisms for as that is physically conditioned.” (14)

अर्थात् यह वह विज्ञान है जिसमें भौतिक स्थितियों के अनुसार जीवित प्राणियों के शारीरिक तथा मानसिक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

W. B. Pillsbury अपनी पुस्तक *Essential of Psychology* में कहते हैं: “Psychology may be most satisfactorily defined as the science of human behavior and behavior is to be studied through consciousness of the individual and the external observations.” (18)

अर्थात् मनोविज्ञान की संतोषप्रद परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि वह विज्ञान जो मानव के व्यवहार का अध्ययन करता है और वह व्यवहार अध्ययन मानव की व्यक्तिगत चेतना के द्वारा होता है।

आर.एन. सिंह एवं शुभा एस. भारद्वाज द्वारा लिखित पुस्तक *मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ* में जेम्स एँजेल के अनुसार: "मनोविज्ञान में हर प्रकार की चेतना का अध्ययन किया जाना चाहिए, चाहे वह चेतना सामान्य हो या असामान्य, मानवीय हो अथवा पशु सम्बन्धी हो। मनोविज्ञान में उसी का वर्णन तथा व्याख्या की जानी चाहिए।" (2)

सीताराम जायसवाल की पुस्तक *मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा* में से उद्धृत एडलर के अनुसार: "व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या उसका अंतिम लक्ष्य ही कर सकता है|" अर्थात् "The final goal alone can explain man's behavior." (456)

उपर्युक्त कथनों से कह सकते हैं कि मनोविज्ञान किसी भी मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक व्यवहार का, मन का, चित्त का, मन में उठने वाले विभिन्न विचारों का, भावनाओं का, वृतियों का, क्रियाकलापों का, गतिविधियों का विवेचन एवं अध्ययन करने वाला विज्ञान कहलाता है।

<u>मनोविज्ञान का स्वरूप-</u>

मनोविज्ञान का स्वरूप समय-समय पर परिवर्तित होता रहा है। प्राचीन काल में चिंतन का प्रारम्भ वेदों से हुआ। मनोविज्ञान का सामाजिक रूप से ज्ञान उपनिषद, योग, सांख्य, न्याय, तथा बोद्ध दर्शन आदि के अध्ययन से हो जाता है। इन सब ग्रंथों में मानव मन से सम्बन्धित अनुभूतियों पर प्रकाश डाला है। ईसा से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व ग्रीक दार्शनिको ने आत्मा के स्वरूप, व्यवहार तथा अनुभव को समझने का प्रयास किया। उनके निरंतर अध्ययन से जो ज्ञात हुआ उसका नाम मानसिक दर्शन रखा गया। यह मानसिक दर्शन ही मनोविज्ञान का प्रारंभिक रूप था। यद्यपि एक विषय के रूप में मनोविज्ञान को पाश्चात्य जगत की देन है, किन्तु मनोविज्ञान हमारे वेदों,

उपनिषदों और पुराणों में भरा पड़ा है, यह अलग से इसलिए प्रतिष्ठित न हो सका क्योंकि पहले इसका अध्ययन दर्शनशास्त्र के अंतर्गत होता था। भारतीय मनोविज्ञान एवं पाश्चात्य मनोविज्ञान दोनों का ही विकास दर्शनशास्त्र से हुआ है। मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से पृथक विषय के रूप में सोलहवी शताब्दी तक पढ़ा जाने लगा। मनोविज्ञान के अर्थ का स्वरूप विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न रूपों में परिवर्तित होता आया है। संस्कृत में 'संकल्प' शब्द से मन को सम्बोधित किया जाता है। जिसका अर्थ है- विचार एवं निश्चय। इस संसार में शरीर के अलावा चेतना ही ऐसी सत्ता है जिसकी क्रिया विचार एवं निश्चय है। समय विशेष में जो जो परिवर्तन मनोविज्ञान के स्वरूप में हुए वो इस प्रकार हैं –

16वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में जाना जाता था। इस विचार के समर्थक थे –प्लेटो और अरस्तू। *आस्था के चरण साहित्यिकी प्रेरणा* नामक पुस्तक में अरस्तु ने मनोविज्ञान के स्वरूप को परिभाषित करते हुए कहा है: "मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है।" (83)

यहाँ आत्मा का अर्थ 'मन' से है। तत्वदर्शन में मन शब्द का अर्थ आत्मा से लिया गया है। यद्यपि मनोविज्ञान तत्वदर्शन का सहायक सम्बन्धी है, लेकिन यह तत्वदर्शन के कारकों के अध्ययन में असमर्थ है। इस तरह तत्कालीन मनोवैज्ञानिक आत्मा की स्पष्ट परिभाषा, उसके स्वरूप, उसके रंगरूप व आकार, उसकी स्थिति तथा आत्मा के अध्ययन करने की विधियों को स्पष्ट करने में असफल रहे, इसलिए मनोविज्ञान के इस स्वरूप को अस्वीकार कर दिया गया।

17वीं शताब्दी में दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा। इस विचार के समर्थक थे-डेकार्ट, लोक व पोम्पोनाजी। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मस्तिष्क की प्रकृति

तथा स्वरूप को स्पष्ट रूप से निर्धारित न करने के कारण इसे अमान्य घोषित कर दिया गया ।

19वीं शताब्दी में मनोविज्ञान का संरचनावादी सम्प्रदाय मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान मानते थे। इसके समर्थक थे- टीचनर, वाइव्स, विलियम वुंट तथा जेम्स सली।

टीचनर ने अपनी पुस्तक *Theory of literature* में मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा है: "मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है।" (76)

पांडेय द्वारा लिखित पुस्तक *शिक्षा मनोविज्ञान* में जेम्स के अनुसार: "मनोविज्ञान की सर्वोतम परिभाषा चेतना के वर्णन और व्याख्या के रूप में की जा सकती है।" (6)

यहाँ चेतना से अभिप्राय है- मानसिक क्रियाओं की जागरूकता या ज्ञान। उस समय मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में पशुओं पर प्रयोग कर मनोविज्ञान के नियमों का निर्धारण कर रहे थे, इसलिए टीचनर ने मनोविज्ञान की सीमित परिभाषा दी।

Angell की पुस्तक *Psychology, An Introductory Study of the Structure and Function of Human Consciousness* में जेम्स के अनुसार:

> आज तक मनोवैज्ञानिको ने अपनी दृष्टि को मन की रचना पर लगाये रखा लेकिन अब मनोवैज्ञानिक का कार्य केवल चेतना के घटकों की खोज ही करना नहीं अपितु यह भी मालूम करना है कि यह चेतना कैसे विकसित होती है और कैसे क्रियाशील होती है? सामान्यत: हम किसी वस्तु को केवल जानने का ही प्रयत्न नही करते बल्कि यह भी जानना चाहते हैं कि उसके क्या लाभ है? उसका उपयोग एवं कार्य क्या है? इसी तरह केवल चेतना को जानना कि वह क्या है पर्याप्त नहीं है। इसके अतिरिक्त चेतना कैसे विकसित होती है और उसका क्या कार्य है यह भी जानना आवश्यक है। (153)

उपर्युक्त कथन से कह सकते हैं कि मनोविज्ञान को केवल चेतना का विज्ञान कहना उचित नहीं बल्कि इसके साथ-साथ यह जानना भी आवश्यक है कि चेतना का कार्य क्या है? चेतना का लक्ष्य क्या है? एवं चेतना का उपयोग क्या है? सीमित अर्थ होने के कारण मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्पष्ट करने का प्रयास भी असफल हो गया।

20वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाटसन इस विचार के समर्थक थे। वर्तमान में मनोविज्ञान के अंतर्गत मानव के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

आर.एन. सिंह एवं शुभा एस. भारद्वाज द्वारा लिखित पुस्तक *मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ* में वुडवर्थ के अनुसार: "सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा, फिर मस्तिष्क त्यागा, फिर अपनी चेतना खोई और अब वह एक प्रकार के व्यवहार को अपनाये हुए है।" (3)

मनोविज्ञान से सम्बन्धित कुछ मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांत-

फ्रायड का मनोविश्लेषण सिद्धांत-

फ्रायड के अनुसार व्यक्ति का संपूर्ण व्यवहार काम प्रवृति से ओत-प्रोत रहता है। फ्रायड ने कामेच्छा को अत्यधिक प्रभावी प्रेरक शक्ति के रूप में मान्यता दी तथा उन्होंने अनेक उदाहरणों एवं तर्कों के माध्यम से ये सिद्ध करने का प्रयास किया है कि प्रत्येक व्यक्ति के मानसिक स्नायु विकृति के मूल में दमित काम प्रवृतियाँ रहती हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व की उच्चतम सांस्कृतिक एवं कलात्मक उपलब्धियों की प्राप्ति में कामवेगों

की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समाज में मनुष्य को व्यक्तिगत महत्वकांक्षा, उच्च आदर्श, विचार, रुचि, मूल्य व मान्यताएँ सभी परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से उसकी काम प्रवृति के संतुष्टि के साधन मात्र है।

लाभसिंह एवं गोविन्द तिवारी के अनुसार : "मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने मन को वैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर विश्लेषित किया और मन के प्रमुख दो पहलू निर्धारित किए हैं।"

1) गत्यात्मक पहलू (Dynamic Aspect)

2) स्थल रूपरेखीय पहलू (Topographical Aspect)

मन की संरचना

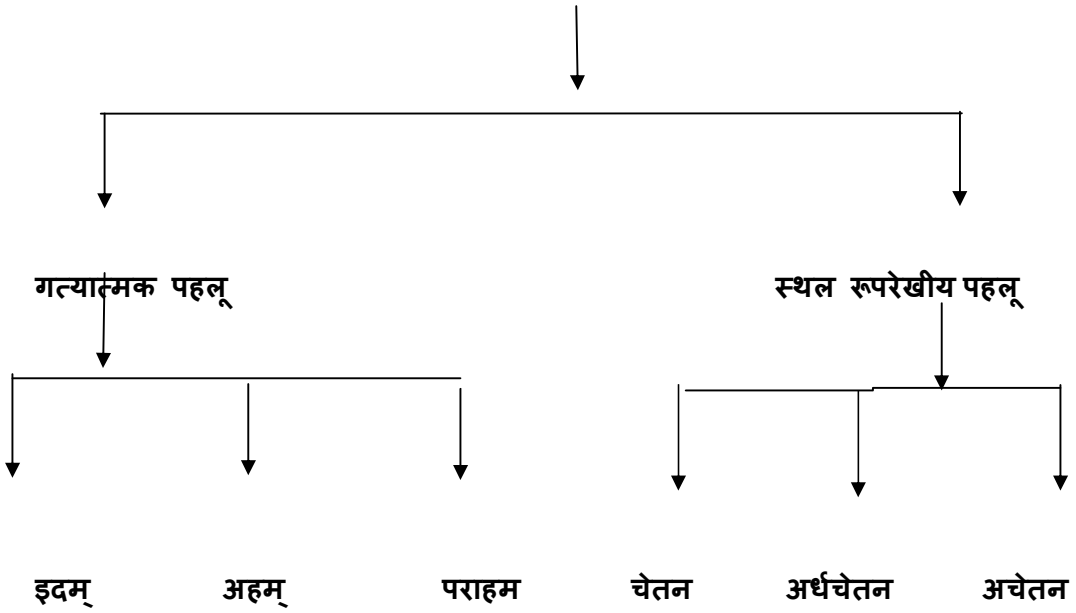

1) गत्यात्मक पहलू- फ्रायड ने अपने गत्यात्मक पहलू में मन के निम्न तीन भाग किए हैं-

इदम्, अहम्, पराहम

इदम्-

फ्रायड के द्वारा कार्य के अनुसार मन के तीन भागों में से इदम् मन का वह हिस्सा है, जिसमें व्यक्ति की वे मूल इच्छाएँ हैं, जो अतार्किक व अमौखिक होती हैं, जो अति शीघ्र संतुष्टि भी चाहती हैं, लेकिन चेतना में प्रवेश नही कर पाती। अहम् मन के सचेतन भाग से सम्बन्धित है, जो कि वास्तविकता के आधार पर मूल प्रवृति की इच्छाओं को नियंत्रित करता है। मनुष्य को चिंता व तनाव से दूर रखना इसका मुख्य कार्य है। पराहम सामाजिकता एवं नैतिकता पर आधारित है। यह मनुष्य को सही गलत में अंतर करना सिखाता है। यह वास्तविकता, इच्छा शक्ति, तर्क शक्ति, बुद्धि, चेतना में अनुकूलन, समाकलन एवं भेद करने की प्रवृति को विकसित करता है।

निर्मला शेरजंग अपने *मनोविज्ञान का परिभाषिक शब्दकोश* में कहते हैं: इदम् "प्राथमिक वासनाओं का केंद्र; फ्रायड के अनुसार मनुष्य के पशुत्व के सब गुण इसमें निहित है। इदम से तात्कालिक सुख और संतोष की इच्छाओं का उद्दीपन होता है इसमें शील, संयम, नैतिकता, सामाजिकता, वास्तविकता अर्थात् समय और स्थान का ज्ञान नहीं है।" (76)

देवराज उपाध्याय अपनी पुस्तक *भाषा, साहित्य और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति* में लिखते हैं: " 'इदं' भावात्मक आवेग है, जिसमें अपार शक्ति होती है। वह अपनी सिद्धि के लिए सदैव तत्पर रहता है।" (78)

इस प्रकार उपर्युक्त कथन से कह सकते हैं कि इदं जीवन की वास्तविकता की बजाय कल्पनामय है। काम शक्ति संबंधी इच्छाएँ, तात्कालिक संतुष्टि इसकी विषय सामग्री है।

अहम्-

फ्रायड ने अहम् को उसके द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषण सिद्धांत में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उसने इस सिद्धांत के तहत संघर्ष, अवरोध, दमन तथा कामवृत्ति का अन्तर्भाव किया है। गंगाधर झा अपनी पुस्तक *आधुनिक मनोविज्ञान और हिन्दी साहित्य* में कहते हैं: "अहम का मतलब है इदं की वह सतह जो ज्ञानेन्द्रियों से संलग्न होती है, वही जगत के निरंतर संसर्ग में आती है और उसमें क्रमशः चेतना का उदय होता है।"" (70)

पराहम-

फ्रायड के अनुसार पराहम व्यक्ति के नैतिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। लाभसिंह एवम गोविंद तिवारी अपनी पुस्तक *असामान्य मनोविज्ञान* में लिखते हैं:

> इसका विकास इदम् व अहम् की अपेक्षा सबसे देर में होता है। बाल्यावस्था में इसका विकास अहम् के माध्यम से होता है। बच्चा माँ बाप के द्वारा दिए गए उपदेशों, भले बुरे संबंधी उपदेशों आदि को अहम् में आत्मसात कर लेता है तथा बाद में यहीं पराहम का रूप लेता है। (159)

फ्रायड ने नैतिकता और अनैतिकता के बीच में पराहम को विभाजन रेखा खींचने का माध्यम बताया है। इस प्रकार पराहम काम इच्छाएँ, आक्रामक दिशा निर्देशों पर रोक लगाता है तथा यथार्थ लक्ष्यों के स्थान पर नैतिक लक्ष्यों की ओर प्रेरित करते हुए मनुष्य के आदर्शात्मक प्रवृत्ति को उभारने में अहम् भूमिका निभाता है।

2 स्थल रूपरेखीय पहलू- फ्रायड ने अपनी पुस्तक *A General introduction to psycho analysis* में व्यक्ति के मन को तीन भागों में विभाजित किया है-_

चेतन, अर्धचेतन, अचेतन (27)

चेतन शब्द का अर्थ है- ज्ञात, जो कुछ हम देख रहे हैं, सुन रहे हैं या कर रहे हैं उसका ज्ञान होना। यह मन का लगभग दसवां हिस्सा होता है। ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक ये तीनों पहलू मिलकर चेतना का निर्माण करते हैं।

रेखा शर्मा द्वारा रचित *कमलेश्वर के उपन्यासों में मनोविज्ञान* में फ्रायड के अनुसार: "ऐसी इच्छाएँ जिनका ज्ञान हमें नही रहता है (जो अचेतन में होती है) | हमारे व्यवहार को प्रभावित करती है|" (37)

अचेतन अवस्था में जब उत्तेजित मन शब्दों से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाता तो भावनाएँ कुंठित होकर अचेतन मन में चली जाती है। फ्रायड के अनुसार मन का लगभग 90% हिस्सा अचेतन मन होता है। इसमें व्यक्ति की मूल प्रवृतियों जैसे कि भूख, प्यास, यौन सम्बन्धी इच्छाएँ दबी रहती हैं।

चेतन-

फ्रायड का मानना है कि चेतन मन की वह अवस्था है जिसका सम्बन्ध वर्तमान की सभी अनुभूतियों एवं संवेदनाओं से होता है अर्थात् चेतन क्रियाएँ तात्कालिक अनुभवों को परिलक्षित करती है। जो व्यक्तित्व के आंशिक एवं सीमित पहलू का प्रतिनिधित्व करता है।

अरुण कुमार सिंह द्वारा रचित पुस्तक *आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान* से उद्धृत फ्रायड के अनुसार: “It is that segment of the mind which is concerned with immediate awareness." (*120*)

अर्थात् चेतन मन, मन का वह भाग है जिसका संबंध तुरंत ज्ञान से होता है।

उनके अनुसार शिशु केवल चेतन मन लेकर पैदा होता है जिसमें मूलभूत प्रवृत्तियों का अथाह भंडार होता है बाद में चेतन मन की क्रियाएँ अहम के माध्यम से होने लगती हैं।

अर्द्धचेतन-

मन की इस अवस्था के अंतर्गत आने वाले विचार, इच्छाएँ, भाव, संवेग व व्यक्ति के वर्तमान या तात्कालिक अनुभव एवं चेतना से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़े होते परंतु प्रयास के माध्यम से उन्हें व्यक्ति के चेतन मन में लाया जा सकता है।

अरुण कुमार सिंह द्वारा रचित पुस्तक *आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान* में फ्रायड के शब्दों में: "Fore- conscious is that segment of the mind which is concerned with readily material." (42)

यह मन का वह भाग है जिसका संबंध ऐसी विषय सामग्री से होता है जिसे व्यक्ति इच्छा अनुसार कभी भी याद कर सकता है।

अचेतन-

अचेतन अर्थात् जो चेतना से परे हो व्यक्ति के कुछ अनुभव ऐसे भी होते हैं जो न तो उसकी चेतना में होते हैं और न ही अर्द्धचेतन में पाए जाते हैं। ऐसे अनुभव अचेतन में होते हैं। अचेतन मन के अनुभव, विचार एवं इच्छाएँ प्राय: घृणित, अनैतिक,

असामाजिक एवं कामुक प्रवृत्ति की होती है। वॉल्मैन बेंजामिन अपनी पुस्तक *Contemporary theories and systems in psychology* में लिखते हैं:

> "एडलर ने चेतन, अवचेतन और अचेतन इत्यादि स्तरों के रूप में व्यक्ति को विभाजित न कर, उसके समग्र कार्यों को मूलत: हीनभावना ग्रन्थि और श्रेष्ठ भावना ग्रन्थि से परिचालित माना है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति इन ग्रन्थियों के अनुरूप ही अपने अपने ढंग से प्रयत्नशील रहता है| इसी आधार पर जीवन लक्ष्य निर्धारित होता है और व्यक्ति की रचनात्मक शक्ति से उसकी जीवन शैली निर्मित होती है।" (292)

व्यक्ति से लेकर व्यक्ति समूह के सन्दर्भ में एडलर ने समाजवाद की भी व्याख्या प्रस्तुत की है, निश्चय ही फ्रायड से आगे की निष्पति है। एडलर ने व्यक्ति की सम्पूर्णता पर बल देते हुए व्यक्तित्व के प्रकारों को निर्धारित किया।

युंग ने एडलर के समाजवादी सिद्धांत में संशोधित करते हुए व्यक्ति के व्यक्तित्व को बहिर्मुखी, अन्तर्मुखी तथा उभयमुखी भागों में बाँटा। युंग की विशिष्टतम देन थी- उसकी सामूहिक अवचेतन की अवधारणा।

<u>एडलर का मनोविश्लेषण सिद्धांत -</u>

एलफ्रेड एडलर फ्रायड के शिष्य होते हुए भी व्यक्तिक मनोविज्ञान के प्रति उनसे भिन्न दृष्टिकोण रखते थे, इसलिए एडलर ने व्यक्तिक मनोविज्ञान के फ्रायड से भिन्न सिद्धांत का प्रतिपादन किया। फ्रायड ने जहाँ 'यौन वासना' को जीवन का मूल आधार माना, वही एडलर ने 'अधिकार भावना' को मूल आधार माना। दोनों में यही मुख्य अंतर है।

दोनों अचेतन की अवस्था को स्वीकृति प्रदान करते हैं, परंतु एडलर मनुष्य में बचपन से ही प्रतिस्पर्धा की भावना विद्यमान होने की बात करते हैं ना कि वासना की। उनका

मानना है कि मनुष्य की मूल भावना काम वासना नहीं बल्कि श्रेष्ठता की भावना होती है। इनका मानना है कि व्यक्ति सदैव अपने आपको अपने प्रतिस्पर्धी से शक्तिशाली व श्रेष्ठ रखना चाहता है। किसी भी माध्यम से वह अपने मित्रगणों से श्रेष्ठ होना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति में हीनता ग्रंथि (Inferiority complex) होती है, जो कि उसे अपेक्षाकृत उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। एडलर अपनी पुस्तक *The Science of Living* में लिखते हैं:

> व्यक्ति की इच्छा तथा रचना शक्ति उसे एक निर्दिष्ट मानसिक व्यवस्था की ओर ही ले जाती है। इस का प्रतिपादन एडलर ने किया। उनके अनुसार हीनता और उच्चता की भावनाएँ वे सामान्य स्थितियाँ है जो मानव व्यवहार को अधिकृत और अनुशासित करता है। (15)

एडलर के अनुसार मनुष्य के विकास में समुदाय का योगदान ज्यादा रहता है। समुदाय या समाज परिवार का ही वृहत्त रूप है। यद्यपि परिवार का योगदान भी कम नहीं है, परंतु मनुष्य की हीनता की ग्रंथि को जब तक दूर नहीं किया जाए, तब तक जीवन में सफलता को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

एडलर के अनुसार मनुष्य अपने व्यक्तित्व एवं भाग्य का निर्माता स्वयं होता है, जबकि फ्रायड व्यक्तित्व निर्माण में चेतन मन के विगत एवं निष्क्रिय अनुभवों की शक्ति को स्वीकार करते हैं। वॉल्मैन बेंजामिन अपनी पुस्तक *Contemporary Theories and Systems in Psychology* में लिखते हैं: "एडलर की सबसे महत्वपूर्ण देन यह है कि उसने व्यक्ति की संपूर्णता पर अधिक बल दिया। व्यक्ति के संपूर्ण

ज्ञान के अतिरिक्त उसकी जीवन शैली और जीवन लक्ष्य को जाना नहीं जा सकता।“ (597)

<u>युंग का मनोविश्लेषण सिद्धांत-</u>

युंग ने भी फ्रायड की भांति अचेतन मन को स्वीकार किया है, परंतु जहाँ फ्रायड ने माना है कि अचेतन मन में दमित वासना ही रहती हैं। वहीं युंग का मानना है कि अचेतन मन में वे तत्व भी होते हैं, जिनका अस्तित्व कभी भी चेतन मन में नहीं रहा। युंग के अनुसार अचेतन के दो स्तर होते हैं- 1 वैयक्तिक अचेतन 2 समष्टि अचेतन या सामूहिक अचेतन

युंग अपनी पुस्तक *Psychology Types* में कहते हैं: “ व्यक्तिगत अचेतन मन, अवचेतन मन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति की दमित और विस्मृत इच्छाएँ संगृहित रहती हैं।” (615-616)

युंग ने मनुष्य को दो भागों में विभाजित किया है – 1 बहिर्मुखी 2 अन्तर्मुखी

Frieda Fordham ने अपनी पुस्तक *An Introduction to Junges- Psychology* में युंग के व्यक्तित्व के सिद्धांत का वर्णन करते हुए कहा है: “युंग मनोवैज्ञानिक आधार पर व्यक्ति के दो भेद करते हैं- अंतर्मुखी तथा बहिर्मुखी। बालक वातावरण के अनुसार अपने को ढालता है। अंतर्मुखी बालक शर्मिला और डरपोक होता है।” (32)

उपर्युक्त कथन के अनुसार हम कह सकते हैं कि बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक तो होता है परंतु उसमें कल्पना का अभाव होता है। वह कभी-कभार हतोत्साहित हो जाता है। अंतर्मुखी व्यक्ति कल्पनाशील होता है, परंतु उसमें सामाजिकता का अभाव होता है। ऐसे व्यक्ति भावुक होने की अपेक्षा निरस होते हैं।

युंग के अनुसार दोनों तरह के व्यक्ति समाज में एक दूसरे के पूरक हैं ।

Gerhard Adlerने अपनी पुस्तक *Collected Works of C. G. Jung: Psychological Types* में मन की चार शक्तियों का वर्णन करते हुए कहा है: "मानसिक अवस्था संबंधी युंग का अध्ययन भी अति महत्वपूर्ण है अस्तित्व प्रदर्शनार्थ हमारे मन के पास चार शक्तियाँ हैं- विचार, भाव, संवेदन और अंतरदर्शन।" (568)

1.2 **मनोविज्ञान का क्षेत्र-**

मनोविज्ञान जिसमें मनुष्य, बालक, पशु, साधारण एवं असाधारण सभी की अनुभूतियों तथा व्यवहारों का, उनकी क्रियाओं का उचित निरीक्षण, अध्ययन और विश्लेषण कर सही रूप में समझना और उनका नियंत्रण करना है। इसमें उनके व्यवहार की, उनके तरीकों की तुलना की जाती है। आधुनिक मनोविज्ञान में जीवन के प्रत्येक पक्ष को लेकर अनेक प्रयोग किए गये हैं। मनोविज्ञान के विभिन्न आयाम है, जो जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित हैं। *The New Encyclopedia of Britannica* के अनुसार:

> अमेरिकी मनोविज्ञान संस्थान के अनुसार मनोविज्ञान की 29 शाखाएँ हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं- सामान्य मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान, प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, शरीर-क्रिया मनोविज्ञान, तुलनात्मक मनोविज्ञान,औद्योगिक मनोविज्ञान, विकासात्मक मनोविज्ञान, व्यक्ति मनोविज्ञान, व्यवहार-विश्लेषण मनोविज्ञान, मार्गदर्शन एवं परामर्श मनोविज्ञान, मन: चिकित्सा मनोविज्ञान, क्लीनिकल मनोविज्ञान, दार्शनिक मनोविज्ञान, मूल्यांकन एवं मापन मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान आदि। (746-753)

उपर्युक्त कथन से कह सकते हैं कि मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है जिनमें से प्रमुख का विवरण निम्नलिखित है-

1 समाज मनोविज्ञान 2 व्यवहारिक मनोविज्ञान

3 सामान्य मनोविज्ञान 4 विश्लेष्णात्मक मनोविज्ञान

5 बाल मनोविज्ञान 6 शिक्षा मनोविज्ञान

7 प्रयोगात्मक मनोविज्ञान 8 तुलनात्मक मनोविज्ञान

9 विकासात्मक मनोविज्ञान 10 शारीरिक मनोविज्ञान

<u>समाज मनोविज्ञान</u>-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें व्यक्ति के व्यवहार, उनकी क्रिया एवं अनुभवो का अध्ययन, उसके सामाजिक पृष्ठभूमि संदर्भ में किया जाता है। व्यक्ति जन्म से मृत्युपर्यंत दूसरों के साथ रहता है तथा अंतरपारस्परिक अंतर क्रिया करता है, जो व्यक्ति को सामाजिक जीवन प्रदान करता है।

क्रच और क्रच फील्ड अपनी पुस्तक *Social Psychology* में समाज मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं: “Social Science is the science of behaviour of the individual in the society.” (27)

अर्थात् सामाजिक मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।

किम्बल यंग अपनी पुस्तक *Hand book of social psychology* में लिखते हैं:

> Social psychology is the study of the persons in their interactions with another and with reference to the effect of this inter-play upon the individual's thoughts, feelings, emotions and traits. (1)

व्यक्ति के आसपास के लोग अर्थात् परिवार, आस-पड़ोस, गाँव, समुदाय आदि सब मिलकर समाज का निर्माण करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान के तहत व्यक्ति का समाज से संबंध, उनके विचारों का, भाव का एक दूसरे से आदान-प्रदान, प्रेम, प्रतिस्पर्धा, अनुकरण, सहानुभूति, अभिवृत्ति, नेतृत्व की भावना, प्रचार तथा एक दूसरे पर पड़ने वाले प्रभाव का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

<u>व्यावहारिक मनोविज्ञान-</u>

व्यावहारिक मनोविज्ञान का तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति, समूह या समाज को मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर इस तरह तार्किक व्यवहार के प्रति प्रेरित किया जाए या प्रशिक्षित किया जाए, ताकि उस व्यक्ति या समूह के व्यवहार में वांछित बदलाव लाया जा सके,

हरिशरण आर्य अपने *मनोविज्ञान परिभाषा कोश* में व्यावहारिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं

> व्यावहारिक मनोविज्ञान अपने या दूसरों के व्यवहार एवं आचरण में वांछित परिवर्तन लाने में सहायक विज्ञान है, जिसमें अभीष्ट आचरण की दिशा में व्यक्ति की कार्य साधकता को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक, दैहिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दशाओं का अध्ययन कर व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक तथ्यों, सिद्धांतों एवं प्रविधियों का उपयोग किया जाता है। (12)

उपर्युक्त कथन से हम कह सकते हैं कि व्यावहारिक मनोविज्ञान, वह मनोविज्ञान है, जिसके माध्यम से हम किसी व्यक्ति के जीवन को समझकर तथा उसे निर्देशित करके, उसके जीवन को प्रभावित कर सके, या उसमें परिवर्तन ला सके। व्यावहारिक मनोविज्ञान का लक्ष्य मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं का समाधान एवं जनकल्याण है। इसके अंतर्गत शिक्षा, व्यवसाय, कानून, अपराध आदि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं का मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो के द्वारा समाधान किया जाता है।

<u>सामान्य मनोविज्ञान-</u>

सामान्य मनोविज्ञान के तहत प्राणियों की शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं, व्यावहारिक घटनाओं एवं अनुभूतियों पर शोध प्रबंधन के माध्यम से, उनके परिलक्षित व्यवहार, विकास एवं वृद्धि से संबंधित प्रमाणिक साक्ष्य जुटाए जाते हैं, तथा इन प्रमाणों के माध्यम से उनका वर्णन एवं व्याख्या कर, सामान्य नियमों की खोज का प्रयास किया जाता है।

सी. पी. सिन्हा अपनी पुस्तक *सामान्य मनोविज्ञान* में लिखते हैं: " मनोविज्ञान की वह शाखा "जिसमें सामान्य मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धांतों की व्याख्या होती है, उसे सामान्य मनोविज्ञान कहते हैं। " (38)

इस तरह सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति के भाव, विचार, संवेदना, प्रेरणा, कल्पना, स्मरण, बुद्धि, स्वपन, चिंतन, प्रत्यक्षीकरण, संवेग आदि का अध्ययन किया जाता है। साथ ही व्यक्ति का व्यवहार एवं निर्णय प्रक्रिया जिन नियमों से संचालित होती है।

<u>विश्लेषण मनोविज्ञान-</u>

विश्लेषण मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक अन्य शाखा है , जिसमें मनुष्य की स्वाभाविक क्रियाओं का एवं जटिल समस्याओं को भिन्न-भिन्न अंगो में अलग करके अंतरदर्शन एवं निरीक्षण और प्रयोग की विधि द्वारा अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है।

<u>उत्पत्तिमूलक मनोविज्ञान</u>

उत्पत्तिमूलक मनोविज्ञान में व्यक्ति तथा जाति की उत्पति कैसे हुई और उसका क्रमानुसार विकास का अध्ययन किया जाता है। इसका विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान से गहरा संबंध है, क्योंकि विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में व्यक्ति की विशेष क्रियाओं, उसके व्यवहार, उसकी अनुभूतियों का अध्ययन विश्लेषण करके किया जाता है और उत्पत्तिमूलक मनोविज्ञान पशु, बालक, किशोर तथा प्रोढ़ सभी का अध्ययन करता है। अतः इसका क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है।

<u>विकृत या असामान्य मनोविज्ञान-</u>

असामान्य मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसके तहत मनुष्य के असाधारण या विकृत व्यवहार, विचार, क्रियाओं एवं भावनाओं का अध्ययन किया जाता है।

डी. एन. श्रीवास्तव की पुस्तक *आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान* से उद्धृत जेम्स ड्रेवर के अनुसार: “Abnormal psychology ;that branch of psychology which investigates such divergence of mental phenomena or of behavior.” (2)

अर्थात् असामान्य मनोविज्ञान ; मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें व्यवहार या मानसिक घटना की विषमता का अध्ययन किया जाता है।

सामान्य व्यवहार एवं असामान्य व्यवहार में यह अंतर होता है कि सामान्य व्यवहार आमतौर पर बहुत देखा जाता है अर्थात जिसे देखकर किसी तरह का ना कोई आश्चर्य होता है और ना कोई चिंता। लेकिन जब किसी व्यक्ति का सामान्य गुण, व्यवहार, ज्ञान, भावना या क्रिया अन्य व्यक्तियों से भारी मात्रा में भिन्न हो जो कि उसे दूसरे लोगों से विचित्र बता सके उसी क्रिया या व्यवहार को असामान्य या असाधारण कहते हैं और इसी असामान्य या असाधारण व्यवहार के अध्ययन को असामान्य मनोविज्ञान कहते हैं।

<u>पशु मनोविज्ञान-</u>

पशु मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें पशुओं की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में पशुओं के शरीर और मन की बनावट तथा क्रिया प्रणाली का विस्तृत अध्ययन कर, उसका मनुष्य के व्यवहारों एवं प्रक्रियाओं को समझने की कोशिश की जाती है। इस तरह पशुओं एवं मनुष्य के व्यवहार एवं क्रियाओं का अध्ययन कर, जैसे- सीखना, चिंतन, प्रेरणा, आक्रामकता, प्रत्यक्षीकरण, संबंध का तुलनात्मक अध्ययन कर महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त किए जाते हैं। इस प्रकार प्राप्त परिणामों के आधार पर मनोविज्ञान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं, जो मानवीय मनोवैज्ञानिक क्रियाओं की व्याख्या करने में सफल सिद्ध हुए हैं।

<u>बाल मनोविज्ञान-</u>

मनोविज्ञान की जिस शाखा के अंतर्गत बालक का गर्भावस्था से लेकर परिपक्व अवस्था तक की शारीरिक और मानसिक विकास से संबंधित पक्षों का अध्ययन किया जाता है, उसे बाल मनोविज्ञान कहते हैं। इसमें शारीरिक, मानसिक क्रियाओं के तहत बालक की स्मृति, कल्पना, व्यवहार, सीखना, तथा बुद्धि आदि का अध्ययन करने के साथ-साथ उनसे सम्बन्धित समस्याओं एवं उनके समाधान का अध्ययन किया जाता है।

<u>प्रयोगात्मक मनोविज्ञान</u>- नगेन्द्र अपने *मानविकी पारिभाषिक कोश* में प्रयोगात्मक को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

> प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें व्यवहार अथवा मन के प्रिय व्यापार का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाता है, तथा व्यवहार के प्रसंग में उत्तेजना प्रतिक्रिया के पारस्परिक संबंध पर विशेष जोर दिया जाता है, प्रयोगात्मक मनोविज्ञान कहलाता है। (110)

प्रीति वर्मा अपनी पुस्तक *आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान* में इसे परिभाषित करते हुए कहती हैं:“ प्रयोगात्मक विधि का उपयोग मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंधित समस्याओं के अध्ययन में भी होता है परंतु यह सभी प्रयोग प्रयोगात्मक मनोविज्ञान से संबंधित नहीं होते।” (12-13)

उपर्युक्त कथनों से कह सकते हैं कि प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें प्रयोग विधि द्वारा मनुष्य की संवेदना, सीखना, स्मृति अवधान आदि का अध्ययन किया जाता है। इसी मनोविज्ञान के कारण मनोविज्ञान को विज्ञान कहा

गया है, इसलिए यह अति महत्वपूर्ण हो गया है। इसके प्रयोगो के माध्यम से विचारों और मानसिक क्रियाओं का सूक्ष्मतर विश्लेषण करके अध्ययन किया जाता है।

<u>विकासात्मक मनोविज्ञान-</u>

विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें मनुष्य के जीवन में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत मनुष्य की विभिन्न अवस्थाओं के विकास क्रम को समझना तथा उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान करना होता है। इसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक परिवर्तनों, व्यवहार, अनुभूतियों तथा कार्य प्रणालियों से संबंधित अध्ययन किया जाता है।

नगेंद्र अपने *मानविकी पारिभाषिक कोश* में विकासात्मक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

> विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर उसकी परिपक्वावस्था तक के क्रम में होने वाली दैहिक, बौद्धिक, सामाजिक परिवर्तनों, कार्य- प्रणालियों, व्यवहार एवं अनुभूतियों का वैज्ञानिक वृतांत मिलता है, 'विकासात्मक मनोविज्ञान' कहलाता है। (87)

<u>शिक्षा मनोविज्ञान-</u>

शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के मेल से बना है- शिक्षा+मनोविज्ञान, जिसका शाब्दिक अर्थ है- शिक्षा संबंधी मनोविज्ञान। शिक्षा मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार, मानसिक प्रक्रिया एवं अनुभव का अध्ययन शिक्षित परिस्थितियों में किया जाता है। इसमें शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

गोविन्द तिवारी अपनी पुस्तक *शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधार* में शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

> शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें शिक्षा- संबंधी केवल मनोवैज्ञानिक अन्वेषण और सिद्धांतों का ही अध्ययन नहीं होता प्रत्युत शिक्षक, शिक्षार्थी और उनके पास में संबंधों से उत्पन्न होने वाली अन्यान्य समस्याओं का भी मनोवैज्ञानिक अध्ययन होता है। (23)

शिक्षण प्रक्रिया या सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए इसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का इस्तेमाल किया जाता है। शिक्षण की प्रभावशाली तकनीकों, अधिगमकर्ता की योग्यताओं एवं अभिरुचियों का आकलन इसके तहत किया जाता है।

<u>तुलनात्मक मनोविज्ञान-</u>

हरिशरण आर्य अपने *मनोविज्ञान परिभाषा कोश* में तुलनात्मक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

> तुलनात्मक मनोविज्ञान "मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें प्राणियों की विभिन्न प्रजातियों या मनुष्य की विभिन्न जातियों या व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं की मानसिक क्रियाओं या व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, तुलनात्मक मनोविज्ञान कहलाती है।" (68-69)

तुलनात्मक मनोविज्ञान में मानव प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है इसमें विभिन्न क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाता है।

<u>1.3 **बाल मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा**</u>

बाल मनोविज्ञान शब्द की रचना मनोविज्ञान में बाल उपसर्ग जोड़ने से हुई है, जिसका अर्थ है- बालकों का मनोविज्ञान या बालकों के व्यवहार का अध्ययन। बाल मनोविज्ञान अत्यंत ही रोचक विषय है। इसमें मानव के बाल्यावस्था में होने वाले क्रमिक विकास

के अंतर्गत उसके आचरण, व्यवहार, मनोदशा एवं व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। भारतीय धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि शिशु से लेकर किशोरावस्था तक बालक का सर्वांगीण विकास होता है। इसी क्रमिक विकास में आधुनिक जीवन काल में बाल मनोविज्ञान के माध्यम से जन्म से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन किया जाता है। बाल मनोविज्ञान के माध्यम से ही बालक के जीवन को उचित दिशा निर्देशित करते हुए उपयोगी बनाया जा सकता है, क्योंकि बाल्य अवस्था ही मानव के संपूर्ण कालखंड की आधारशिला है। अतः बाल मनोविज्ञान का अध्ययन वर्तमान युग के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। बाल मनोविज्ञान से सम्बन्धित कुछ परिभाषाएँ-

चित्रा वारेरकर की पुस्तक *बाल मनोविज्ञान: बाल मन की जिज्ञासा* से उद्धृत परिभाषा: "बाल मनोविज्ञान बालक के मन का अध्ययन करता है।" (9)

एक अन्य स्थान पर उन्होंने कहा है: "बाल मनोविज्ञान जन्म से किशोरावस्था तक विभिन्न विकासों का अध्ययन करता है।" (10)

लाल जी शुक्ल अपनी पुस्तक *बाल मनोविज्ञान* में लिखते हैं: "बाल मनोविज्ञान, बाल व्यवहार तथा मनोवैज्ञानिक वृद्धि से संबंधित विज्ञान के लिए उपयोग में लाए जाने वाला एक सामान्य शब्द है।" (2)

बाल मनोविज्ञान के तहत बालक के मानसिक एवं शारीरिक दोनों तरह के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन के माध्यम से बालकों की विभिन्न प्रवृत्तियों, आदतों, रूचियों एवं व्यवहार का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाता है। बाल मनोविज्ञान के तहत कुछ सरल सामान्य सिद्धांत तथा नियम प्रतिपादित करने

के लिए मनोविश्लेषकों ने बालकों के प्रत्येक व्यवहार, क्रियाओं की गहराई तथा शारीरिक एवं मानसिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक माना है।

बाल्यकाल किसी भी व्यक्ति के जीवन का वह सर्वोत्तम काल होता है, जिसमें वह सर्वाधिक ज्ञानार्जन करता है। इसलिए इस काल को बालक का शिक्षण काल कहा गया है। बाल्य अवस्था में ही बालक न सिर्फ भाषा के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करना सीखता है बल्कि वह आचार, व्यवहार, परंपराओं, उचित अनुचित के ज्ञान के साथ सामाजिक ताने-बाने को भी समझता है। शिक्षण के माध्यम से बाल्य काल में सीखी गई अलग-अलग विधाएँ किशोरावस्था तक सम्मिलित होकर वैश्विक ज्ञान में परिणित हो जाती है। बाल्यावस्था में शिक्षण के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की संरचना होती है, क्योंकि व्यक्ति बालक से ही निर्मित होता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड भी इस विचार का समर्थन करते हैं कि मानव के सामान्य एवं असामान्य व्यवहार की व्याख्या बचपन की अनुभूतियों के आधार पर होती है। इस विचार से ये इंगित होता है कि-

बालकों का अपना मानसिक विकास होता है, जिसकी छाया उनकी समझ, ज्ञान अथवा कल्पना इच्छा आदि के रूप में दिखाई देती है। उनके इन्हीं विशिष्ट मनोवृतियों ने बाल मनोविज्ञान को जन्म दिया। अत: बाल मन के स्वस्थ ज्ञान हेतु बाल मनोविज्ञान का ज्ञान अपेक्षित है।

Crow and crow ने अपनी पुस्तक *Child psychology* में बाल मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है: “Child psychology is a scientific study of the individual from his prenatal beginnings through the early stage of his adolescent development." (1)

अर्थात् बाल मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें बालक की जन्म पूर्व काल से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने *लोकभारती प्रमाणिक हिन्दीकोश* में बाल मनोविज्ञान को इस तरह से परिभाषित किया है: "बाल का अर्थ है बालक, नासमझ व्यक्ति, जो सयाना ना हुआ हो। (623) "मनोविज्ञान का अर्थ है- वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों या मन में उठने वाले विचारों आदि का विवेचन होता है।" (687)

हरदेव बाहरी ने अपने *हिन्दीशब्दकोश* में बाल मनोविज्ञान का अर्थ इस तरह से प्रस्तुत किया है: "बाल का अर्थ है- 1 बालक, बच्चा 2 सोलह वर्ष से कम उम्र का बालक, नासमझ। (591) "मनोविज्ञान का अर्थ है- वह विज्ञान जिसमें मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं और क्रियाओं का तथा उनके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।" (638)

एच. जे. आइरैंक ने अपनी पुस्तक इनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइकोलॉजी में कहा है: "Child psychology is concerned with the development of psychological process in the child from birth before through infancy and childhood to adult scene and maturity." (162)

नगेंद्र ने मानविकी पारिभाषिक कोश में बाल मनोविज्ञान को बाल स्वभाव की व्युत्पत्ति कहते हुए कहा है: "बाल मनोविज्ञान का अर्थ है- बाल स्वभाव की व्युत्पत्ति तथा विकास के विभिन्न पक्षों का क्रमबद्ध निरूपण।" (61)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाल मनोविज्ञान का अर्थ बालकों के मन का उनके जन्म के पूर्व काल से लेकर किशोरावस्था तक के मन का अध्ययन है। बाल मनोविज्ञान में बालकों का व्यवहार, उनसे संबंधित समस्याएँ, परिस्थितियों एवं समस्याओं के कारणों तथा उनके हल का अध्ययन किया जाता है।

बाल मनोविज्ञान से संबंधित विभिन्न विद्वानों एवं मनोवैज्ञानिकों की परिभाषाएँ निम्न हैं –

जेम्स ड्रेवर अपनी पुस्तक *द स्टडी ऑफ़ मेंटल लाइफ* में कहते हैं: "बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से परिपक्वावस्था तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।" (4)

डी. एन. वर्मा श्रीवास्तव व प्रीति वर्मा की पुस्तक *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास* में बर्क के मत को उद्धृत करते हैं, जिनका कहना है: "बाल विकास मनोविज्ञान की एक शाखा है जिसमें व्यक्ति की जन्म पूर्व अवस्था से परिपक्वावस्था तक होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट किया जाता है।" (4)

इसी पुस्तक में एक अन्य स्थान पर आइजनेक के विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा है: “बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है इसमें गर्भकालीन अवस्था, जन्म, शैशवावस्शथा, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वावस्था तक के बालक की मनोवैज्ञानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।“ (4)

परशुराम शुक्ल अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य में मनोरंजन एवं नैतिकता* में कहते हैं: “बाल मनोविज्ञान सामान्य बालक के व्यवहारों, विचारों भावनाओं एवं क्रियाओं का अध्ययन है।” (21)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर यह कह सकते हैं कि बाल मनोविज्ञान बालक के मन का, जन्म पूर्व काल से लेकर किशोरावस्था तक के अध्ययन का, उसके व्यवहार का, उसके विकास की अवस्थाओं का, जन्म पूर्व काल से लेकर किशोरावस्था तक उसमें होने वाले परिवर्तनों के, उसके व्यवहार से संबंधित समस्याओं व उनके निवारण के

अध्ययन को कहते हैं, लेकिन क्या इन सबसे बाल मनोविज्ञान की परिभाषा पूर्ण हो जाती है? नहीं। क्योंकि जब हम बालक का भली-भांति निरीक्षण करते हैं तो यह पाते हैं कि बालक का मानसिक विकास जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण बालक का शारीरिक विकास भी है। हम इन दोनों में से किसी एक की उपेक्षा नहीं कर सकते। मनोविज्ञान में केवल बालक की मानसिक शक्तियों, नैसर्गिक इच्छाओं तथा उसके विकास क्रम का ही विवरण नहीं रहता, इसके अतिरिक्त उसके व्यवहार में आए विभिन्न परिवर्तनों का भी वर्णन रहता है। जो भौतिक एवं सामाजिक तादात्म्य से बालक में साधारणतः आ जाते हैं। इन सब के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाल मनोविज्ञान बालक के सर्वांगीण विकास के अध्ययन को कहते हैं। यहाँ विकास का अभिप्राय शारीरिक एवं मानसिक विकास दोनों से हैं।

बाल मनोविज्ञान के स्वरूप का क्रमिक विकास-

मनोविज्ञान की जिस शाखा के अंतर्गत बालकों के मनोविज्ञान का अध्ययन किया जाता है, उसे बाल मनोविज्ञान कहते हैं। मनोविज्ञान के अंतर्गत सभी जीव (जिसमें मानव और पशु सभी आते हैं) के मन का, उनके व्यवहार का और उनकी रूचियों का अध्ययन किया जाता है। लेकिन बालकों के गर्भकाल से लेकर किशोरावस्था की प्रारंभिक अवस्था का अध्ययन जिस विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है उसे बाल मनोविज्ञान कहते हैं। यह मनोविज्ञान की नवीन शाखा है, जिसका विकास लगभग पिछले 80 सालों में सर्वाधिक हुआ है। बच्चों के कल्याण के लिए एवं उनकी विभिन्न योग्यताओं, व्यक्तित्व एवं सामाजिक विशेषताओं के कारण बाल मनोविज्ञान के प्रति मनोवैज्ञानिकों की रुचि दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जनसाधारण के लिए भी इसका ज्ञान बहुत उपयोगी है। इसके स्वरूप में भी दिन-प्रतिदिन बदलाव हो रहे हैं जो इस प्रकार है-

सत्रहवीं शताब्दी तक उस समय के विद्वान बालकों के मनोविज्ञान एवं उनके जीवन चक्र के अध्ययन पर विशेष ध्यान नहीं देते थे। प्राचीन काल में मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र के अंतर्गत पढ़ा जाता था। तब उनकी रूचि इस में स्पष्ट दिखाई देती थी।

डॉ गिरिशबाला महंती के अनुसार, "There was no separate emphasis of child psychology as a separate discipline. It was never studied as a systematic discipline. Childhood as separate from adulthood and a separate phase of human life was never considered." (4)

अर्थात् (बाल मनोविज्ञान को न ही तो एक अलग अनुशासन के रूप में माना जाता था न ही एक व्यवस्थित अनुशासन के रूप में इसका अध्ययन किया जाता था। बचपन को मानव जीवन का एक अलग चरण नहीं माना जाता था।)

ग्रीक काल के दार्शनिकों का मानना था कि बाल्यावस्था में जो कुछ बालक के साथ घटित होता है, उसका उसके आने वाले जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। डी. एन. वर्मा श्रीवास्तव व प्रीतिवर्मा की पुस्तक *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास* में से उद्धृत प्लेटो का कथन जिसमें उन्होंने अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' में भी इस विचार का समर्थन करते हुए कहा है: "बाल्यावस्था के प्रशिक्षण का प्रभाव बालक के बाद की व्यावसायिक दक्षताओं पर और समायोजन पर पड़ता है।" (1)

सत्रहवी शताब्दी के उत्तरार्ध में विद्वानों का ध्यान बालकों की ओर गया, जिसके परिणामस्वरूप कामनेनियस ने School of Infancy की स्थापना करने के साथ-साथ 1657 में दो पुस्तकों की भी रचना की। जिनमें से पहली पुस्तक बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर आधारित थी तथा दूसरी पुस्तक की पाठ्य सामग्री को चित्रों की सहायता से

रूचि पूर्ण बनाया गया था। इस तरह से इस शताब्दी में विद्वानों का बालकों के प्रति उनकी अभिवृत्तियों में परिवर्तन प्रारंभ हुआ।

अठारवीं शताब्दी में जोहन लॉक और थॉमस हॉब्स ने बालकों के अध्ययन पर बल देते हुए इस दिशा में विशेष कार्य किया। वहीं ब्लॉक ने बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में वातावरण का विशेष योगदान मानते हुए उन्होंने बच्चों की रूचियों, इच्छाओं एवं क्षमताओं पर विशेष बल दिया।

अठारहवीं शताब्दी में कुछ दार्शनिकों ने बालकों के अध्ययन पर विशेष बल दिया। Locke viewed in his book *Some thoughts concerning education in R.H.Quick (Ed.), Locke on Education,* "The child as a tabula rasa (latin word: 'blank slate') led him to champion nature-the power of the environment to shape the child." (236)

अर्थात् (लॉक के अनुसार, बालक एक कोरी स्लेट है, उसको सही आकार देने की शक्ति केवल प्रकृति के पास है।) लॉक के इस विचार को फ्रांसिसी दार्शनिक रूसो ने अपनी पुस्तक Emile or *on Education: Trans. Allan Bloom* में यह कहकर नकार दिया "Children are not blank slates and empty containers to be filled by adult instruction. Rouseau believed that children's builtin moral sense and unique ways of thinking." (8)

अर्थात् (रुसो का मानना था कि बच्चे कोई कोरी स्लेट नहीं है, बल्कि बच्चों के अंतर्निहित नैतिक भावना और सोचने के अनूठे तरीके होते हैं।)

अठारवीं शताब्दी में पेस्टालॉजी जिन्हें बाल मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है, इन्होंने अठारवीं शताब्दी में पहली बार बाल विकास का वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया। पेस्टालॉजी ने अपने साढ़े तीन वर्षीय पुत्र पर यह अध्ययन करके यह वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया। इसी कार्य को आगे बढ़ाने का कार्य टाइटमैन ने भी अपने

बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास का निरीक्षण करके किया। यह कार्य बेबी बायोग्राफी पर आधारित था।

उन्नीसवीं शताब्दी में बालको से संबंधित अध्ययन में विद्वानों में रुचि और अधिक बढ़ी। जिसमें टेन ने 1869 में *Infant child development* नामक पुस्तक, डार्विन ने 1877 में *Biographical sketch of an infant* नामक पुस्तक के साथ-साथ प्रेयर ने अपने पुत्र के जन्म से तीन वर्ष तक की अवधि का अध्ययन करके 1881 में The mind of the child नामक पुस्तक का प्रकाशन करवाया। डार्विन (1877) ने अपनी पुस्तक *Biographical Sketch of an infant* में कहा है:Certain species survive in particular parts of the world because they have characteristics that fit with or are adapted to their surroundings other species die off because they are not as well suited to their environment. Individuals with a species who best meet the environments survival requirements live long enough to reproduce and pass their more beneficial characteristics to future generations. (285-294)

अर्थात् (जो जातियाँ प्रकृति के साथ ताल-मेल बनाकर चलती हैं, वो अधिक समय तक जिंदा रहती हैं, जिनका लाभ आने वाली पीढ़ी को भी मिलता है।)

इसके बाद William Prayer ने अपनी पुस्तक *The mind of the child* नामक पुस्तक का प्रकाशन करवाया। प्रेयर ने अपने ही पुत्र की जन्म से लेकर तीन वर्ष की अवस्था तक की biography तैयार की, जो कि पहले के कार्य से ज्यादा क्रमबद्ध भी था। इसमें Preyer लिखते हैं, "Especially set high standards for making observations, recording what he saw immediately and checking the accuracy of notes against those of a second observer. These are the same standards that today's researchers use when observing children." (08)

अर्थात् (शोधकर्त्ता को किसी भी बच्चे के अवलोकन के समय पर उच्च मानक निर्धारित करने चाहिए, जो किसी अन्य पर्यवेक्षक के खिलाफ नोट्स की सटीकता को जांचने में काम आयेंगे ।)

19वीं शताब्दी में हॉल ने अमेरिका में बाल विकास से संबंधित आंदोलन चलाए इन्होंने child study society and child welfare organization की स्थापना के साथ-साथ बाल विकास से संबंधित अध्ययनों में प्रश्नावली विधि का प्रयोग करके बायोग्राफी भी तैयार की। इंग्लैंड, अमेरिका और जर्मनी आदि देशों में इसको आगे बढ़ाते हुए पहला बाल गृह की स्थापना 1887 में न्यूयॉर्क में बाल अपराध से ग्रसित बालकों को सुधारने हेतु स्थापना की, इस प्रकार 19वीं शताब्दी में बाल विकास से संबंधित बहुत से कार्य हुए।

बीसवीं शताब्दी में बाल मनोविज्ञान के अध्ययन को अधिक व्यवस्थित, सुसंगत एवं क्रमबद्ध ढंग से किया जाने लगा। मुसैन ने भी इस विचार का समर्थन किया है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक बाल मनोविज्ञान की विषय सामग्री अत्यंत ही सीमित थी। इस सदी के प्रथम चतुर्थांश तक बहुत से मनोवैज्ञानिक बाल व्यवहार के कुछ सीमित क्षेत्रों के अध्ययन से ही संबंधित थे। ज्यादातर अध्ययन बालक की रूचि, भाषा, खेल, संवेग तथा शिशु एवं किशोरों तक ही सीमित थे। इस अवधि में अनेक समस्याएँ थी, भिन्न-भिन्न आयु वर्गों के बालकों पर उनके शारीरिक, मानसिक एवं व्यवहार संबंधी विशेषताओं में क्या नए परिवर्तन आते हैं तथा उनके व्यवहार आचरण एवं प्रकृति को भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में कौन से कारक प्रभावित करते हैं। धीरे-धीरे मनोवैज्ञानिकों का बाल मनोविज्ञान के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा, जिससे बाल मनोवैज्ञानिकों ने इस दिशा में बहुत से महत्वपूर्ण अध्ययन प्रारंभ किए । सदी के उत्तरार्ध में बाल मनोविज्ञान में ज्ञान की कमी को पूर्ण करने हेतु अध्ययन की दो प्रणालियों की शुरुआत हुई, जिन्हें समकालीन एवं दीर्घकालीन प्रणालियाँ कही जाती हैं।

साथ ही बाल मनोविज्ञान शब्द की जगह बाल विकास शब्द का प्रयोग अधिक किया जाने लगा। हॉल और उसके छात्र अर्नोल्ड गॅसेल के साथ मिलकर व्यवहार की परख से संबंधित एक प्रश्नावली का आरम्भ किया, जिसमें वे अपनी पुस्तक *Child Psychology* में कहते हैं: "Launched the normative approach in which measures of behaviour are taken on large number of related averages are individuals and age computed to represent typical development. Using this procedure, Hall constructed elaborates questionnaires asking children of different ages almost every thing, they could tell about themselves interests, fears, imaginary playmates, dreams, friendship. everybody knowledge etc. Similarly, through observation and interviews of parents Gassel collected detailed normative information on the motor achievements, social behaviors and personality. Characteristics of infants and children. (13)

गेसेल ने भी *Infancy and Human growth* तथा *Guidance of metal growth* नामक पुस्तकों का प्रकाशन करवाया। इसके बाद अल्फ्रेड बिनेट (1857- 1911) ने अपने सहकर्मी के साथ मिलकर बालकों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को पहचानते हुये उनको उन्हीं के अनुसार विशेष कक्षाओं पर बल दिया है। इन्होंने मिलकर पहले 'Intelligence Test' की रचना की। बिनेट अपनी पुस्तक *Le development dc l'intelligences Chez les. Infants* में कहते हैं, "Intelligence as good judgement, planning and critical reflection. (94)

बीसवीं सदी के इन अध्ययनों में मनोवैज्ञानिकों ने पाया कि मात्र विभिन्न आयु के बालकों की आचरण एवं व्यवहार का अध्ययन पूर्ण नहीं है तथा यह भी अनुभव किया कि इस तरह की सीमित अध्ययनों से यह ज्ञात नहीं हो पाता कि किस बालक की उम्र बढ़ने के साथ उसके आचार व्यवहार की विशेषताओं में कौन से महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं एवं इन परिवर्तनों के प्रति उत्तरदायी कारक कौन से हैं।

1.4 बाल मनोविज्ञान के विकास के सोपान-

बालक के विकास को विभिन्न अवस्थाओं में विभाजित किया जाता है, जैसे- शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि। बालक की तीन अवस्थाओं में बाल मनोविज्ञान का महत्व एवं प्रभाव भिन्न भिन्न होता है। उसका इन विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक व मानसिक विकास की गति अलग-अलग होती है, साथ ही इस दौरान बालक में सामाजिक व्यवहार, व्यक्तिगत चरित्र, रचनात्मक गतिविधि, भाषा-ज्ञान तथा नैतिक एवं सदाचार के गुणों का विकास होता है।

क्रो एवं क्रो अपनी पुस्तक *Child Psychology* में कहते हैं:

Child Psychology is a scientific study of individual from his prenatal beginnings through the early stages of his adolescent development. The science of child Psychology deals with (i) the stages of growth and maturation, (2) the effects of environmental influences upon individual patterns of development, and (3) the Psychological and social interactions between a child and the other members of the society into which he is born and in which is reared. (6)

अर्थात् (बाल मनोविज्ञान अपने किशोरावस्था के विकास के शुरुआती चरणों के माध्यम से अपनी जन्मपूर्व शुरुआत से व्यक्ति का वैज्ञानिक अध्ययन है। बाल मनोविज्ञान से संबंधित है (1) विकास और परिपक्वता के चरणों (2) विकास के व्यक्तिगत पैटर्न पर पर्यावरणीय प्रभावों का प्रभाव और (3) एक बच्चे और अन्य सदस्यों के बीच मनोवैज्ञानिक और सामाजिक बातचीत, जिस समाज में वह पैदा हुआ है और जिसमें उसका पालन पोषण होता है।)

प्रसिद्ध बाल मनोविज्ञानी डी.आई. लाल ने अपनी पुस्तक *आधुनिक बाल मनोविज्ञान* में बाल विकास की पाँच अवस्थाएँ मानी है- "शैशवकाल- आरंभ से दो वर्ष तक,

पूर्वबाल्यावस्था दो से 6 वर्ष तक, बाल्यावस्था 6 से 10 वर्ष तक, आसक्तता नौ से दस तक किशोरावस्था-10 से 15 वर्ष तक। " (77-78)

बाल मनोविज्ञानी लाल जी राम शुक्ल के अनुसार:- बाल विकास की चार अवस्थाएँ है- "शैशवकाल (पांच वर्ष तक), बाल्यावस्था (पांच से बारह वर्ष तक), किशोरावस्था (बारह से उन्नीस वर्ष तक), प्रौढ़ अवस्था (उन्नीस से ऊपर)।" (203)

अनुराग वाजपेयी की पुस्तक *बाल विकास* में भारतीय दृष्टिकोण से विकास की पांच अवस्थाएँ मानी गई है, "शैवावस्था, बालयावस्था, किशोरावस्था, यौवनावस्था, वृद्धावस्था।" (84)

इसके अतिरिक्त अन्य बाल मनोविज्ञानियों- श्री. एम.ए. शाह, अनुराग वाजपायी, श्री चौबे आदि में भी बाल आयु स्तर को लेकर अलग-अलग मत है।

इस प्रकार आयु स्तर को लेकर अलग-अलग बाल मनोविज्ञानिकों ने बाल विकास की अवस्थाओं को अलग अलग अवस्थाओं में विभाजित किया है। लेकिन बच्चों के विकास की मूल प्रवृत्तियाँ इन्हीं चार अवस्थाओं (गर्भावस्था,शैशव, बाल, किशोर) में विशेष प्रकार से कार्य करती है। उनका मानसिक बौद्धिक, शारीरिक संवेगात्मक आदि हर प्रकार का विकास इन्हीं अवस्थाओं से गुजर कर होता है।

अत: बालक की आयु एवं अवस्था के विकास को निम्न सोपानों में विभक्त कर सकते हैं-

क) गर्भावस्था ख) शैशवावस्था ग) बाल्यावस्था घ) किशोरावस्था

क) **गर्भावस्था**- बाल मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बाल विकास का प्रारंभ गर्भावस्था से होता है। प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति भी इसका समर्थन करती है। इस अवस्था में बालक का गर्भ में भ्रूण अवस्था में विभिन्न अंगों का विकास होता है

जैसे- हाथ, पैर, फेफड़े, आँख , कान, नाक, पैर, सिर, त्वचा आदि। बालक के विभिन्न अंगों का विकास माँ की गर्भावस्था के दौरान इतना हो जाता है कि वह 7 माह का जन्म लेने पर भी जीवित रह सकता है। इस अवस्था के दौरान बालक का विकास उसको माता के गर्भ से मिलने वाले पोषण से होता है। गर्भावस्था के दौरान ही बालक बाह्य वातावरण से अनुक्रिया करना प्रारंभ कर देता है तथा वह इन अनुक्रियाओं के माध्यम से प्रतिक्रिया करता है, जिसकी अनुभूति उसकी माता के द्वारा की जा सकती है। गर्भावस्था की शुरुआत गर्भधारण से लेकर शिशु के जन्म तक की अवस्था होती है इसे तीन उप अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है-1) बीजावस्था 2) भ्रूण अवस्था 3) गर्भस्थ शिशु की अवस्था

पहले चरण में, बीजावस्था जिसमें जीव की रचना होती है। दूसरे चरण भ्रूण अवस्था जिसमें पहले शिशु के सिर का विकास, तत्पश्चात दूसरे अंगों का विकास होता है। शरीर के दूसरे अंगों का विकास 2 सप्ताह से 10 सप्ताह तक हो जाता है। तीसरा चरण गर्भस्थ शिशु की अवस्था जिसमें बालक की शारीरिक क्रिया शुरू हो जाती है, जिसका अहसास माता कर सकती है यह स्थिति बालक के जन्म तक चलती रहती है।

ख) **शैशवावस्था**- (जन्म से 5 या 6 वर्ष तक)

शैशवावस्था बालक के जन्म से लेकर 5 या 6 वर्ष की आयु तक को माना जाता है। अनुराग वाजपेयी की पुस्तक बाल विकास से उद्धृत प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक रॉस ने इस अवस्था को दो भागों में विभक्त किया है- "प्रथम अवस्था जन्म से तीन वर्ष तक और द्वितीय अवस्था 3 से 6 वर्ष तक।" (86) वैसे तो शैशवावस्था को सीखने का आदर्शकाल कहा जाता है। जे. एस. वालिया की पुस्तक *शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें* में से उद्धृत महान मनोवैज्ञानिक फ्राइड के अनुसार, "मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है वह चार पांच वर्ष की आयु में ही बन जाता है।" (71) यदि हम बाल विकास

के प्रथम स्तर पर बाल साहित्य की बात करें तो इस स्तर पर मौखिक बाल साहित्य ही अधिक प्रभावशाली रहता है। आरंभिक आयु में तो बच्चा लोगों को बोलते देखकर, उनके होठों को हिलता देखकर ही खुश होता रहता है। माताओं द्वारा बोले जाते शिशु गीत, लोरियाँ ही उनके मनोरंजन का प्रमुख साधन रहती है। माताएँ बच्चों को नहलाते, खिलाते, पिलाते समय कुछ न कुछ गुनगुनाती रहती है जिसे सुनकर बच्चे खुश होते रहते हैं। दो-तीन वर्ष तक की आयु के बच्चों को रंग-बिरंगे चित्रों वाली पुस्तकें अधिक लुभाती है।

सुरेश वीणा द्बवारा रचित भारतीय साहित्य कोश में कहा गया है, "बच्चा सबसे पहले दृश्य जगत से जुड़ता फिर धीरे-धीरे जब वह बैठने, रेंगने, चलने लगता है तब वह खिलौनों के संसार में प्रवेश करता है। गुड्डे गुड़िया, चूहे + बिल्ली शेर हाथी के खिलौने, रेत के घरौंदे आदि बच्चों में नाटकीय अभिवृत्ति का बीजारोपण करते है।" (353) यह अवस्था न केवल बालक के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है बल्कि इस अवस्था को मानव जीवन की आधारशिला माना जाता है। इस अवस्था में बालक का बहुआयामी विकास होता है। इस दौरान वह प्रथम बार बाह्य वातावरण के संपर्क में आता है एवं उसे स्वयं वातावरण के साथ समायोजन करना पड़ता है। यह वातावरण बालक के लिए माता के गर्भ की अपेक्षाकृत पूर्णतया भिन्न होता है। इस अवस्था में वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संपूर्ण रूप से दूसरों पर निर्भरता से लेकर स्वम् किसी कार्य को देखना, समझना एवं व्यावहारिक रूप से करना या करने का प्रयास सीखता है। शैशवावस्था के विकास को भी मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1 <u>शारीरिक विकास-</u>

इस अवस्था मेंजहाँ शिशु पहले वस्तुओं को पकड़ना, करवट बदलना, रेंगना, बैठना घुटनों के बल चलना आदि सीखता है फिर वह इन्हीं क्रियाओं के अभ्यास के माध्यम से दक्षता प्राप्त करता है। इस अवस्था में बालक स्वयं दो पैरों पर संतुलन बनाना सीखता है एवं फिर बिना सहारे के चलना प्रारंभ कर देता है।

2 <u>मानसिक विकास</u>-

शैशवावस्था में शिशु का सीखने का मुख्य माध्यम अनुसरण की क्रिया है। अनुसरण के द्वारा वह अपने संवेगों को प्रकट करना सीखता है। वह क्रोध के भाव को चिल्ला कर, रोकर वस्तुओं को फेंक कर अपने भाव प्रकट करता है। युसेन, आइजेक, वाटसन आदि मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि "नवजात शिशु में भय, क्रोध, स्नेह आदि संवेग प्रारंभ से ही पाये जाते हैं।"

शिशु सामान्यतया कर्कश आवाज, अंधेरा तथा भयभीत करने वाले चित्रों से डर का अनुभव करता है। यह अवस्था मानसिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अवस्था में वह अनुसरण एवं अभ्यास के माध्यम से अनेक कार्य करना सीखता है। आमतौर पर यह माना जाता है कि किसी बच्चे का मानसिक विकास उसके 5 वर्ष की आयु तक लगभग तीन चौथाई हो जाता है। इस अवस्था में शिशु अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हैं।

ग) **बाल्यावस्था-**

बाल्यावस्था बालक के 6 वर्ष से 12 वर्ष तक की आयु को माना जाता है। जे. वालिया अपनी पुस्तक *शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें* में कहते हैं, " यह किशोरावस्था के मध्य का समय होता है। इस अवस्था का समय 6 से 12 वर्ष तक का होता है।"

(74) बाल्यावस्था बालक के जीवन का स्वर्णिम एवं अनोखा काल है, जिसमें बालक का सर्वांगीण विकास होता है। यह अवस्था बालक के व्यक्तित्व के निर्माण के साथ-साथ उसकी विभिन्न आदतों, व्यवहार, रुचि एवं इच्छाओं का निर्माण से संबंधित विकास शामिल है।

पी. डी. पाठक की पुस्तक *शिक्षा मनोविज्ञान* में से उद्धृत कोलारस के अनुसार: "वास्तव में माता-पिता के लिए बाल विकास की इस अवस्था को समझना कठिन है ।" (117)

उपर्युक्त कथन से कह सकते हैं कि बाल्यावस्था में माता-पिता अपने बच्चे के व्यवहार, रुचि, संवेगों, आदि को अच्छे से नहीं समझ पाते। इस अवस्था को टोली या गैंग की अवस्था कहते हैं। इस अवस्था में वह या तो स्वतंत्र रहना पसंद करता है या फिर अपने आयु वर्ग के बच्चों के साथ टोली या समूह में रहना पसंद करता है। बाल्यावस्था में विकास को दो भागों में विभाजित किया जाता है-

1 <u>शारीरिक विकास-</u>

यह अवस्था बालक के जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं शारीरिक व मानसिक विकास की दृष्टि से स्थिरता की अवस्था है। इस अवस्था में बालक दूसरों पर निर्भर रहने की अपेक्षा आत्मनिर्भर बनता है। वह स्वयं खाना खाना, बाल संवारना, वस्त्र पहनना, पढ़ाई करना आदि सारे कार्य स्वयं ही करता है। शैशवावस्था में वह जिस कल्पना के संसार में जीता है, वह इस अवस्था में उससे बाहर निकल कर वास्तविक जगत में प्रवेश करता है। शैशवावस्था में जहाँ वह अपने तक ही सीमित रह कर अंतर्मुखी व्यक्तित्व का बनता है, वही बाल्यावस्था में वास्तविक जगत से रूबरू होकर बहिर्मुखी व्यक्तित्व का बनता है। वह समूह में कार्य करना पसंद करता है, जिससे उसमें नैतिक गुणों के साथ-साथ सामाजिक गुणों जैसे- सहयोग, सद्भावना, सहनशीलता

एवं आज्ञाकारिता का विकास होता है। भाई योगेंद्र्जीत की पुस्तक *विकासात्मक मनोविज्ञान* में से उद्धृत क्रो एवं क्रो के अनुसार: "बाल्यावस्था में बालकों में नैतिकता की सामान्य धारणाओं या नैतिक सिद्धांतों के कुछ ज्ञान का विकास हो जाता है।" (196)

इस अवस्था में बालक आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ साहस से परिपूर्ण व महत्वपूर्ण कार्य करके तरह-तरह के खोज या अन्वेषण करता है। इस अवस्था में बालक स्वतंत्र होकर कार्य करना चाहता है तथा परिश्रमी बनने की शुरुआत करता है। इस अवस्था में बालक मे शारीरिक परिवर्तन की गति बढ़ जाती है और उनमें इन परिवर्तनों से संबंधित प्रश्नों के जवाब जानने की उत्सुकता होती है। क्यों? कैसे? किसलिए? आदि प्रश्नों का जवाब ढूंढने के लिए वे लालायित रहते हैं । बालक में भाषा संबंधी कुछ कौशलों का अर्जन भी इसी अवस्था में होता है।

2 <u>मानसिक विकास</u>-

शैशवावस्था की बजाय बाल्यावस्था में बालक का मानसिक विकास अति तीव्र गति से होता है। स्मृति तीव्र होने के कारण नवीन बातों को बिना सोचे समझे बालक कंठस्थ कर लेता है। काल्पनिकता की दुनिया से बाहर निकल कर वास्तविक दुनिया में रूचि के अनुसार खेलना, कला के गुणों का प्रदर्शन करना, सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना आदि में रुचि लेने लगता है। इस अवस्था में बालक को नए रूपों में समायोजन की समस्या का सामना करना पड़ता है। बालक नए-नए कौशलों का प्रयोग करते हैं और नए नए कार्य खुद करने की कोशिश करते हैं। वह अपने संवेगों पर नियंत्रण करके अच्छी और बुरी भावना में अंतर करना सीखता है। इस अवस्था में बालक में संग्रह करने की प्रवृत्ति का विकास होता है। उनकी स्वतंत्रता का विरोध करने पर रूठ कर या

भागकर अपना विरोध व्यक्त करते हैं। इनमें ईर्ष्या की भावना इतनी प्रबल होती है कि वह दूसरे बच्चों का रहन-सहन खेलकूद तथा प्रवीणता यहाँ तक कि अपने ही परिवार के सदस्यों से भी ईर्ष्या कर सकते हैं। यह परिवार के सदस्यों की अपेक्षा अपनी आयु के बालकों के साथ घूमना ज्यादा पसंद करते हैं और वे एक ही समूह में रहकर सामाजिक आदर्श, साहस, नेतृत्व, न्याय, अनुशासन एवं सहयोग आदि गुणों को सीखते हैं।

डी. एन. वर्मा श्रीवास्तव व प्रीतिवर्मा की पुस्तक *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास* में क्रो एवं क्रो के अनुसार:

> संपूर्ण बाल्यावस्था में श्रमिकों की अभिव्यक्ति में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। बाल्यावस्था में संवेगों की संख्या में वृद्धि होती है। शैशवावस्था में 11 संवेग होते हैं। बाल्यावस्था में संवेगों की संख्या बढ़ जाती है। नए संवेगों में सामाजिकता का उदय होता है। इस अवस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति एवं प्रकटीकरण में भी अंतर पाया जाता है। (92)

घ) **<u>किशोरावस्था</u>-**

यह अवस्था बाल जीवन की अंतिम अवस्था है। किशोरावस्था को जीवन में स्वर्ण काल या बसंत काल की संज्ञा दी जाती है। जे.एस. वालिया की पुस्तक शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें में कहते हैं, "जीव विज्ञान के दृष्टिकोण से किशोरावस्था वह समय है जब यौवन आरंभ होता है। कालक्रम के अनुसार यह जीवन का वह भाग है जो 12वें वर्ष से 17-19 वें वर्ष तक होता है। किशोरावस्था को जीवन का सुनहरी काल भी कहा जाता है।" (78) यह अवस्था सामान्यत: 13 वर्ष से 19 वर्ष की आयु

तक होती है। इसमें 13 से 17 वर्ष की आयु पूर्व किशोरावस्था एवं 17 वर्ष से 19 वर्ष तक की आयु उत्तर किशोरावस्था कहलाती है। पूर्व किशोरावस्था बाल्यकाल के बाद से शुरू होकर उत्तर किशोरावस्था तक जाती है, तथा उत्तर किशोरावस्था की समाप्ति प्रौढ़ावस्था के प्रारंभ से होती है। व्यक्ति के विकास में इस अवस्था को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। डी.एन. श्रीवास्तव जी ने अपनी पुस्तक *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास* किशोरावस्था में किशोरावस्था को परिभाषित करते हुए कहा है, "उपद्रव या बवंडर या क्रंद या तूफान होने और प्रतिबल की अवधि के रूप में बहुधा किशोर अवस्था का वर्णन दिया जाता है। यह अवस्था जीवन के हर स्तर (शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक, ज्ञानात्मक आत्मा संबंधी या धार्मिक) पर बहुत अधिक परिवर्तन लाती हैं।" (93)

Adults are often described as a period of storm and stress distress brings about a lot of change on all levels of life physical emotional and cognitive appraisal and social.

अनुराग वाजपेयी की पुस्तक *बाल विकास* से उद्धृत शील्ड के शब्दों में- "किशोरावस्था वह समय है जिसमें विचारशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है।" (108)

किशोरावस्था में विकास को दो भागों में विभाजित किया गया हैं- शारीरिक विकास एवं मानसिक विकास

1 <u>शारीरिक विकास</u>-

इस अवस्था में लड़की लड़कियों का शारीरिक विकास भिन्न रूप में होकर पूर्णता को प्राप्त करता है।

2 मानसिक विकास-

इस अवस्था में किशोरों की अभिरुचि में परिवर्तन आने लगता है। वे प्रकृति के रहस्यों के प्रति अधिक जिज्ञासु हो जाते हैं, एवं तार्किक माध्यम से उन्हें जानने का प्रयास करते हैं तथा उन्हें संसार की प्रत्येक वस्तु में कुछ नया अर्थ एवं आयाम दिखाई देने लगते हैं। उन्हें उचित अनुचित की परख नहीं होने के कारण कभी कभार गलत संगत में पड़कर अपने जीवन के लक्ष्य से भटक जाते हैं इस अवस्था में मस्तिष्क की अपेक्षा मन को अधिक महत्व देने के कारण वे अक्सर दुविधा में फंस जाते हैं। जीवन के प्रति व्यावहारिक होने की बजाय कल्पना लोक में अधिक विचरण करते हैं इस कल्पना के कारण ही उनमें अपने भविष्य के प्रति दिवास्वप्न (Day Dream) देखने की प्रवृत्ति आ जाती है। इस अवस्था में वे विषमलिंगी के प्रति अधिक आकर्षित होने के साथ उनमें प्रेम भावना बढ़ने लगी है।

1.5 बाल मनोविज्ञान को प्रभावित करने वाले कारक

बालक शैशवावस्था से किशोर अवस्था तक विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक विकास की प्रक्रियाओं से गुजरता है। आमतौर पर बालकों की शारीरिक वृद्धि में सामान्य अंतर देखने को नहीं मिलता और जो अंतर होता है, उसे उस बालक विशेष की प्रजाति एवं वंशानुक्रम को वैज्ञानिक अध्ययन के माध्यम से समझा जा सकता है। परंतु किसी भी बालक का मनोवैज्ञानिक विकास जिसे हम बाल मनोविज्ञान के नाम से भी जानते हैं, जिसमें विभिन्न बालकों के विकास को समझने के लिए बहुत से बाह्य कारक उत्तरदायी होते हैं। बाल मनोविज्ञान के अध्ययन के माध्यम से हम यह जान पाते हैं कि किसी बालक की परवरिश किस परिवेश में, किस सामाजिक भूगोल

के सांस्कृतिक वातावरण में हुई है? उसकी शिक्षा-दीक्षा का माध्यम क्या रहा है? सांस्कृतिक रीति रिवाज क्या रहे हैं? और समाज में कौन-कौन से कार्य ने उनके मन को प्रभावित किया है?

रमन सिंन्हा ने अपनी पुस्तक *बाल विकास मनोविज्ञान* में मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन इस प्रकार किया है:

> भिन्न-भिन्न प्रकार के कारक मानसिक विकास को प्रभावित करते हैं। कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्न प्रकार से हैं-
>
> 1. वंशानुक्रम का प्रभाव
>
> 2.परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का प्रभाव
>
> 3. वातावरण का प्रभाव
>
> 4. माता-पिता अथवा शैक्षिक पृष्ठ भूमि का प्रभाव
>
> 5. शारीरिक स्वास्थ्य का प्रभाव 6. विद्यालय का प्रभाव
>
> 7. आस पड़ोस का प्रभाव 8. समाज का प्रभाव
>
> 9. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रभाव 10. पाठ्यक्रम का प्रभाव
>
> 11. भौगोलिक वातावरण का प्रभाव 12. शिक्षक व्यवहार का प्रभाव
>
> 13. कठोर अनुशासन का प्रभाव 14. सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव
>
> 15. शिक्षक पद्धतियों का प्रभाव (44)

जानकी मूरजानी, दर्शन कौर नारंग व मणिका मोहन ने अपनी पुस्तक *बाल विकास का मनोविज्ञान* में बालक के विकास को प्रभावित करने वाले तत्वों का वर्णन इस प्रकार किया है:

1. बालक के विकास पर परिवार का प्रभाव
2. बालक के विकास पर विद्यालय का प्रभाव
3. बालक के विकास पर समाज का प्रभाव
4. बालक के विकास पर संस्कृति का प्रभाव
5. बालक के विकास पर मास मीडिया का प्रभाव (181)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर किसी भी बालक के मनोविज्ञान को प्रभावित करने वाले कारकों को हम प्रमुखत: पाँच भागों में बाँट सकते हैं-

1.5.1 वंशानुक्रम कारक 1.5.2 परिवेशगत कारक

1.5.3 सामाजिक कारक 1.5.4 सांस्कृतिक कारक

1.5.5 भौगोलिक कारक

1.5.1 वंशानुक्रम कारक

वंशानुक्रम कारक सृष्टि में पाए जाने वाले सभी प्राणियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये उनके जन्म से प्रारंभ होकर संपूर्ण जीवनचक्र को समाहित करते हुए जब जीवन के अंत तक जो जीविकोपार्जन के लिए वे लक्षण, प्रक्रिया, उद्देश्यों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होता है एवं ये प्रक्रिया अनेक पीढ़ियों तक अनवरत चलते रहना ही वंशानुक्रम है। मानव इस सृष्टि का श्रेष्ठ सामाजिक प्राणी है। उसके लिए

वंशानुक्रम और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। उसने सामाजिक संरचना को अपने विवेक के सामर्थ्य के अनुसार विश्व के विभिन्न विश्व में विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार से समाज के ताने-बाने को बुना और यही संरचना जब पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती गई और बालकों का मनोविज्ञान प्रभावित हुआ जिसका स्रोत वंशानुक्रम है।

जगदानंद पांडे जी अपनी पुस्तक बाल मनोविज्ञान में वंशानुक्रम को दो भागों में विभाजित करते हुए कहते हैं:

जातीय गुणों को बच्चे अपने माता-पिता या पूर्वजों से प्राप्त करते हैं और अर्जित (Acquired) गुणों को अपने जीवन के अनुभव से। इस प्रकार जब वे अपने गुणों को अपने माता-पिता से या पूर्वजों से प्राप्त करते हैं तो उन्हें हम वंशनुक्रम से प्राप्त करते हैं। किंतु जो गुण पूर्व पुरुषों से प्राप्त न होकर अनुभव से प्राप्त होते हैं उन्हें अर्जित गुण कहते हैं दूसरे शब्दों में हम वंश श्रृंखला को ही वंशानुक्रम कह सकते हैं। (20)

डॉ डी. एन. श्रीवास्तव एवं डॉ प्रीति वर्मा की पुस्तक बाल मनोविज्ञान: बाल विकास से उद्धृत पीटरसन के अनुसार, "व्यक्ति को उसके माता-पिता के द्वारा उसके पूर्वजों से जो प्रभाव(Stock) प्राप्त होता है, वही उसका वंशानुक्रम है।" (54)

"Heredity may be defined as what are gets from his ancestral stock through his parents."

एस पी चौबे ने अपनी पुस्तक बाल विकास मनोविज्ञान के मूल तत्व में वंशानुक्रम को परिभाषित करते हुए कहा है, "वंशानुक्रम का तात्पर्य - बीज-कोषों के वितरण से शारीरिक बनावट और विभिन्न योग्यता का निर्धारण, वंशानुक्रम पूर्वजों के सदृश्य उत्पन्न करने वाली और जाति की स्वाभाविक परम्परा को जीवित रखने वाली प्रक्रिया।" (54)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि किसी भी प्राणी को जो गुण, जो योग्यताएँ, जो शारीरिक बनावट अपने माता-पिता से प्राप्त होते हैं वही वंशानुक्रम है। बालक के मनोविज्ञान पर वंशानुक्रम का प्रभाव होता है लेकिन फिर भी उस बच्चे का जिस तरह के परिवेश में पालन पोषण होता है उसका भी गहरा प्रभाव उसके मनोविज्ञान पर पड़ता है।

1.5.2 परिवेशगत कारक:

जन्म के समय बालक का मन एक कोरे कागज की तरह होता है। उसका पालन-पोषण जिस तरह के परिवेश या वातावरण में होता है, उसका मनोवैज्ञानिक विकास भी उसी पर आधारित होता हैं। परिवेश का अर्थ है- किसी भी प्राणी के आसपास का वातावरण, जहाँ वह रहता है, जिसके भी संपर्क में आता है, उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। डॉ डी एन श्रीवास्तव और डॉ. प्रीति वर्मा अपनी पुस्तक बाल मनोविज्ञान: बाल विकास को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

व्यक्ति के चारों और जो कुछ भी है वही उसका वातावरण या पर्यावरण है। वातावरण एक अत्यंत व्यापक शब्द है। इसमें वे सभी कारक सम्मिलित होते हैं जो वातावरण में उपस्थित होते हैं और जो प्राणी के व्यवहार, स्वभाव, विकास या संपूर्ण जीवन को प्रभावित करते हैं जैसे सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सामाजिक स्थिति, परिवार, पोषण, विद्यालय आदि। (64)

उस वातावरण का प्रभाव उसके जीवन मूल्यों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। विशेषकर मानसिक रूप से वह अपने परिवेश से अधिक प्रभावित होता है इस परिवेश का प्रभाव उस प्राणी पर उसके बाल्यकाल से ही पड़ना प्रारंभ हो जाता है।

जी. मरफी अपनी पुस्तक *An Introduction to Psychology* में मनोविज्ञान पर परिवेशगत कारक के प्रभाव का समर्थन करते हुए कहते हैं: "Psychology, as we define it, is the science that studies the responses which living individuals make their environment." (2)

अर्थात् मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो जीवित प्राणियों की उन प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है जो वे अपने परिवेश के प्रति करते हैं।

देवराज उपाध्याय अपनी पुस्तक *आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान* में कहते हैं: "सर्वप्रथम बच्चा वस्तु से प्रभावित होता है। इसके पश्चात किसी सन्वेग का अनुभव करता है और अंत में उसके अनुसार क्रिया अथवा प्रतिक्रिया करता है।" (79)

जगत नारायण लाल की पुस्तक *मानव विकास का मनोविज्ञान* में वाटसन के अनुसार:

> तुम मेरे पास एक दर्जन बालकों को लाओ और उनके उचित विकास के लिए मेरा मनचाहा वातावरण उपस्थित करो। मैं दावे के साथ कहता हूँकि उनमें से किसी एक बालक को चुनकर उसे डॉक्टर, वकील, कलाकार, सौदागर, नेता ही नहीं भिखारी या चोर कुछ भी बना सकता हूँ। चाहे उसके भीतर किसी भी प्रकार की योग्यता क्यों न हो। (72)

बालक का जिस परिवार में पालन पोषण होता है उस परिवेश में उसके माता पिता, उसके दादा-दादी और अन्य परिवार जनों का भी उसकी मानसिकता पर प्रभाव पड़ता है और यह सब न सिर्फ उनके परिवॉर से संबंधित होता है बल्कि उसके स्कूल से भी संबंधित है, इस तरह से हम परिवेशगत कारक को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित कर सकते हैं: 1) परिवार 2) स्कूल

1.5.2.1 परिवार

बालक जन्म के पश्चात सर्वप्रथम अपने परिवार के ही संपर्क में आता है या फिर कह सकते हैं माँ बाप के बिना बच्चे का जन्म ही संभव नहीं है। इसीलिए कहा गया है कि बच्चे की प्रथम गुरु मां होती है।

डॉ. डी एन श्रीवास्तव एवं डॉ. प्रीति वर्मा ने अपनी पुस्तक *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास* में बालक के जीवन में परिवार को महत्व देते हुए कहा है:

बालक के व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में भी परिवार का महत्व है। बालक को माँ से वंचित रखकर (Maternal Deprivation) जो अध्ययन हुए हैं, उनसे यह तथ्य प्रकाश में आया है कि बालक के विकास पर प्रारम्भिक पारिवारिक अनुभवों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जन्म के बाद बालक का पहला वातावरण परिवार ही है। यही वातावरण बालक में सर्वप्रथम कुछ अभिवृत्तियों का निर्माण करता है। (439)

"घर, कुटुम्भ अथवा परिवार मानव समाज की प्राचीनतम एक आधारभूत इकाई है। यह एक ऐसा समूह हैं जिसमें बूढ़े, जवान, बच्चे सब मिलकर एक ही छत के नीचे रहते हैं। प्राचीन व आज के युग में भी नौकरों को परिवार का ही अभिन्न अंग समझा जाता है। 'परिवार' शब्द अंग्रेजी के 'Family' शब्द की उत्पत्ति 'Famulus' शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ है नौकरों ।

Chetna Bharti की पुस्तक Sociological Bases of Education से उद्धृत क्लेरीस के अनुसार, क्लेरीस के अनुसार, "By family we mean a system of relationship existing between parents and children." (14) अर्थात् (परिवार द्वारा हमारे बीच सम्बन्ध की एक प्रणाली का मतलब है माता-पिता और बच्चे ।)

1.5.2.2 स्कूल

समाज में प्रतिष्ठा दिलाने के लिए विद्यालय की एक अहम भूमिका होती है। अलग-अलग स्कूलों, पाठशालाओं में कार्य करने का ढंग अलग अलग होता है। जैसे कुछ विद्यालय प्रजातंत्रात्मक वातावरण पर आधारित होते हैं जिसमें छात्र एवं शिक्षक मिलकर कार्य करते हैं, जिससे छात्रों में प्रेम की, त्याग की, सहयोग की, अध्यापक के प्रति सम्मान की भावना का विकास होता है। वहीं दूसरी तरफ कुछ विद्यालयों में निरंकुशवादी वातावरण होने के कारण अध्यापक की प्रधानता होती है। वहाँ का प्रत्येक कार्य शिक्षक के अनुसार होता है। जिससे छात्रों में विद्रोह की भावना का विकास होता है। अपने सहपाठियों से लड़ना तो विद्यार्थियों का स्वभाव बन जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे विद्यालयों में विद्यार्थियों का आना कम हो जाता है।

“ विद्यालय के लिए अंग्रेजी भाषा का 'School' शब्द प्रयुक्त होता है। 'अंग्रेजी शब्द 'School' की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Skohe' से हुई है, जिसका अर्थ है 'प्रकाश' । अर्थात् विद्यालय एक ऐसी संस्था है, जो बालक को अंधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर लेकर जाती है।"

जॉन ड्यूई की पुस्तक *Democracy and Education* के अनुसार, "विद्यालय एक ऐसा विशेष वातावरण है, जहाँ जीवन के गुणों, क्रियाओं और व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से ही दी जाती है ताकि बालक का विकास इच्छित दिशा में हो सके।” (144)

विजय सूद की पुस्तक *आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा* से उद्धृत ओटावे के अनुसार, "स्कूल एक ऐसा सामाजिक आविष्कार है जो युवकों के विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से समाज की सेवा करता है।” (248)

एक अन्य स्थान पर रॉस के अनुसार, "विद्यालय वे संस्थाएँ हैं, जिनको सभ्य व्यक्तियों द्वारा बच्चों को समाज की सुव्यवस्थित एवं योग्य सदस्यता के लिए तैयार करने के उद्देश्य से स्थापित किया जाता है। "

1.5.3 सामाजिक कारक:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अरस्तु ने कहा है: यदि कोई व्यक्ति समाज के बिना रह सकता है तो या तो वह देवता है या फि------; व्यक्ति अपना संपूर्ण विकास इसी समाज में रहकर करता है। वह समाज के ऊंच-नीच, रीति-रिवाज, पूजा, आराधना, रहन-सहन, खान-पान आदि सभी पहलुओं से प्रभावित होता है। वह इसी समाज से उचित अनुचित के अंतर को समझता है, और वह व्यक्तिगत एवं सामाजिक हितों में सामंजस्य स्थापित करना सीखता है। उस व्यक्ति की अधिगम की प्रक्रिया शैशवावस्था से प्रारंभ होकर जीवन पर्यंत चलती रहती है। एक बालक का पालन पोषण जिस तरह के सामाजिक परिवेश में होता है, बच्चा भी उसी तरह का बनता है। यदि समाज से बच्चों को अलग कर दिया जाए तो ना केवल बहरे और गूंगे होते हैं बल्कि बहुत कुछ पशुओं जैसा व्यवहार भी करते हैं।

पी. वी. ल्यूकन अपनी पुस्तक *Mental Hygiene in Public Health* में कहते हैं:

> मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति वह है जो स्वयं सुखी है, जो अपने पड़ोसियों में शांतिपूर्वक रहता है, अपने बच्चों को स्वस्थ नागरिक बनाता है और इस आधारभूत कर्तव्य को करने के बाद भी जिसमें इतनी शक्ति बच जाती है कि वह समाज के हित के लिए कुछ कर सके। (66)

प्रकाश मनु की पुस्तक हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास से उद्धृत स्ट्रेंग के अनुसार:

> बालक स्वयं को अति विशाल संसार में पाता है और उसके बारे में शीघ्रातिशीघ्र जानकारी प्राप्त करना चाहता है। सर्वप्रथम बालक के मनोभावों को समझने का श्रेय माता को ही होता है। माता बालक के मनोभावों एवं विचारों को भलीभांति परखने की क्षमता रखती है। वह जानती है बिना कहे भी शिशु क्या करने की चेष्टा कर रहा है और वह उसकी पूर्ति भी यथासंभव करती रहती है। (154)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि एक बालक समाज में रहकर आदर्शवादी व सुसंस्कारी मनुष्य बनता है। वह समाज में रहकर सबसे प्रेम प्रीति का भाव रखना, मिलजुल कर रहना, समाज के लिए बेहतर कार्य करना सीखता है और समाज में रहते हुए वह एक श्रेष्ठ नागरिक बनता है।

1.5.4 सांस्कृतिक कारक:

मानवीय इतिहास में अनेक सभ्यताओं का उत्थान एवं पराभव हुआ है। इनमें कुछ सभ्यताएँ दीर्घकालीन रही हैं, तो कुछ सभ्यताएँ तुलनात्मक रूप से इतने समय तक सक्रिय नहीं रही। सभी सभ्यताओं में व्यक्ति ने अपने व्यक्तिगत अस्तित्व से आगे बढ़कर विभिन्न स्तरों से जुड़ते हुए समाज का निर्माण किया है। इस सामाजिक रचना की प्रक्रिया के दौरान सभ्यताओं ने वहाँ की अपनी विशेष संस्कृति विकसित की है। कालांतर में ये सांस्कृतिक विरासत व्यक्तियों के जीवन में महत्वपूर्ण कारक बन गई। कोई भी व्यक्ति न सिर्फ उस संस्कृति से प्रभावित होता है बल्कि उसे अपने जीवन काल में संजोने के साथ-साथ अगली पीढ़ी को स्थानांतरित भी करना चाहता है।

धीरेंद्र वर्मा अपने *हिन्दी साहित्य कोश* में संस्कृति के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहते हैं: "संस्कृति शब्द सम उपसर्ग के साथ संस्कृति की (डु) कृ (अ) धातु से बनता है जिसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है।" (868)

रामधारी सिंह दिनकर अपनी पुस्तक *संस्कृति के चार अध्याय* में कहते हैं:

> संस्कृति जिंदगी का तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिस में हम जन्म लेते हैं। इसलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज में हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी है। संस्कृति हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए हैं। (655)

समाज में व्यक्ति की पूरी जीवन शैली व उसके जीवन का हर पहलू संस्कृति का परिचय देता है। संस्कृति के द्वारा मनुष्य समाज में अनुकूलन स्थापित करने के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाता है। जहाँ एक तरफ मनुष्य के मनुष्यत्व का विकास करती है, वहीं दूसरी तरफ उसके मस्तिष्क के रंग राग का भी प्रकाश करती है। मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी वास्तविकता संस्कृति है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपनी पुस्तक *विचार-प्रवाह* में मनुष्य की विभिन्न साधनों की सर्वोत्तम परिणिति को संस्कृति मानते हैं। (25)

बाल्यावस्था में बच्चों का मन, उनके विचार, उनके भाव अत्यधिक सुकोमल एवं जिज्ञासाएँ अद्भुत होती है। उसकी ग्रहण करने की क्षमता अधिक होने के साथ-साथ सर्वाधिक अद्वितीय होती है। इस कच्ची उम्र में उसके संस्कार सुदृढ़ तथा स्थाई होते हैं। बालक के अंदर अथाह शक्ति एवं ऊर्जा के कारण उसका उचित प्रयोग आवश्यक है। वे अपनी इसी शक्ति से विश्व और राष्ट्र को भी शक्तिशाली बनाकर सतत् प्रशंसनीय एवं सम्मान प्रदान करते हैं।

1.5.5 भौगोलिक कारक:

मानवीय सभ्यताएँ पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों में विकसित हुई तथा उनका अपना विकास क्रम भी रहा। इन सभी सभ्यताओं के उत्थान में भौगोलिक कारकों का प्रभाव

बहुत अधिक रहा है। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों का वातावरण अलग-अलग रहा है और इस वातावरण के प्रत्यक्ष प्रभाव व्यक्ति की मानसिक व शारीरिक विकास पर पड़ा है। व्यक्ति की शारीरिक संरचना जैसे- रंग-रूप, कद-काठी का अंतर आसानी से परिलक्षित होता है। दूसरी तरफ भौगोलिक कारकों का मानव के मन मस्तिष्क पर भी पड़ा है। उसे क्षेत्र विशेष की रीति-रिवाज, परम्पराएँ एवं संस्कृति के माध्यम से समझा जा सकता है। ये प्रभाव व्यक्ति के बाल्यकाल से ही परिलक्षित होने लगते हैं।

एस.पी. चौबे अपनी पुस्तक *बाल विकास मनोविज्ञान के मूल तत्व* में कहते हैं:

> पौराणिक कथाएँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि प्राकृतिक वातावरण व्यक्ति के विकास को कितना अधिक प्रभावित करता है। आज जो विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में रहने वाली जातियाँ हैं, उनका रंग, स्वरूप, कद, रहन-सहन समान नहीं हैं। यह भेद उनकी पृथक-पृथक प्राकृतिक वातावरण के कारण उत्पन्न होता है। प्राकृतिक वातावरण का प्रभाव मनुष्य के रंग स्वभाव और रूप पर विशेष रूप से पड़ता है। कहीं के लोग काले, कहीं के गोरे और कहीं के भूरे रंग के होते हैं। कुछ चुस्त, शक्तिशाली और क्रियाशील होते हैं तो कुछ आलसी होते हैं। किसी जाति के लोगों की नाक चपटी, कद छोटा, शरीर गठा हुआ या ढीला होता है। रूप, रंग और स्वभाव के अतिरिक्त प्राकृतिक वातावरण का प्रभाव व्यक्ति की ज्ञानेंद्रियों की रचना पर भी पड़ता है। (49)

सरयू प्रसाद चौबे अपनी पुस्तक *शिक्षा मनोविज्ञान* में कहते हैं:

> प्राकृतिक वातावरण का मनुष्य के स्वास्थ्य, रूप-रंग, स्वभाव, इंद्रिय-विकास, रहन-सहन और क्रियाशीलता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ ठंडी जलवायु के लोग गर्म जलवायु के लोगों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील और स्वस्थ रहते हैं। मनुष्य के इंद्रिय-विकास के आधार पर उसकी विविध शक्तियों

> का विकास हुआ करता है। इंद्रियों के विकसित होने पर ही व्यक्ति वातावरण की उत्तेजना से प्रभावित हुआ करता है और अपना विकास करने में समर्थ होता है। (50)

सरयू प्रसाद चौबे एक अन्य स्थान पर कहते हैं:

> बालक के शारीरिक विकास को उसका भौतिक पर्यावरण महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। स्थान विशेष की जलवायु, वातावरण आदि शारीरिक विकास में महत्व रखते हैं। जब तक उपयुक्त हवा, पानी, रोशनी आदि प्राप्त नहीं होती, तब तक बालक का स्वस्थ शारीरिक विकास सामान्य ढंग से नहीं हो सकता। (431)

यद्यपि सभी प्राणियों की मूल आवश्यकताएँ लगभग समान होती है। किंतु भौतिक वातावरण के परिणामस्वरुप उनकी पूर्ति भिन्न-भिन्न ढंग से की जाती है। उदाहरणार्थ यदि हमारा लालन-पालन एस्किमो वाली निवासियों या किसी अन्य सांस्कृतिक समूह में किया होता, तो हमारा व्यक्तित्व बिल्कुल दूसरा होता। हमारी न केवल वेशभूषा, भोजन, घर, सामाजिक प्रथाएँ ही भिन्न होती अपितु जीवन और जगत तथा उसमें हमारे स्थान के संबंध में भी हमारी धारणा कुछ और ही होती। हमारे शरीर का विकास भी भौगोलिक वातावरण पर निर्भर करता है। इसी के कारण पहाड़ी इलाके के लोग गोरे व कद में छोटे होते हैं, जबकि भारत के दक्षिणी इलाके के लोग काले व लंबे होते हैं।

जानकी मूरजानी, दर्शन कौर नारंग व मणिका मोहन अपनी पुस्तक *बाल विकास का मनोविज्ञान* में कहते हैं: "व्यक्ति के व्यक्तित्व पर भौतिक वातावरण का भी बहुत प्रभाव पड़ता है। भौतिक वातावरण से तात्पर्य वहाँ की जलवायु, प्रकृति आदि से है। पहाड़ों में रहने वाले लोग अधिक परिश्रमी और साहसी हो जाते हैं।" (207)

1.5.6 ऐतिहासिक कारक

ऐतिहासिक कहानियों की रचना इतिहास के आधार पर की जाती है। मूलत: यह कहानियाँ इतिहास का प्रतिबिंब होती है। इन कहानियों में इतिहास के साथ-साथ कल्पना का समावेश भी किया जाता है। इन कहानियों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है। प्रथम में वे कहानियाँ आती है, जिसमें घटनाओं का कालखंड के अनुसार वर्णन किया जाता है। तथा द्वितीय प्रकार में वे कहानियाँ आती है जिनमें व्यक्ति विशेष के चरित्र का वर्णन किया जाता है। ये चरित्र, इतिहास के महापुरुषों के कार्यों एवं उनके जीवन परिचय से ओत प्रोत होते हैं। ऐतिहासिक कहानियों में मुख्यता कहानी के नायक-नायिका, राजा-रानी होते हैं एवं लेखन का उद्देश्य राजा रानी के माध्यम से बच्चों को ऐतिहासिक परिदृश्य से परिचित कराना होता है। जिससे बच्चों में वीरता, अदम्य साहस, अनुशासन, त्याग, कर्तव्यपरायणता, सामाजिक जिम्मेदारी, भाईचारा, अपनत्व की भावना आदि गुणों का विकास होता है।

1.5.7 पौराणिक कारक

पौराणिक कथाओं की तुलना अंग्रेजी के शब्द मिथोलॉजी को माना जाता है। अंग्रेजी में यह शब्द ग्रीक भाषा से आया है। जिसका अर्थ है- पौराणिक कहानी। जिनमें मुख्यत: अलौकिक किरदारों का वर्णन किया जाता है तथा उन प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने के प्रयास किए जाते हैं, जिनका मनुष्य के पास तर्कसंगत जवाब नहीं था, जैसे मनुष्य का जन्म कैसे हुआ? पृथ्वी कैसे बनी? आदि। इन प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने कुछ कहानियाँ गढ़ी जिन्हें 'मिथ' कहा जाता है। पुराणों का विषय मुख्यतः सृष्टि की रचना ही रहता है। स्वयं पुराणों में ही पुराणों के पांच लक्षण बताए गए हैं-

1सर्ग अर्थात सृष्टि का विज्ञान

2 प्रतिसर्ग अर्थात सृष्टि का विस्तार एवं लक्ष्य

3 सृष्टि की आदि वंशावली

4 मनवंतर

5 वंशानुचारित

1.5.8 वैज्ञानिक कारक

आज के इस वैज्ञानिक युग एवं तेजी से बदलती दुनिया में वैज्ञानिक साहित्य का ज्ञान होना एक बहुत बड़ी जरूरत के साथ-साथ चुनौती भी बन गया है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में संभावित परिवर्तनों के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति का कार्य विज्ञान कथा साहित्यद्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से किया जा रहा है। बाल कथा साहित्य में बालकों की वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने के साथ-साथ उनके भीतर रूढ़ियों व अंधविश्वासों के प्रति भय को दूर करने का अथक प्रयास किया जाता है। रविंद्र प्रसाद राय अपनी पुस्तक *वैज्ञानिक अनुसंधान और अविष्कार* में विज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं: "विज्ञान प्रकृति के रहस्यों का वह सुसंगठित एवं व्यवस्थित ज्ञान है जिसे हम प्रयोगों के आधार पर प्राप्त करते हैं।" (1)

1.5.9 काल्पनिक कारक

बालक के मन में नई-नई जिज्ञासाऐं, बहुत से प्रश्न उठते रहते हैं। जब इन प्रश्नों के उत्तर उन्हें नहीं मिल पाते, तब उनका गतिशील दिमाग अपनी कल्पना शक्ति से

उनका उत्तर तलाशने की कोशिश करता है। फिर चाहे वह यथार्थता से कोसों दूर क्यों न हो। जब बात बाल कथा साहित्य की बात चल रही हो तब कल्पना बाल साहित्य की प्रमुख माँग बन जाती है बाल साहित्य को रुचिकर व मनोरंजन बनाने के लिए, अमूर्त को मूर्त रूप देने के लिए कल्पना एक प्रमुख माँग बन जाती है।

1.5.10 नैतिक कारक

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज में जीवन यापन हेतु सौहार्द, भाईचारा, अपनापन एवं व्यवहार कुशल व्यक्तित्व का धनी होना चाहिए। अर्थात किसी व्यक्ति को सामाजिक समरसता बनाये रखने हेतु ऐसी नीतियों का सहृदय से पालन करना चाहिए, जो कि समाज को एकजुट एवं प्रगतिशील बनाए रखें। जैसे कहा जाता है ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है: Honesty is the best policy.इसी प्रकार भारतीय समाज से मिली वसुदेव कुटुंबकम की नीति का वैश्विक स्तर पर पालन किया जाए तो संपूर्ण वैश्विक समाज को एक धागे में पिरोया जा सकता है। समाज के द्वारा कालांतर में विकसित इन नीतियों के अनुसार मानव द्वारा आचरण किया जाना नीति प्रति व्यवहार कहलाता है। विभांशु दिव्याल अपनी पुस्तक *नैतिकता के नए सवाल* में नैतिकता को परिभाषित करते हुए कहते हैं: "मनुष्य जाति के हित और अहित को पहचानने, अहितकारी का निषेध करने और हितकारी को बढ़ावा देने के विवेक का नाम नैतिकता है।" (40)

1.6 अनुदित हिन्दी कथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: कलात्मक संदर्भ

किसी भी कृति को सुंदर तरीके से पाठक के सामने प्रस्तुत करना उस कृति का कलात्मक संदर्भ कहलाता है। उस कृति में, उस रचना में, किस तरह की भाषा का प्रयोग किया गया है, किस तरीके से, किस ढंग से, कौन सी शैली में उसको लिखा गया है, यह उस कृति के कलात्मक पक्ष को उजागर करते हैं। आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा

संपादित *प्रमाणित हिन्दी कोश* में कलात्मक को इस तरह से परिभाषित किया गया है: "जिसमें कला का सुंदर प्रदर्शन हो या कलापूर्ण।" (143)

अतः हम कह सकते हैं कि किसी भी कृति को सुघड़ भाषा एवं सुंदर तरीके से, सहज तरीके से प्रस्तुत करना वह उस कृति का कलात्मक संदर्भ कहलाता है। कलात्मक संदर्भ में दो पक्ष सम्मिलित होते हैं- पहला भाषा पक्ष दूसरा शैली पक्ष।

1.6.1 भाषा पक्ष

भाषा के माध्यम से ही कथाकार अपनी कथा को एक सुघड़, संप्रेषणीय तथा सशक्त तरीके से प्रस्तुत कर सकता है। आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित *प्रमाणित हिन्दीकोश* में भाषा को इस तरह से परिभाषित किया है: " भाषा- 1) मुँह से निकलने वाली व्यक्त ध्वनियों या सार्थक शब्दों और वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरे पर प्रकट किए जाते हैं, बोली, जबान, वाणी। 2) किसी देश के निवासियों में प्रचलित बातचीत करने का ढंग, बोली। " (663)

धीरेंद्र वर्मा द्वारा संपादित *वृहत हिन्दी शब्दकोश* में भाषा को इस तरह से परिभाषित किया है: " भाषा- 1) भाष्+ अ+ टाप् 2) बोलकर, लिखकर या ध्वनि संकेतों में भावों और विचारों को प्रकट करने का साधन, मनुष्यों के परस्पर विचार-विनिमय में प्रयुक्त ध्वनि-चिन्हों की समष्टि। " (1874)

1.6.2 शैली

जब कोई लेखक किसी साहित्यिक रचना में प्रयुक्त की गई भाषा के माध्यम से रचना में अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है, तो अभिव्यक्ति का यह माध्यम ही शैली कहलाता है। आचार्य रामचन्द्र वर्मा अपने *प्रमाणिक हिन्दी कोश* में शैली को परिभाषित करते हुए कहते हैं: "शैली : १) चाल, ढ़ब, ढ़ंग 2) प्रणाली ३) रीतिप्रथा, रिवाज ४) वाक्य

रचना' का वह विशिष्ट प्रकार जो लेखक की भाषा-संबंधी निजी विशेषताओं का सूचक होता है। (स्टाइल)" (858)

हरदेव बाहरी अपने *हिन्दी शब्दकोश* में शैली को इस तरह से परिभाषित किया है- "शैली: 1) ढंग, तरिका 2) साहित्यिक विचार प्रकट करने का ढंग। जैसे - भारतेन्दु की काव्य और गद्य शैली) 3) वस्तु निर्माण का कलापूर्ण ढंग । जैसे-युगल शैली, पहाड़ी शैली।" (780)

उपर्युक्त सिद्धांतों का अध्ययन करने पर हम कह सकते हैं कि शैली का अर्थ है: एक साहित्यकार द्वारा अपने साहित्य को प्रस्तुत करने का ढंग या तरीका। जब कोई लेखक अपने विचारों को स्वयं के व्यक्तिगत विशिष्ट कौशल के माध्यम से शब्दों में जो तालमेल पैदा करता है और पाठक तक अपने विचारों को जिस भाव में वह व्यक्त करना चाहता , उसी भाव में पहुँचानेमें सक्षम होता है, तब लेखक द्वारा विचारों का ये प्रकटीकरण का तरीका ही शैली है।

1.7 मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

समाज का निर्माण व्यक्ति, परिवार तथा इनको जोड़ने वाले सामाजिक रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, राजनीतिक स्वरूप से मिलकर होता है। समाज में प्रचलित प्रथाओं तथा आचार व्यवहार से कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता अर्थात् समग्र रूप में देखें तो सामाजिक संरचना व्यक्ति को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। यही सामाजिक संरचना बालकों के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण होती है। बालक का भी पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा इसी सामाजिक संरचना में होती है परंतु यदि बालक को अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं मिलती हैं तो उस बालक में मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ग्रसित होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में बालक या तो परिस्थितियों के साथ समायोजित कर लेता है अन्यथा वह अपने आप को उपेक्षित महसूस कर सकता है, हीन भावना से ग्रसित हो सकता है, कुंठा से ग्रसित हो सकता

है, अपने मन में अंतर्द्वंद को पाल सकता है या परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए झूठ बोल सकता, चोरी का सहारा ले सकता है आदि। यदि हम इन समस्याओं को बिंदुवार वर्णित करें तो ये किसी बालक के लिए निम्न मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हो सकती हैं:

1) समायोजन की समस्या 2) प्रतिबल की समस्या 3) अन्तर्द्वन्द्व 4) कुण्ठा समस्या 5) अहम् की समस्या 6) चोरी की समस्या 7) झूठ बोलने की समस्या 8) हीनता ग्रंथि की समस्या 9) श्रेष्ठता ग्रंथि और अहम की समस्या 10) इंडिपसग्रंथि की समस्या 11) अकेलेपन की समस्या 12) स्वपीड़न की समस्या 13) परपीड़न की समस्या 14) पिछडे बालक की समस्या 15) समस्या बालकों की समस्या 16) अनैच्छिक मूत्रस्त्राव की समस्या आदि हैं ।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची -</u>

<u>आधार ग्रंथ -</u>

उपाध्याय, प्रकाश, प्रसाद. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-2* . साहित्य अकादेमी, 2019.

कार्ल ग्रिम, जैकोब लुडविग. कार्ल ग्रिम, विल्हेम. देवसरे, हरिकृष्ण. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---.---. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

किरोगा ओरासियो, पंत प्रीति, *जंगल- कथा,* साहित्य अकादेमी,अकादमी 2019.

गोपालकृष्णन, कल्वी. देवसरे, हरिकृष्ण. *वनदेवी.* साहित्य अकादेमी, 2017.

गाडगिल, गंगाधर. देशपांडे, माधुरी. *पक्या और उसका गैंग.* साहित्य अकादेमी, 2019.

जीरवा, वेबस्टर डेविस. सुहिल्या, आलमा*. जलपरी का मायाजाल.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---. सूरज और मोर. साहित्य अकादेमी, 2017.

ताम्हनकर, ना. धो..पाणदीकर, सुरेखा. *गोट्या.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देवसरे, हरिकृष्ण. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी , 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:4.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देसाई, अनीता. मोहन, विमला. *बिल्ली हाउसबोट पर.* साहित्य अकादेमी, 2016.

नारलीकर, जयंत विष्णु. पाणंदीकर, सुरेखा*. अंतरिक्ष में विस्फोट.* साहित्य अकादेमी, 2019.

बांड, रस्किन. मोहन, सौमित्र. *कबूतरों की उड़ान.* साहित्य अकादेमी, 2019.

बंधोपाध्याय, विभूतिभूषण. गोस्वामी, अमर. *किशोर कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. गोस्वामी, अमर. *चंद्र पहाड़.* साहित्य अकादेमी, 2019

भागवत, लीलावती. देवस्थले, अरुंधति. *जंगल की एक रात.* साहित्य अकादेमी, 2019.

भुल्लर, जसवीर.ग्रोवर, शांता. *जंगल टापू.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मुखोपाध्याय, शीर्षेंदु. गोस्वामी, अमर. *गोसाई बाबा का भूत.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह.* साहित्यअकादेमी, 2019.

मजूमदार, लीला राय क्षितिश. नवलपुरी, युगजीत. *रविंद्रनाथ का बाल साहित्य भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. नवलपुरी, युगजीत. *रवींद्रनाथ का बाल साहित्य भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

माकीनो, साइजी. *जापान की कथाएँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

राय, सुकुमार. गोस्वामी, अमर. *चुनिंदा कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2013.

रायचौधुरी उपेंद्रकिशोर, दत्त.*स्वप्ना बुलबुल की किताब.* साहित्य अकादेमी, 2017.

शिन्जी, ताजीमा. नारंग, हरीश. *अचरज ग्रह की दंतकथा.* साहित्य अकादेमी, 2018.

<u>सहायक ग्रंथ-</u>

<u>सहायक ग्रंथ (हिंदी) -</u>

अग्रवाल, संजय. *महिला एवं मनोविज्ञान.* इशिका पब्लिशिंग हाऊस, 2011.

अरोरा, सरोज. भार्गव, राजश्री. *बाल मनोविज्ञान.* राखी प्रकाशन, 2011.

आर्य,रमाशंकर. *हिन्दी बाल साहित्य में मनोरंजन एवं नैतिकता.* आराधना ब्रदर्स प्रकाशन, 2014..

उपाध्याय, देवराज. *आधुनिक हिन्दीकथा साहित्य और मनोविज्ञान.* साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, 1963.

---. *भाषा, साहित्य और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति.* वसुदेव प्रकाशन, 1977.

कालरा, शकुंतला. *बाल साहित्य का स्वरूप और रचना संसार.* भावना प्रकाशन, 2002.

गौतम, सुरेश. भारतीय साहित्य कोश. संजय प्रकाशन , 2004

चौबे, एस. पी.. *बाल विकास मनोविज्ञान के मूल तत्व.* कंसेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, 2005.

चौबे, सरयू प्रसाद. *शिक्षा मनोविज्ञान.* अनु प्रकाशन, 2006.

जायसवाल, सीताराम. *मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा.* हिन्दी समिति सूचना विभाग, 1902.

जैन, सुरेश कुमार. *हिन्दी साहित्य का इतिहास नये विचार नई दृष्टि.* वाणी प्रकाशन, 1998.

झा, गंगाधर. *आधुनिक मनोविज्ञान और हिन्दी साहित्य.* राधा कृष्ण प्रकाशन, 1977.

डीलामोर, वॉल्टर. *बाल साहित्य दिशा और दृष्टि.*

थत्ते, यदुनाथ. *मराठी बालकुमार साहित्य स्मरणिका.* पंचम अधिवेशन.

द्विवेदी, हजारीप्रसाद. *विचार प्रवाह.* राजकमल प्रकाशन, 1959.

दिनकर, रामधारी सिंह. *संस्कृति के चार अध्याय.* साहित्य अकादमी, 1956.

देवसरे, हरिकृष्ण. *हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन.* आत्माराम एँड संस, 1969.

---. *बाल साहित्य के सरोकार.* यश पब्लिकेशंस, 2012.

---. *हिन्दी बाल साहित्य रचना और समीक्षा.* शकुन प्रकाशन, 1969.

नगेंद्र. *आस्था के चरण साहित्यिकी प्रेरणा.*नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1997.

नारायण लाल, जगत. *मानव विकास का मनोविज्ञान.* चतुर्थ संस्करण, प्रेमनारायण बेजल पुस्तक,

पाठक, पी. डी.. *शिक्षा मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मंदिर, 2014.

पांडे, जगदानंद. बाल मनोविज्ञान. 1956.

पांडेय, लल्ली प्रसाद. बालसखा मासिक पत्रिका. इंडियन प्रेस, अगस्त 1948.

बिष्ट, एच.बी. बाल मनोविज्ञान. अग्रवाल प्रकाशन,2012.

भारती,जयप्रकाश. *भारतीय बाल साहित्य का इतिहास.* अखिल भारतीय प्रकाशन, 2002.

मनु, प्रकाश. *हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास.* मेघा बुक्स, 2003.

माथुर,एस.एस.*शिक्षा मनोविज्ञान.*विनोद पुस्तक मन्दिर प्रकाशन आगरा,1970.

मानधाने,धनराज.*हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास.*ग्रंथम प्रकाशन कानपूर, 1971.

मूरजानी, जानकी. नारंग, दर्शन कौर. मोहन, मणिका. *बाल विकास का मनोविज्ञान.* अपोलो प्रकाशन, 2009.

तिवारी, गोविन्द. *शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधार.* विनोद पुस्तक मंदिर, 1979.

योगेन्द्रजीत. *विकासात्मक मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मंदिर, 2006.

रमाकांत. *भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम.* हिन्दी संस्थान, 1998.

लाभसिंह और तिवारी.*असामान्य मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मन्दिर, 1984.

लाल, डी.आई. . आधुनिक बाल मनोविज्ञान . राजपाल एण्ड सन्स, 1967 .

विक्रम, सुरेंद्र. *हिन्दी बाल पत्रकारिता उद्भव एवं विकास.* वाणी प्रकाशन, 1992.

---. *हिन्दी बाल पत्रकारिता उद्भव एवं विकास.* साहित्य वाणी, 1992.

---. *भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम.* अनुभूति प्रकाशन, 1997.

वर्मा, प्रीति. *आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मंदिर, 1996.

वर्मा, रामकुमार. *हिन्दी साहित्य युग एवं प्रवृत्तियों का विकास.* वाणी प्रकाशन, 1997.

वाजपेयी, अनुराग. बाल विकास . अर्चना पब्लिशर्सज एण्ड डिस्ट्रीब्पूटर्स , 2012 .

वारेरकर, चित्रा. *बाल मनोविज्ञान: बाल मन की जिज्ञासा.* आरोग्य विधि प्रकाशन, 2006.

सिंह,अरुण कुमार. *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान.* मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन,2017.

शर्मा, गिरिधर प्रसाद. *हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन.* इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, 1978.

शर्मा, जे. डी.. *प्रायोगिक मनोविज्ञान.* मीनाक्षी प्रकाशन, 1989.

शर्मा, रेखा. *कमलेश्वर के उपन्यासों में मनोविज्ञान.* मिलिन्द प्रकाशन, 1991.

शर्मा, स्वाति. *हिन्दी बाल साहित्य: सुरेंद्र विक्रम का योगदान.* हिन्दी साहित्य निकेतन, 2012.

शास्त्री, हरिवंश सिंह. *सोंदर्य विज्ञान.* श्री काशी विद्यापीठ, 1992.

शुक्ल लालजी . *बाल मनोविज्ञान* . काशी नागरी प्रचारिणी सभा , 1960 .

सिन्हा, रमन. *बाल विकास मनोविज्ञान.* सुमित एँटरप्राइजेज, प्रथम संस्करण, 2012.

सिन्हा, सी. पी.. *सामान्य मनोविज्ञान.* भावना प्रकाशन, 1978.

श्रीवास्तव, डी.एन.. *आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान.* आगरा साहित्य प्रकाशन, तृतीय संस्करण

श्रीवास्तव, डी.एन.. वर्मा, प्रीति. *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास.* श्री विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, 2019.

श्री प्रसाद. *हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा.* लोकभारती प्रकाशन, 1985.

त्रिपाठी, शालिग्राम. *शैक्षिक मनोविज्ञान.* श्री राजमणि त्रिपाठी वेंकटेश प्रकाशन, 1992.

<u>सहायक ग्रंथ (अंग्रेजी) –</u>

Adler. *The science of living*. Martino fine books, 2011.

Akolkar, V. V.. *Social Psychology*. Asia Publishing House, 1960.

Bark, Laura E.. *Child Psychology*, Ph1 Learning Private Limited, 2001.

Benjamin, walman. *Contemporary theories and systems in psychology*. Harper and brothers, 1960

Binet, A.. And Simon, T. *Le Development de' intelligence chez Ias Infants. L'Anel* Psychologique, 1908.

Bharti, chetha . S*ociological Bases Of Education* Kalyani Publishars , 2019 .

Crow and crow. *Child psychology*. Barnes and Noble, 1963.

Crow, L.D.. and Crow, A.. *Child Psychology*. Eurosia Publication House, 1993.

Donk, Din Kmeyer. *Child Development: The Emerging Self*. New Jersy Prentice Hall,

Dougall, William Mc.. *Psychological Psychology*. Psychology of religion , Yale University press, 1905.

Dougall, William M.C.. *An outline of psychology*. Methuen,1949.

Drawin, Charles(1877). *Biographical sketch of a infant mind*. Journal of the History of the Neurosciences, 2010.

Eyrenck, H. J.. *Encyclopedia of Psychology*. Vol.1&2. Search Press Fontain, 1975.

Freud, Sigmund. *A General Introduction of Psycho Analysis*. New york Square press, 1960.

Fordham, Frieda. *An Introduction to Jung's Psychology*. Penguin Books, Vol.3, 1953.

Gerhard, Adler. *Collected Works of C.G. Jung: Psychology Types.* Pinceton University Press, 2014.

Girishbala, Mohanty. *Child psychology*. Kalyani Publishers, 2000.

Henry, James. Mark, Twain. The Encyclopedia Britannica. Vol. 14, 1962.

James, William. *Principles of psychology*. Henry Holt and company, 1890.

---. and Ross. *Grand work of educational psychology*. G.G. Harrap &Co. Ltd. , 1931.

Jalota, S. A..*Text book of psychology*. Baimras Hindu University, 1950.

Jung, C.G.. *Psychological types collective works*.vol. 6, Routledge, 1992.

Kretch and Field, Crutch. *Social psychology*. Mcgraw Hill, 1943.

Locke, J. (1982). *Some thoughts concerning education in R.H. Quick (Ed.)*, Locke on Educ , 1690,

Lowken, P.V.. *Mental Hygiene in Public Health*. M.C. Grow Hill, 1949.

Murphy, G.. *An Introduction to Psychology*. Greenwood Publishing Group, 1951.

Pillsbury, W.B. . *Essential of psychology*. The Macmillan Co. , 1901.

Prayer, W.(1888). *The mind of the Child (vol. 2)*. Appleton, 2004.

Ranade. A Constructive survey of Upanishadic philosophy. Oriental Books Agency, 1926.

Rousseau, J. J.. *Emile or on Education: Trans.Allen Bloom.* Basic Books, 1979.

Skinner, Charles E.. *Educational psychology*. Prentice-hall Inc., 1936.

Tichner, E.B.. *Text book of psychology*. The University of Michigan McMillan, 1909.

Valantine, C.W.. *Psychology and its bearing education*.Methuen publication, 1960

Waran, Audition. Weluck, Rane. *Theory of literature*. Marina books publisher, 3rd edition, 1956.

Watson, John B.. *Behaviorism*. W.W. lncorporated, 1930.

...and Raynor, R.. *Conditioned Emotional Reactions.* Journal of Experimental Psychology, 1920.

Woodworth, Robert S. and Marry S.Sheehan. *Contemporary School of Psychology.* Methnen &Co. Ltd., 1956.

---. *Psychology*. Henry Holt and company, 1921.

Walman, Benjamin B. .*Contemporary theories & systems in psychology.* Plenum press , 1981.

Young, Kimball. *Hand book of social psychology*.

<u>सहायक पत्र पत्रिकाएँ एवं शोध पत्र –</u>

अली, मेहराब. बालमन की अभिव्यक्ति और हिन्दी कहानियाँ, प्राथमिक शिक्षक. 2017.

द्विवेदी, नीतू. डॉ देवराज शरण अग्रवाल की कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, शोध समागम. दिसंबर 2019.

बुधु, यंतुदेव. मॉरीशस में बाल साहित्य सृजन, हिन्दी प्रचारिणी सभा, पंकज. अगस्त 2018.

सारोठिया, सुरेश. राणा, संगीता. इक्कीसवी सदी का बाल साहित्य, शब्द ब्रह्म. दिसंबर 2016.

<u>हिन्दी शब्दकोश-</u>

दास, श्यामसुंदर (संपा.).*हिन्दी शब्द सागर भाग -8*. नागरी प्रचारिणी सभा,1971.

नगेंद्र. *मानविकी पारिभाषिक कोश.* राजकमल प्रकाशन, 1998.

प्रसाद, कालिका (संपा.).*वृहत् हिन्दी कोश.* ज्ञानमंडल लिमिटेड, 2020वि.

बाहरी, हरदेव*. हिन्दी शब्दकोश.* राजपाल एँड संस, 1996.

वर्मा, धीरेंद्र (संपा.*).हिन्दी साहित्य कोश भाग-1*. ज्ञानमंडल लिमिटेड,1985.

वर्मा, रामचंद्र(संपा), *मानक हिन्दीकोश खंड -4.* हिन्दी साहित्य सम्मेलन,1965.

शर्मा, हरवंशलाल. *मनोविज्ञान परिभाषा कोश.* केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 1998.

शुक्ल, रामचंद्र. लोकभारती प्रमाणिक हिन्दी कोश. लोक भारती प्रकाशन', 2009.

इन्टरनेट सहायक सामग्री -

Shodhganga.inflibnet.ac.in 10/03/2020, 12:15, IST

Vishwahindijan.blogspot.com 25/03/2020, 13:10, IST

www.hindisahityaniketan.com 7/04/2020, 00:5, IST

www.hindisamay.com 6/04/2020, 23:55, IST

www.worldwideword.org 28/05/2023, IST

अध्याय-2

2 हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वंशानुक्रम, परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं भौगोलिक संदर्भ

2.1 वंशानुक्रम संदर्भ

2.2 परिवेशगत संदर्भ

2.2.1 परिवार

2.2.2 स्कूल

2.3 सामाजिक संदर्भ

2.4 सांस्कृतिक संदर्भ

2.5 भौगोलिक संदर्भ

2 हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

मानव सभ्यता के विकास क्रम में उसने अनेक पड़ावों को पार किया है। उसके अतीत के बारे में जानने के लिए मानव के पास बहुत साक्ष्य नहीं रहे, परंतु मनुष्य ने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्ति करना प्रारंभ किया। जिसके माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी साहित्य सृजन प्रारंभ हुआ। साहित्य के माध्यम से व्यक्ति न सिर्फ तात्कालिक समाज की अभिव्यक्ति कर रहा है, बल्कि वह अतीत से वर्तमान तक होने वाले परिवर्तन से भी परिचित हो रहा है। इस परिवर्तन की स्पष्ट झलक हम हिन्दी कथाओं में भी देख सकते हैं। हिन्दी कथाओं में जब मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं तो यह परिलक्षित होता है कि समय अंतराल में मनुष्य की प्राथमिकताएँ बदली है। साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि सामाजिक ताने बाने में जो परिवार रूपी इकाई, है वह एक स्थाई स्तंभ रहा है और उसने किसी भी अन्य माध्यम की अपेक्षाकृत बालक के मनोविज्ञान को अधिक प्रभावित किया है।

हिन्दी कथाओं व हिन्दी बाल कथाओं में मनोविज्ञान को देखते हुए इनको दो भागों में विभाजित कर सकते हैं:

1. हिन्दी कथाओं में बाल मनोविज्ञान
2. हिन्दी बाल कथाओं में बाल मनोविज्ञान

1.हिन्दी कथाओं में बाल मनोविज्ञान

जब से मनुष्य ने अपने विचार प्रस्तुत करने व सुनना सीखा है, तब से उसने कहानी सुनना व कहना सीखा है। दादी नानी द्वारा बच्चों को रात को सोने से पहले सुनाई जाने वाली कहानी ने ही आज हिन्दी कहानियों का रूप ले लिया है। कहानी का स्वरूप उतना ही पुराना है जितना कि मनुष्य का इतिहास। लेकिन फिर भी लिखित

भाषा में हिन्दी कहानी का प्रादुर्भाव 1900 ईसवी के आसपास माना जाता है। कहानी विधा साहित्य की सर्वाधिक प्रिय व सशक्त विधा रही है। यह हर युग में मानव की हर अवस्था में हर पीढ़ी को प्रभावित करती है। हिन्दी कहानी का विकास वैदिक, उपनिषदों, वृहतकथा, मंजरी से लेकर पंचतंत्र, हितोपदेश के माध्यम से होता रहा है।

मंजुला देसाई अपनी पुस्तक *कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन* में कहते हैं:

> लघुकथा आख्यायिका, आख्यानक, जातक, दंतकथा एवं वार्ताओं के रूप में हमें इसके बीज संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के साहित्य में उपलब्ध होते हैं। वास्तविकता यह है कि इन कथाओं का उद्देश्य धार्मिक, नीतिपरक एवं उपदेशात्मक ही रहा है।

उपर्युक्त कथन से कह सकते हैं कि प्राचीन काल की कथाएँ बालकों पर आधारित होने के साथ-साथ नीतिपरक व उपदेशात्मकता पर आधारित होती थी, लेकिन 19वीं शदी की कहानी सामाजिकता, आदर्शवाद एवं तत्कालीन परिस्थितियों पर आधारित थी। आज की हिन्दी कहानी 19वीं शताब्दी की उपज है।

मंजुला देसाई ने अपनी पुस्तक *कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन* में इस विचार का समर्थन करते हुए कहा है: "कहानी अपने संपूर्ण ऐतिहासिक संदर्भों में यूरोप की सर्जना है, विज्ञान चेतना के विकास के दौर की देन है। अपने आधुनिक रूप में 19वीं शती की देन है।" (42)

कहानी ने अपने इस स्वरूप को 19वीं शदी में ही प्राप्त कर लिया था और उस समय तक विभिन्न लेखकों ने विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। लेकिन बाल कथाओं पर आधारित कहानी चंद्रधर शर्मा द्वारा रचित कहानी उसने कहा था, जो कि 1915 में सरस्वती में प्रकाशित हुई थी, से माना जाता है। यह कहानी भाव व कला

दोनों ही दृष्टि से उत्तम है। इसमें बाल्यावस्था के प्रेम को प्रोढ़ होने पर निस्वार्थ भाव से बलिदान साहस व त्याग के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह बाल मन पर आधारित पहली कहानी कही जा सकती है। इस कहानी में पवित्र प्रेम, आत्मसमर्पण, नि:स्वार्थ भाव और बलिदान का चित्रण है।

राजेंद्र यादव अपनी पुस्तक *एक दुनिया: समानांतर* में कहते हैं: "उसने कहा था कहानी को हिन्दी कहानी के विकास के प्रथम सोपान की महत्वपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है।" (76)

पाश्चात्य कहानी कला के प्रभाव के कारण हिन्दी में भी कलापूर्ण कहानियों का सृजन आरंभ हो गया, लेकिन मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कथाओं में पुस्तकीय सिद्धांतों को छोड़कर, व्यवहारिकता का सहारा लेकर, जीवन की वास्तविक घटनाओं और समस्याओं को लेकर आदर्शों की स्थापना की।

मंजुला देसाई की पुस्तक *कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन* से उद्धृत माधुरी शाह के अनुसार: "प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को जादू से मुक्ति दिला कर उसे यथार्थ की भूमि पर प्रतिष्ठित किया।" (47)

भिन्न-भिन्न लेखकों ने भिन्न-भिन्न प्रवृतियों पर अपनी लेखनी चलाई लेकिन मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ लिखने का श्रेय सर्वप्रथम मुंशी प्रेमचंद जी को जाता है। 1935-36 के आसपास प्रेमचंद की कहानियों का स्वरूप बदलता हुआ दिखाई देता है।

लक्ष्मी नारायण लाल ने अपनी पुस्तक *हिन्दी कहानी का शिल्प विधि विकास* में कहा है:

> यहाँ इनका आधार मनोवैज्ञानिक विवेचन हो गया और ये जीवन के यथार्थ और स्वाभाविक चित्रण को अपना एकमात्र ध्येय समझने लगे। इनमें कल्पना कम, अनुभूतियों की मात्रा अधिक हो गई, बल्कि अनुभूतियाँ रचनाशील भावना से अनुरंजीत होकर कहानी बनने लगी। (93)

अमरनाथ की पुस्तक *हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली* में नामवर सिंह कथाओं में मनोविज्ञान को उपयोगी मानते हुए कहते हैं:

> कहानी का मनोवैज्ञानिक होना नितांत संगत है क्योंकि यह जीवन स्थितियों के समानांतर प्रवाह की अपेक्षा रखती है और अनुभवों के माध्यम से ही प्रकाशित होती है। जितनी गहराइयों से मानव मन की गहराइयों में प्रवृष्टि होती है उसका रूप उतना ही मनोवैज्ञानिक होता है। (22)

प्रकाश मनु अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास* में कहते हैं:

> बीसवीं सदी के शुरुआती दौर में हिन्दी बाल कहानियाँ लिखने या कहे कि इस विधा की नीव रखने वाले प्रमुख कहानीकार थे-महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, मोहनलाल महतो 'वियोगी', सुदर्शन, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, विद्याभूषण विभु, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामनरेश त्रिपाठी, हंस कुमार तिवारी जहूरबख्श, शेख नईमुद्दीन मास्टर तथा स्वर्ण सहोदर। (142)

नगेंद्र अपनी पुस्तक *हिन्दी साहित्य का इतिहास* में कहते हैं: "प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को मजबूत नींव ही नहीं दी, बल्कि उसे कलात्मक ऊंचाई भी प्रदान की।" (569)

मुंशी प्रेमचंद की बाल कहानियाँ ईदगाह, कजाकी, गुल्ली डंडा, प्रेरणा, बड़े भाई साहब, रामलीला आदि कहानियाँ बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। उस समय में जयशंकर

प्रसाद ने भी बाल कहानियों पर लेखनी चलाई। उन्होंने बालक चंद्रगुप्त, मधुआ व छोटा जादूगर कहानियाँ बाल मनोविज्ञान को केंद्र में रखकर लिखी। पदुमलाल पुन्नालाल की 'दौड़' कहानी भी बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है।

जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ आधुनिक युग की कम तथा संस्कृत गद्य काव्य के अधिक निकट लगती है। इन्होंने अपनी कहानियों में समसामयिक यथार्थ को प्रस्तुत करने की अपेक्षा स्वर्णिम अतीत के साथ-साथ कल्पना व काव्यात्मक चित्रण को ज्यादा महत्व दिया है।

नगेंद्र ने अपनी पुस्तक *हिन्दी साहित्य का इतिहास* में कहा है:

> प्रेमचंद के बाद हिन्दी कहानी को नवीन आयाम देने वालों में जैनेंद्र प्रमुख है। उन्होंने प्रेमचंद के निकट संपर्क में रहने पर भी उनका अनुसरण नहीं किया, वरन अपने लिए नई दिशा की खोज की। उन्होंने कहानी को 'घटना' के स्तर से उठाकर 'चरित्र' और 'मनोवैज्ञानिक सत्य' पर लाने का प्रयास किया। यद्यपि स्वयं प्रेमचंद ने भी 1930 ई. तक इस उपलब्धि को पा लिया था, पर जैनेंद्र की एक और खूबी यह रही कि उन्होंने कथावस्तु को सामाजिक धरातल से समेटकर व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक भूमिका पर प्रतिष्ठित किया। (567)

जैनेन्द्र हिन्दी के प्रतिष्ठित कथाकार हैं। जैनेंद्र कुमार जैन ने कथाओं में मनोवैज्ञानिकता को आगे बढ़ाने का काम किया। लेकिन इनकी मनोवैज्ञानिकता प्रेमचंद से भिन्न थी। जैनेंद्र कुमार जैन ने अपनी कहानियों के पात्रों को विषम परिस्थितियों में डालकर उनका सूक्ष्म मनोविश्लेषण प्रारंभ कर दिया।

सत्यप्रकाश मिलिंद की पुस्तक *जैनेन्द्र व्यक्तित्व और कृतित्व* में परलीकर ने कहा है:

> कथा साहित्य के इतिहास में जैनेन्द्र के नाम से कोई स्वतंत्र युग नहीं माना गया फिर भी उन का उल्लेख 'नये युग के प्रवर्तक' के रूप में किया जाता है और यह नया युग हिन्दी के मनोवैज्ञानिक कथा साहित्य से जुड़ा हुआ है। (32)

देवी शंकर अवस्थी ने अपनी पुस्तक *नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति* में कहा है:

> जैनेंद्र कुमार के आगमन से हिन्दी कहानी में एक नया मोड़ आया। प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी में मनोवैज्ञानिक विवेचन का आरंभ किया पर जैनेंद्र कुमार ने पात्रों का सक्षम मनोविश्लेषण प्रारंभ कर दिया। (202)

गोपाल राय की पुस्तक *हिन्दी कहानी का इतिहास* में कृष्ण देव शर्मा कहते हैं:

> जैनेंद्र ने भाषा का प्रयोग मनोभाव और संवेदनाओं के संदर्भ में किया है। जहाँ भाषा सूक्ष्म भावों को अंकित करने में अपनी असमर्थता दिखाने लगती है, वहाँ जैनेंद्र धीरे-धीरे अपना मतलब साध ही लेते हैं। अर्थात् भाषा से वह तमाम सूक्ष्म भावों और संवेदनाओं को व्यक्त करा लेते हैं, जिसे जिस रूप में व्यक्त कराना चाहते हो। (15)

जैनेंद्र कुमार जैन की बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ है- पाजेब, अपना अपना भाग्य, क: पत्था:, वातायन, निलम देश की राजकन्या, ईनाम, आत्म निरिक्षण, किसका रुपया, तमाशा आदि । सुभद्रा कुमारी चौहान ने बालकों के मनोविज्ञान को दृष्टि में रखते हुए हींगवाला, अमराई, रूपा, विआहा, एकादशी, तीन बच्चे, किस्मत, बिन्नू की राखी कहानियाँ लिखी। विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक की बाल कहानी 'ताई' व सुदर्शन की "बाप का ह्रदय' भी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। यशपाल की बाल कहानी 'आदमी का बच्चा', ममता कालिया की बाल कहानी 'आपकी छोटी बेटी', विष्णु प्रभाकर की बाल

कहानी 'धरती अब भी घूम रही है' आदि कहानियाँ बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ हैं।

नगेंद्र ने अपनी पुस्तक *हिन्दी साहित्य का इतिहास* में कहते हैं: "जैनेंद्र और अज्ञेय ने मनोविश्लेषण को आधार बनाकर नवीन प्रयोग किये, जहाँ से हिंदी-कहानी की नवीन धारा का सूत्रपात हुआ।" (569)

जैनेंद्र के बाद प्रमुख कहानीकारों में अज्ञेय जी का नाम सबसे पहले आता है। जैनेन्द्र व अज्ञेय दोनों ने मनोविज्ञान से संबंधित कहानियाँ लिखी है, लेकिन एक तरफ जैनेंद्र ने अपनी कहानियों के पात्रों को मन की दुर्बलताओं में उलझे हुए दिखाया है अर्थात इनकी कहानियों के पात्र अपने मन की दुर्बलताओं में फंसे हुए नजर आते हैं उनमें उन दुर्बलताओं से निकलने का साहस ही नहीं है। अतः वे अंतर्मुखी प्रवृत्ति के हैं, वही दूसरी तरफ अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक कहानियों के पात्रों के जीवन में सामाजिक संघर्ष और विद्रोह का तीखापन भरा हुआ है। जैनेंद्र की कहानियों की अपेक्षा अज्ञेय जी का कथा साहित्य अधिक ठोस एवं अधिक विश्वसनीय व बहिर्मुखी प्रवृति के हैं।

नगेंद्र अपनी पुस्तक *हिन्दी साहित्य का इतिहास* में कहते हैं:

> जहाँ जैनेंद्र मन:संसार को छोड़कर वास्तविक दुनिया में आना पसंद नहीं करते और जहाँ उनके पात्र समाज से लड़ने का हौसला न रखकर अपने मन की दुर्बलताओं से ही उलझते रहते हैं। वही अज्ञेय के पात्र बहिर्मुखी है जो समाज तथा अपने आसपास की परिस्थितियों से जूझने के लिए सदैव प्रस्तुत रहते हैं। (568)

अज्ञेय की बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ है- सभ्यता का एक दिन, लेटर बॉक्स, देवी सिंह।

कुछ अन्य हिन्दी कहानीकारों की बाल कहानियाँ है: पांडेय बेचन शर्मा उग्र द्वारा रचित बाल कहानियाँ- माँ को चुनरी की साध, विधवा, एक भीषण स्मृति, उपेंद्रनाथ अश्क द्वारा रचित बाल कहानियाँ-बच्चे, दो आने की मिठाई, रांगेय राघव द्वारा रचित बाल कहानियाँ- गूंगे इंसान, नई जिंदगी के लिए, भीष्म साहनी द्वारा रचित बाल कहानियाँ- पहला पाठ, पाप-पुण्य, अमरकांत द्वारा रचित बाल कहानियाँ- बहादुर, फर्क, निर्माण, कमलेश्वर द्वारा रचित बाल कहानियाँ- जन्म, दुख भरी दुनिया, सोलह छतों का घर, यशपाल द्वारा रचित बाल कहानियाँ- मृत्युंजय, कर्मफल, परलोक, दुख, कुत्ते की पूंछ, आदमी का बच्चा, विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित बाल कहानियाँ- मिडिल स्कूल का हेडमास्टर, माँ ने कहा था, टूटी हुई उंगली, मृदुला गर्ग द्वारा रचित बाल कहानियाँ- तीन किलो की छोरी, अनाड़ी, मन्नू भंडारी द्वारा रचित बाल कहानियाँ- रानी माँ का चबूतरा, सजा, अमृतलाल नागर द्वारा रचित बाल कहानियाँ- राजा, रानी और संतान, माँ -बाप और बच्चे, बंदिनी, रविंद्र नाथ कालिया द्वारा रचित बाल कहानियाँ- रात के घेरे नन्हें साँप, सुंदरी, गरीबी मिटाओ, महीप सिंह द्वारा रचित बाल कहानियाँ- काला बाप, गोरा बाप आदि कहानियाँ बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ हैं।

2.हिन्दी बालकथाओं में बाल मनोविज्ञान:

बच्चों का दादी-नानी से कहानी सुनना प्राचीन काल से ही चला आ रहा है, और ये कहानियाँ बच्चों के व्यक्तित्व पर बातों-बातों में, खेल-खेल में गहरा असर करती हैं। बच्चे के आसपास जैसा वातावरण, जैसे लोग या जैसी कहानियाँ उन्हें सुनाई जाती है, उनके व्यवहार पर इन सब का गहरा असर होता है। जिन कथा कहानियों की दुनिया के बीच उनका जीवन गुजरता है, वह अपने जीवन में आगे चलकर उसी तरह के मनुष्य बनते हैं। इस बात का समर्थन करते हुए प्रकाश मनु अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास* में कहते हैं:

> छत्रपति शिवाजी को महान वीर और तेजस्वी उन अदम्य वीरता पूर्ण कहानियों ने बनाया, जो माँ जीजाबाई उन्हें बचपन में सुनाया करती थीं। इसी प्रकार महात्मा गांधी को भारत का महानायक और महात्मा बनाने का श्रेय बचपन में सुनी पौराणिक कथाओं और सत्य हरिशचंद्र जैसे नाटकों को जाता है। (138)

कहानी बच्चों को सबसे अधिक आकर्षित करती है। प्रारंभ में वह अपना मनोरंजन, रुचि व आवश्यकता इन सब की पूर्ति दादी नानी द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों से करता था। प्राचीन काल में श्रव्य साहित्य की प्रचुरता थी। लिखित साहित्य बच्चों के लिए उपलब्ध नहीं था और ना ही कोई मनोरंजन के अन्य साधन थे। पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियाँ भी मौखिक रूप में ही थी। नगेंद्र अपनी पुस्तक *हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास भाग-16* में कहते हैं :

> बच्चों में कहानी सुनने की प्रगाढ़तम रुचि होती है। गाँवों में जहाँ मनोरंजन के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं होते, वहाँ ये कहानियाँ ही लोगों का मनोरंजन करती हैं। रात्रि के समय माताएँ अपने बच्चों को सुंदर-सुंदर कहानियाँ सुना कर उन्हें आनंद प्रदान करती है। बच्चे इन कहानियों को सुनते ही निद्रा देवी की गोद में चले जाते हैं। (15)

एक अन्य स्थान पर नगेंद्र कहते हैं:

> लोकमानस ज्ञान को कहानी के रूप में स्वीकार करता है। जो ज्ञान कहानी के रूप में सरल नहीं वह लोकमानस में नहीं पचता। मानव जाति बुद्धि का कितना ही विकास कर ले, वह प्रत्येक नई पीढ़ी में बाल भाव से ही जीवन चक्र का आरंभ करते हैं। बाल भाव की शिक्षा-दीक्षा, रुचि और विचार का एकमात्र आशय कहानी ही है। (21)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि गाँव में मनोरंजन के अन्य साधन व साहित्य मौखिक रूप में होने के कारण कहानी को लिखित रूप में प्रकाशित करने की आवश्यकता हुई, और वही कहानी उन्हें प्रेरित करने वाली थी। यदि कहानी बालकों की रूचि और आवश्यकता के अनुसार ना हो तो वह उन्हें ग्राह्य नहीं होती अथवा वे उसे स्वीकार ही नहीं करते। इसलिए कहानियाँ बालकों की रुचि व उनके मनोविज्ञान पर आधारित होनी आवश्यक है। इस प्रकार बाल कहानी की नींव दादी नानी के द्वारा ही रखी गई। ग्रीम बंधुओं ने कथा साहित्य पर काफी काम किया और विभिन्न लोक कथाओं का संग्रह किया। उन्होंने प्रकाश मनु द्वारा रचित पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास* में कहा है: " एक बूढ़ी स्त्री जिसे कि काफी कहानियाँ याद थीं, के पास वे कुछ छोटे-छोटे बच्चों को बिठा दिया करते थे, जो उनसे कहानियाँ सुनाने का आग्रह करते थे। खुद ग्रीम बंधु दरवाजे के पीछे ओट में बैठ जाते थे और कहानियाँ सुनते और लिखते जाते थे। " (141)

जो कहानियाँ बच्चों की रुचि व आवश्यकता के आधार पर रची गई थी वे उन्हें बखूबी ग्रहण करते थे। श्री भास्कर नाथ तिवारी अपने राष्ट्रभाषा संदेश *हिन्दी में बाल साहित्य: कुछ महत्वपूर्ण सुझाव* में कहते हैं: "बच्चों में बाल साहित्य के लिए जो माँग पाई जाती है वह लगभग 72.8% कथा साहित्य के लिए है। " (5)

स्वतंत्रता पूर्व बाल कहानी को आगे बढ़ाने में विभिन्न पत्रिकाओं का विशेष स्थान रहा है। सुरेश गौतम अपने *भारतीय साहित्य कोश* में कहते हैं: " खिलौना, बाल विनोद, स्कूल मास्टर, छात्र सहोदर, बाल हंस, चमचम, नंदन, सरस्वती, बाल भारती, बच्चों का देश, चंपक, चंदामामा, राजाभैया, पराग, शिशु भारती आदि पत्रिकाओं के प्रकाशन ने तो बाल साहित्य के विकास को चरमोत्कर्ष तक पहुंचा दिया। " (344)

श्री प्रसाद अपनी पुस्तक *बाल साहित्य की अवधारणा* में कहते हैं: "सन 1931 में रामनरेश त्रिपाठी द्वारा वानर पत्रिका का प्रकाशन किया गया।" (101)

श्री प्रसाद एक अन्य स्थान पर कहते हैं:

> भारतेंदु, सदल मिश्र, लल्लू लाल, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, श्रीनिवास दास, राधाकृष्ण दास, काशीनाथ खत्री, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त, मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध, सुमित्रानंदन पंत, निराला, सोहनलाल द्विवेदी, श्रीधर पाठक, सत्यनारायण कविरत्न आदि साहित्यकारों ने भी बाल साहित्य को नवीनता प्रदान की और इसके विकास में अग्रणीय रहे। (102)

बालशोरि रेड्डी अपनी पुस्तक *श्रेष्ठ बाल कहानियाँ* में कहते हैं: "स्वाधीनता के पूर्व ही विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद, सत्यजीत रे, राजा जी, सोहनलाल द्विवेदी, सुकुमार राय, बुद्धदेव वसु आदि महान लेखकों ने बाल साहित्य में रुचि ली।" (8)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य में बाल कथाओं की भी एक लंबी श्रृंखला रही है, जिसमें अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समाज को प्रभावित करने वाली कहानियाँ लिखी गई। जिनमें बाल मनोविज्ञान का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन कहानियों के माध्यम से पाठक बाल मनोविज्ञान को समझने में सक्षम रहा है। यह कहानियाँ बाल पाठकों के लिए पथ प्रदर्शक भी रही है, जिससे बालक समाज में अपनी स्वयं की भूमिका के साथ-साथ समाज की अन्य इकाइयों को भी समझ सका। हिन्दी साहित्य में बहुत से बाल कथाकारों ने भिन्न-भिन्न विषयों पर और बालकों की रुचि व उनकी आवश्यकता के अनुरूप कहानियाँ लिखी हैं, लेकिन हम यहाँ कुछ प्रमुख कथाकारों व उनकी कहानियों का वर्णन करेंगे।

प्रकाश मनु अपनी पुस्तक *हिन्दीबाल साहित्य का इतिहास* में कहते हैं:

> इस दौर में जिन प्रमुख लेखकों ने बच्चों के लिए बड़ी तल्लीनता के साथ निरंतर लिखा, उनमें अमृतलाल नागर, श्रीनाथ सिंह, जैनेंद्र, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, भीष्म साहनी, कृष्णचंद्र, उपेंद्र नाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, मन्नू भंडारी, रघुवीर सहाय, आनंद प्रकाश जैन, यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', शैलेश मटियानी, लक्ष्मी नारायण लाल, मन्मथनाथ गुप्त, रजिया सज्जाद जहीर, शिवानी, शकुंतला सिरोठिया, मनहर चौहान, राजेंद्र अवस्थी, महीप सिंह, अवतार सिंह, हरिकृष्ण तेलंग, शीला इंद्र, यादराम 'रसेंद्र', महेंद्र भटनागर, मालती जोशी, मस्तराम कपूर, देवेश ठाकुर, हरिकृष्ण देवसरे, जयप्रकाश भारती, सत्यस्वरूप दत्त, राजेश जैन, मनोहर वर्मा, वीरकुमार अधीर, हसन जमाल छिपा, हमीदुल्लाह खां, व्यथित हृदय, शिवमूर्ति वत्स, नरेंद्र कोहली, बालबंधु, रामनारायण उपाध्याय, प्रमोदशंकर भट्ट, स्वराज शुचि, मालती शंकर, विमला मेहता, शिवकुमार गोयल, शंकर सुल्तानपुरी आदि के नाम लिए जा सकते हैं। (152)

बाल कथाओं के प्रारम्भिक दौर में मनोविज्ञान पर आधारित प्रेमचंद की ईदगाह कहानी लिखी गई। मनोविज्ञान पर आधारित कहानियों में विष्णु शर्मा ने सुंदर लड़की, क्षमा शर्मा ने जादुई किरण, श्री प्रसाद ने रुनु रूठी, जाकिर अली रजनीश ने बेबी माने अप्पी, मैं स्कूल नही जाऊँगी, टी फॉर टीचर, नागेश पांडेय संजय की बाल कहानियाँ- नेहा ने माँ गी माफी, आधुनिक बाल कहानियाँ, अमरुद खट्टे हैं, मोती झरे टप टप, अपमान का बदला, दीदी का निर्णय, मुझे कुछ नहीं चाहिए, प्यार खोया नहीं, उषा यादव की बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ -दूसरी तस्वीर, दोस्ती का हाथ, जन्मदिन का उपहार, राजा मुन्ना, कांटा निकल गया, अनोखा उपहार, लाख टके की बात, खुशबू का रहस्य, मेवे की खीर, दीप से दीप जले, बजी बांसुरी आदि, डॉ सुरेंद्र विक्रम की कहानी-

नीम हकीम खतरे जान डॉक्टर भेरूलाल गर्ग की मन का बोझ बाल मनोविज्ञान की कसौटी पर कसी हुई पांच बाल कथाओं का संग्रह है जिनकी अंतर्वस्तु में कहानीकार की अनोखी सूझ बूझ है- कितना अच्छा है गाँव, भाई बहन का प्यार, अच्छी आदतें, समझ गया रमन, मन का बोझ आदि कहानियाँ शामिल हैं।

प्रकाश मनु की कहानियाँ मनोविज्ञान व वैयक्तिक मूल्यों पर आधारित हैं। उन्होंने मानव मन के विकारों को और मानव पीड़ा को ही केंद्र में रखकर अपनी कहानियों का सृजन किया। उनकी प्रमुख बाल कहानियाँ है- नाना नानी कहो कहानी, दादी माँ की मीठी मीठी कहानियाँ, मैं जीत गया पापा, मेले में ठिनठिनलाल, भुलक्कड़ पापा, ले चला फिर आकाश में, इक्यावन बाल कहानियाँ, नंदू भैया की पतंगे, कहो कहानी पापा हैं।

हरिकृष्ण देवसरे ने बाल साहित्य से संबंधित उल्लेखनीय कार्य किया है। उनकी कुछ प्रमुख बाल कहानियाँ हैं- तात्यां की तलवार, नया पंचतंत्र, प्रेमचंद की तेरह बाल कहानियाँ, हेलो बीरबल, www बच्चों की कहानियाँ सचित्र बाल कहानियाँ भारतीय बाल कहानियाँ हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरी जी के बारे में कहा जाता है: "जब भी बेनीपुरी जी जेल से बाहर आते थे तब उनके हाथों में 4 ग्रंथों की पांडुलिपियाँ अवश्य होती थी।"

हिन्दी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन-

बाल साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा बाल उपन्यास एक ऐसी विधा है जिससे एक बालक का मन खुलता है। उसमें जिस तरह की कल्पना, उन्नत व विस्तार का वर्णन किया जाता है कि बालक उसे पढ़कर देर तक उसके प्रभाव में बंधा रहता है। बच्चे न सिर्फ उसको पढ़ना पसंद करते हैं बल्कि वह उसके दिलो-दिमाग पर छा जाता है।

धीरेन्द्र वर्मा अपने *हिन्दी साहित्य कोश* में कहते हैं:

> उपन्यास को साहित्य में आधुनिक युग की देन माना गया है। उसमें घटनाएँ कैसी भी हो, लोक की, परलोक की, आकाश की, पाताल की, पर वे होंगी कार्य कारण की श्रृंखला में आबद्ध, उसमें एक तारतम्य होगा, भले ही वे आंतरिक तथा सूक्ष्म हों, वे हमारे जीवन के किसी पहलू को अवश्य रोशन करेंगी,घटनाएँ , व्यापार, श्रृंखलाएँ और मानव मन, सब पारस्परिक रूप से एक दूसरे को स्पष्ट करते चलेंगे। घटनाएँ जीवन के केंद्र से निकलकर जीवन के ही रूपों का प्रकाशन करेंगी। पशु-पक्षी तथा जड़ पाषाण भी पात्र के रूप में उपस्थित हो सकते हैं, पर उसकी प्रतिक्रियाएँ वही होंगी जो मानव हृदय की होती हैं। व्यापक दृष्टि से कह सकते हैं कि यह गद्य साहित्य का एक अन्यतम रूप है, जिनका आधार कथा है- चाहे वह सीधे मनुष्य की हो या मनुष्येतर का जीव और निर्जीव प्रकृति की अथवा चाहे वह सच्ची हो या कल्पित। उसे उपस्थित करने में कल्पना का प्रयोग अवश्य है। (139-140)

जैनेंद्र अपनी पुस्तक *परख (कुछ शब्द)* में कहते हैं –

> उपन्यास में जैसी दुनिया है वैसी चित्रित नहीं होती दुनिया का कुछ उठा हुआ उन्नत, कल्पित रूप चित्रित किया जाता है। वह उपन्यास किसी काम का नहीं, जो इतिहास की तरह घटनाओं का बखान कर जाता है। (3)

यदि मनोवैज्ञानिक उपन्यास की बात करें तो यदि उपन्यास मनोविज्ञान पर आधारित है तो वह पाठक के दिलों दिमाग पर ज्यादा प्रभावी ढंग से छाप छोड़ता है। देवराज उपाध्याय अपनी पुस्तक *आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान* में कहते हैं- "यदि किसी उपन्यास में घटना या अनुभूति के आत्मनिष्ठ रूप को अभिव्यक्ति पर आग्रह पाएँगे तो उसे मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहेंगे।" (14)

उपन्यासों की इस श्रृंखला में मनोवैज्ञानिकता के पहलुओं के संबंध में सीमा श्रीवास्तव अपनी पुस्तक *हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान* में कहती हैं- "मनोविज्ञान उपन्यास की पहचान को सबसे पहले पात्र शैली में लिखे गए उपन्यासों से जोड़ा गया है, जिसमें पाठक पात्रों के बहाने चरित्रों के अंत: व्यापार से जुड़ा चला जाता है।" (97)

बच्चों में मनवांछित संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए साहित्यकार बालक की प्रकृति मानसिकता व उसकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बाल साहित्य की रचना करता है। बच्चों को अपने जीवन में सही दिशा प्रदान करने व उनके मनोरंजन को लंबे समय तक बनाए रखने में बाल उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। ये उपन्यास साहस, जादू एवं तिलस्मी, रोमाँ च, कौतूहल, उनकी जिज्ञासा को शांत करने वाले व उनकी मन: स्थिति के अनुसार होते हैं। जहाँ एक तरफ बड़ों के उपन्यास घुमावदार व विस्तारित रूप में होते हैं, वहीं दूसरी तरफ बाल उपन्यास सरल भाषा में रचित, या संक्षेप में कहा जाए तो एक बड़ी कहानी की तरह ही होते हैं। बाल उपन्यास बड़े लोगों के उपन्यास की अपेक्षा छोटे, कम चरित्रों वाले और छोटे-छोटे व सरल संवाद वाले होते हैं।

हरिकृष्ण देवसरे अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन* में कहते हैं: "

> बच्चे जैसे ही दस बारह साल की आयु के हो जाते हैं उन्हें लंबी कहानियाँ पढ़ने में आनंद आने लगता है। इन लंबी कहानियों में वे यात्रा, रहस्य और घटनाओं का वैचित्र्य बहुत पसंद करते हैं, उपन्यास इस तरह की कहानियाँ देने में समर्थ होते हैं।" (284)

बड़ों के उपन्यासों की तरह बाल उपन्यास की शुरुआत भी बीसवीं सदी के प्रारंभ से ही हुई। प्रारंभ में बाल उपन्यासों का विकास धीरे-धीरे हुआ, क्योंकि यह 'माँग और पूर्ति' के सिद्धांत के अनुसार बालकों की माँ ग प्रत्यक्ष सीधे ना होकर अभिभावकों के

माध्यम से उनकी पूर्ति होती थी बड़े अपनी इच्छा अनुसार उपन्यास खरीद सकते थे लेकिन बच्चे नहीं वर्तमान समय में बालकों की रुचि वह माँग भी बढ़ी है, और बालक पुस्तकों की दुकान पर जाकर भी मचल जाते हैं कि मुझे यह पॉकेट पुस्तक खरीदनी है, यह उपन्यास लेना है। इनकी माँग बढ़ी और लेखकों ने भी इस पर कार्य करना प्रारंभ किया। बालकों की इस माँग को पूरा करने के लिए बाल उपन्यास को एक अलग विधा के रूप में प्रतिस्थापित करने में विभिन्न पत्रिकाओं जैसे- बाल सखा, किशोर, पराग, नंदन आदि व इसके साथ साथ साप्ताहिक हिंदुस्तान एवं धर्म युग जैसे साप्ताहिको की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

एक अन्य स्थान पर हरिकृष्ण देवसरे अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन* में कहते हैं:

> रॉबिंसन क्रूसो, सिंदबाद जहाजी, ट्रेजर आईलैंड, डेविड कॉपरफील्ड ऐसे ही उपन्यास हैं जिन्हें बच्चों ने अपने मन की समस्याओं का समाधान समझकर स्वीकार कर लिया। इनसे बच्चे का न केवल मनोरंजन हुआ बल्कि इस दुनिया के रहस्य को जानने समझने की विस्तीर्ण दृष्टि भी मिली। (285)

पूर्ववर्ती उपन्यास का आविर्भाव मध्यवर्गीय समस्याओं, आकांक्षाओं व समसामयिक घटनाओं को उजागर करने के लिए हुआ। पहले उपन्यास पर काफी विवाद है, लेकिन फिर भी ज्यादातर साहित्यकार लाला श्रीनिवास दास द्वारा रचित परीक्षा गुरु जो कि 1882 में लिखा गया था को ही पहला उपन्यास मानते हैं। इस तरह से 1882 ई. से उपन्यासों की रचना प्रक्रिया शुरू हुई। लेकिन फिर भी सही मायने में उचित ढंग से उपन्यासों की रचना प्रेमचंद द्वारा की गई। प्रेमचंद जी ने अपना पहला उपन्यास सेवासदन में समाज का चित्रण करने के साथ-साथ वेश्याओं के जीवन को आधार बनाकर लिखा।

उनके इसी विचारधारा के आधार पर गोपाल राय अपनी पुस्तक *हिन्दी उपन्यास का इतिहास* में कहते हैं- "उन्होंने सामाजिक -आर्थिक कारणों के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक कारण को भी जोड़ कर उसे अधिक विश्वसनीय बना दिया है।" (128)

हिन्दी कथा साहित्य में कहानी, कविता, नाटक आदि विधाओं की रचना हुई लेकिन इन सब विधाओं की तुलना में उपन्यास विधा की शुरुआत कुछ देर से हुई। बीसवीं शताब्दी के पहले व दूसरे दशक मेंजहाँ बाकि विधाओं की मात्रा प्रचुर मात्रा में मिलती थी, वही उपन्यास की संख्या मुश्किल से पाँच-सात के लगभग थी।

प्रेमचंद से पहले के कथाकार मनोविज्ञान से परिचित नहीं थे। उन्हें मनोविज्ञान का ज्ञान नहीं था, फिर भी कुछ प्रसंगों में कहीं-कहीं मनोविज्ञान के दर्शन हो जाते थे। हिन्दी बाल साहित्य में उपन्यास विधा की शुरुआत करने का श्रेय मुंशी प्रेमचंद को जाता है। उन्होंने अपना पहला उपन्यास कुत्ते की कहानी लिखा, जिसने भविष्य के बाल उपन्यासकारों के लिए जमीन तैयार की। इसी विचार का समर्थन करते हुए प्रकाश मनु अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास* में कहते हैं:

> हिन्दी बाल उपन्यास का यह एक बड़ा सौभाग्य है कि उसकी नींव रखने का श्रेय उपन्यास-सम्राट प्रेमचंद (1880-1936) को जाता है। प्रेमचंद की रचना 'कुत्ते की कहानी' (1936) अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार 'हिन्दी का पहला बाल उपन्यास' है। (257)

हिन्दी में उपन्यास शब्द कथा साहित्य के रूप में प्रस्तुत हुआ है। सुषमा धवन अपनी पुस्तक *हिन्दी उपन्यास* में कहते हैं-

> यद्यपि प्रेमचंद पूर्व काल में परीक्षा गुरु में व्यक्ति चित्रण का यथेष्ठ चित्र उपलब्ध होता है, परंतु मनोवैज्ञानिक रूप से हृदय की भावनाओं का चित्रण करने का सर्वप्रथम प्रयास जैनेंद्र कुमार के परख उपन्यास से हुआ। (26)

देवराज उपाध्याय अपनी पुस्तक *कथा साहित्य के मनोवैज्ञानिक समीक्षा-सिद्धांत* में कहते हैं-

> वास्तव में हिन्दीउपन्यास में समसामयिकता का प्रारंभ कथा के क्षेत्र में जैनेंद्र और अज्ञेय के आगमन से ही मानना चाहिए। कारण यह है कि पहली बार हिन्दी साहित्य में ऐसे उपन्यासों के दर्शन हुए जिनमें एक अभूतपूर्व ताजगी, स्फूर्ति, प्राणवत्ता प्राप्त हो सकी। मनुष्य को बाहरी दृष्टि से ही नहीं परंतु आन्तरिक दृष्टि से भी देखने का प्रयत्न हुआ है। (165)

जैनेंद्र जी की तुलना में इलाचंद्र जी ने मनोविज्ञान का अधिक प्रयोग किया है, किंतु जैनेंद्र जी ने स्वाभाविक सरल रूप में पात्रों में सजीवता लाने के लिए मनोविज्ञान का प्रयोग किया है। इलाचंद्र जी मनोविज्ञान को खींच लाए हैं। देवराज उपाध्याय अपनी *पुस्तक आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान* में कहते हैं- "उन्होंने आग्रह पूर्वक मनोविज्ञान को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। जानबूझकर उसे अपनी रचनाओं का उपजीव्य बनाया है।" (183)

एस.एन.गणेशन अपनी पुस्तक *हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन* में कहते हैं-

> प्रेमचंद के पश्चात के उपन्यासों की सबसे प्रधान मौलिक प्रवृत्ति मनोविज्ञान है। जैनेंद्र ने जिस प्रवृत्ति को शुरू करके फिर कुछ पल के लिए छोड़ दिया, उसे इलाचंद्र जोशी ने पकड़ लिया और अपने आधा दर्जन उपन्यासों में मनुष्य की मानसिक ग्रंथियों का अध्ययन करने का प्रयत्न किया। (81)

सुरेंद्र विक्रम अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल पत्रकारिता: उद्भव और विकास* में कहते हैं:

> सन 1952 में बालसखा में रूप नारायण दीक्षित कृत बाल उपन्यास "खड़ खड़ देव" तथा साप्ताहिक हिंदुस्तान में दयाशंकर दद्दा कृत "दीनू बेटा" प्रकाशित हुआ। सन 1957 में अयोध्या प्रसाद झा का एक बाल उपन्यास "लाल पुतला", किशोर मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुआ। (34)

एक अन्य स्थान पर सुरेंद्र विक्रम अपनी पुस्तक हिन्दी *बाल पत्रकारिता: उद्भव और विकास* में कहते हैं:

> इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कार्य हरिकृष्ण देवसरे ने किया। उनका उपन्यास 'चंदा मामा दूर के' 'पराग' पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त हिमाँशु श्रीवास्तव कृत- जूही रानी, कृष्ण चंद्र कृत- खरगोश का सपना, सत्यप्रकाश अग्रवाल कृत-एक डर: पांच निडर, प्रशांत कृत- सुनहरा हिरण, जादू की टहनी, विश्वमित्र शर्मा कृत- सम्राट अशोक, मनहर चौहान कृत- जय भवानी, उमाशंकर कृत- चित्तौड़गढ़ की रानी आदि मौलिक उपन्यासों की परंपरा में आती है। (36)

कुछ प्रमुख बाल कथाकारों के उपन्यास इस प्रकार हैं- मनहर चौहान- हल्दीघाटी, जय भवानी, खूब लड़ी मर्दानी, गढ़ मंडला की रानी, जयप्रकाश भारती के उपन्यासों में - नमक का कर्ज, देशभक्ति, बर्फ की गुड़िया, हरिकृष्ण देवसरे के बाल उपन्यासों में- पांवों के पंख तक, चंदा मामा दूर के, सुरखाब के पर, आल्हा उदल, महाबली छत्रसाल, डाकू का बेटा, चटपट चंदू, होटल का रहस्य, सोहराब रुस्तम, जाली नोट, जाली चेक आदि है। उषा यादव के बाल उपन्यासों में- पारस पत्थर, नंदा दधीचि, सोना की आंखें, सबक हीरे का मोल, शमशेर अहमद खान के उपन्यासों में- पापा का उपहार, रोहिताश्व अस्थाना के

बाल उपन्यासों में- स्वप्न लोक, काफिले का सूरज, बच्चों की वापसी व सोनू की उड़ान आदि सम्मिलित है।

प्रकाश मनु अपने लेख *बच्चों के दिल की बात कहते हैं बाल उपन्यास* में कहते हैं:

> चर्चित और उल्लेखनीय बाल- उपन्यासों में अमृतलाल नागर का 'अकल बड़ी या भैंस' 1982, भूपनारायण मिश्र का 'बालराज्य' 1988, 'नानी के घर में टंटू', 1992, गुलजार का 'बोस्की के कप्तान चाचा', 1986, बल्लभ डोभाल का 'उस्ताद भूरेलाल', 1996, भगवती शरण मिश्र का 'नागों के देश में', 1988, विनायक का 'नदियाँ और जंगल', 2002, रमेश थानवी का 'गाड़ियों की हड़ताल', 1989, क्षितिज शर्मा का 'भवानी के गाँव का बाघ', 1994 तथा 'पामू का घर', 1997,.....इरा सक्सेना का 'कंप्यूटर के जाल में', तथा 'गजमुक्ता की तलाश', 2000, अभिलाष वर्मा का 'गोल्डी सिल्विया के कारनामे', 2000, उषा यादव का 'लाखों में एक नन्हा दधीचि, 'सोना की आंखें', 'पारस पत्थर' आदि। (9)

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि बच्चों के लिए रुचिपूर्वक, आनंददायक व उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले उपन्यासों के प्रकाशित होने के कारण, बाल साहित्य में उपन्यासों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। इनके कारण बालकों को अपने परिवेश का ज्ञान होता है और उन्हें अपने परिवेश से जुड़ने के ज्यादा से ज्यादा अवसर मिलते हैं। वर्तमान दशक में उपन्यास बालकों के लिए लोकप्रिय होने के साथ-साथ उनकी सृजनशीलता एवम् कल्पनाशीलता जैसी विशेषताओं का विकास हो रहा है।

यहाँ जिन हिन्दी कहानियों का हम मनोवैज्ञानिक अध्ययन करेंगे उनकी सूची निम्न है:

1	कजाकी	प्रेमचंद	प्रेमचंद की चुनिन्दा कहानियाँ
2	ईदगाह	प्रेमचंद	प्रेमचंद की चुनिन्दा कहानियाँ
3	गुल्ली डंडा	प्रेमचंद	प्रेमचंद की चुनिन्दा कहानियाँ
4	बड़ा भाई साहब	प्रेमचंद	प्रेमचंद की चुनिन्दा कहानियाँ
5	रामलीला	प्रेमचंद	प्रेमचंद की चुनिन्दा कहानियाँ
6	परवरिश	अमनदीप कौर	दैनिक सवेरा अखबार
7	सजा	मन्नू भंडारी	मन्नू भंडारी की सम्पूर्ण कहानियाँ
8	धरती अब भी घूम रही है	विष्णु प्रभाकर	सम्पूर्ण कहानियाँ विष्णु प्रभाकर
9	रहमान का बेटा	विष्णु प्रभाकर	सम्पूर्ण कहानियाँ विष्णु प्रभाकर
10	छोटा जादूगर	जयशंकर प्रसाद	जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ
11	अपना अपना भाग्य	जैनेंदर कुमार जैन	वातायन (कहानी संग्रह)
12	आरोहण	संजीव	10 प्रतिनिधि कहानियाँ
13	अंतर	वंदना वाजपेयी	Childpsychology.hindi.html
14	ईमानदारी	-	www.motivationalstoriesin.hindi.in
15	गैंग्रीन	अज्ञेय	विपथगा (पांचवें संस्करण)

2.1 वंशानुक्रम संदर्भ

यह सर्वविदित है कि बीज के अनुसार वृक्ष और बीज के अनुसार ही फल उत्पन्न होते हैं। किसी भी प्राणी की शारीरिक विशेषताओं का, उसका रंग, रूप, कद, अन्य मानसिक योग्यताओं का चयन वंशानुक्रम द्वारा ही होता है। वंशानुक्रम का यह प्रभाव गर्भाधान से लेकर जीवन पर्यंत चलता रहता है।

डिक्समेयर अपनी पुस्तक *Child Development: The Emerging Self* में अनुवांशिकता के प्रभाव का समर्थन करते हुए कहते हैं:

> Hereditary factors are innate characteristy with which the child is equipped at birth prime factors in growth, heredity forces control the basic nature of the organism and the rate at which the organism covers the life cycle; they are the basic assets and liabilities structural and functional which allow the organism to use both nature and nature in development. (79)

डिक्समेयर ने अनुवांशिकता को जन्मजात विशेषताएँ व विकास में एक प्रधान तत्व के कारण मौलिक स्वभाव जीवन चक्र को नियंत्रित कर प्राणी की संरचना व क्रियात्मकता से संबंधित संपत्ति एवं ऋण माना, जिनकी सहायता से वह अपने विकास के लिए जन्मजात व अर्जित क्षमताओं का उपयोग कर पाता है।

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई कहानी ईदगाह कहानी मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा रचित कहानी है। कहानी ईदगाह में हामिद को गरीबी जैसे आनुवांशिक तौर पर

मिली है। उसकी दादी अपने पोते हमीद के लिए अपनी खुशियों का त्याग करके उसे हर संभव खुशी देने की कोशिश करती हैं।

> हामिद का अमीना के सिवा और कौन है ! उसे कैसे अकेले मेले जाने दे ? उस भीड़-भाड़ से बच्चा कहीं खो जाय तो क्या हो? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्ही सी जान ! तीन कोस चलेगा कैसे? पैर में छाले पड़ जायेंगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद में ले लेती, लेकिन यहाँ सेवैयाँ कौन पकायेगा? .....हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। (18)

वही हामिद में भी अपनी दादी से ये गुण आए हैं। उसके माता पिता की मृत्यु हो चुकी है। जब उसकी दादी उसे तीन पैसे देकर मेला देखने भेजती है तो उसे अपनी दादी से मिले अच्छे गुणों के कारण वह खिलौने खरीदने की बजाय अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है।

> बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? इतना | जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया। (25)

इस तरह से इस कहानी में बच्चे हामिद को वंशानुक्रम में मिली गरीबी एवं उसके साथ साथ उसकी दादी से मिले नैतिकता के गुणों को दर्शाया गया है। इसी तरह के अनुवांशिकता में मिले गुणों का वर्णन *दैनिक सवेरा* अख़बार में प्रकाशित अमनदीप कौर द्वारा रचित कहानी परवरिश में भी किया गया है। इस कहानी में मयंक को

जिस तरह का व्यवहार, जिस तरह के संस्कार उसकी माँ से मिले बड़े होने पर उसने भी इसी तरह का व्यवहार अपनी माँ के साथ किया।

> कितनी व्यस्त जिंदगी है इन लोगों की... और एक मैं हूँ जिसकी दुनिया इस कमरे तक ही सीमित होकर रह गई है। कभी मैं भी अपनी जिंदगी में ऐसे ही व्यस्त हुआ करती थी, और इतनी व्यस्त कि मैं कभी मयंक को स्कूल जाने के लिए तैयार भी नहीं कर पाती थी। यह काम तो मैंने मधु के ऊपर ही छोड़ दिया था। (भाग-1)

उपर्युक्त कहानियों के अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि एक बालक को जिस तरह के गुण , जिस तरह का स्वभाव अपने माता पिता से प्राप्त होता है उनका मनोवैज्ञनिक विकास भी उसी तरह का होता है।

2.2 परिवेशगत संदर्भ

बच्चे के आसपास जिस तरह का वातावरण, जिस तरह का परिवेश होता है उसी तरह का प्रभाव उसके मनोविज्ञान पर पड़ता है। यदि बच्चे के आसपास का वातावरण, आसपास का परिवेश खुशनुमा रहेगा तो बच्चा भी प्रसन्नचित रहेगा। लेकिन यदि बालक के आसपास का परिवेश दुख, चिंता या उदासी से भरा होगा तो बालक भी मानसिक समस्याओं से ग्रसित हो सकता है। हिन्दी कथाओं में इसका अध्ययन करेंगे। जैसा कि अध्याय 1 में वर्णित किया गया है कि परिवेशगत संदर्भ को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं परिवार और स्कूल

2.2.1 परिवार

बालक के जीवन में परिवार की एक अहम भूमिका होती है। जिसमें बड़े, बूढ़े, जवान, बच्चे सभी मिलजुल कर रहते हैं। परिवार में जैसा माहौल होता है, उसके परिवार में

जो कुछ परिस्होथितियाँ होती हैं उन सब का प्रभाव बालकों के मनोविज्ञान पर बखूबी पड़ता है।

जगदानंद पांडे जी अपनी पुस्तक *बाल मनोविज्ञान* में इस बात का समर्थन करते हुए कहते हैं, "हम सभी जानते हैं कि किसी का भी भावी जीवन उसके बाल्य जीवन पर ही निर्भर करता है, क्योंकि बच्चा जैसा इस जीवन में बन जाता है, वैसा ही जीवन भर बना रह जाता है।" (8-9)

निम्न कहानियों में यही दर्शाया गया है:

कजाकी

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई कजाकी कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। जिसमें दर्शाया गया है कि एक बालक के जीवन पर उसके आसपास के परिवेश, उसके परिवार में जो कुछ घटित हो रहा है, उसका क्या असर पड़ता है? उसकी क्या मना मनोदशा होती है? इस कहानी में कजाकी नाम का एक आदमी जो प्रतिदिन डाक का थैला लेकर आता था। कजाकी बहुत ही मेहनती था। डाक का थैला रखते ही, वह उसे अपने कंधों पर बैठाकर दौड़ता और सब बच्चों को ढेर सारी कहानियाँ सुनाता। वह उसके कंधों पर बैठता तो लगता कि उसे स्वर्ग का सिंहासन मिल गया।

> यह स्थान मेरी अभिलाषाओं का स्वर्ग था। स्वर्ग के निवासियों को भी शायद यह आंदोलित आनंद न मिलता होगा जो मुझे कजाकी के विशाल कंधों पर मिलता था। संसार मेरी आंखों में तुच्छ हो जाता और जब कजाकी मुझे कंधे पर लिए हुए दौड़ने लगता, तब तो ऐसा मालूम होता, मानो मैं हवा के घोड़े पर उड़ा जा रहा हूँ। (83)

एक दिन की बात है उस दिन कजाकी को डाक लाने में बहुत देर हो गई थी। वह बालक उसका बेसब्री से इंतजार कर रहा था। उसे उस समय कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

> एक दिन कजाकी को डाक का थैला लेकर आने में देर हो गयी। सूर्यास्त हो गया और वह दिखलायी न दिया। मैं खोया हुआ- सा सड़क पर दूर तक आँखें फाड़- फाड़ कर देखता था; पर वह परिचित रेखा न दिखलाई पड़ती थी। कान लगाकर सुनता था; झुन-झुन की वह आमोदमय ध्वनि न सुनाई देती थी। (84)

अचानक उसे उसके आने की आवाज सुनाई दी लेकिन उसे उस पर गुस्सा आता है तभी उसे पता चला कि कजाकी उसके लिए हिरण का बच्चा पकड़ रहा था और उसी में इतनी देर हो गई लेकिन जब उसने हिरन के बच्चे को देखा तो उसका सारा गुस्सा हवा हो गया।

> मैंने उसे दौड़कर कजाकी की गोद से ले लिया। यह हिरण का बच्चा था। आह! मेरी उस खुशी का कौन अनुमान करेगा? तब से कठिन परीक्षाएँ पास की, अच्छा पद भी पाया, रायबहादुर भी हुआ; पर वह खुशी फिर न हासिल हुई। मैं उसे गोद में लिये उसके कोमल स्पर्श का आनंद उठाता घर की ओर दौड़ा। (85)

उपर्युक्त कथनों से उस बालक की खुशी का अंदाजा लगा ही सकते हैं, लेकिन पिताजी ने कजाकी को नौकरी से निकाल दिया। जब उसे पता चला तो उसे बहुत बुरा लगा, और उसने सोचा कि अगर उसके पास सोने की लंका होती तो वह उसे कजाकी को दे देता।: "उस वक्त मेरा ऐसा जी चाहता था कि मेरे पास सोने की लंका होती, तो कजाकी को दे देता और बाबू जी को दिखा देता कि आपके निकाल देने से कजाकी का बाल भी बांका नहीं हुआ।" (86)

उस समय कजाकी की हालत देखकर उसे बहुत रोना आया। ये कथन देखिये: "मैं दौड़ा हुआ घर गया, लेकिन अम्मा जी ने कुछ कहने के बदले बिलख बिलख कर रोने लगा।" (86)

फिर अगले दिन जब कजाकी उससे मिलने आया। तब भी वह उसकी मदद करने के लिए माँ से छुपकर टोकरी में आटा लेकर गया: "एकाएक मुझे ख्याल आया कि कजाकी भूखों मर रहा होगा। मैं तुरंत घर आया। अम्मा दिया-बत्ती कर रही थी। मैंने चुपके से एक टोकरी में आटा निकाला; आटा हाथों में लपेटे, टोकरी से गिरते आटे की एक लकीर बनाता हुआ भागा।" (89)

लेकिन कजाकी आटा नहीं ले कर गया। जब माँ को पता चला तो उन्होंने उससे काफी पूछने की कोशिश की लेकिन वह डर के कारण सहम कर चुप खड़ा रहा।

> मैं चुप खड़ा था। वह कितना ही धमकाते थी, चुमकारती थी, पर मेरी जबान न खुलती थी। आने वाली विपत्ति के भय से प्राण सूख रहे थे। यहाँ तक कि यह भी कहने की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि बिगड़ती क्यों हो, आटा तो द्वार पर रखा हुआ है, और न उठा कर लाते ही बनता था, मानव क्रियाशक्ति ही लुप्त हो गई हो, मानों पैरों में हिलने की सामर्थ्य ही नहीं। (91)

माँ को जब पता चला कि वह आटा कजाकी के लिए लेकर गया था तो उसने भी उन्हें सच बता दिया: "बच्चों के साथ समझदार बच्चे बनकर माँ -बाप उन पर जितना असर डाल सकते हैं, जितनी शिक्षा दे सकते हैं, इतने बूढ़े बनकर नहीं।" (91)

मैं उन दिनों हिरण के बच्चे मुन्नू के साथ खेलने में व्यस्त हो गया, लेकिन शाम होते ही मैं कजाकी को ढूंढने लग जाता।

> बालकों का हृदय कितना कोमल होता है, इसका अनुमान नहीं कर सकता। उनमें अपने भावों को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं होते। उन्हें यह भी ज्ञात नहीं होता कि कौन सी बात उन्हें विकल कर रही है, कौन-सा कांटा उनके हृदय में खटक रहा है, क्यों बार-बार उन्हें रोना आता है, क्यों वे मन मारे बैठे रहते हैं, क्यों खेलने में जी नहीं लगता? मेरी भी यही दशा थी। कभी घर में आता, कभी बाहर जाता, कभी सड़क पर जा पहुँचता। आँखे कजाकी को ढूंढ रही थी।(93)

इस तरह से दस-बारह दिन बीत गए। एक दिन उसकी पत्नी आई और बताया कि वह उसके लिए कमलगट्टे लाई है जो कि कजाकी ने दिए हैं। बताया कि जिस दिन से कजाकी को नौकरी से निकाला गया है, भैया जी का नाम ले लेकर रोते रहते हैं। वह तभी से बीमार है। तभी पिताजी ने बताया कि कजाकी की नौकरी बहाल कर दी गई है, उसे काम पर भेज देना। जब वह वापस आया तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा: "मैं उसकी पीठ पर सवार होकर डाकखाने की ओर चला। मैं उस वक्त फूला न समाता था और शायद कजाकी मुझसे भी ज्यादा खुश था।" (95)

इस तरह से उपर्युक्त कथनों से कह सकते हैं कि जैसा वातावरण, परिवेश एक बालक के आस पास उसके परिवार में होता है, उसका मन, मस्तिष्क भी उसी तरह का हो जाता है।

ईदगाह

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई कहानी ईदगाह कहानी मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा रचित कहानी है। जिसमें हामिद के परिवार की परिस्थितियों का वर्णन किया गया है और इसका हामिद के मनोविज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दर्शाया गया

है। सभी बच्चे अपने-अपने बड़ों के साथ ईदगाह जाने की तैयारियाँ कर रहे हैं। वहाँ का दृश्य बहुत ही खुशनुमा लग रहा है।

> आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही है। किसी के कुरते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर से सुई-तागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। (17)

सभी बच्चे अपने अपने पैसे गिन रहे हैं। लेकिन हामिद जिसके माँ-बाप मर चुके हैं। उसकी दादी ही उसका संसार है: "अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है।" (17)

उसकी दादी के पास पैसे नहीं है। जैसे-तैसे दोनों का गुजारा होता है, लेकिन फिर भी हामिद खुश है: "अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई है; इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज है, और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है।" (18)

हमिद मेले में तीन पैसे लेकर जाता है। वहाँ पर बहुत सारी मिठाइयाँ हैं, झूले हैं, सभी की तरफ उसका मन ललचाता है। इससे उसका बालमन साफ झलकता है: "हामिद खिलौने की निंदा करता है- मिट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ, लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए अपने हाथ में ले सकता।" (23)

फिर भी वह इन सब की परवाह न करते हुए और अपनी दादी की परेशानियों को देखते हुए उन तीन पैसे से दादी के लिए चिमटा खरीद कर लाता है, और सोचता है कि दादी बहुत खुश होगी:

> अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी- मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है! हजारों दुआएँ देंगी। फिर-पड़ोस की औरतों को दिखायेंगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ देगा। (25)

बालक होने के बावजूद वह अपने स्वाद, खिलौनों या झूले की परवाह न करके दादी की परेशानियों को दूर करने के लिए उनके लिए चिमटा लाता है। उसे अपनी दादी की परेशानियाँ ज्यादा बड़ी लगती है।

मुंशी प्रेमचंद जी ने अपनी कहानी ईदगाह के लिए कहा है:

> बाल मन को समझने के लिए इससे अच्छी और कोई कहानी नहीं हो सकती। बहुत साल पहले लिखी गई यह कहानी आज की ही कहानी लगती है। हर बच्चे को इस कहानी को पढ़ाया जाना चाहिए। यह कहानी संदेश देती है कि बाल मनोविज्ञान को समझना कितना जरूरी है। (53)

उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर कह सकते हैं कि हामिद अपने आस-पास अपनी दादी की परेशानियों को देखता है और उसकी मनोदशा भी उसी तरह की विकसित होती है। अपनी दादी की त्याग की भावना देखकर उसमें भी त्याग की भावना आती है।

गैंग्रीन कहानी अज्ञेय द्वारा रचित है यह कहानी में मुख्य रूप से एक विवाहित नारी के मन की उदासी और अकेलेपन को दर्शाया गया है। इसी का दूसरा भाग मालती के हाव-भाव और मानसिक उथल-पुथल, उसके मन के भीतर के द्वंद को बयान करते हैं

लेकिन हम जब बाल मनोविज्ञान का अध्ययन करते हैं तो इस कहानी में एक टिटी नाम का बाल पात्र है। जिस पर उसके आसपास के परिवेश का प्रभाव दिखाया गया है। बालक टिटी को विरासत में मिलती है यह घुटन और बेचैनी। वह भी इस तरह के परिवेश से चिड़चिड़ा हो जाता है और सारे दिन रोता रहता है। उसके रोने का ही नहीं बल्कि उसके पलंग से गिरने का भी किसी पर कोई असर नहीं होता।

परवरिश

इसी तरह से एक अन्य कहानी *दैनिक सवेरा* अख़बार में प्रकाशित परवरिश अमनदीप कौर द्वारा रचित कहानी है। बालक का जिस तरह के परिवेश में परवरिश या लालन-पालन होता है, उसके मन मस्तिष्क पर उसी का प्रभाव पड़ता है। वह बड़ा होकर उसी तरह का नागरिक बनता है इस कहानी में मयंक को माता पिता के द्वारा बचपन में समय न होने के कारण अकेलेपन में ही जीवन जीना पड़ता है।

> मेरा बचपन बिना पतवार की नाव की भांति हिचकोले खाता रहा। कितने ही तूफानों का सामना करता रहा। प्रेम व ममता के अभाव में सारे सुख-चैन फीके पड़ जाते हैं। आज भी मैं सभी प्रकार से संपन्न होने पर भी एक ईंट भट्ठे पर काम करने वाली मजदूर व उसके बच्चे को अधिक खुशकिस्मत समझता हूँ, जो सूर्य की किरणों के कोप से बचाने के लिए अपने बच्चे को आंचल में समेट लेती है। (भाग-2)

एक बालक को अपने माता-पिता की बचपन में सबसे ज्यादा जरूरत होती है। लेकिन मयंक को अपना बचपन अकेले या नौकरों के साथ ही बिताना पड़ता है और वह उस समय एकाकीपन की कुंठा से ग्रसित हो जाता है। "माँ के आंचल की छांव तले पलने का सुख नौकरों की देखरेख में पलने से कहीं अधिक आनंदमय में होता है।" (भाग-2)

उपर्युक्त तथ्यों से पता चलता है कि मयंक अपने माता-पिता के प्यार से कितना वंचित था वह अपनी माँ व पिता का प्यार चाहता था लेकिन उसके पिताजी और देवयानी के पास उसके लिए बिल्कुल समय नहीं था। जब वह बड़ा हो जाता है और देवयानी 75 वर्ष की हो जाती है तब मयंक द्वारा उसी तरह उपेक्षित की जाती है। तब देवयानी को इस बात का अहसास होता है।

> कितनी व्यस्त जिंदगी है इन लोगों की... और एक मैं हूँ जिसकी दुनिया इस कमरे तक ही सीमित होकर रह गई है। कभी मैं भी अपनी जिंदगी में ऐसे ही व्यस्त हुआ करती थी, और इतनी व्यस्त कि मैं कभी मयंक को स्कूल जाने के लिए तैयार भी नहीं कर पाती थी। यह काम तो मैंने मधु के ऊपर ही छोड़ दिया था। (भाग-1)

मयंक भी अपनी माँ के अकेलेपन की तरफ ध्यान नहीं देता, और अपनी इस तरह की जिंदगी के लिए सोचता रहता है।

> उस वक्त तुमने जिंदगी की चकाचौंध के कारण मुझे अंधेरे गर्त में धकेल दिया था। मयंक के शब्द "आप' से 'तुम' पर उतर आए। मयंक के होठ फड़फड़ाने लगे, 'उस अंधेरे गर्त में माँ ,जहाँ मेरे बचपन की समाधि बन गई। (भाग-2)

वही मयंक युवावस्था में अपनी माँ की तरह ध्यान नहीं देता। इस तरह से इस कहानी में बालक के आस-पास का परिवेश किस तरह से उसके मनोविज्ञान को प्रभावित करता है, वही दर्शाया गया है। आज देवयानी भी वैसा ही महसूस कर रही थी, जैसा बचपन में मयंक महसूस करता था।

> उसे लगा मानो, माँ उसे कह रही हो, उसे उसका अकेलापन दूर करने में सहायता माँग रही हो, उसकी जिंदगी के कीमती समय में से कुछ समय अपने

> लिए माँग रही हो उसे अपने साथ बाहर घूमने ले जाने को कह रही हो। (भाग-1)

सज़ा कहानी में भी पारिवारिक परिस्थितियों का बालक के मनोविज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है:

सज़ा कहानी मन्नू भंडारी द्वारा रचित कहानी है। यह कहानी आशा और मुन्नू के मनोविज्ञान को दर्शाती हुई कहानी है। उनके पापा को सजा हो जाती है। इससे पहले आशा, उसकी दादी, पापा, मम्मी और मुन्नू बड़े ठाठ से रहते थे। लेकिन जैसे ही उसके पापा को सजा मिली, उन सब का जीवन तितर-बितर हो गया। जब उसके पापा को सजा मिली और वह स्कूल गई तब वहाँ जाकर उसके सहपाठियों के चिढ़ाने पर उसकी मनोदशा बहुत ही दयनीय थी। “मेरा जी होता, चीख-चीख कर सब से कहूँ कि पप्पा ने कुछ नहीं किया है, बस इस समय उनके ग्रह बिगड़े हुए हैं।“ (252)

जब मुकदमे के तीन साल चलने की बात घर में सब को पता चली तो घर में रोना धोना शुरू हो गया। "यों घरवालों के साथ रोई मैं रोज ही थी; पर उस दिन पहली बार मेरा मन रोया था, अपनी पूरी समझ के साथ रोया था।" (252)

> तब घर में आर्थिक तंगी के चलते मुन्नू को पहले गाँव और फिर उमेश चाचा के पास भेज दिया गया, और फिर उसे भी वहाँ भेज दिया गया। उसी समय आशा अपने आप को समय से पहले बड़ा महसूस कर रही थी। "उस दिन मैं सचमुच बड़ी हो गई थी- अम्मा की तरह बड़ी। पर घर छोड़ते समय सारे बड़प्पन के बावजूद फूट पड़ी थी।" (256)

जब मुन्नू के पास पहुंची तो मुन्नू उससे लिपट कर रोने लगा और वह भी रोने लगी। उसे उस समय कैसा लगा यह तो नहीं बता सकती थी, लेकिन चाची को उसका वहाँ आना अच्छा नहीं लगा था। उसने देखा मुन्नू की हालत कुछ खराब थी।

> मुन्नू का रंग काफी सांवला पड़ गया था। चेहरा सुख कर मुरझा गया था और आँखें बड़ी सहमी-सहमी सी लग रही थी। लगा, बहुत डर-डरकर रहता है शायद यहाँ। घर में तो कितना ऊधम करता था। इतना सा बच्चा, कैसे उसने अपने को बदला होगा, दबाया होगा? (256)

मैंने चाची जी का गुस्सा शांत करने के लिए सारा काम संभाल लिया था। लेकिन फिर भी चाची जी मुन्नू को बीच-बीच में दो चार थप्पड़ लगा ही देती थी। उस समय मुन्नू की हालत बहुत ही दयनीय होती थी।

> मुन्नू सहम जाता था। भीतर ही भीतर सिसकता। बड़ी करुण नजरों से वह मुझे देखता। पर भीतर से कटकर भी मैं ऐसे अवसरों पर कुछ नहीं बोलती। सोचती, यों मार खा-खाकर मुन्नू या तो बेहद ढीठ हो जाएगा या जड़। (257)

बीच-बीच में उसके पापा के केस की सुनवाई होती रहती थी। मुन्नू एक विषय में फेल होकर अगली क्लास में हुआ था। तब चाची जी के बच्चे उसे चढ़ाते हैं।

> आँख के आँसू गालों पर लुढ़क गए। कमीज की बांह से उन्हें पोंछता हुआ वह भीतर जाने लगा तो टिल्लू चिढ़ाने लगा: "फेलूराम... फेलुराम!" उस दिन पहली बार मेरे लिए अपने पर बस रखना बहुत कठिन हो गया था। मन हुआ कह दूं- उसे पढ़ने के लिए समय ही कहाँ मिलता है? (259)

और फिर एक दिन आया, जब उसके पापा को रिहा कर दिया, लेकिन फिर भी उसके पापा खुश नहीं थे। इस कहानी में दर्शाया गया है कि हमारे समाज में ईमानदार

व्यक्ति को भी झूठे केस में फंसा देते हैं, लेकिन उसका उसके परिवार पर बहुत बुरा असर पड़ता है। इस कहानी में आशा और मुन्नू के जीवन की तो खुशियाँ ही छीन जाती हैं। वे समय से पहले समझदार और बड़े बन जाते हैं। उन्हें अपनी सभी खुशियों का त्याग करना पड़ता है और इस तरह उसके आसपास के अच्छे परिवेश के अभाव के कारण उनकी हालत, उनकी मनोदशा दयनीय हो जाती है।

अत: कजाकी, ईदगाह, परवरिश, सज़ा व खेल कहानियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि बालक के आसपास के परिवेश, उसके परिवार के माहौल का उसके मनोविज्ञान पर गहन प्रभाव पड़ता है। कजाकी कहानी में कजाकी के वापस काम पर आने पर भैया जी मन मस्तिष्क से खुश हो जाते हैं। वहीं ईदगाह कहानी में भी हामिद की परवरिश जिस तरह के परिवेश में हुई उसका प्रभाव साफ-साफ उसके मनोविज्ञान पर दिखाई दे रहा है। यही हालत परवरिश कहानी के पात्र मयंक, सजा कहानी के पात्र आशा व मुन्नू की भी है।

2.2.2 स्कूल

बच्चे अपने परिवार से निकलकर कहीं संस्कारों का पाठ पढ़ते हैं तो वह एक मात्र स्थान स्कूल है। वहाँ पर उसके सहपाठी, उसके शिक्षक, वहाँ के वातावरण का उसके मनोविज्ञान पर निश्चित तौर पर प्रभाव पड़ता है। बच्चे का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक विकास स्कूल के माध्यम से ही होता है बच्चे के आसपास जो कुछ घटित होता है उसका उसके मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है फिर यदि शिक्षक द्वारा बताई गई बात से संतुष्ट नहीं होते तो वे प्रश्न भी उठाते हैं। इसी तरह की एक घटना का वर्णन वंदना बाजपेयी द्वारा रचित अंतर नामक कहानी में किया गया है। इस कहानी में एक शिक्षिका बच्चों को सुकरात की कहानी बताते हुए कहती हैं कि सुकरात जहर का प्याला पीने से पहले भी और पीते ही कहते

हैं आई एम अलाइव। आगे कहा कि जो कोई अपने प्राणों की आहुति किसी खास उद्देश्य के लिए देता है, वह हमेशा के लिए अमर हो जाते हैं। तभी पीछे की सीट पर बैठी अनन्या रोने लगती है। रोने का कारण पूछते ही बताती है कि उसके पिता सेना में थे और उन्होंने देश के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। इसके बावजूद मुझे शहीद की बेटी के नाम से कोई नहीं जानता।

> मेरे पापा सेना में थे। देश के लिए लड़ते हुए उन्होंने जान दी। पूरे देश तो क्या पूरे स्कूल को भी नहीं पता कि मैं "शहीद प्रताप सिंह" की बेटी हूँ। मैम जो लोग पहले से प्रसिद्ध होते हैं। वो अमर होते हैं। जो पहले से प्रसिद्ध नहीं होते वो अमर नहीं होते। वो बस एक संख्या बन जाते हैं। जैसे कारगिल में 500 जवान शहीद हुए। ये अंतर क्यों है मैम।”

हालाँकि शिक्षिका उस समय चुप हो गई लेकिन इन सब का प्रभाव बाकी बच्चों पर यह हुआ कि जब अनन्या अपनी सीट पर वापिस जाने लगी तभी सारी क्लास के बच्चे अपनी अपनी सीट से खड़े होकर अनन्या को सैल्यूट करने लगे।

इसी तरह के स्कूल के प्रभाव को एक अन्य कहानी ईमानदारी में भी दिखाया गया है। जिसमें विक्की नाम का बच्चा अपने स्कूल में होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह की परेड में शामिल नहीं हो पाया। क्योंकि उसकी दादी अचानक बीमार हो गई और उसे देखने अस्पताल जाना पड़ा। लेकिन जब प्राचार्य को पता चला कि कक्षा 6 के काफी छात्र उस दिन अनुपस्थित थे, तो उन्होंने कक्षा में जाकर बच्चों को सजा दी और उनका नाम काटने की धमकी देकर जाने लगे। तभी विक्की उनके सामने आकर खड़ा हो जाता है, और कहता है कि उसे सजा नहीं दी गई। तो प्राचार्य महोदय उसकी ईमानदारी से खुश होकर कहते हैं

तुम सजा के हकदार नहीं हो, क्योंकि तुममें सच्चाई कहने की हिम्मत है। मैं तुमसे कारण नहीं पूछूंगा, लेकिन तुम्हें वचन देना होगा कि अगली बार राष्ट्रीय समारोह को नहीं भूलेंगे। अब तुम अपनी सीट पर जाओ।

विक्की ने जो कुछ भी किया उसके लिए उसे बड़ी खुशी मिली।

उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि एक बालक के जीवन पर वंशानुक्रम एवं आस पास के परिवेश का बराबर प्रभाव पड़ता है। वंशानुक्रम एवं वातावरण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

2.3 सामाजिक संदर्भ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके मनोविज्ञान पर उसके आसपास के समाज का विशेष प्रभाव पड़ता है। इसका अध्ययन निम्न कहानियों के अध्ययन से करेंगे।

गुल्ली डंडा

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई गुल्ली डंडा कहानी मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित है। इस कहानी में गुल्ली डंडा खेल का महत्व बताया गया है। गुल्ली डंडा खेल जो कि कहीं भी बिना किसी भी संसाधन के खेला जा सकता है, कहीं भी पेड़ की टहनी तोड़कर गुल्ली डंडा बनाकर, कहीं भी खेल सकते हैं। ना कोई मैदान चाहिए, ना कोई खिलाड़ी और ना ही कोई खर्चा। भारत में विदेशी खेलों के प्रति बढ़ते रुझान पर भी करारी चोट की गई है। आज की युवा पीढ़ी उन खेलों को ज्यादा महत्व दे रही हैं, जिनको खेलने में बहुत सा खर्चा लगता है। गरीब लोग तो इन खेलों को खेल ही नहीं सकता।

कहानी में एक स्थान पर कहा भी है:

> हमारे स्कूलों में हरेक लड़के से तीन-चार रूपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलायें; जो बिना दाम-कौड़ी के खेले जाते हैं। अंग्रेजी खेल उनके लिए है, जिनके पास धन है। गरीब लड़कों के सिर क्यों यह व्यसन मंढते हो। (33)
>
> लेकिन लेखक अपनी इस कहानी में अपने प्रिय खेल गुल्ली डंडा की स्मृतियों में खो जाते हैं, कि कैसे वह अपने दोस्त गया के साथ गुल्ली डंडा खेलते समय अपनी पारी खेलने पर गया को पारी नहीं खेलने देते हैं, और समाज में व्याप्त घूसखोरी एवम् रिश्वतखोरी का सहारा लेकर दाव नहीं देते। उनकी मनोदशा इन पंक्तियों में देखिए:
>
> मैं समझता था, न्याय मेरी ओर है। आखिर मैंने किसी स्वार्थ से ही उसे अमरुद खिलाया होगा। कौन नि:स्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिये ही देते हैं। जब गया ने अमरुद खाया, तो फिर उसे मुझसे दांव लेने का क्या अधिकार है? रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं। यह मेरा अमरुद यों ही हजम कर जायगा? अमरुद पैसे के पाँच वाले थे, जो गया के बाप को भी नसीब न होंगे। यह सरासर अन्याय था। (35)

बच्चे बचपन में हर नामुमकिन कोशिश करते हैं, जीतने के लिए। चाहे उन्हें इसके लिए रिश्वत देनी पड़े। लेकिन गया रिश्वत से भी नहीं माना और दोनों के बीच में झगड़ा हो गया। गया ने उसकी पीठ पर डंडा जमा दिया। उनको उस समय लगा कि एक छोटी जाति के लड़के के हाथों पिट गया, लेकिन उन्होंने घर में किसी को नहीं बताया। फिर उनके पिता जी का तबादला होने पर लेखक दूसरी जगह चले गए और 20 साल बाद इंजीनियर बन कर लौटे। तब उन्होंने गया को बुलाकर उसकी पारी देने की बात कही। उन्होंने फैसला किया कि गाँव के बीच में खेलना तो ठीक नहीं रहेगा,

इसलिए वे गाँव के बाहर जाकर खेलेंगे। जो गया उस खेल में बहुत माहिर था, वह लेखक की बड़ी जाति व उच्च पद पर होने के कारण ढंग से नहीं खेलता और लेखक उसे पदाता जाता है। लेकिन अगले दिन उसी गया ने अपने साथियों के साथ प्रतिस्पर्धा में वही बचपन वाला खेल खेला, वही उत्साह, वही निपुणता। अब उनको समझ में आया कि कल मेरे और मेरे दोस्त के बीच में उनकी अफसरी आ गई, और वे उसके सामने अपने आप को छोटा समझते हैं। उन्होंने एक स्थान पर कहा है:

> यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गई है। अब मैं उसका लिहाज पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ, साहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। हममें कोई भेद न था। यह पद पाकर अब मैं केवल उसकी दया के योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ। (42)

ईदगाह

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई ईदगाह कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। जिसमें एक बालक हामिद के त्याग को दर्शाया गया है हमारे समाज में एक बालक के लिए माता-पिता ही सब कुछ रहते हैं लेकिन हामिद के माता-पिता मर गए हैं उसकी दादी ही उसकी हर सुख दुख का ख्याल रखती है, उसे हर खुशी देने की कोशिश करती है। "अब हामिद बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है।" (18)

जब सभी बच्चे अपने अपने माँ बाप के साथ ईदगाह के मेले में जा रहे हैं तो अमीना दुखी हो जाती है: "अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के

साथ जा रहे हैं। हामिद के पास अमीना के सिवा और कौन है? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे। उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो।" (18)

हामिद को मेले में जाकर भी अपनी दादी का ही ख्याल रहता है। वह अपने लिए कोई खिलौना ना लेकर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीद कर लाता है। यह कहानी त्याग व प्यार की मिसाल कायम करती है।

> हामिद ने अपराधी भाव से कहा- तुम्हारी उंगलियाँ तवे से जल जाती थीं; इसलिए मैंने इसे ले लिया।
>
> बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसम शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! (32)

बड़े भाई साहब

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई कहानी बड़े भाई साहब मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित है। इस कहानी में सामाजिक पक्ष दिखाया गया है। हम जिस समाज में रहते हैं, वहाँ बड़ो का फर्ज है कि वह छोटों को सही रास्ता दिखाएँ, और छोटो का कार्य है कि वह अपने बड़ों की आज्ञा का पालन करें और उनके पद चिन्हों पर चले, तथा उनकी आज्ञा का पालन करें। बड़े भाई साहब छोटे को समझाते हुए कहते हैं: "भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले-मैं कनेकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूं क्या, खुद बेराह चलूं तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूं? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है!" (16)

यही सब इस कहानी बड़े भाई साहब में दिखाया गया है। जिसमें छोटा भाई बड़े भाई के कक्षा में फेल होने के बावजूद उनका सम्मान करता है। एक बार वह अवज्ञा करने की कोशिश करता है, लेकिन बड़े भाई के स्नेहपूर्ण तरीके से समझाने पर वह उनका उतना ही सम्मान करता है। जबकि बड़ा भाई अपने छोटे भाई को सही रास्ता दिखाने के लिए अपनी छोटी-छोटी खुशियों का त्याग करता है: "मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आंखों से कहा- हरगिज़ नहीं। आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिल्कुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है।" (16)

परवरिश

दैनिक सवेरा अख़बार में प्रकाशित परवरिश कहानी अमनदीप कौर द्वारा रचित कहानी है। इस कहानी में आधुनिक युग में कामकाजी महिलाओं के बाहर नौकरी करने पर और उनके पास समय का अभाव होने पर, उनकी संतान पर क्या प्रभाव पड़ता है? उसी का वर्णन किया गया है। नौकरी करने के कारण माता-पिता के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं बचता। यह कहानी मयंक नामक बालक की मनोदशा पर आधारित कहानी है, जिसमें दर्शाया गया है कि हमारे समाज में आजकल माँ -बाप दोनों का नौकरी करना समय की माँग भी है और चलन में भी है, लेकिन माता-पिता दोनों के बाहर कार्य करने पर बालक के लिए समय ही नहीं मिल पाता और उन्हें एकाकीपन का शिकार होना पड़ता है। मयंक की माँ देवयानी के पास भी मयंक के लिए समय नहीं होता था। लेकिन जब उसे स्वयं इन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, तब वह सोचती है:

> उन दिनों मुझे कहां फुर्सत थी? कभी कॉलेज में कोई प्रतियोगिता की तैयारी करनी होती थी कभी कोई प्रदर्शनी, कभी व्याख्यान तो कभी सेमिनार इन सब

> से फुर्सत मिलती तो किसी प्रोफेसर के यहाँ पार्टी, कभी किसी के यहाँ मृत्यु तो कभी किसी के बच्चों की शादियों में शरीक होना ही पड़ता था। वाकई मेरा जीवन कितना व्यस्त था। (भाग-1)

लेकिन बालक मयंक के बाल मन पर इसका बहुत दुष्प्रभाव पड़ता है। वह अपने आप को हर समय उपेक्षित सा महसूस करता है। कहते भी हैं कि एक बालक का जिस तरह के समाज में लालन पोषण होता है, उसके मनोविज्ञान का विकास भी वैसा ही होता है। इस कहानी में भी ऐसा ही होता है। मयंक बड़ा होकर उपेक्षित भाव से भर कर अपनी माँ के प्रति भी उसी तरह का व्यवहार करता है, जैसा उसे अपनी माँ का व्यवहार अपने प्रति बचपन में लगता था।

> उनकी जिंदगी में सबसे अहम चीज चैक थी और तुम्हारे जिंदगी में चकाचौंध। मैं केवल आपकी सहायता के लिए चैक दे सकता हूँ, जो कभी आप लोगों ने मेरी स्कूली शिक्षा के लिए दिए थे पर मैं वह प्रेम व अपनापन आप लोगों को नहीं दे सकता जो कभी मुझे आपसे मिला ही नहीं। (भाग-2)

अगर इस तरह के समाज में रहकर बच्चा एकाकीपन का शिकार होगा तो वह आगे बड़ा होकर समाज के लिए एक जिम्मेदार नागरिक नहीं बन पाता।

> मैं अपनी जिंदगी में उसी तरह व्यस्त हूँ जिस तरह कभी आप हुआ करती थीं। जिस तरह आज आप मुझे अपने पास बैठाना चाहती है उसी तरह कभी मैं भी आपको अपने पास बैठाना चाहता था। जिस तरह अब आप मेरे साथ बाहर घूमने जाना चाहती हैं उसी तरह कभी मैं भी बाहर घूमने जाना चाहता था। (भाग-2)

और मयंक अकेलेपन की कुंठा से भर जाता है, और अपने आप से ही प्रश्न करता है:

> क्या वही प्रश्न जो बचपन से लेकर आज तक मयंक के मन में बिजली की तरह कौंधते रहे हैं। क्या आज माँ के मन में भी वही प्रश्न गूंजते होंगे? अकेलापन दीमक की तरह खा रहा होगा जिस तरह कभी मुझे खाया करता था। उसे लगा मानो, माँ उसे हां कह रही हो, उसे उसका अकेलापन दूर करने में सहायता माँग रही हो, उसकी जिंदगी के कीमती समय में से कुछ समय अपने लिए माँग रही हो या उसे अपने साथ बाहर घूमने ले जाने को कह रही हो। (भाग-1)

इस तरह से मयंक प्रश्नों के भंवर में घिरा रहता है और मन ही मन कुढ़ता रहता है। इस तरह यदि समाज में एक बालक को उपेक्षा की यंत्रणा का शिकार होना पड़ता है, तो वह एकाकीपन का शिकार होकर उसी तरह का नागरिक बनता है और अपनी जिम्मेदारियाँ भी अच्छी तरह से नहीं निभाता।

धरती अब भी घूम रही है प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक *सम्पूर्ण कहानियाँ विष्णु प्रभाकर* में रचित धरती अब भी घूम रही है कहानी विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित कहानी है। जिसमें नीना और कमल के बाल मन जो कि बहुत निश्चल, निष्कपट है, का वर्णन यहाँ पर किया गया है। हमारे समाज में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार की घटनाएँ आए दिन होती रहती हैं। अमीर लोग इसे अपना अधिकार समझते हैं और वे इस तरह की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते रहते हैं।

इस कहानी में नीना और कमल के पिता रिश्वतखोरी के केस में फस जाते हैं और उन्हें एक साल की जेल की सजा मिलती है, हमारे समाज में अच्छा समय होने पर सभी साथ देते हैं, लेकिन जब मुसीबतों का पहाड़ टूटता है, तब सभी अपने भी साथ छोड़ देते हैं, उनका व्यवहार भी बदल जाता है। इस कहानी में नीना और कमल के प्रति उनके मौसा व मौसी जी का भी व्यवहार उनके प्रति बहुत कठोर हो जाता है।

> एक चित्र मौसी का था जो उन्हें रोते-रोते घर लाई थी और वह प्रेम दर्शाया था कि वह भी रो-रोकर पागल हो गए थे लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए प्यार घटता गया और दया बढ़ती गई। दया ऊंच-नीच और दंभ की जननी है। उसने उन्हें आज पशु से भी तिरस्कृत बना दिया...(8)

तब उन्होंने अपने मौसा जी से कहते सुना कि रुपए व खूबसूरत लड़की लेकर किसी को भी जेल से रिहा कर देते हैं। मीना और कमल सरल व कोमल हृदय के बालक जज के पास पहुँच जाते हैं और कहते हैं:

> आपने हमारे पिताजी को जेल भेजा है। आप उन्हें छोड़ दें...।
>
> कमल ने उसी दृढ़ता से कहा, 'हमारे पास पचास रुपए हैं। आपने तीन हजार लेकर एक डाकू को छोड़ा है...।
>
> कमल ने कहा, 'रुपए थोड़े हो तो...
>
> नैना बोली, 'तो मैं एक-दो दिन आपके पास रह सकती हूँ।'
>
> कमल ने कहा, 'मेरी जीजी खूबसूरत है और आप खूबसूरत लड़कियों को लेकर काम कर देते हैं...। (12-13)

उनको इन सब का अर्थ भी नहीं पता लेकिन फिर भी अपने पिता को जेल से रिहा करवाने के लिए वह ऐसा कदम उठाते हैं और उस समय लेखक को लगता है कि धरती अब भी घूम रही है। बच्चों की मनोदशा का बहुत ही कारुणिक व दर्दनाक वर्णन किया गया है।

छोटा जादूगर

प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक *जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ* में रचित छोटा जादूगर कहानी जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कहानी है। इसमें एक दस-बारह साल के लड़के की कहानी है, जो अपने आप को छोटा जादूगर बताता है। उसके पिताजी देश की आजादी की लड़ाई के लिए जेल गए हुए हैं। वह छोटा सा बच्चा पूरे आत्मसम्मान के साथ अपना पेट भरता है और अपनी बीमार माँ का ख्याल रखता है। इस कहानी में एक गरीब बच्चे की दशा व उसकी माँ की दशा को दर्शाया गया है। एक छोटा सा बच्चा जो जादू दिखा कर अपना और अपनी माँ का पेट पालता है। जिस बच्चे को अपने बचपन में खुद खेल-कूद और पढ़ाई करनी चाहिए और हंसी खुशी में अपना बचपन बिताना चाहिए, वह इस उम्र में अपनी माँ की दवा के लिए चिंतित है और जादू का खेल दिखा कर रुपए कमा कर अपनी माँ के लिए दवाई लाता है। एक दिन जब लेखक उससे मिलने जाता है तो उस दिन उसकी माँ का देहांत हो जाता है और वह बच्चा बहुत ही दुखी हो जाता है। "जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं स्तब्ध था। इस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।" (50)

इस कहानी में छोटा जादूगर छोटा सा बच्चा होने के बावजूद खेल दिखाकर रुपए कमाता है और अपना व अपनी माँ का जीवन निर्वाह करता है।

हमारे समाज में जाति पाति व भेदभाव की सामाजिक रूढ़ियों का चलन है। उसी जाति पाति भेदभाव को गुल्ली डंडा कहानी में दिखाया गया है। इसी तरह से ईदगाह कहानी में भी हामिद का खिलौना न खरीद कर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदना उसका अपनी दादी के प्रति लगाव व सम्मान को दर्शाता है। बड़े भाई साहब में भी बड़े साहब के बार-बार फेल होने के बावजूद छोटा भाई उनका सम्मान करना नहीं छोड़ता। इसी तरह से परवरिश कहानी में मयंक का जिस तरह के आसपास के समाज

में पालन पोषण होता है। वह बड़ा होकर उसी तरह का व्यवहार अपनी माँ के प्रति करता है। वही धरती अब भी घूम रही है कहानी में सामाजिक बुराइयाँ भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी का नैना व कमल के बाल मनोविज्ञान पर पड़े बुरे प्रभाव को दर्शाया गया है। छोटा जादूगर कहानी में छोटा जादूगर पढ़ाई छोड़ कर अपनी माँ के इलाज के लिए जादू दिखाकर रुपए कमाता है। अपना वह अपनी माँ का पेट भरने के लिए उसे इतनी छोटी उम्र में ही काम करना पड़ता है। अतः इन सब कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि बालक के मनोविज्ञान पर सामाजिक कारको का बखूबी प्रभाव पड़ता है।

2.4 सांस्कृतिक संदर्भ

भारत एक सांस्कृतिक देश है। यहाँ पर अलग-अलग धर्मों के लोग अलग-अलग त्योहार मिलजुलकर मनाते हैं। उनके अपने अपने रीति रिवाज होते हैं अपनी अपनी मान्यताएँ होती हैं और इन सबका प्रभाव उनके मनोविज्ञान पर भी पड़ता है।

रामलीला

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई कहानी रामलीला मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित है। यह कहानी बड़ों के अनुचित कार्य व व्यवहार करने पर उसका छोटो पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव पर आधारित है। समाज में छोटे बड़ों से आशा करतें हैं कि बड़े सही मार्ग पर चलें और छोटों के लिए आदर्श बने लेकिन इस कहानी में एक बच्चे के पिता द्वारा रामलीला की आरती में ₹1 देने से मना करने पर, वही उनके पिताजी द्वारा नृतिकाओं पर ढेरों अशरफिया लुटाने पर जो दुष्प्रभाव उस बच्चे पर पड़ा उसी का वर्णन किया गया है। बच्चे की मनोदशा देखिये:

> उसी दिन से पिताजी पर से मेरी श्रद्धा उठ गयी। मैंने फिर कभी उनकी डांट-डपट की परवाह नहीं की। मेरा दिल कहता- आपको मुझको उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं है। मुझे उनकी सूरत से चिढ़ हो गयी। वह जो कहते, मैं ठीक उसका उल्टा करता। यद्यपि इसमें मेरी हानि हुई; लेकिन मेरा अंत: करण उस समय विप्लवकारी विचारों से भरा हुआ था। (82)

इस घटना ने उस बच्चे के मन में अपने पिता के प्रति सदा-सदा के लिए अश्रद्धा का भाव उत्पन्न कर दिया है इस कहानी में दिखाया गया है कि अमीर वर्ग के लोग नृतिकाओं पर ढेरों अशरफिया लुटाकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। लेकिन छोटों पर इसका गहरा दुष्प्रभाव पड़ता है।

ईदगाह

अमृत राय द्वारा चयनित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानियाँ भाग-1* में से ली गई कहानी बड़े भाई साहब मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित है। इस कहानी में मुस्लिम धर्म में मनाया जाने वाला ईद के त्योहार की संस्कृति को दर्शाया गया है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण के लिए इसमें ईद का त्योहार के अवसर पर मुस्लिम लोगों के रीति रिवाज का वर्णन किया गया है। कैसे सब एक साथ मिलकर नमाज अदा करते हैं, फिर सब एक दूसरे को गले लगाते हैं। हामिद जो कि एक छोटा बच्चा है किस तरह अपनी बाल सुलभ की भावनाओं पर नियंत्रण करके अपनी दादी के लिए चिमटा खरीद कर लाता है। इसमें बच्चे का अपनी दादी के प्रति निश्चल स्नेह व त्याग दिखाया गया है। इस कहानी में बताया गया है कि ईद का त्यौहार रमजान के तीस रोजों के रखने के बाद आता है। उस दिन सभी बहुत खुश नजर आते हैं।

> रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही है। (17)

हामिद नाम का बालक जो अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ रहता है। वह भी ईदगाह के मेले में जाने के लिए बहुत प्रसन्न है। ईदगाह के अवसर पर चाहे किसी के पास पैसे ना हो फिर भी ईदी माँगने वालों को तो कुछ ना कुछ देना ही पड़ता है।

> यही तो बिसात है और ईद का त्यौहार! अल्लाह ही बेड़ा पार लगावे। धोबन और नाइन और मेहतरानी और चूड़िहार इन सभी तो आयेंगी। सभी को सेवइयाँ चाहिए और थोड़ा किसी की आंखो नहीं लगता। (19)

इस कहानी में ईदगाह पर जो भी रसम अदा की जाती है, उसका भी सुंदर चित्रण किया है कि किस तरह सभी एक साथ मिलकर शीश झुकाते हैं, सभी छोटे या बड़े एक साथ मिलकर नमाज पढ़ते हैं, फिर एक दूसरे को गले लगाते हैं।

> सहसा ईदगाह नजर आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम बिछा हुआ है। और रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहां तक चली गई है, पक्के जगत के नीचे तक जहाँ जाजिम भी नहीं है। नये आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता इस्लाम की निगाह में सब बराबर है। (22)

बच्चे अपनी इच्छा अनुसार नए नए खिलौने लेकर आते हैं, झूले झूलते हैं। हामिद भी मेले में जाता है। उसका भी मन झूला झूलने को करता है, मिठाइयाँ खाने को करता है, खिलौने खरीदने का मन करता है, लेकिन वह इन सब को छोड़कर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीद कर लाता है। ईदगाह पर इतना कुछ होने पर भी उस बालक को अपनी दादी की पीड़ा जो उन्हें रोटी सेकते समय होती है, ज्यादा याद रहती है और वह उनके लिए चिमटा खरीदता है ताकि उनको रोटी सेकते समय पीड़ा न हो। "अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी- मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है! हजारों दुआएँ देंगी।" (25)

निर्मला जैन अपनी पुस्तक प्रेमचंद भारतीय साहित्य में कहते हैं:

> यह कहानी इस लिहाज से अहम् है कि प्रेमचंद ने एक तरफ इस्लामी मसावत् (समानता) का रूहप्रखर (आत्मवर्धक) मंजर उभारा है और दूसरी तरफ माशरती (सामाजिक) स्तह पर मसावत के परिप्रेक्ष्य में अमीरी-गरीबी, ऊंच-नीच और भेदभाव के फर्क से आमने-सामने करके समाजी नाबराबारियों की जानलेवा सच्चाई को नुमाया किया है। (221)

रहमान का बेटा

प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक *सम्पूर्ण कहानियाँ विष्णु प्रभाकर* में रचित रहमान का बेटा कहानी विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित कहानी है। रहमान का बेटा कहानी में समाज के मध्यम एवं उच्च वर्ग में व्याप्त भ्रष्टाचार को दिखाया गया है। साथ ही निम्न वर्ग के जीवन में उन्नति एवं परिवर्तन के प्रति उदासीनता को परिलक्षित करने का प्रयास किया गया है।

सलीम को अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ वह समाज में परिवर्तन के प्रति व्याप्त उदासीनता को समाप्त करना चाहता है, साथ ही उसके पारिवारिक परिवेश का प्रभाव भी उस पर स्पष्ट दिखाई देता है कि वह अपने सौतेले पिता की बात को भी नहीं सहारता है।

सलीम पर शिक्षा का इतना प्रभाव है कि वह स्वयं अपना रहन-सहन स्वच्छ एवं बेहतर करना चाहता है तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को वह स्वयं अगवाई करके समाप्त करने का प्रयास करना चाहता है। इस कहानी में रहमान ने अपनी सौतेले पुत्र सलीम की परवरिश करने तथा उसकी शिक्षा में उतनी ही रुचि एवं कर्मठता दिखाने के साथ-साथ उसे उच्च शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है जितना कि श्रम अपने बच्चों के लालन-पालन में उसने की: "सलीम से उसे क्या कम मोहब्बत है? पेट काटकर उसे रहमान ने ही स्कूल भेजा है। उसके लिए अब भी कभी बड़े बाबू से, कभी डिप्टी, कभी बड़े साहब से गिड़गिड़ाड़ाता रहता है। इतनी गहरी मोहब्बत है, तभी तो इतना दुख है। कोई गैर होता तो...।" (29)

इस कहानी के माध्यम से हमें यह ज्ञात होता है कि संस्कृति का ही प्रभाव था कि उसने स्वयं की संतान एवं सौतेली संतान में कोई भेदभाव नहीं किया। जब रहमान की यह भ्रांति दूर हुई कि उनके रहन-सहन की आलोचना करने की बजाय उसमें आमूलचूल परिवर्तन एवं सुधार चाहता है तो रहमान का स्नेह सलीम के लिए ओर बढ़ गया।

अपना अपना भाग्य

> उधर हमारी भारत की कुल-लक्ष्मियाँ, सड़क के बिल्कुल किनारे-किनारे, दामन बचाती और संहालती हुई साड़ी की कई तहों में सिमट-सिमटकर, लोक-लाज,

स्त्रीत्व और भारतीय गरिमा के आदर्श को अपने परिवेष्टनो में छिपाकर, सहमी-सहमी धरती में आँख गाड़े, कदम-कदम बढ़ा रही हैं। (35)

ईदगाह कहानी में भी मुस्लिम संस्कृति के लोगों के त्योहार मनाने का वर्णन किया गया है। वही अपना अपना भाग्य कहानी में एक स्थान पर भारतीय व पाश्चात्य संस्कृति का तुलनात्मक वर्णन के साथ साथ उनकी संस्कृतियों का वहाँ के लोगों पर इसके प्रभाव को दर्शाया गया है।

2.5 भौगोलिक संदर्भ

एक बालक का पालन पोषण जिस तरह के भौगोलिक परिवेश में होता है। उसका मानसिक व शारीरिक विकास भी उसी तरह का होता है। अगर बालक का पालन पोषण पहाड़ी इलाके में हो रहा है तो वह वहाँ के परिवेश व वातावरण के अनुसार अपने आपको ढाल लेता है। वह वहाँ की कठिन से कठिन परिस्थितियों का साहस के साथ सामना करता है।

आरोहण

किताबघर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक *दस प्रतिनिधि कहानियाँ* में से ली गई संजीव द्वारा रचित आरोहण कहानी में दर्शाया गया है कि भौगोलिक कारक किस तरह एक बच्चे के मनोविज्ञान को प्रभावित करते हैं। इस कहानी में पर्वतीय प्रदेश में रहने वाले लोगों को किस किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन सब का वर्णन यहाँ किया गया है। वहाँ के लोगों के जीवन में प्राकृतिक आपदा, भूस्खलन, पत्थरों के खिसकने से सब कुछ नष्ट हो जाता है। इस कहानी में पर्वतीय प्रदेश में रहने वाले लोगों की समस्याओं के साथ-साथ उस प्रदेश की बारीकियों, उनके

जीवन के सूक्ष्म अनुभवों, परंपराओं, रीति-रिवाजों, उनके संघर्षों व यातनाओं का सजीव चित्रण किया है।

"उसने अपने सामने किसी विशाल डायनासोर की तरह पसरे पहाड़ को देखा। फिर उसके पीछे की सर्द परतों को, जिन पर बादल और धुंध की फफुंदियाँ पड़ी हुई थी।" (105)

इस कहानी में एक रूप सिंह नाम का बालक है, जो कि अब व्यस्क हो गया है। वह यहाँ की कठिनाइयों और परेशानियों को देखकर किसी साहब के साथ चला गया था। उसके बालपन की मनोदशा का वर्णन किया गया है। इसके साथ-साथ उसके भाई भूप सिंह का बेटा महीप उसके बाल मनोविज्ञान का भी चित्रण किया गया है पर्वतीय प्रदेश में रहने वाले लोगों के जीवन में आने वाली कठिनाइयों व संघर्षों का अंदाजा उस बच्चे को देखकर साफ साफ लगाया जा सकता है।

> गुमसुम से बैठे नौ-दस साल के एक लड़के को पुकारा, "ओय महीप-s! तूई वकी जाणा छू (तू वहाँ जाएगा)? अरे माही।
>
> लड़के ने जो किसी बुजुर्ग की तरह पत्थर की सीढ़ियों पर अकेला बैठा हुआ था, अपनी उदासीन-सी गर्दन फेरी, मगर कुछ बोला नहीं। उड़े हुए नीले रंग की पहाड़ी पतलून और सलेटी स्वेटर में समेटी अपनी तमाम गंभीरता के बावजूद अपने सुंदर गोरे चेहरे की मासूमियत को अभी झटक नहीं पाया था वह। (105)

जहां नौ-दस साल के बच्चे अपने माता-पिता के साए में हंसी खुशी पलते हैं, वही उस बालक को देखकर लगता है कि दूर दूर तक खुशियों का कोई नामोनिशान ही नहीं है। इसके साथ-साथ उसे इस उम्र में मजदूरी करनी पड़ती है। रूप सिंह व उसके दोस्त जो

इतने बड़े हैं, वह भी घोड़े पर बैठे बैठे थक जाते हैं, लेकिन वह बालक जिसे 15 किलोमीटर चढ़ते समय और 15 किलोमीटर उतरते समय पूरे करने हैं वह उसके लिए बात ही नहीं करता।

> मैं तो इस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहा था। इतनी कच्ची उम्र उस पर यह घोड़े वाला धंधा, खतरनाक रास्ते। सोचो, हम जवान होकर भी घोड़े पर जा रहे हैं और यह पंद्रह किलोमीटर पैदल! फिर इसे लौटना भी है पंद्रह किलोमीटर अभी। (110)

जब पहाड़ पर बसे माही गाँव में वहाँ के लोगों को पूछने पर रूप को पता चला कि वहाँ भूस्खलन हुआ था, उसमें उसके माँ -बाप मर गए। बड़ा भाई भूप सिंह ऊपर की एक पहाड़ी पर जा बसा और जो लड़का आप लोगों को घोड़े पर बिठा कर लाया था, वह उसके बड़े भाई भूप सिंह का बेटा महीप है। तब रूप उसे बोलता रह गया लेकिन उस बालक ने सुना तक नहीं।

रूप ने मुड़कर देखा, महीप वहाँ नहीं था। काफी दूरी पर एक घोड़े पर बैठा कोई नन्हा सवार दूसरे को हांकते हुए ढलान में तेजी से उतर रहा है। उनकी आंखों में उसका अक्ष छोटा होते-होते पहाड़ की ओट में तिरोहित हो गया। (114)

उस बालक के मनोभाव को देखिए न उसे कोई परिवार से मिलने की खुशी है, ना कोई और। लगता है जैसे उसका जीवन नीरस सा हो गया है।

> एक गहरी साँस लेकर बोले भूप," तब से... बेटा जो नीचे उतरा, तो फिर ऊपर नहीं आया, मैंने लाख मनाया, फिर भी... कल भी उसे आया देखकर ई नीचे उतरा था। उसके पीछे पीछे दूर तक गया, मगर। उसने सुनकर भी नहीं सुना,

> देखकर भी नहीं देखा, लौट गया घोड़ी को भगाते हुए। मुझी को गुनहगार समझता है अपनी माँ की मौत के लिए। (119)

इस तरह से यह कहानी बच्चे के मनोभाव को दर्शाती है कि पर्वतीय प्रदेश के वासियों को कितनी समस्याओं और पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। महीप का पिता ऊंची पहाड़ी पर रहता है। उसकी माँ संघर्षों का सामना करती-करती एक दिन इन सब से हार कर आत्महत्या कर लेती है। तभी से महीप अपने पिता को उसका दोषी मानता है और वह पहाड़ से नीचे ही रहता है।

अपना अपना भाग्य

अपना अपना भाग्य कहानी जैनेंद्र कुमार जैन द्वारा रचित कहानी संग्रह *वातायन* से ली गई है। इस कहानी में नैनीताल के भौगोलिक वातावरण को सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। नैनीताल पर्वतीय इलाके में बसे होने के कारण वहाँ पर ठंडे मौसम में बर्फ गिरती है और संध्या का समय दर्शनीय होता है-

> नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। रुई के रेशे-से, भाप-से, बादल हमारे सिरों को छू-छूकर बे रोक घूम रहे थे। हल्के प्रकाश और अंधियारी से रंगकर कभी नीले दीखते, कभी सफेद और फिर जरा देर में अरुण पड़ जाते। वे जैसे हमारे साथ खेलना चाह रहे थे। (33)

पर्वतीय प्रदेशों में रहने वाले लोगों को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वहाँ शीत ऋतु में बर्फ गिरती है। ठंड बहुत बढ़ जाती है। यह कहानी एक बच्चे पर आधारित है जो अपने घर से भाग जाता है, क्योंकि उसके पिता शराब पीते हैं और उसकी माँ को पीटते हैं और बाकी भाई बहन भी भूखे रहते हैं। उस अनाथ

बच्चे को नौकरी से निकाल देने के कारण एवं ठंड ज्यादा होने के कारण शारीरिक व मानसिक हालत बहुत खराब हो जाती है।

> पास की चुंगी लालटेन की छोटे से प्रकाश-वृत में देखा- कोई दस बरस का होगा । गोरे रंग का है, पर मेल से काला पड़ गया है, आंखें अच्छी बड़ी पर सूनी है। माथा जैसे अभी से झुर्रियाँ खा गया है। (38)

वह बच्चा, लेखक व उनके दोस्त से मिलने के बावजूद वे उसे अगले दिन नौकरी पर रखने की बात कहकर उस दिन उसकी और कोई सहायता नहीं करते। भूख और अधिक ठंड के कारण उस बच्चे की उसी रात मृत्यु हो जाती है: "गरीब के मुँह पर, छाती, मुट्ठियों और पैरों पर बर्फ की हल्की सी चादर चिपक गई थी। मानों दुनिया की बेहयाई ढकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफेद और ठंडे कफन का प्रबंध कर दिया था।" (43)

आरोहण कहानी में एक छोटा सा बच्चा जिसका पालन पोषण पहाड़ी इलाके में होता है । वहाँ उसको बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एक तरफ उसका उदास चेहरा उसके दुख व संघर्ष की कहानी कह रहा है। वहीं दूसरी तरफ वह पहाड़ी इलाकों में पला बड़ा होने के कारण बहुत ही साहसी भी है। तभी इतना छोटा होने पर भी पहाड़ी पर बिना घोड़े पर बैठे पैदल पहुँच जाता है। अपना अपना भाग्य कहानी में जहाँ एक तरफ लोग नैनीताल की सुंदरता को देखने घूमने जाते हैं। लेकिन एक बच्चे की वहाँ के मौसम के कारण मृत्यु हो जाती है। बच्चों के मनोविज्ञान पर पड़े प्रभाव को स्पष्टत: देखा जा सकता है।

उपर्युक्त कहानियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के पश्चात हम यह कह सकते हैं कि एक बच्चे के आसपास का परिवेश, उसके आस-पास रहने वाले लोग, वहाँ का रहन-सहन, खान-पान जिस स्थान पर रह रहा है वहाँ का भौगोलिक वातावरण इन सब

से बच्चे के मनोविज्ञान पर गहरा असर पड़ता है। कई प्रदेश ऐसे हैंजहाँ पर बालक को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण उसका संपूर्ण विकास नहीं हो पाता। कई बार उसके आसपास के समाज में इस तरह के रीति रिवाज होते हैं कि वह उसे ग्राहय नहीं होते और बच्चा गलत दिशा की ओर अग्रसर हो जाता है। इस तरह से एक बच्चे के सही विकास के लिए उसके आसपास के समाज का, वातावरण का उचित होना अति आवश्यक है।

<u>संदर्भ ग्रन्थ सूची:</u>

अमरनाथ. *हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली.* राजकमल प्रकाशन, 2009.

अवस्थी, देवीशंकर. *नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति.* राजकमल प्रकाशन, 1998.

अज्ञेय. *विपथगा (पांचवा संस्करण).* नेशनल पब्लिशिंग हाउस*, 1990.*

उपाध्याय, देवराज. *आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान.* साहित्य भवन प्रा. लिमि., 1956.

---. *कथा साहित्य के मनोवैज्ञानिक समीक्षा-सिद्धांत.* सौभाग्य प्रकाशन, 1974.

कुमार, जैनेन्द्र. *परख.* हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड, 1929.

---. *वातायन.* हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, 1931.

गणेशन, एस. एन.. *हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन.,* राजपाल एँड संस, 1961.

जैन, निर्मला. *प्रेमचंद भारतीय साहित्य संदर्भ.* वाणी प्रकाशन, 1981.

तिवारी, भास्कर नाथ. *हिन्दी में बाल साहित्य: कुछ महत्वपूर्ण सुझाव.* राष्ट्रभाषा सन्देश, 31जनवरी 1979.

देवसरे, हरिकृष्ण. *हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन.* आत्माराम एँड संज, 1969.

देसाई, मंजुला. *कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन.* क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स,2002.

धवन, सुषमा. *हिन्दी उपन्यास.* राजकमल प्रकाशन, 1961.

नगेंद्र. *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2009.

---. *हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास.* भाग-16. नागरी प्रचारिणी सभा, 1984.

प्रसाद, जयशंकर. *जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ.* प्रभात प्रकाशन, 2020.

मनु, प्रकाश. *हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास.* प्रभात प्रकाशन, 2018.

मिलिंद, सत्यप्रकाश. *जैनेन्द्र व्यक्तित्व और कृतित्व.* सूर्यप्रकाशन, 1963.

यादव, राजेन्द्र. *एक दुनिया: समानांतर.* राधा कृष्ण प्रकाशन, 1997.

राय, अमृत. *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानिया भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2013.

राय, गोपाल. *हिन्दी कहानी का इतिहास.* राजकमल प्रकाशन, 2014.

रेड्डी, बालशोरि. *श्रेष्ठ बाल कहानियाँ.* लोकभारती प्रकाशन, 2007.

लाल, लक्ष्मीनारायण. *हिन्दी कहानी का शिल्प विधि विकास.* राजकमल प्रकाशन, 2019.

---. *हिन्दी उपन्यास का इतिहास.* राजकमल प्रकाशन, 2014.

विक्रम, सुरेन्द्र. *हिन्दी बाल साहित्य पत्रकारिता: उद्भव और विकास.* साहित्यवाणी, 1994.

श्रीप्रसाद. *बाल साहित्य की अवधारणा.* हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश, 1998.

श्रीवास्तव, सीमा. *हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान.* प्रिय साहित्य सदन, 2013.

संजीव. *दस प्रतिनिधि कहानियाँ. किताबघर प्रकाशन,* 2003.

शब्द कोश:

गौतम, सुरेश. *भारतीय साहित्य कोश.* संजय प्रकाशन, 2010.

वर्मा, धीरेन्द्र. *हिन्दी साहित्य कोश भाग-1.* ज्ञान मंडल लिमिटेड, 1958.

लेख:

मनु, प्रकाश. बच्चों के दिल की बात कहते हैं बाल उपन्यास. आजकल, नवम्बर 2014.

मैग्जीन:

कौर, अमनदीप. दैनिक सवेरा. सन्डे सवेरा मैग्जीन. 8अगस्त 2021.

वेबसाइट

Stories based on child psychology.hindi.html 09/06/2023
www.motivationalstoriesin hindi.in 09/06/2023

अध्याय-3

3 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वंशानुक्रम, परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संदर्भ

3.1 वंशानुक्रम संदर्भ

3.2 परिवेशगत संदर्भ

3.2.1 परिवार

3.2.2 स्कूल

3.3 सामाजिक संदर्भ

3.3.1 स्वार्थ का चित्रण

3.3.2 संघर्ष की भावना एवं सहयोग

3.3.3 प्रेमभाव का चित्रण

3.3.4 भूख व गरीबी का चित्रण

3.3.5 पारिवारिक विघटन का चित्रण

3.3.6 बेरोजगारी

3.4 सांस्कृतिक संदर्भ

3.4.1 पर्व या त्योहार

3.4.2 रीति-रिवाज

3.4.3 मेले

3.4.4 किस्सा गोसाई

3.4.5 लोक कथाएँ

3.5 भौगोलिक संदर्भ

3 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वंशानुक्रम, परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संदर्भ:

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य जो सबके हित के लिए लिखा गया हो, वही साहित्य कहलाता है। बालकों के विकास के लिए, उनके मनोरंजन के लिए, उनकी रुचि, मनोरंजन व जरूरत के अनुरूप लिखा गया साहित्य, बाल साहित्य कहलाता है। भारत कई राज्यों का देश है। इसमें विभिन्न भाषाएँ बोली जाती है। जिसके कारण विभिन्न साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं में बाल साहित्य का सृजन किया है, लेकिन प्रत्येक मनुष्य को क्षेत्रीय भाषाओं का ज्ञान नहीं होता, लेकिन कुछ विद्वानों और साहित्यकारों ने इन विभिन्न भाषाओं में रचित बाल साहित्य को अनुदित करके बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। इन्हीं अनुदित बाल कथाओं का संपूर्ण अध्ययन करने के लिए बालक के जीवन में उसके आसपास के परिवेश का व किस तरह के समाज में उसका लालन-पालन पोषण हो रहा है, तथा भौगोलिक विभिन्नताओं का उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, उसमें कौन सी सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का विकास हो रहा है, इन पहलुओं का अध्ययन हम इस शोध में अनुदित कथाओं के माध्यम से करेंगे।

इन्हीं विचारों का समर्थन करते हुए हरिकृष्ण देवसरे अपनी संपादित पुस्तक *भारतीय बाल कहानियाँ भाग-1* में कहते हैं:

> इन कहानियों में बच्चों की समस्याएँ और उनके समाधान दिए जाने लगे उनके अपने परिवेश उनके अपने समूह कक्षा या समाज से जुड़े विषयों, प्रश्नों और उन्हें प्रभावित करने वाले तत्वों को बाल कहानियों में बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाने लगा इन कहानियों ने निसंदेह बच्चों को प्रभावित किया उन्हें दिशा दी उनकी प्रेरणा का विषय बनीं।(9)

3.1 वंशानुक्रम सन्दर्भ

इसी तरह के वंशानुक्रम को शांता ग्रोवर द्वारा अनुदित कहानी संग्रह जंगल टापू में भी दिखाया गया है। जिसमें एक हवाईयान के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण उसमें से एक रब्बू नाम का बच्चा एक जंगल में गिर जाता है। वहाँ पर जानवरों के बीच उसका पालन पोषण हुआ। सभी जानवर उससे बहुत प्यार करते थे। लेकिन फिर भी वह मनुष्य जाति का होने के कारण और उस जंगल में उस जैसा प्राणी एक भी न होने पर वह उदास हो जाता है-

रब्बू के दिन इसी तरह हँसते-खेलते गुज़र रहे थे। लेकिन कभी-कभी रब्बू उदास हो जाता था। वह जंगल के सभी जानवरों से अलग था। उसका मन करता था कि जंगल टापू में उस- जैसे कुछ दूसरे जानवर भी होते। वह भी सब मिलकर रहते, जैसे खरगोश रहते हैं या बन्दर रहते हैं। (53)

और एक दिन अपने जैसे मनुष्य जाति को ढूँढने के लिए जंगल के सभी जानवरों से विदा लेकर जंगल से बाहर चला जाता है। हम यहाँ एक बच्चे के ऊपर परिवेश या वातावरण के प्रभाव को झुठला नहीं सकते। वहाँ का परिवेश रब्बू के लिए बहुत ही अच्छा था लेकिन फिर भी मनुष्य जाति या उसके वंश का कोई भी प्राणी न होने के कारण उसे सबका प्यार मिलने पर भी वह कभी-कभी उदास हो जाता था।

3.2 परिवेशगत सन्दर्भ

जब बालक किसी दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आता है, जब वह स्वयं के परिवार में या अपने सहपाठियों के मध्य रह रहा है, तो उस बालक का जो वहाँ परिवेश बनता है और उस परिवेश का उस पर क्या प्रभाव पड़ता है। उदाहरण स्वरूप यदि कोई बालक अपने परिवार से बिछड़ जाता है, और उसका विकास किसी ऐसी जगह होता है, जहाँ उसका परिवार नहीं है, उसके आसपास समाज नहीं है, तो उसका विकास रुकता नहीं। लेकिन वह कुछ सीख नहीं पाता। इससे उसकी योग्यता कम नहीं होती, लेकिन उसका

सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। क्योंकि उसको सब कुछ सीखने का परिवेश नहीं मिल पाता है। परिवेश का अर्थ है- आसपास का वातावरण, स्थितियाँ , परिस्थितियाँ, जो किसी भी बालक के विकास व अभिवृत्ति को प्रभावित करती हैं।

रामचंद्र वर्मा अपने शब्दकोश *मानक हिन्दी कोश* में कहते हैं: परिवेश का अर्थ है- " परिधि, घेरा, प्रभा-मंडल, बदली के समय सूर्य या चाँद के चारों ओर दिखाई देने वाला घेरा। " (428)

आदित्य प्रसाद त्रिपाठी अपनी पुस्तक *औपन्यासिक समीक्षा और समीक्षाएँ* में कहते हैं:

> आज परिवेश केवल स्थूल संसार का ही पर्याय नहीं, सूक्ष्म जगत के चिंतन से भी संबंध है। जब हम परिवेश का उपयोग करते हैं तो उसमें बाह्य वातावरण ही नहीं आता, उसके साथ वह मानसिकता भी उभरती है जो उस वातावरण की ही उद्भावना है। उस मानसिकता के साथ जुड़े होते हैं- ज्ञान, अनुभव, संवेदन, विचार, चिंतन आदि सारे बोधात्मक स्तर। साहित्य का चैतन्य इसी स्तर पर परिवेश के बाह्य स्वरूप को आत्मसात कर उसे बोधात्मक बनाकर पेश करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्घाटन बोध के आधुनिक तकनीक के संदर्भ में हुआ है। (1)

उपर्युक्त कथनों के अनुसार परिवेश का अर्थ वातावरण या घेरा से लगाया जाता है। जिनसे व्यक्ति प्रभावित होता है। व्यक्ति के चारों तरफ जो कुछ भी है, वह सब परिवेश में आता है। परिवेश में वे सभी शक्तियाँ, प्रभाव, परिस्थितियाँ भी विद्यमान रहती हैं, जो प्राणी के व्यवहार और मानसिक विकास को प्रभावित करती हैं, जिनसे व्यक्ति साधारण होते हुए भी अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों पर विशिष्ट प्रभाव छोड़ते हैं। अत:

परिवेश को भागों में बाँट सकते हैं- आंतरिक परिवेश अर्थात् परिवार और बाह्य परिवेश अर्थात् स्कूल।

3.2.1 परिवार

अपने परिवार व अपने सहपाठियों के साथ रहकर बालक के मनोविज्ञान पर जो प्रभाव पड़ता है, वह जो भी सीखता है और जो उसका दृष्टिकोण उसके अपने परिवार और साथियों के प्रति विकसित होता है। अगर बच्चे के आसपास अर्थात उसके परिवार में उसका दोस्तों के साथ अच्छा परिवेश मिले तो बच्चा भी अच्छी प्रवृत्ति का बनता है। प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित पुस्तक *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-एक* में संकलित कहानी 'अच्छा मित्र' में भी यही दर्शाया गया है। जिसमें बताया गया है कि खरगोश के बच्चे के परिवार का परिवेश बहुत ही खुशनुमा था। जिसके कारण वह बहुत खुश रहता था।

> अपनी जमात के खरगोश में अधिक सुंदर, फुर्तीला और हंसोड़ था। इसलिए वह अपने दोस्तों के बीच बहुत जाना-माना और लोकप्रिय था। उसके दोस्तों में कई किस्म के जानवर थे। वे उसे बहुत अच्छे लगते थे। उनसे उसे बहुत प्यार मिलता था। (11)

इसके साथ-साथ इस कहानी में यह भी दर्शाया गया है कि यदि बच्चे को सीमा से अधिक लाड प्यार दिया जाए तो बच्चा ढीठ भी हो सकता है।

> बेटे की बातों से खरगोश माँ -बाप उदास रहा करते। लाड-प्यार से बिगड़ा हुआ बच्चा सोचकर उन्होंने धीरे-धीरे उसे कुछ कहना ही छोड़ दिया। वह और भी ढीठ होता गया। (11)

लेकिन बाद में मुसीबत पड़ने पर छोटे खरगोश को अपनी गलती का एहसास हुआ।

एक अन्य कहानी संग्रह *अचरज ग्रह की दंतकथा* में संकलित कहानी 'कोनकिचीहोमहिल' नामक कहानी में कोनकिची नाम का लोमड था, जो कि पहाड़ी व बर्फीले इलाके में अपनी माँ व अन्य रिश्तेदारों के साथ रहता है। इस कहानी में बताया गया कि जब वह लोमड़ उस परिवेश में रह रहा था, तो वहाँ पर आदमी

शिकार करने आते थे, और गोल्फ खेलने आते थे, कोनकिची को आदमियों के जीवन जीने का तरीका उनका परिवेश ज्यादा अच्छा लगता था और अपनी माँ से मंत्र मार कर उसे आदमी बनाने के लिए ज़िद्द करता था लेकिन उसकी माँ कहती थी कि इंसान की जिंदगी इतनी आसान नहीं है जितना हम सोचते हैं।

> मेरे बेटे, मुझे पता है इस पूरी सर्दी-भर तुम क्या सोचते रहे हो, लेकिन इंसान के रूप में जीवन उतना मजेदार नहीं है, जितना कि दूसरों को लगता है, जो इसे बाहर से देखते हैं। (9)

लेकिन वह अपनी ज़िद्द के कारण इंसान बनकर इंसानों की दुनिया में रहता है। वहाँ के परिवेश में रहकर वहाँ के अनुसार ढलना शुरू कर देता है, और एक दिन स्वार्थ पूर्ति एवम् अज्ञानता के कारण अपनी माँ का ही शिकार करके उसे मार डालता है।

> रुपहले लोमड़ी के चेहरे पर नजर डालते हुए जिसकी आंखें दर्द-भरी मौत के अहसास में बंद थी, कोनकिची के अंदर एक बम सा फट पड़ा।
>
> "आह!" उसने स्वयं को चीखते हुए सुना और उसने तुरंत लोमड़ी को नीचे गिरा दिया। फिर कंपनी के अध्यक्ष और अन्य शिकारियों की आश्चर्यचकित नजरों की परवाह न करते हुए उसने अपने दूसरे हाथ से बंदूक भी गिरा दी और फिर मुड़कर पहाड़ियों की और उतनी तेजी से भागा जितनी तेजी से उसकी टांगें उसे ले जा सकी। कभी इस पेड़ से टकराता, कभी उस पेड़ से, कभी बेलों तथा गिरे पेड़ों के तनों से उलझता वह अंधाधुंध पहाड़ी पर चढ़ता चला गया। ओह! उसने यह क्या कर दिया था। वह रूपहली लोमड़ी जिसे कोनकिची ने गोली चला कर मार डाला था, उसकी माँ थी।(21)

उपर्युक्त कहानियों के परिवेशगत अध्ययन के माध्यम से हम कह सकते हैं कि प्राणी जिस तरह के आंतरिक वातावरण या परिस्थितियों में रहता है, उसी प्रकार वह उसके मनोविज्ञान को भी प्रभावित करता है।

3.2.2 स्कूल

विद्यालय में एक शिक्षक की भूमिका अहम होती है। यदि एक शिक्षक सहज सरल स्वभाव का है तो बच्चे उनसे कोई भी प्रश्न आसानी से पूछ लेते हैं लेकिन यदि कोई शिक्षक गुस्से वाली प्रवृत्ति के हैं तो बच्चे उनसे कोई भी समस्या का समाधान नहीं पूछते बल्कि कक्षा में उनसे डरते ही रहते हैं इसी तरह के एक शिक्षक की भूमिका को भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4 में संकलित बुलाकी शर्मा द्वारा रचित कहानी अनोखी परीक्षा में भी दिखाया गया है। जुनेजा नाम के एक शिक्षक जिनसे कक्षा के सारे बच्चे बहुत डरते थे। जुनेजा सर को कक्षा में अनुशासनहीनता बिलकुल पसंद नहीं थी। अगर उन्होंने गलती से भी कुछ गलत पढ़ा भी दिया तो भी बच्चों में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे सर से बात करके उसे सही करें। लेकिन रवि नाम के बालक ने खड़े होकर न सिर्फ जुनेजा सर की पढ़ाई गई गलत बात को गलत बताया बल्कि अपनी सच्चाई पर टिका भी रहा। तब जुनेजा सर ने कहा:

समय सबको अपने में समेट लेता है लोग भूल जाते हैं उन्हें ,लेकिन जिसमें सही को सही और गलत को गलत करने का साहस है, जो सत्य कहते डरते नहीं हों, इतिहास में उसी व्यक्ति का नाम अमिट रहता है। आज हमें लगा कि हमारा पढ़ाना सार्थक हुआ। शाबास, बेटे रवि।" (51)

बच्चों को स्कूल से ही सही गलत की पहचान होती है, इसी विचार पर आधारित एक अन्य कहानी विजय भारतीय बाल कहानियाँ भाग चार में संकलित है। इस कहानी में हलधर नाम के एक मास्टर हैं जिसका बच्चों के मन पर बहुत ज्यादा खौफ था। लेकिन कोई भी प्रश्न का हल वह बहुत ही अच्छे तरीके से समझाते थे। किसी भी कम दिमाग वाले बच्चों को भी समझ आ जाता था। हलधर मास्टर किसी भी व्यक्ति की गलती तत्काल पकड़ लेते थे। लेकिन एक दिन उनसे भी एक गलती हो गई। प्रभात नाम का लड़का जो कि पढ़ाई में होशियार था। एक दिन मास्टर साहब के एक

प्रश्न का हल करने के लिए देने पर, प्रभात ने प्रश्न का हल जल्दी निकाल दिया, लेकिन उसके पेज पर स्याही बिखर गई। तब उसके सहपाठी वीरू ने उसकी नकल करके उससे पहले सर को प्रश्न का हल दिखा दिया प्रभात के प्रश्न का हल दिखाने पर मास्टर साहब को लगा प्रभात ने वीरू की नकल की है और प्रभात झूठ बोल रहा है। तो मास्टर साहब ने प्रभात की काफी पिटाई की, लेकिन प्रभात अपनी सच्चाई पर अडिग रहा। जब मास्टर साहब को सच्चाई का पता चला तो उन्हें अपनी करनी पर बहुत पछतावा हुआ। लेकिन अगले ही पल में खुश होकर प्रभात से बोले:

तेरी बात से मुझे बड़ी खुशी हुई। इतना मारने-पीटने के बावजूद, मार के डर से तूने सच को झूठ नहीं माना और झूठ कहा भी नहीं। तेरी इस बात से मुझे बड़ी शांति मिली है। मेरी कामना यही है कि मेरा हर छात्र तेरे जैसा बने। सत्य के लिए अपने जीवन को भी तुच्छ माने, वही छात्र देश का गौरव होता है। (20)

उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के बाद कह सकते हैं कि बालक का पालन पोषण जिस तरह के परिवेश में होता है उसका विकास भी इसी तरह का होता है। उसके परिवार का, उसके स्कूल के परिवेश का उसके मनोविज्ञान पर प्रभाव पड़ता है। स्कूल में बालक सही गलत में अंतर करना सीखते हैं।

3.3 सामाजिक संदर्भ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके प्रत्येक कार्य का समाज पर व समाज का मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है। इस तरह साहित्य भी इन क्रियाओं व प्रतिक्रियाओं का ही परिणाम है। जिसका असर पाठकों व समाज पर पड़ता है। सभ्य समाज की स्थापना उस समाज में रहने वाले सभ्य व्यक्तियों के आपसी संबंध एवं उनके आपसी व्यवहार का नतीजा होता है। बच्चों में अच्छे संस्कार एवं नैतिकता की नींव का पत्थर घर परिवार से ही रखा जाता है। समाज में रहने वाले प्रत्येक प्राणी की यह परंपरा रही है कि वह प्रतिक्षण एक दूसरे के संपर्क में रहकर एक-दूसरे के सहयोग से वह सभी कार्य

करते रहते हैं, जो अपने समाज में उनका अस्तित्व बनाए रखने के लिए जरूरी है। परिवार के बिना एक सभ्य समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती इस प्रकार घर परिवार का, एक सभ्य समाज निर्माण में अहम भूमिका है। मनुष्य को समाज में रहते हुए बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं जैसे किसी की स्वार्थी प्रवृत्ति का, जीवन में कुछ पाने के लिए संघर्षों का भी सामना करना पड़ता है। लेकिन यदि एक दूसरे का साथ हो तो किसी भी समस्या का सामना किया जा सकता है। यहाँ हम बाल कथाओं में सामाजिक संदर्भों का अध्ययन करेंगे।

3.3.1 स्वार्थ का चित्रण

जब कोई प्राणी अपना उद्देश्य, अपना मतलब, अपना प्रयोजन पूरा करने के लिए किसी को भी धोखा देता है या किसी को भी हानि पहुँचाता है,तो वह स्वार्थी कहलाता है। ऐसी ही स्वार्थीपन की भावना को सुरेखा पांडे द्वारा अनुदित उपन्यास *गोट्या* में भी दर्शाया गया है। जिसमें दस-ग्यारह वर्ष का बच्चा जिसके माँ बाप नहीं होते,को उसके चाचा ने दिल खुश होटल के मालिक वायुनाना के पास लालच में भेज दिया। लेकिन वह वायुनाना बहुत ही स्वार्थी था वह गोट्या से होटल में सारा काम करवाता था और कोई ना कोई बहाना लेकर उसे मारता रहता था।

> मार तो जैसे खाने के साथ ही खुराक थी गोट्या के लिए! किसी-न-किसी बहाने वायुनाना उसे चांटे रसीद कर देते। कभी थोड़ी-सी चाय गिर गई तो, कभी मेज ठीक से साफ नहीं की तो, कभी ग्राहक को ज्यादा सब्जी परस दी तो। उन्हें तो बस मारने के लिए छोटे से छोटे बहाने की जरूरत भर थी!(11)

लेकिन एक दिन जब लेखक ने गोट्या को पीटते हुए देखा, तो वह उसे अपने साथ ले गया। और उसका पालन-पोषण अच्छे वातावरण में किया। तब गोट्या पढ़ाई में भी होशियार हो गया और एक अच्छी प्रवृत्ति का बालक बना।

> गोट्या की बुद्धि तेज थी। वह पाठ जल्दी याद कर लेता। स्कूल का जो काम मिलता, समय से पूरा कर लेता। देखते-देखते किताब के सारे पाठ उसे मुँहजुबानी याद हो गए। मास्टर जी का कहना भी वह मानता था।(14)

इसी तरह का स्वार्थीपन हरीश नारंग द्वारा अनुदित पुस्तक *अचरज ग्रह की दंतकथा* में संकलित कहानी 'कोनकिची होमहिल' में भी दिखाया गया है। इस कहानी में दिखाया गया है कि इंसान अपने स्वार्थ के लिए पशुओं का शिकार करते हैं, और उन्हें मार डालते हैं। कोनकिची जो कि लोमड़ से आदमी बना था अनजाने में वह अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण अपनी माँ का ही शिकार कर मार डालता है।

> वह रुपहली लोमड़ी जिसे कोनकिची ने गोली चला कर मार डाला था, उसकी माँ थी। इतनी तेज भागने की वजह से उसकी टांगें थक्कर कांपने लगी थी। कोनकिची गिरी हुई पत्तियों के ढेर पर निढाल गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा।(20-21)

इसी स्वार्थी प्रवृत्ति को स्वप्ना दत्त द्वारा अनुदित पुस्तक *बुलबुल की किताब* में संकलित कहानी 'दुष्ट बाघ' में भी दर्शाया गया है। जिसमें दुष्ट बाघ पंडित को अपनी बातों में फंसाकर पिंजरा खुलवा कर उसे ही खाने को तैयार हो जाता है। लेकिन वह उसे तीन गवाह उपस्थित करने के लिए कहता है। जो यह मानने के लिए तैयार हो कि पंडित ने मुझ पर उपकार किया है। दो गवाह तो उसे मना कर देते हैं। लेकिन फिर सियार, बाघ को अपनी चतुराई से वापस पिंजरे में डालकर पंडित जी की रक्षा करता है।

> फिर सियार ने पंडित जी से कहा, "पंडित जी, अब मुझे सारी बात समझ में आयी। आप अगर मेरी गवाही सुनना चाहते हैं तो वह यह है कि दुष्ट लोगों का कभी भला नहीं करना चाहिए। इसलिए बाघ मामा की बात ही सही है। अब आप जल्दी करें- दावत अभी भी खत्म नहीं हुई।"(35)

हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संपादित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग-2* में संकलित कहानी 'बुढ़िया और वैद्य' में भी स्वार्थीपन की प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। जिसमें एक वैध स्वार्थीपन में एक अंधी बुढ़िया के इलाज का बहाना लेकर रोजाना उसके घर का सामान ले जाता रहा। लेकिन बुढ़िया की भी आँखें धीरे-धीरे ठीक होने लगी, और उसे वैध की चालाकी का पता चल गया। वह अदालत में गई और वैद्य को फिर से किसी को धोखा न देने की कसम खानी पड़ी।"अदालत ने आदेश देकर वैद्य जी से बुढ़िया का सारा सामान वापस दिलवा दिया। वैद्य ने भी फिर कभी ऐसा धोखा ना करने की कसम खाई।" (98)

विमला मोहन द्वारा अनुदित पुस्तक *बिल्ली हाउसबोट पर* में भी यही प्रवृत्ति दर्शाई गई है। जिसमें एक बच्ची जोहरा, नीरा से उसकी लाल रिबन व प्लास्टिक की क्लिप लेने के लिए एक बत्तख, जिसके पैर रस्सी से बांध रखे थे, उसको बार-बार ऊपर खींचकर पीड़ा पहुँचा रही थी। और नीरा बार-बार उस बतख को छोड़ने के लिए कह रही थी।

> "तुम्हें मेरी क्लिप चाहिए? तब तुम बतख को छोड़ दोगी ना!" नीरा ने पूछा। जोहरा ने सिर हिलाया तो नीरा ने अपने बालों में से पिन निकालकर खिड़की में फेंक दिये। आखिरकार जोहरा खिड़की पर झुकी। उसने वह रस्सी काट दी, जिससे बतख बंधी थी। (32)

उपर्युक्त कथनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बहुत से लोग स्वार्थपन की प्रवृति से ग्रसित रहते हैं

3.3.2 संघर्ष की भावना व सहयोग

जब कोई प्राणी किसी भी उद्देश्य या प्रयोजन की प्राप्ति के लिए अकेले या किसी के सहयोग से काफी कठिनाइयों का सामना करते हुए किसी वस्तु को प्राप्त करता है, तो

उसे संघर्ष की भावना कहते हैं। संघर्ष की भावना के साथ साथ प्राणी में एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना का भी विकास होता है। इसी तरह का संघर्ष व सहयोग की भावना हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संपादित पुस्तक *भारतीय बाल कहानियाँ भाग-2* में संकलित कहानी क्रॉसरोड्स में भी दिखाई गई है। इस कहानी में चेतना और चिंतन दोनों भाई बहन के दैनिक जीवन में किए जा रहे संघर्ष की कहानी है इस कहानी में एक दूसरे के सहयोग से कुछ नया करने का विश्वास है। अपने लिए नहीं, बल्कि अपने देश के लिए।

> "नहीं दीदी। टॉर्च जलाऊँगा मशाल जलाऊँगा..... आज की बहुरंगी दुनिया के रास्तों पर चलकर अपना चौराहा मैं खुद तलाश करूँगा। इतना तो कर ही सकता हूँ।" और चिंतन मुस्कुरा दिया। (97)

इसी तरह की संघर्ष की भावना प्रीति पंत द्वारा अनुदित पुस्तक जंगल कथा उरुगवाई बाल कहानियाँ में संकलित कहानी 'घड़ीयालों की लड़ाई' में भी दिखाई गई है। जिसमें जंगी जहाज को रोकने के लिए सारे घड़ियाल मिलकर बाँध बनाते हैं। जंगी जहाज को अंदर तक आने से रोकने के लिए वे काफी दिन संघर्ष करते रहे। लेकिन आदमी बार-बार उस बांध को उड़ा देते थे। फिर उन्होंने सुरुबी नाम के घड़ियाल की मदद से तोरपेदो लाकर उस जंगी जहाज को उड़ा दिया।

> जिस धमाके के साथ वह तोरपेदो फटा, उसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। वह फटा और अपने साथ उसने जहाज के सैकड़ों टुकड़े कर दिए। मीटर-मीटर भर की दूरी पर चिमनियाँ उड़ती दिखाई दे रही थीं। (31)

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित पुस्तक *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1* में संकलित कहानी 'बुद्धि में बल' में भी संघर्ष व सहयोग की भावना दिखाई गई है। जिसमें सारे चूहे मिलकर राजा के राज्य की रक्षा करते हैं। दुश्मन राजा की सेना के ज्यादा होने के बावजूद उसे एक दूसरे के सहयोग से वे हरा देते हैं।

> लड़ाई में जीत होने पर राजा ने कहा कि कोई भी प्राणी अपने शरीर के आकार के कारण न तो कमजोर होता है और न ही बहादुर। बुद्धि में बल है। इसके साथ ही उसने मूषकराज की प्रशंसा की और उसे अपने महल की गुप्तचर टोली में सलाहकार नियुक्त किया। (19)

माधवी देशपांडे द्वारा अनुदित मराठी बाल उपन्यास *पक्या और उसका गैंग* में भी पक्या और उसके गैंग के संघर्ष व सहयोग को दर्शाया गया है। इस उपन्यास में पक्या व उसका गैंग समुंदर किनारे घूमने गए। वहाँ पर जाकर उन्हें लगा कि यहाँ कोई गैर कानूनी कार्य हो रहा है। तब उन्होंने बात की तह तक जाने का सोचा। वहाँ पर तस्करी का कार्य होता था। जिसकी तह तक जाने के लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा और बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। लेकिन पक्या और उसके गैंग ने एक दूसरे के सहयोग से तस्करी करने वाले लोगों को पकड़वा दिया।

> "अच्छा, सोना! अब समझ में आया, सोने की स्मगलिंग का मामला है यह। उन सालों को पकड़ना ही होगा गनीमत है कि हमारे पास उनकी जीप का नंबर है।" पक्या ने अपना सिर जोर-जोर से खुजाया। (38)

अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित सुकुमार राय की चुनिंदा कहानियाँ नामक कहानी संग्रह में संकलित नंदलाल का दुर्भाग्य में भी संघर्ष की भावना दिखाई गई है। इस कहानी में नंदलाल पुरस्कार पाने के लिए बहुत संघर्ष करता है। लेकिन इस वर्ष दुर्भाग्य से वह जिस विषय में ज्यादा मेहनत करता है, उसकी बजाय दूसरे विषय में पहले नंबर आने पर पुरस्कार दिया जाता है। और उसकी मेहनत व्यर्थ जाती है।

> यह किसे पता था कि इस बार इतिहास के लिए पुरस्कार दिया जाएगा, मगर संस्कृत के लिए नहीं। इतिहास में मेडल तो उसे अनायास ही मिल सकता था। मगर उसकी इस तकलीफ को किसी ने नहीं समझा-सभी कहने लगे, "बिल्ली

के भाग्य में छींका टूटा है। बिना पढ़े ही नंदलाल को नंबर मिल गए।" नंद ने गहरी साँस लेकर कहा, "मेरा दुर्भाग्य!" (12)

उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि जीवन में हमें बहुत से संघर्षों का सामना करना पड़ता है। लेकिन यदि हम एक दूसरे के सहयोग से कार्य करें और हिम्मत ना हारे तो हर मुसीबत का हल निकाला जा सकता है।

3.3.3 प्रेमभाव का चित्रण

प्रेम, प्यार, अनुराग व एक दूसरे से प्यार, किसी व्यक्ति, वस्तु, बात, विषय आदि के प्रति मन में उत्पन्न होने वाला भाव कहलाता है। समाज में रहते हुए किसी भी व्यक्ति के प्रति, किसी भी वस्तु के प्रति या किसी भी प्राणी के प्रति प्रेम हो सकता है। आलमा सुहिल्या द्वारा अनुदित उपन्यास *जलपरी का मायाजाल* में फंसा व फेरी के प्रेम प्रसंग को दिखाया गया है।

"माँ पिताजी, मुझे माफ करना! मैं कभी आप दोनों को दुख देना नहीं चाहती। मैं आप दोनों को प्यार करती हूँ और सम्मान करती हूँ। मैंने हमेशा आप दोनों का कहना माना। आज मैं आप दोनों के सामने प्रतिज्ञा करती हूँ कि फंसा को मैंने सच्चे दिल से प्यार किया है। वह भी मुझे प्यार करता है, लेकिन मैं ऐसा कोई गलत कदम नहीं उठाऊंगी, जिससे कि आपकी बदनामी हो। हम दोनों ने हमेशा एक दूसरे को प्यार से रहने का वादा किया है।" (28)

3.3.4 भूख व गरीबी का चित्रण

समाज में भूख, गरीबी एक बहुत बड़ी समस्या है। जिस घर में गरीबी होती है, उसमें माता-पिता के साथ-साथ उनकी संतान को भी इसका सामना करना पड़ता है। अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित पुस्तक *किशोर कहानियाँ* में संकलित कहानी 'तालनवमी' व 'चावल' में भी भूख गरीबी का चित्रण किया गया है। तालनवमी नामक कहानी में

खुदीराम के दो बच्चे थे-नेपाल और गोपाल। खुदीराम बहुत कम आय वाला गृहस्थ था।

> इस भयानक बारिश में गाँव के कितने ही घरों में बच्चों के मुँह में अन्न का दाना तक नहीं गया था, खुदीराम तो एक मामूली गृहस्थ था। यजमानों के यहाँ से जो थोड़ा-बहुत धान उसे मिला था, वह खत्म हो चुका था। भादो के अंत में जब किसानों के घर में नया धान आयेगा तब उसे भी कुछ मिलेगा। तभी उसके बच्चों को पेट भरकर खाना नसीब होगा। (5)

जटी बुआ के यहाँ तालनवमी का उत्सव था। और उन्होंने आसपास वाले सभी पड़ोसियों को खाने पर बुलाया था। लेकिन गोपाल शाम तक इंतजार करता रहा कि जटी बुआ उन्हें भी खाने पर बुलाएगी। लेकिन उनको नहीं बुलाया गया।

> उसके चले जाने के बाद गोपाल की आँखे भर आतीं। शायद इस दुनिया का अन्याय देखकर। वह कई दिनों से इंतजार में बैठा था। लेकिन वह बस इंतजार करता रह गया। (12)

इसी पुस्तक में एक अन्य'चावल' नामक कहानी में एक आदमी अपनी बेटी का लालन-पालन करने के लिए शहर गया था। लेकिन वहाँ पर भी रोजगार न मिलने के कारण वापिस अपने गाँव इस आशा में आता है कि वहाँ पर खाने के लिए चावल मिल जाएँगे। इस कहानी में एक स्थान पर भूख व गरीबी का इस प्रकार वर्णन किया गया है।

> उनके घर में शाम से लेकर काफी रात तक कमजोर, भूखे, कंकाल- जैसे बच्चे-बूढ़े और अधेड़ आकर अपने टूटे-फूटे कटोरे ऊपर उठाकर, उसे दिखाकर भीख माँगते थे। कहते थे, "थोड़ा-सा माँड़ दो माँ ! थोड़ा-सा माँड!" भूख की न जाने कितनी मर्मभेदी कहानियाँ मैं कोमिल्ला से लौटते हुए रास्तेभर, यहाँ तक कि स्टीमर और गाड़ी में भी सुनता हुआ आया। (17-18)

और फिर एक दिन डायनामाइट के पत्थर तोड़ते हुए उसके साथ दुर्घटना हो गई और उसकी रीड की हड्डी चकनाचूर हो गई। और उसकी पाँच साल की बेटी खुपी अनाथ हो गई।

> दोनों तरफ शाल के जंगलों के बीच की लाल मोरम मिट्टी की सीधी सड़क से होकर एँबुलेंस, खुपी के बाप को लेकर फिर से अनिश्चित भविष्य की ओर, एक बार फिर पश्चिम के आसमान की तरफ यानी जन्म से मृत्यु की ओर, रवाना हो गई। अपनी दुलारी अनाथ खुपी को किसके सहारे छोड़कर जा रहा है, यह सोचने का वक्त भी उसके पास नहीं था। (20)

उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के उपरांत हम कह सकते हैं कि देश में गरीबी व भूख की समस्या बहुत बड़ी समस्या है। इसका दुप्रभाव परिवार के हर सदस्य पर पड़ता है। अपनी भूख व गरीबी मिटाने के लिए बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, लेकिन आपसी सहयोग व सहनशीलता से हर समस्या का हल निकाला जा सकता है। परन्तु चावल कहानी इसका अपवाद है।

3.3.5 पारिवारिक विघटन का चित्रण

एक बेहतर समाज बनाने में परिवार की अहम भूमिका होती है। यदि परिवार के लोग मिलजुल कर रहे तो किसी भी समस्या का सामना कर सकते हैं। लेकिन आज के समाज में परिवार टूटते जा रहे हैं। जो न परिवार के लिए ठीक है और न ही समाज के लिए। ऐसे ही परिवार का विघटन एवम् बड़े भाई की चतुराई, दिनकर कुमार द्वारा अनुदित पुस्तक *दादा और पोता* में संकलित आठवाँ किस्सा कन और मन में दिखाया गया है। जिसमें दो भाई अलग-अलग होकर पुश्तैनी चीजों का बँटवारा करते हैं, जिसमें बड़ा भाई कन गाय का आगे का हिस्सा, पेड़ का ऊपर का हिस्सा और रजाई रात के लिए लेता है। मन परेशान हो जाता है। फिर एक बुढ़िया के उपाय से मन को अपना सही हिस्सा मिलता है और दोनों भाई मिलकर रहने लगते हैं।

> इसके बाद मन ने बुढिया की नसीहत मानते हुए अपने हिस्से का इस्तेमाल करना शुरु किया। कन सीधे रास्ते पर आ गया। और वह मन को उसका हक देने लगा। दोनों भाई पहले की तरह मिल-जुलकर रहने लगे। (33)

ऐसे ही इसी पुस्तक में एक अन्य कहानी नोमल और सोनपाही में भी परिवार का विघटन दिखाया गया है। जिसमें एक दंपति के छह पुत्र होते हैं। उनका पिता नोमल और सोनपाही को अपने घर से निकाल देते हैं, क्योंकि उन्होंने कहा था कि सब अपने-अपने नसीब का खाते हैं। उस समय नोमल और सोनपाही को बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। लेकिन एक दिन नोमल राजा और सोनपाही रानी बन जाती है, और उनके बाकी परिवार की हालत भिखारियों जैसी हो जाती है। तब नोमल और सोनपाही उनको अपने राजमहल में बुलाते हैं और सारा परिवार मिल जुलकर रहता है।

> अगले दिन हाथी और डोली भेजकर माँ , भाभियों और बच्चों को नोमल ने महल में बुला लिया। पूरा परिवार सुखपूर्वक दिन बिताने लगा। तब रूदाई ने समझ लिया कि नोमल-सोनपाही ने सच ही कहा था। कोई किसी की दया से नहीं खाता सब अपने-अपने भाग्य से ही खाते हैं।(106-107)

इस तरह उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के उपरांत हम यह कह सकते हैं कि इस समाज में व बालक के जीवन में परिवार का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। लेकिन आज के समाज में परिवार का विघटन हो रहा है। यदि सब लोग हंसी खुशी से, मिलजुल कर रहे तो किसी भी समस्या का समाधान किया जा सकता है और बालक का मनोवैज्ञानिक विकास भी प्रभावशाली ढंग से होगा।

3.3.6 बेरोजगारी

देश के विकास में बहुत सी बाधाएँ आती है। जिनमें से बेरोजगारी प्रमुख है, और यह एक गंभीर समस्या है। लेकिन यदि इस समस्या का समाधान समझदारी व सहनशीलता से करें तो उस बाधा को दूर किया जा सकता है। यह समस्या प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित बाल कहानी संग्रह *नेपाली लोक कथाएँ भाग-2* में संकलित कहानी 'पहाड़ी कौवा और ओझा' में भी दर्शाया गया है। जिसमें छिरिंग नामक अनाथ व गरीब लड़का था। जब वह बड़ा हो गया तो उसकी माँ ने उसे रोजगार के लिए शहर जाने के लिए कहा।

> कुछ काम करने या सीखने की तुम्हारी उम्र हो चुकी है। इसलिए कुछ काम करो। गाँव में तुम्हें काम तो मिलेगा नहीं। हाँ! गाँव से बाहर किसी शहर में जाओगे तो तुम्हें कुछ सीखने और कुछ करने का मौका मिलेगा। (13-14)

वह अपनी माँ की बात मान कर शहर के लिए रवाना हो जाता है। रास्ते में वह जिस पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए बैठता है, वहाँ पर एक मादा कौआ और नर कौआ रहते थे। उन कौओ की बात को नसीहत मानकर उसने बहुत सा धन कमाया और बेरोजगारी की समस्या से निजात पाया।

> माँ ने जब देखा कि बेटा काफी धन कमा कर घर लौटा है तो उसकी खुशी की सीमा नहीं रही। इसके बाद अच्छा मुहूर्त देखकर उसने बेटे की शादी कर दी और माँ , बेटा और बहू तीनों हँसी-खुशी के साथ जिंदगी बिताने लगे। (18)

इसी कहानी संग्रह में एक अन्य कहानी 'रोटी और मुर्गी' में बेरोजगारी, गरीबी व भूख को दर्शाया गया है। लेकिन इसमें वह दंपति विषम परिस्थितियों में भी एक दूसरे का साथ छोड़ने की बजाय एक दूसरे का साथ देते हैं, और अपनी समस्या को दूर करते हैं।

इसी कहानी संग्रह में एक अन्य कहानी 'मामा जी की शादी' में भी यही समस्या दर्शाई गई है। जिसमें गोपाल नाम का दस साल का लड़का था। वह बहुत हंसमुख प्रवृत्ति का था। उसके पिताजी एक मामूली नौकरी करते थे। "घर में पैसे न होने से खाना भी नहीं बना था। माँ उस पर चिल्लाने लगी। गोपाल उदास होकर घर के बाहर निकल पड़ा। ” (48)

एक दिन गोपाल ने एक बंदर को कैद से आजाद किया था। उस बंदर ने गोपाल की बहुत मदद की।

> बंदर समझ गया, बड़े डीलडौलवाला और खजाने से मालामाल यह राक्षस मूर्ख है और अगर मेरी चाल सफल हो गई तो गोपाल के माता-पिता की गरीबी दूर हो जाएगी। मेरा दोस्त आराम से रहेगा।" (49)

उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के उपरांत हम कह सकते हैं कि बेरोजगारी एक बहुत बड़ी समस्या है लेकिन एक दूसरे के सहयोग से और सहनशीलता से काम किया जाए तो इस समस्या से निजात पाया जा सकता है।

3.4 सांस्कृतिक संदर्भ

समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम संस्कृति है। जीवन जीने का तरीका, पर्व और त्योहार, रीति-रिवाज, रहन-सहन, परम्पराएँ, आचार विचार, नए नए अनुसंधान व अविष्कार जिससे मनुष्य जंगलियों के दर्जे से ऊपर उठकर सभ्य बनता है, वह सब संस्कृति में सम्मिलित है। यह सब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित किए जाते हैं। विख्यात कवि दिनकर ने अपनी पुस्तक *संस्कृति के चार अध्याय* में संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहा है:

> संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे जीवन में व्याप्त हुए तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभव का हाथ है यही नहीं बल्कि संस्कृति हमारा पीछा जन्म जन्मांतर तक करती है। (123)

मंगल देव शास्त्री ने *हिन्दीसाहित्य कोश* में संस्कृति को इस प्रकार परिभाषित किया है:“ समाज में विभिन्न व्यापारों में या सामाजिक संबंधों में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले आदर्शों की समष्टि को ही संस्कृति समझना चाहिए। ” (886)

सांस्कृतिक संदर्भों का अध्ययन कुछ प्रमुख बिंदुओं पर विचार करके करेंगे जो हमारी बाल कथाओं में व्याप्त है, और इनसे बालकों पर क्या-क्या प्रभाव पड़ते हैं।

3.4.1 पर्व या त्योहार

भारत त्योहारों का देश है यहाँ भिन्न-भिन्न समय पर अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। ये सब त्योहार सभी आसपास के लोग व रिश्तेदार मिलकर मनाते हैं। जिससे बच्चों में मिलकर रहने व सहयोग की प्रवृत्ति के विकास के साथ ही बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण भी होता है।

इसी तरह के एक त्योहार दीवाली का वर्णन सुरेखा पानंदीकर द्वारा अनुदित उपन्यास *गोट्या* में भी किया गया है। जिसमें गोट्या नाम का एक बच्चा शरारती प्रवृत्ति का होने के बावजूद लालाजी को पटाखों से परेशान करके मौसी का दिल जीत लेता है। मौसी, जो किसी भी बच्चे को पसंद नहीं करती थी, गोट्या व उसकी बहन को पूजा के लिए कपड़े भी देती है और प्रसाद भी देती है।

> अकेले होते हुए भी भगवान कृष्ण का प्रसाद चढ़ाने के लिए मौसी हर पकवान बनाती थी। और इस साल भगवान कृष्ण के साथ गोट्या और सुमा को भी मौसी के बनाए स्वादिष्ट पकवान दिवाली के चारों दिन खाने को मिले। शाम को मौसी आई। रुपये देकर मुझसे बोली, "इसके पटाखे, अनार और फुलझड़ी लाना।" (22)

इस तरह सुमा और गोट्या ने सबके साथ मिलकर दिवाली का त्योहार मनाया। इसी उपन्यास के एक अन्य भाग ‘गोट्या की भैया दूज’ में गोट्या और उसकी बहन सुमा

के द्वारा मनाए गए भैया दूज का वर्णन किया गया है। जिसमें गोट्या अपनी बहन सुमा को टीका करने पर उपहार देना चाहता है। जिसके लिए वह हर संभव कोशिश करता है। उसकी अच्छाई, होशियारी व सच्चाई देखकर केशव काका उसे कैमरा उपहार में देते हैं। तब गोट्या सोचता है कि यही उपहार में सुमा को दूंगा। लेकिन सुमा वह उपहार लेने से मना कर देती है। तब जमींदारनी गोट्या के व्यवहार से प्रसन्न होकर दोनों बच्चों को बुलाकर उनका भैया दूज का त्योहार अपने घर पर मनवाती है।

> जमींदारनी जी के कोई बच्चा नहीं था। इन दोनों बच्चों का भैयादूज का त्योहार मनाकर उन्होंने अपनी ममता का परिचय दिया था। दोनों बच्चों के साथ दिवाली का त्योहार भी मनाया था। (44)

इस त्योहार में एक भाई का अपनी बहन को उपहार देना उसका अपनी बहन के प्रति प्यार को दर्शाता है।

एक अन्य भाग 'दिवाली का अनोखा आनंद' में दर्शाया गया है कि दिवाली के अवसर पर सभी परिवार एक दूसरे को उपहार स्वरूप मिठाई देते हैं। लेकिन गोट्या और सुमा ने गरीब बच्चों को मिठाई खिलाकर उनके इस त्योहार को भी खुशियों भरा बना दिया। गरीब बच्चों को अपनी खुशी में शामिल करने से गोट्या व सुमा में त्याग की प्रवृत्ति, मेल मिलाप की प्रवृत्ति एवम् ऊंच-नीच से परे की प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

> पर भाभी आप अकेले ही क्यों? सब लोग अगर अपने में से थोड़ा-थोड़ा देते हैं तो किसी एक पर बोझ नहीं पड़ता और जिसके पास नहीं है उसकी जरूरतें भी पूरी हो जाती हैं। उन बच्चों को खुशी भी दी जा सकती है। (68)

ऐसे ही एक त्योहार तालनवमी का वर्णन अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित कहानी संग्रह*किशोर कहानियाँ* में संकलित कहानी 'तालनवमी' में भी दर्शाया गया है। जिसमें जटी बुआ तालनवमी पर्व के अवसर पर गोपाल के परिवार को छोड़कर आसपास के सभी लोगों को खाने पर बुलाती है। इस कहानी में गोपाल के लिए बुरा भी लगता है।

"नहीं, अंदर नहीं आऊंगा। दिन ढल रहा है। मैं जटी बुआ के यहाँ जा रहा हूँ। माँ वहीं पर है। उसे बुलाने जा रहा हूँ।"

"इस घड़ी तेरी माँ वहाँ क्या कर रही है?"

"उनके यहाँ दाल दलने गयी है। मंगलवार को ताल (ताड़) नवमी का व्रत है। उनके घर में दावत होगी।" (6)

उपर्युक्त कथनों से हम कह सकते हैं कि पर्व मिलजुल कर मनाना हमारी संस्कृति का हिस्सा है। इससे बच्चों में मिलजुल कर रहने की प्रवृत्ति, त्याग की प्रवृत्ति जैसे अनेक संस्कार आते हैं। हर त्योहार एक दूसरे से मिलजुल कर मनाते हैं। एक दूसरे को दावत देते हैं। एक दूसरे को उपहार देते हैं।

3.4.2 रीति-रिवाज

समाज में प्रत्येक समूह के, प्रत्येक धर्म के अपने-अपने रीति-रिवाज होते हैं। जैसे भैया दूज पर बहन के टीका करने पर भाई अपनी बहन को उपहार देता है। ऐसे ही दीपावली के अवसर पर एक-दूसरे को उपहार स्वरूप मिठाईयाँ देते हैं। *गोट्या* उपन्यास में भी इसी तरह के रीति रिवाज का वर्णन किया गया है।

दिवाली का दिन आया। सुबह नहाए-धोए। और फिर मेरी पत्नी थाल भर के पकवान मंदिर दे आई। फिर पंडितजी के लिए पकवान अलग थाल में सजाए गए। और फिर सिलसिला शुरू हुआ, छोटी तश्तरियों में पकवान पड़ोसियों के यहाँ भेजने का।

गोट्या और सुमा खुशी-खुशी पड़ोसियों के यहाँ पकवान ले जा रहे थे। वैसे तो गोट्या अपनी भाभी की हर बात का मजाक बनाता था, और उसे फिजूल खर्च बताता। (62-63)

भारत देश में मराठी लोग गणेश चतुर्थी का उत्सव बहुत धूमधाम से मनाते हैं, और इस अवसर पर पटाखे भी छुड़ाए जाते हैं।

> गणेश पूजा के दिनों, मैंने सुमा और गोट्या को पटाखे ला दिये और उनसे वादा लिया कि वे केवल आरती के समय ही पटाखे छोड़ेंगे और कोई शैतानी नहीं करेंगे। (15)

कार्तिक माह की एकादशी के दिन पुरुष, औरतें, बच्चे सभी नदी स्नान करते हैं। इस रीति-रिवाज का भी वर्णन *गोट्या* नामक उपन्यास में किया गया है। "कार्तिक महीने के एकादशी के दिन मास्टर जी की पत्नी और अन्य औरतें-बच्चे नदी-स्नान के लिए गए थे।" (23)

और इसी तरह भैया दूज पर बहन अपने भाई को टीका लगाती है और उपहार स्वरूप अपनी बहन को कुछ न कुछ देता है। इसी रिवाज का वर्णन *गोट्या* नामक उपन्यास में एक अन्य स्थान पर किया है।

> "अगर सारे भाई अपनी बहनों को भैया दूज के टीके पर कुछ-न-कुछ देते हैं तो गोट्या क्यों नहीं देता मुझे कुछ! पिछले साल आपने जो रुपये उसे मुझे देने के लिए दिए वहीं उसने टीका करने पर मेरे थाल में डाले। और फिर आपने मुझसे वापस ले लिए। मुझे तो कुछ नहीं मिला। (36)

खासी लोगों में माँ -बाप मरने के बाद उनकी बरसी मनाने का रिवाज है। आलमा सुहिल्या द्वारा अनुदित उपन्यास *जलपरी का मायाजाल* में भी फंसा अपनी माँ की बरसी बहुत धूमधाम से मनाता है। जिसमें सभी रिश्तेदार इकट्ठे होते हैं। कई दिन पहले ही तैयारियाँ शुरू हो जाती है।

> उसकी माँ की बरसी पर गाँव के लोग और आस-पास के बहुत से लोग भोजन के लिए आएँगे। रात-दिन तैयारी चल रही थी। गाँव के लोग बड़े खुश थे। यह दिन उनके लिए बड़ी खुशी का दिन था। साल में इसी दिन सभी एक साथ खाते-पीते और खुशी मनाते हैं। इस दिन फंसा जी खोलकर खर्च करता है। (29)

आलमा सुहिल्या द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *सूरज और मोरमें* संकलित कहानी 'अंतिम यात्रा का राही, में खासी लोगों के एक और रिवाज का वर्णन किया गया है। खांसी लोगों के यहाँ रिवाज है कि वे लोग किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के दाह संस्कार से पहले मुर्गे को काटते हैं। क्योंकि उनका मानना है किमरने के बाद मुर्गा ही मनुष्य को सही रास्ता दिखता है।

> खांसी,जो अब तक पुराने रस्में रिवाज को मानते हैं वे आज तक यह विश्वास करते हैं कि मुर्गा ही मनुष्य का पथ प्रदर्शक है वही मृत्यु की गुफा तक पहुंचाता है। अब भी लोग किसी की मृत्यु हो जाने पर, मृत्यु के दाह कर्म से पहले मुर्गी को काट कर पूजा किया करते हैं। (44)

इस तरह कह सकते हैं कि हमारे समाज में बहुत सारे त्योहार मनाए जाते हैं। जिससे बच्चे अपने रीति-रिवाजों के बारे में जान पाते हैं, और उन सबको मिलजुल कर खुशी से मनाते हैं।

3.4.3 मेले

भारत देश में विभिन्न त्योहारों के अवसर पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर मेलों का आयोजन होता है। जिसमें सभी मिलजुल कर मेले में जाकर मेले का आनंद उठाते हैं। बच्चे मिठाइयाँ खाते हैं, झूला झूलते हैं, खिलौने खरीद कर लाते हैं। ऐसे ही एक मेले का वर्णन हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संपादित पुस्तक *भारतीय बाल कहानियाँ भाग-4* में संकलित कहानी 'रूपा' में भी किया गया है। जिसमें रूपा नाम की लड़की मेले में जाने की जिद करती है। लेकिन उसकी माँ पिताजी के बीच में कुछ अनबन हो जाती है जिसके कारण वह अपने माता पिता के साथ मेले में नहीं जा पाती फिर भी वह अकेली टांगे में बैठकर मेले में जाती है। “ दशहरे का त्योहार नजदीक आ रहा था। रूपा के मम्मी पापा ने रूपा को दशहरा का मेला दिखाने की सलाह की। रूपा खुश थी। ” (15)

हालांकि अन्य बाल कथाओं में कहीं मेले का जिक्र नहीं हुआ है। लेकिन फिर भी हमारे देश में बहुत सारे मेलों का आयोजन किया जाता है। और सभी बच्चे अपने बड़ों के साथ मेला देखने जाते हैं, और उस का आनंद उठाते हैं।

3.4.4 किस्सा गोसाई

बड़ो द्वारा बातों ही बातों में किस्सों के माध्यम से सीख देना। पहले दादा-दादी या नाना-नानी बातों ही बातों में बड़ी-बड़ी बातें व संस्कार बच्चों को इन किस्सो को सुनाकर सिखा देते थे। यह रिवाज एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलती रहती है। इसी तरह दिनकर कुमार द्वारा अनुदित पुस्तक *दादा और पोता* में कुल उनतीस किस्सों को शामिल किया गया है। प्रत्येक किस्से में एक सीख छुपी है।

दसवाँ किस्सा में दादा अपने पोते से कहता है:

> दादा," मुझसे वादा कर। डर कर या मजाक में भी कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। झूठ के बराबर पाप नहीं होता। सच के बराबर पुण्य नहीं होता। आज से मेरे बच्चे, तू कभी झूठ मत बोलना। तूने वादा किया है, इसलिए अब मैं तुझसे नाराज नहीं हूँ। आओ अब किस्सा सुनाता हूँ। (37)

इसी तरह पंद्रहवें किस्से में भी बताया गया है कि हमें कभी भी किसी बाहर के व्यक्ति पर विश्वास नहीं करना चाहिए। वह हमें धोखा भी दे सकता है।

> दादा, बाहरी पोशाक देखकर किसी की पहचान नहीं की जा सकती। संन्यासी या फकीर की पहचान करना और कठिन है। इसीलिए अच्छी तरह परखने के बाद ही ऐसे लोगों की खातिरदारी करनी चाहिए। एक संन्यासी का किस्सा है। कहता हूँ, सुन.....।" (60)

मिलजुल कर कार्य करने से हर कार्य सरल हो जाता है। यही प्रवृत्ति उन्नीसवां किस्सा में दादा पोते को एक 'अंधा और कुबड़ा' के सहयोग की कहानी सुना कर बताते हैं। इस किस्से में अंधा और कुबड़ा दोनों असमर्थ होने के बावजूद एक दूसरे के सहयोग

से हर मुसीबत का हल ढूंढते हैं। इसी तरह से 'नामल और सोनपाही' का किस्सा सुना कर दादा ने पोते को परिवार का महत्व बताया।

उपर्युक्त किस्सों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि किस्सा गोसाई के माध्यम से बच्चों में अच्छे संस्कार डाले जा सकते हैं।

3.4.5 लोक कथाएँ

प्राचीन काल में दादा-दादी, नाना-नानी द्वारा अपने बच्चों को सुनाई जाने वाली लोककथा होती थी। इन लोक कथाओं के माध्यम से बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ समाज में व्याप्त छल-कपट, चालाकी, विश्वासघात जैसे-बुराइयों से सावधान भी करते थे, और इसके साथ-साथ बच्चों में अच्छे गुणों जैसे- वीरता, साहस, शौर्य एवं पराक्रम का महत्व बताकर उनमें आत्मविश्वास की भावना जगाते थे। हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संपादित पुस्तक *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1*में अपनी भूमिका में कहते हैं:

> लोक कथाओं को समाज का आईना माना जाता है। यह हमारी संस्कृति और लोक-साहित्य के अभिन्न अंग है। ये कहानियाँ हमारे जीवन के शुरू के दिनों से लेकर आज तक के लोक-जीवन के सारे पक्षों से परिचित कराती रही हैं। इन कथाओं का उद्देश्य श्रोताओं को मनोरंजन प्रदान करने, उनमें नैतिक मूल्यों का संचार कराने, आसपास के प्राणी-जगत के प्रति सहानुभूति जगाने, 'जियो और जीने दो' के सह-अस्तित्व के सिद्धांत के प्रति आस्था उत्पन्न कराने, सभी से मिलजुल कर रहने और संकट तथा चुनौतियों से न घबराने का संदेश देना रहा है। (5)

स्वप्ना दत्त द्वारा अनुदित पुस्तक *बुलबुल की किताब* में भी इसी तरह की लोक कथाओं का संकलन किया गया है। जिसमें लोक कथा शैली का प्रयोग करके अपनी बात को स्पष्ट किया है, और इसमें कविता की लाइनों का प्रयोग करके कहानी को और आकर्षक बनाया गया है। इन कहानियों में कुछ भी पाने के लिए पहला पात्र

दूसरे के पास जाता है, फिर तीसरे के पास जाकर अपनी समस्या को गाकर प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह की शैली का प्रयोग इस पुस्तक में रचित कहानी 'बुलबुल और राजा' में भी किया गया है। जिसमें बुलबुल को एक राजा के जैसा रुपया मिल जाता है, और वह राजा और बाकी लोगों को यही गा गाकर सुनाती है:

"जैसी दौलत राजा के घर।

वैसी दौलत बुलबुल के घर।" (12)

और इस तरह गायन कर करके राजा को परेशान कर देती है, तब राजा ने आदेश दिया कि इस बुलबुल को पकड़कर उसको पकाया जाए, लेकिन बुलबुल पकड़ में नहीं आती है, और इस पकड़म पकड़ाई में सभी की नाक कट जाती है।

बुलबुल की जरा देखो धाक।

सात रानियों की कटवायी नाक। (14)

अरे नकटे राजा, अच्छे राजा।

कहो तुम्हें कैसी मिली सजा? (16)

एक अन्य कहानी 'बुढ़िया और बगुला' में एक बुढ़िया को बालों में जूं हो जाती है। एक दिन उसके खाने में जूं गिरने के कारण बुढा उसे पीटता है, तो वह घर से निकल जाती है। बगुला उसे अपने घर ले आता है। एक दिन खाना बनाते समय बुढ़िया आग में गिरकर जल जाती है। तब बगुले ने सात दिन तक खाना नहीं खाया और उसने अपनी यह समस्या सब को गा गा कर बताई।

जूं वाली बुढ़िया जल मरी आग।

बगुला सात दिन भूखा रहा।

नदी का पानी, बन गया झाग।

उसमें गिर गई हाथी की पूंछ।

पेड़ के झड़ गए सारे पत्ते।

देख, कबूतर हो गया अंधा।

चरवाहे से चिपका डंडा।

दासी के हाथ से चिपका सूप।

रानी के हाथ में चिपकी थाली।

राजा चिपक गए आसन से। (25)

एक अन्य कहानी 'चिड़िया और कौवा' में भी ऐसे ही अपनी पूरी लोकगाथा को गा-गा कर बता रहे हैं।

"गृहस्थ भाई, आग तो दो

बनेगा हसियाँ, काटूंगा घास

खाएगी गाय, देगी दूध

पियेगा कुत्ता, मिलेगी ताकत

मारेगा भैंस, लूंगा सींग

खोदूंगा माटी, बनेगा लोटा

पानी भर कर धोऊंगा चोंच

फिर खाऊं चिड़ी का कलेजा।" (30-31)

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1* और *नेपाली लोक कथाएँ भाग-4* दोनों में इसी तरह की लोक गाथाओं का वर्णन किया गया है। जिनमें पशु पक्षियों की कथाओं के माध्यम से, परी अप्सराओं की दयाशीलता के माध्यम से, प्रेम प्रधान कविताओं के माध्यम से बच्चों में साहस, वीरता, शौर्य, पराक्रम व आत्मविश्वास की भावना जगाने की मंसा रहती है। इस तरह हम कह सकते हैं कि लोक कथाएँ दादी नानी द्वारा सुनाई जाने वाले मनोरंजन से परिपूर्ण व बच्चों के लिए उपदेशात्मक व नीतिपरक कहानियाँ है। जो बच्चों में संस्कार बनाए रखती हैं। लेकिन आज के युग में इन सब मनोरंजन करने के साधनों का स्थान टीवी ने ले लिया है।

जिसमें अच्छी कथाएँ भी दिखाते हैं, लेकिन फिर भी अश्लील कहानियाँ दिखा कर बच्चों को गलत दिशा में भी भटकाते हैं। इसीलिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने मन की बात कार्यक्रम में लोक कथाओं का जिक्र किया था कि ऐसा एक प्रोग्राम टीवी पर जरूर दिखाना चाहिए जिसमें बच्चों को लोक कथाएँ दिखाई जाए और उनका महत्व भी बताया जाए।

उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि हमारा देश त्योहारों का देश है यहाँ पर भिन्न-भिन्न त्योहार मनाए जाते हैं। इन त्योहारों के अवसर पर अलग-अलग रीति रिवाज मनाते हैं किस्सा गोसाई व लोक गाथाओं के माध्यम से बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनाया जाता है। साहस और बहादुरी से भरे किस्से सुनाकर लोक कथाएँ सुना कर बच्चों को प्रेरित किया जाता है। इस तरह की कहानियों में ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, उपदेशात्मक, प्रेम प्रधान किसी भी तरह की कहानियाँ हो सकती है। मुख्य उद्देश्य मनोरंजनव उपदेश देने के साथ-साथ उन को संस्कारित करना होता है।

3.5 भौगोलिक संदर्भ_

बच्चों को एक मनोवैज्ञानिक विकास में भौगोलिक परिस्थितियों का भी अहम योगदान है। इस संबंध में डॉक्टर संजीव महाजन अपनी किताब भारतीय समाज में कहते हैं: " भारत में भूगोल इसकी प्राकृतिक संकुल, इसके पर्वतों एवं नदियों ने किसी अन्य देश की अपेक्षा भारत के इतिहास को कहीं अधिक मात्रा में प्रभावित किया है। " (2) भौगोलिक संदर्भ के अंतर्गत बच्चे अलग-अलग क्षेत्र के पेड़-पौधों, वहाँ की वनस्पति, वहाँ के पशुओं के बारे में, वहाँ का रहन सहन और इन सब का क्या प्रभाव बच्चे की मानसिकता पर पड़ता है इन सब का अध्ययन करते हैं।

अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित उपन्यास *चंद्र पहाड़* में अफ्रीका की भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थितियाँ तथा प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया हुआ है। जिसमें माउंटेन ऑफ द मून के दृश्यों को, वहाँ के पेड़ पौधों को वहाँ की पर्वतमाला को बहुत ही आकर्षक ढंग से दर्शाया है।

> हाउप्टमैन द्वारा वर्णित माउंटेन 'ऑफ द मून' के दृश्यों की तरह ही चारों तरफ का दृश्य था। वैसा ही घना बांस वन था। वैसी ही जटा सरीखी चट्टाने नजर आ रही थीं। दूर पेड़ों के बीच से चाँदनी में नहाया बर्फ से ढका धवल पर्वत-शिखर कभी नजर आता था फिर कभी घने जंगल की आड़ में छिप जाता था। नीले आसमान में इक्के-दुक्के तारे भी नजर आ रहे थे। उसे लगा जैसे सचमुच ही एक बार उसे जंगली हाथियों के गरजने की आवाज सुनाई पड़ी। उस आवाज में समूचा जंगल काँप गया। (8)

एक अन्य स्थान पर युगांडा के जंगल व पहाड़ों का वर्णन किया है जो बहुत ही भयानक लगता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र शंकर भी वहाँ के दृश्य को देखकर डर जाता है।

> उस बौबाब पेड़ की दूसरी तरफ अनजाने देश की सीमा दूर कैपटाउन तक चली गई थी, जिसके बीच न जाने कितने पहाड़, जंगल, प्रागैतिहासिक युग का नगर जिम्बारी,विशाल और भयानक कालाहारी रेगिस्तान, हीरे और सोने की खदानें थी। (14)

अफ्रीका में सोने व हीरे की खानों में जाने के रास्ते में वहाँ का गहरा जंगल, उसके जंगली जानवर जिसको देखते ही इंसान डर जाता है।

> यह वही अफ्रीका था; वही रहस्यमय महादेश- जहाँ सोने और हीरे की खानें थीं। वहाँ न जाने कितनी जातियाँ, अनजान जगहें, अनजाने जीव-जंतु, वहाँ के

> सीमाहीन उष्ण कटिबंधीय जंगलों में छिपे हुए थे, इसका अभी तक किसी को पूरी तरह से पता नहीं था। (14)

वहाँ के खतरनाक जंगली जानवरों का चित्रण भी किया गया है। ब्लैक माम्बा साँप जो कि बहुत बड़ा होता है और उसके काटने पर मनुष्य बचता नहीं है।

> कमरे की दीवार और उसके बिस्तर के बीच की खाली जगह पर टोर्च की रोशनी पड़ने से क्षण भर के लिए भ्रमित होकर अफ्रीका का सबसे खतरनाक और जहरीला साँप काला माम्बा अपना फन लहरा रहा था। कमरे के फर्श से वह साँप लगभग ढाई हाथ ऊंचा खड़ा हुआ था। यह कोई हैरानी की बात नहीं थी क्योंकि ब्लैक माम्बा अमूमन आदमियों का पीछा करते हुए उसकी गर्दन पर अपने फन से वार करता है। शंकर को यह बात पता थी कि ब्लैक माम्बा का सामना होने पर उससे किसी का बच पाना उसके पुनर्जन्म जैसा ही होता है। (24)

अफ्रीका में स्थित रिक्टरसवेल्ड पर्वत श्रेणी का भी वर्णन किया गया है।

> एक दिन रिक्टरसवेल्ड पर्वत श्रेणी के एक पर्वत शिखर पर हमारी नजर पड़ी। वह मूल और प्रमुख पर्वत के समानांतर स्थित होते हुए भी ऊंचाई में उससे थोड़ा कम था। उसे पार करने के बाद हम लोगों ने एक विशाल जंगलों से भरी घाटी में उतर कर अपना तंबू गाड़ा। उस घाटी से होकर एक छोटी नदी बह रही थी। उस नदी को देख कर मुझे और जिम को बड़ी खुशी हुई। ऐसी नदियों के किनारों पर ही कई बार खनिज पदार्थों का पता चलता है। (37)

रिक्टरसवेल्ड पर्वत श्रेणी वाले इलाके में खतरा तो पग पग पर मंडराता रहता था। क्योंकि वहाँ पर खतरनाक जंगली जानवरों के साथ साथ आदिवासियों की बस्ती भी थी।

> उस महादुर्गम रिक्टरसवेल्ड पर्वतमाला के जंगलों में इस तरह अकेले रहना खतरनाक था। मैं पन्द्रह दिनों तक पैदल चलता-चलता उस आदिम बस्ती में पहुंचा। उन्होंने मुझे पहचान कर मेरी बड़ी खातिरदारी की। मैंने उन्हें जिम की मौत की कहानी सुनायी। (40)

यह जरूरी नहीं है कि आदिवासी बुरे ही होते हो, उपर्युक्त वाक्यों से पता चलता है कि वे भी मिलनसार प्रवृत्ति के होते हैं। वहाँ के जंगलों में ऊंची-ऊंची घास के मैदानों में सिंह छुपे रहते हैं। इसके साथ ही कांगो नदी के दोनों किनारों का दृश्य बहुत ही मनमोहक था।

> ऐसे सुरम्य वनों-जंगलों की शोभा उसने पहले कभी नहीं देखी थी। इतने दिनों तक वह अफ्रीका के जिस हिस्से में था, वहाँ इस तरह के वन नहीं थे। खुले मैदान थे और घास के जंगल, जिनके बीच-बीच में बावला और यूको के पेड़ थे। कांगो नदी से गुजरते वक्त स्टीमर जितना आगे बढ़ रहा था उतना ही दोनों तरफ घने जंगलों में जाने कितनी तरह की मोटी मोटी लताएँ, जंगली फूल उसे नजर आ रहे थे। यहाँ के वन जैसे अपने में खोये हुए अपने भरपूर सौंदर्य से खुद ही मुग्ध थे। (48)

इस उपन्यास में अफ्रीका की अत्यंत प्रसिद्ध पर्वत श्रेणी रिक्टरसवेल्ड पर्वत श्रेणी का भी वर्णन किया गया है। इन सब दृश्यों के साथ-साथ शंकर के साहस व बहादुरी को भी दर्शाया गया है, जो कि हीरो की खान में जा कर आया था। उसके साथ साथ एक पर्वतमाला जहाँ पर उसका साथी अल्बर्ज की मौत हुई थी उसका नामकरण भी अल्बर्ज पर्वतमाला शंकर ने ही रखा था। शंकर ही ऐसा एक इंसान था जो इतने खतरों को पार करके अफ्रीका की खतरनाक पहाड़ी जंगल से जिंदा लौट कर आया था। वहाँ के जंगल और पहाड़ों में पग-पग पर खतरे को देखकर हर किसी के रोंगटे खड़े हो सकते हैं, लेकिन शंकर के साहस व बहादुरी को देख कर हर किसी का मनोबल भी बढ़ता है।

ऐसे ही आल्मा सुहिल्या द्वारा अनुदित उपन्यास *जलपरी का मायाजाल* में खासी लोगों का रहन-सहन, वहाँ के उद्योग धंधे, वहाँ के पेड़-पौधों का वर्णन किया गया है। फंसा जो कि मेघालय की खासी पहाड़ी वाले इलाके में रहता है। ये लोग आलू उगाने का, सब्जियाँ व फलों का व्यवसाय करते हैं।

> इनके खेतों में धान, मक्का, आलू उगाए जाते हैं। सब्जियाँ और फलों का बगीचा भी है। इनके पास ढेर सारी गायें, भैंसें, बकरियाँ, सूअर और मुर्गियाँ है। इनकी देखभाल के लिए अलग लोग रखे हैं। इनके बगीचे में कटहल, लीची और अनार के पेड़ भरे हैं। इस बगीचे की देखभाल के लिए अलग लोग रखे हैं। मैंने तो ऐसा परिश्रमी किसान कभी नहीं देखा। (13)

विमला मोहन द्वारा अनुदित उपन्यास *बिल्ली हाउसबोट पर* में भी कश्मीर के खूबसूरत नजारे का, वहाँ के पक्षियों का, वहाँ के उद्योग धंधों का वर्णन किया गया है। जिसमें पपाया नामक बिल्ली नीरा और नरेन अपने माता-पिता के साथ व उनकी पालतू बिल्ली पपाया के साथ छुट्टियाँ में कश्मीर में हाउसबोट में घूमने जाते हैं।

> वहाँ हर ओर पंछी-ही-पंछी थे। यह परिंदे चारों तरफ उड़ते रहते थे और उन्हें कश्मीरी बच्चों की तरह पानी से डर नहीं लगता था। वहाँ छोटी-छोटी किंग चिड़िया थीं। मैदानों-जैसी बड़ी-बड़ी नहीं, जिन्हें पपाया ने पहले उड़ते देखा था। वहाँ छोटी-छोटी रंग-बिरंगी चिड़ियाँ चमकते जवाहरातों की तरह विलो पेड़ की रूपहली टहनियों पर चुपचाप चिपककर बैठ जातीं या हाउसबोट की बालकनी की मुंडेर पर उड़कर आ जाती। फिर अचानक उड़ती हुई आतीं और साफ पानी में डुबकी लगा एक चमचमाती छोटी मछली अपनी लंबी चोंच में दबाकर एकदम ऊपर आ जातीं। (19)

व्यवसाय में वहाँ पर गर्म कपड़े, कश्मीरी शॉल व कालीन बनाने और बेचने का कार्य करते थे।

> व्यापारियों के शिकारों पर सबसे ज्यादा चहल-पहल थी। वह अपने शिकारों पर लदा सामान एक हाउसबोट से दूसरे हाउसबोट पर ढोते बड़े मजे से जाते। कुछ में बहुत बारीक ऊन से बुनी और कढ़ी हुई कश्मीरी शालों की गठरियाँ थीं। अन्य पर व्यापारी कालीन लादकर बड़े गर्व से बेच रहे थे। उन्हें खोलकर खरीदने वालों को दिखाते तो वे चमक उठते। कालीन कई तरह के थे- लाल रंग के, जामुनी रंग के और पुराने पर्शियन नमूनों के। (20)

ऐसे ही एक अन्य उपन्यास *जंगल की एक रात* जो कि अरुंधती देवस्थले द्वारा अनुदित है, में भी पातालेश्वर जाने के रास्ते में आने वाले जंगल और पहाड़ी का व उस जंगल के गहरे पेड़ पौधों का वर्णन किया गया है।

> वैसे पहाड़ पर पगडंडी तो बनी हुई थी। लेकिन फिर भी रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा था। दोनों तरफ पेड़ बहुत बढ़ गये थे। वह चारों बीच-बीच में अपने बबूल के लठ को उन पर चलाती थीं। उससे पके हुए पत्ते नीचे गिर जाते। थोड़ा-सा खुलापन आ जाता और टहनियों के जाल से कहीं सूरज नजर आता। पैर के नीचे पत्तों की मर्रमर्.. मर... आवाज होती। (7)

एक अन्य स्थान पर

> सोता, पातालेश्वर की पहाड़ी, खाई कुछ भी दिखायी नहीं पड़ रहा था। चारों तरफ सिर्फ बड़े-बड़े पेड़ खड़े थे। घना जंगल था। उन पेड़ों में से उसने झांकने की कोशिश की। कुछ भी जाना-पहचाना नजर नहीं आ रहा था। (12)

उस जंगल में जंगली जानवर बाघ का भी वर्णन किया गया है। वहाँ पर एक डाकू का गिरोह भी था जिनका सामना उन चारों लड़कियों ने साहस व बहादुरी के साथ किया। इन सब का अध्ययन करने पर हर बालक या मनुष्य डर जाता है, लेकिन फिर अगले ही पल इन उपन्यासों में दिखाए गए साहस व बहादुरी और समझदारी के कारण बच्चे

किसी भी कठिन परिस्थिति में डरने की बजाय उनसे डटकर मुकाबला करने के लिए प्रेरित भी होते हैं।

इन उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि इन बाल कथाओं का भौगोलिक अध्ययन करने पर बच्चों के ज्ञान में अप्रतिम वृद्धि होगी एवं वे अचानक से आई किसी भी मुसीबत से डरने की बजाय उसका बहादुरी से सामना करेंगे।

उपर्युक्त कथाओं का परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि बालक उन के माध्यम से अपने परिवेश में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में जान पाएँगे। अपने समाज में क्या चल रहा है, किस तरह की हमारी संस्कृति है, उसके बारे में जान पाएँगे, तथा भौगोलिक अध्ययन के माध्यम से अलग-अलग क्षेत्र, वहाँ की वनस्पति, वहाँ की जलवायु, वहाँ के उद्योग धंधो के बारे में, वहाँ की परिस्थितियों का अच्छे से आकलन कर पाएँगे।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची -</u>

<u>आधार ग्रंथ -</u>

उपाध्याय, प्रकाश, प्रसाद. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-2* . साहित्य अकादेमी, 2019.

किरोगा ओरासियो, पंत प्रीति, *जंगल- कथा*, साहित्य अकादेमी,अकादमी 2019.

गाडगिल, गंगाधर. देशपांडे, माधुरी. *पक्या और उसका गैंग.* साहित्य अकादेमी, 2019.

जीरवा, वेबस्टर डेविस. सुहिल्या, आलमा. *जलपरी का मायाजाल.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---. सूरज और मोर. साहित्य अकादेमी, 2017.

ताम्हनकर, ना. धो..पाणदीकर, सुरेखा. *गोट्या.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देवसरे, हरिकृष्ण. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी , 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:*2. साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:4.* साहित्य अकादेमी, 2018.

देसाई, अनीता. मोहन, विमला. *बिल्ली हाउसबोट पर.* साहित्य अकादेमी, 2016.

बंधोपाध्याय, विभूतिभूषण. गोस्वामी, अमर. *किशोर कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. गोस्वामी, अमर. *चंद्र पहाड़.* साहित्य अकादेमी, 2019

भागवत, लीलावती. देवस्थले, अरुंधति. *जंगल की एक रात.* साहित्य अकादेमी, 2019.

भुल्लर, जसवीर.ग्रोवर, शांता. *जंगल टापू.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मुखोपाध्याय, शीर्षेंदु. गोस्वामी, अमर. *गोसाई बाबा का भूत.* साहित्य अकादेमी, 2019.

राय, सुकुमार. गोस्वामी, अमर. *चुनिंदा कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2013.

रायचौधुरी उपेंद्रकिशोर, दत्त.*स्वप्ना बुलबुल की किताब.* साहित्य अकादेमी, 2017.

शिन्जी, ताजीमा. नारंग, हरीश. *अचरज ग्रह की दंतकथा.* साहित्य अकादेमी, 2018.

<u>सहायक ग्रंथ-</u>

<u>सहायक ग्रंथ (हिंदी) -</u>

दिनकर,रामधारी सिंह. *संस्कृति के चार अध्याय.* साहित्य अकादमी, 1956.

देवसरे, हरिकृष्ण. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी, 2018.

त्रिपाठी, आदित्य प्रसाद. *औपन्यासिक समीक्षा और समीक्षाएँ.* अनुभव प्रकाशन, 1981.

महाजन, संजीव. *भारतीय समाज.* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस,

<u>शब्द कोश-</u>

वर्मा, रामचंद्र. *मानक हिन्दी कोश.*हिन्दी साहित्य कोश, 1965.

अध्याय-4

4 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भ

4.1 ऐतिहासिक संदर्भ

4.1.1 कथा विश्लेषण

4.1.2 कथ्य विश्लेषण

4.2 पौराणिक संदर्भ

4.2.1 कथा विश्लेषण

4.2.2 कथ्य विश्लेषण

4 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भ

अनुदित बाल कथाओं में अनेक संदर्भों का वर्णन मिलता है। ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाएँ बालकों के मनोविज्ञान को प्रभावित करने में विशेष महत्व रखते हैं। ऐतिहासिक कहानियाँ इतिहास से ओतप्रोत होने के कारण बालक के मन पर शीघ्र प्रभाव डालती हैं तथा यह प्रभाव दूरगामी होते हैं। वही पुरानी कहानियों के माध्यम से बालक प्रकृति के अनेक रहस्यों एवं विकास के प्रति अपना दृष्टिकोण विकसित करता है।

4.1 ऐतिहासिक संदर्भ

ऐतिहासिक कहानियों के माध्यम से बालक में साहस, निडरता का गुण विकसित करने के लिए श्रेष्ठ और बलिदानी राजाओं की कहानियों को पढ़ाया जाता है। राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना के विकास हेतु क्रांतिकारियों की कहानियों पर बल दिया जाता है। देश-विदेश भूगोल का ज्ञान प्रदान करने हेतु दुनिया की खोज एवं विशिष्ट घटनाओं के वर्णन के द्वारा कहानियों की रचना की जाती है। कहानियों को बालकों हेतु आकर्षक व रुचिकर बनाने हेतु इनमें ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन को भी स्थान दिया जाता है। साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित कहानियों में इतिहास से संबंधित कहानियों का समावेश तो नहीं है लेकिन इनमें राजा रानी से संबंधित कहानियों की मात्रा काफी है। उन्हीं का अध्ययन एवं विश्लेषण यहाँ हम करेंगे। जिसमें बच्चों को पता चलेगा कि प्राचीन काल में राजा रानी होते थे, उनका एक राज्य होता था, उनकी शासन व्यवस्था, न्याय करने के तरीके आदि का बच्चों को ज्ञान होगा।

4.1.1 कथा विश्लेषण

किसी भी कथा में क्या कहा गया है, किसके बारे में कहा गया है, उसका क्या उद्देश्य है, यह कथा विश्लेषण कहलाता है।

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1* में संकलित कहानी 'राजकुमारी पद्मा' ऐतिहासिक संदर्भ पर आधारित है। जिसमें पद्मसेन नाम का न्याय प्रिय एवं सब को खुश रखने वाला राजा था। लेकिन उसका एक पड़ोसी राजा वीरबाहु उससे चिड़ता था। वीरबाहु ने राजा पर हमला करने का मन किया। लेकिन उसका मंत्री समझदार था। उसने राजा बीरबाहु से कहा महाराज युद्ध करने से पड़ोसी राजा का सुखचैन कोई नहीं छीन सकता। और भी कई उपाय हैं उनको परेशान करने के। तब मंत्री ने पहले एक छड़ी राजा के पास भेजी यह बताने के लिए कि इसका छोर कौन सा है? और इसका सिर कौन सा है? तब राजा पद्मसेन की बेटी पदमावती ने अपनी सूझबूझ का सहारा लेते हुए इस पहेली को हल किया। फिर मंत्री ने एक मोम की चिड़िया पिंजरे में बंद करके भेजी और कहा कि वह बिना पिंजरा खोले चिड़िया को गायब करके दिखाएँ। जब राजकुमारी पदमावती ने उस पिंजरे के चारों तरफ आग लगा दी और उस पिंजरे को खाली कर दिया। उसके बाद मंत्री ने तीन मिट्टी की खोपड़िया भेजी और उनका मोल बताने के लिए कहा। तब भी राजकुमारी ने इस पहेली को सुलझाया और राजा ने उसे मंत्री बना दिया और पड़ोसी राजा को लिखकर कहा कि युद्ध करने के बहाने न सोचें अगर लड़ाई करनी है तो हम भी तैयार हैं।

> राजकुमार के फैसले करने के तरीके और क्षमता की सभी सभासदों ने तारीफ की। राजकुमारी के फैसले के अनुसार ही राजा वीरबाहु को राजा पद्मसेन का

> जवाब भेजा गया और राजकुमारी के सुझाव के अनुसार यह भी बता दिया गया कि वह लड़ाई के लिए बहाने की तलाश न करें। (81)

फिर मंत्री ने भी राजा को समझाया कि इस तरह किसी की बुद्धि की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए, बल्कि उससे मित्रता करनी चाहिए।

> राजा का आदेश आने पर मंत्री कहने लगा, "महाराज, आप अन्यथा न लें। मेरा विनम्र निवेदन यह है कि हम लड़ाई की बात और बुद्धि-परीक्षा की योजना त्याग दें, इसी में हम सभी की भलाई है। जिस देश के राजा के पास इस प्रकार की विलक्षण प्रतिभा से युक्त सलाहकार और मंत्री गण हों, उनसे मित्रता कायम करने में ही हमारा कल्याण है। (82)

इसी तरह एक अन्य कहानी 'बड़ा कौन' भी ऐतिहासिकता पर आधारित है। जिसमें राजा चंद्रकेतु की एक बेटी थी पद्मावती। जिस ने यह फैसला किया कि हाथी ही उसके वर को चुनेगा। तब स्वयंवर किया गया। सभी राजा महाराजाओं को बुलाया गया, और हाथी की सूंड में माला टांग दी गई और उसे वर चुनने के लिए कहा। लेकिन हाथी ने किसी भी राजा के गले में माला नहीं डाली। तब राजा ने कहा कि कोई भी नवयुवक बचा है, तो मंत्री ने बताया कि एक नवयुवक जो कि अपाहिज है, वह चोरी करने के अपराध में जेल में है। तब राजा के कहने पर उसे भी बुलाया गया। हाथी ने उसे ही हार पहनाया। तब राजकुमारी ने अपनी शर्त के हिसाब से उसे ही अपना पति माना। राजा दुखी हो गया और उसे गाँव के जंगल में एक झोपड़ी बनाकर रहने के लिए दी। एक दिन देवी लक्ष्मी, देवी सरस्वती, देवी दशा, तीनों उसके पास आई कि कोई हमें बताएँ कि हम में से बड़ा कौन है। राजकुमारी के पति ने देवी दशा को श्रेष्ठ बताया और अपनी हालत का दोषी भी देवी लक्ष्मी व सरस्वती को बताया। तब उन देवियों ने अपनी गलती स्वीकार की और उससे माफी माँगी और उसके शरीर का

कायाकल्प कर के उसे ठीक कर दिया। राजकुमारी अपने पति के साथ हँसी खुशी से रहने लगी।

एक अन्य कहानी संग्रह प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित *नेपाली लोक कथाएँ भाग-2* में संकलित कहानी 'त्यागी राजा' में भी यही दर्शाया गया है। हिम प्रदेश में एक बहुत ही दयावान राजा रहता था। उसकी अच्छाई के कारण लोग उन्हें सिंधु राजा के नाम से बुलाते थे। वह हमेशा जनता के हित के लिए सोचते रहते थे। एक बार एक पड़ोसी राज्य के राजा ने उन पर हमला कर दिया। तब उस युद्ध में राजा का बड़ा बेटा युवराज मारा गया और बहुत सारे सैनिक भी मारे गए। लेकिन पंडित, राजगुरु, राजपुरोहित एवम् बाकी प्रजा सबने अपने राज्य की सलामती के लिए पूजा-पाठ जारी रखा और आखिर राजा की विजय हुई। तब राजा ने राज्य का भार राजगुरु को सँभालने के लिए कहा, और खुद धर्म ग्रंथों का अध्ययन करने व धर्म प्रचार करने में जीवन बिताने का निर्णय लिया।

> इस सफलता और उपलब्धि का श्रेय आप लोगों को है। मैं समझता हूँ कि एक विशाल सेना के सेनापति को यह जीत अपने धर्म गुरुओं के कारण मिली है और मैं अनुभव करता हूँ कि जिस देश का शासन-भार ऐसे व्यक्ति के हाथों में हो, उस देश के ऊपर कोई संकट नहीं आ सकता। मुझे यह देश अपने प्राणों से भी प्यारा है। (54-55)

राजा के त्याग को देखकर राजगुरु को भी इस फैसले को मानना पड़ा और उन्होंने राजा के त्याग की प्रशंसा और गुणगान की।

> राजगुरु से दीक्षा पाने के बाद सिंधु राजा ने उन्हें राज गद्दी पर बिठाया और खुद रानी के साथ धर्म प्रचार पर निकल गए।

सारा वातावरण नए राजा की जय-जयकार और सिंधु राजा के त्याग की प्रशंसा और गुणगान से गूँजने लगा। (55)

इसी कहानी संग्रह में संकलित एक अन्य कहानी 'राजकुमारी का इशारा' भी ऐतिहासिकता पर आधारित है। जिसमें एक राजा था। जिसके यहाँ राजकुमार ने जन्म लिया। वही मंत्री के घर में बेटा पैदा हुआ। राजा और मंत्री का बेटा साथ-साथ पल-बढ़कर बड़े हुए। एक दिन ये दोनों शिकार पर गए। राजकुमार का घोड़ा दौड़ कर काफी आगे निकल गया और एक दूसरे राज्य में पहुँच गया। वहाँ पर राजकुमारी और राजकुमार एक दूसरे को देखकर एक दूसरे पर मोहित हो गए। लेकिन इतने लोगों के पास होने पर राजकुमारी ने राजकुमार को सांकेतिक भाषा में कुछ कहा। जिसे राजकुमार नहीं समझ सका। तब मंत्री के बेटे ने आकर उसे समझाया कि राजकुमारी परेबापुर की है और उसके पिता का नाम दंतेश्वर है। राजकुमार और मंत्री का बेटा दोनों अपने राज्य में लौट कर आ गए। अगले दिन अपने पिता की आज्ञा लेकर परेबापुर की तरफ रवाना हो गए। वहाँ पहुँचकर वे लोग एक बुड्ढी अम्मा मालिन के घर ठहरे। मालिन रोज राजकुमारी के लिए माला गूंथ कर ले जाती थी। मंत्री के बेटे ने एक दिन माला बनाने की जिद करके, राजकुमारी के लिए माला बनाई। लेकिन उसमें संदेश भी दिया कि हम आ गए हैं। लेकिन आपके पास कैसे आए? तब राजकुमारी खुश हो गई, लेकिन झूठ मूठ का गुस्सा दिखा कर मालिन की साड़ी के पल्लू पर एक सफेद और एक काला टीका लगा दिया। इसका मतलब था-अभी चाँदनी रात है, अमावस्या आने दो, तब मिलना। जब अमावस्या आ गई तब फिर एक दिन मंत्री के बेटे ने जिद करके माला गूंथी और राजकुमारी के पास संदेश दिया कि अब अमावस्या आ गई है, अब कैसे मिले? तब उस दिन राजकुमारी ने मालिन के बालों के तीन हिस्से किए। एक हिस्सा खुला छोड़ दिया और मालिन को पीछे की टूटी दीवार से बाहर भेजा। इसका अर्थ है महल में तीन दीवार है और एक टूटी दीवार है, उसी

की तरफ से आपको आना है। खुले बालों का मतलब है- राजकुमारी की कमरे की खिड़की खुली मिलेगी और उसमें एक रस्सी लटकती हुई मिलेगी। तब उस रात राजकुमार राजकुमारी से मिलने गया। तब राजकुमार ने राजकुमारी को साथ चलने के लिए कहा। लेकिन राजकुमारी ने कहा कि ऐसे कायरों की तरह जाना सही नहीं है। यहाँ मंदिर में एक राक्षस वेश बदलकर आता है और उसने काफी लोगों को मार डाला है। आप अपने शौर्य, बल एवं पराक्रम से उसे मारकर मुझे ले जाइए। तब मैं आपके साथ सम्मान से चलूंगी। तब राजकुमार और मंत्री के बेटे ने राजकुमारी की मदद से उस राक्षस को मार डाला और राजकुमार के पिता ने भी सहर्ष राजकुमार के साथ उसका विवाह कर दिया।

> राजा अपनी बेटी की जान बचने की खबर से खुश हुआ। उस युवक के लिए भी उसके मन में इज्जत जगी, जिसने उसे बचाया था। बेटी से सारी बातें सुनने के बाद जब राजा को यह पता चला कि वह युवक कोई और नहीं किसी राज्य का राजकुमार ही है और बेटी उससे शादी करना चाहती है तो राजा ने उन दोनों की शादी बड़ी धूमधाम से की और बड़े प्रेम और इज्जत से महल से उनकी विदाई की। (66)

इसी कहानी संग्रह में संकलित एक अन्य कहानी 'राजा और चोर' में एक राजा था, जो बहुत ही न्यायप्रिय था। वह अपनी प्रजा को बहुत खुश रखता था। लेकिन उसको नींद बहुत आती थी। राज सभा के दौरान भी उसे नींद आ जाती थी। एक दिन उनके महल में एक योगी आए। तब राजा ने अपने नींद की समस्या के बारे में योगी को बताया। योगी बाबा ने राजा को नींद पर काबू पाने की कला सिखाई व एक मंत्र भी बताया। तब से राजा को अपनी नींद पर काबू करना आ गया। एक दिन राजा जब निंद्रासन में बैठा था, तब चार चोर राजमहल में घुस गए। राजा भी साधारण कपड़े

पहन कर उन चोरों के पास गया और अपने आप को चोर बताकर पूछा कि वे अंदर कैसे आए। तब उन्होंने बताया कि हम सभी को इस कला के मंत्र आते हैं और एक चोर ने बताया कि वह जानवरों की भाषा समझने की कला जानता है। तब राजा ने उसे मंत्र बताने के लिए कहा वरना उसे प्राण दंड दिया जाएगा। लेकिन यदि वह मनुष्य उस मंत्र को किसी और को बता देता है तो उसकी मृत्यु हो जाती है। राजा ने चोर को मरते हुए अपने सामने देखा था। इसलिए जब रानी ने मंत्र जानने की जिद्द की तो वे धर्म संकट में पड़ गए। तब एक दिन वही योगी फिर राज महल में आया। तब उन्होंने इसका उपाय बताया तब राजा ने रानी से कहा कि इसके लिए तुम्हें पचास कोड़े खाने होंगे। रानी को कोड़ों की मार का अनुभव नहीं था वह कोड़े खाने के लिए तैयार हो गई, लेकिन जैसे ही दो-तीन कोड़े खाए, वह लहूलुहान हो गई और दर्द से तड़पने लगी और मंत्र सीखने की जिद छोड़ दी।

> राजा ने दोषियों को बुलाया और रानी को इलाज के लिए राजवैद्यों के पास भिजवाया। इस तरह योगी के मंत्र से राजा को एक ओर मुसीबत से मुक्ति मिली और उसे लगा कि आदमी को हमेशा ही ऐसे गुरु की आवश्यकता होती है, जो उसे सही राह दिखाए और संकट से उबारे। (72)

अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित कहानी संग्रह सुकुमार राय चुनिंदा कहानियों में संकलित कहानी 'राजा की बीमारी' कहानी में एक राजा था। उसे लगता था कि वह बीमार है। वैद्य डॉक्टर सभी को दिखा दिया गया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि राजा को कोई बीमारी थी ही नहीं। फिर एक दिन एक साधु आया, उसने बताया कि राजा की बीमारी का इलाज मेरे पास है। किसी ऐसे आदमी जिसको कोई चिंता नहीं हो जो हमेशा हंसता रहता हो उसका कुर्ता और गद्दा ले आए और राजा को वह कुर्ता पहना दिया जाए और गद्दे पर सुला दिया जाए तो वे बिल्कुल ठीक हो

जाएँगे। तब राजा ने मंत्री व बाकी लोगों को ऐसे आदमी की तलाश में भेज दिया। बहुत ढूंढने पर भी ऐसा आदमी नहीं मिला। फिर मंत्री को एक फकीर नजर आया, जो लगातार हँसे जा रहा था तो मंत्री ने सोचा कि यही वह आदमी है। तब उसने उसका कुर्ता माँगा तो उसने कहा कि मैं कुर्ता नहीं पहनता, फिर उससे उसका गद्दा माँगा तो उसने कहा कि चालीस साल से मैंने गद्दे के बारे में नहीं जाना। तब मंत्री ने पूछा कि तुम बीमार नहीं होते, तो फकीर ने कहा, "बीमारी क्या चीज होती है? जो लोग बीमारी के बारे में सोचते हैं, वहीं बीमार पड़ते हैं। बीमारी उन्हें दबोचती है।" यह कहकर उसने पेड़ से टेक लगाई और पैर फैलाकर फिर से हँसने लगा।" (77)

मंत्री ने आकर सारी बात राजा को बताई। तब राजा ने सोचा जिसके पास कोई सुविधा नहीं है वह तो बीमारी के बारे में जानता तक नहीं और मैं जिसके पास सभी सुख सुविधाएँ है बीमारी से डरता हूँ। ऐसा सोचकर अगले दिन राजा सुबह ही नहा धोकर दरबार में हाजिर हो गया और कहा कि मैंने अपनी बीमारी खुद ही ठीक कर ली है।

> दूसरे ही दिन राजा ने सुबह उठने के बाद अपने खास दरबारियों को बुलाकर कहा, "तुम सब के सब बेवकूफ और निकम्मे हो। तुम लोगों से कुछ करते नहीं बना। लेकिन देखो, अपनी बीमारी मैंने खुद ही ठीक कर ली है। आज से मैं फिर से पहले की तरह दरबार में बैठूँगा, और जो जरा भी बेअदबी करेगा, उसकी गर्दन उड़ा दूँगा।" (78)

एक अन्य कहानी संग्रह हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-2 में संकलित कहानी 'हिमानी' भी ऐतिहासिकता पर आधारित है। एक बार एक रानी थी वह खिड़की पर बैठकर राजा का कुर्ता सुई से सील रही थी। तभी अचानक सोचते सोचते सुई से उसके हाथ में लग गई और खून की दो बूंदे नीचे बर्फ पर गिर

गई। तब उसने मन में सोचा कि काश मेरा बेटा हो, जो बर्फ जैसा सफेद हो, लाल बूंदों की तरह वह लाल हो और खिड़की के चौखट जैसे काले उसके बाल हो। कुछ समय बाद रानी ने एक बेटी को जन्म दिया और उसके बाद उसकी मृत्यु हो गई। वह बिल्कुल वैसी ही थी जैसी रानी ने सोचा था। राजा ने दूसरी रानी से शादी कर ली। उस रानी के पास एक जादुई दर्पण था। वह उससे पूछती कि दर्पण सबसे सुंदर कौन। तब दर्पण यही बोलता था कि रानी सबसे सुंदर। लेकिन कुछ सालों के बाद जब हिमानी 7 साल की हो गई, तब रानी जब भी दर्पण से पूछती तो दर्पण यही कहता था कि पहले रानी सुंदर थी अब हिमानी सुंदर है, तो रानी को उसकी सुंदरता से चिड़ होने लगी। तब उसने शिकारी से हिमानी को जंगल में ले जाकर मारने के लिए कहा और सबूत के लिए हिमानी का दिल और जीभ काटकर लाने के लिए कहा। शिकारी जब उसे मारने के लिए जंगल में ले गया तो वह उसे मार नहीं पाया और उसने उसे जंगल में ही छोड़ दिया और एक सूअर का दिल और जीभ काटकर रानी के लिए ले आया। हिमानी जंगल में दौड़ने लगी। दौड़ते-दौड़ते वह एक घर में पहुँची। जहाँ पर सात बौने रहते थे। वह उनके साथ रहने लग गई। बौने दिन में सोने चांदी की तलाश में जंगल में जाते थे और हिमानी घर का सारा काम करती थी। उनके लिए खाना तैयार रखती। लेकिन उधर शिकारी ने जाकर रानी को जब वह दिल और जीभ दी तो रानी ने सोच लिया कि अब हिमानी मर गई है। तब रानी ने फिर से दर्पण से पूछा कि सबसे सुंदर कौन है। तब दर्पण ने कहा पहले रानी सुंदर थी अब हिमानी सुंदर है और वह जंगल में बौने के घर में है। तब रानी भेष बदलकर उसे मारने की कोशिश करती है। एक बार उसे कपड़े से तेज बांधकर और एक बार जहर वाली कंघी से हिमानी के बाल बना कर लेकिन दोनों बार बौनो ने उसकी जान बचा ली। तीसरी बार रानी ने उसे जहरीला सेब खिलाकर मारने की कोशिश की तो हिमानी मर गई। फिर बौनो ने उसके शरीर को एक कांच वाले ताबूत में डालकर रख दिया। उसका शरीर

वैसे ही लाल था चमकता हुआ। काफी साल बीत गए लेकिन उसका शरीर खराब नहीं हुआ। एक दिन वहाँ से एक राजकुमार जा रहा था। उसकी नजर उस ताबूत पर पड़ गई। राजकुमार ने बौनो से ताबूत देने के लिए कहा। तब उन्होंने उसकी इमानदारी को देखकर ताबूत उसे दे दिया। जब राजकुमार अपने सेवक की मदद से उस ताबूत को उठा कर ले जा रहे थे तो उन्हें ठोकर लगी और ठोकर लगने से ताबूत में झटका लगा। जिसके कारण हिमानी के मुँह में जो जहरीला सेब था उसका टुकड़ा बाहर आ गया और वह उठ कर बैठ गई। राजकुमार ने उसे सारी बातें बताई।

> जब बौनों ने देखा कि वह बहुत ईमानदार है तो उन्हें उस पर दया आ गई और उन्होंने उसे वह ताबूत दे दिया। राजकुमार उसे अपने सेवकों के कंधों पर लदवाकर चल पड़ा। रास्ते में उनके पैर एक गड्ढे में पड़े और उनके लड़खड़ाने से लगे झटके से हिमानी के मुँह से जहरीले सेब का टुकड़ा निकलकर बाहर गिर पड़ा। जल्दी ही उसने अपनी आँखे खोली और ताबूत का ढक्कन उठाकर वह उठी और बोली, मैं कहाँ हूँ?" (29)

राजकुमार ने राजकुमारी से शादी कर ली। उस शादी में रानी को भी बुलाया और जलते हुए लोहे के जूते पहनाकर उन्हें नाचने के लिए कहा और वह तब तक नाचती रही जब तक कि वह मर नहीं गई।

इसी कहानी संग्रह में रचित एक अन्य कहानी 'राजकुमार और राजकुमारी' भी ऐतिहासिकता पर आधारित है। जिसमें एक राजा था। उसका एक बेटा था। उसके लिए एक भविष्यवाणी की गई थी कि जब वह सोलह वर्ष का होगा, तब एक हिरण की वजह से उसकी मौत हो जाएगी। जब वह सोलह वर्ष का हुआ तब वह एक दिन जंगल में शिकार खेलने गया। वहाँ एक हिरण का पीछा करते हुए वह जंगल में काफी आगे निकल गया। तब वहाँ जाकर हिरण अपने असली वेश में आ गया यानी कि

आदमी के वेश में आ गया और उसे अपने राज्य में ले गया। वहाँ पर उसने पहली रात अपनी बड़ी बेटी की रक्षा करने के लिए कहा और सारी रात जागने के लिए कहा कि उसकी हर घंटे जाँच की जाएगी और अगर वह सो गया तो अगले दिन उसकी हत्या कर दी जाएगी। तब बड़ी राजकुमारी ने अपने कमरे में रखी मूर्ति से अपने पिताजी की आवाज का जवाब देने के लिए कहा। ऐसे ही लगातार तीन दिन तक उसको उसकी तीनों बेटियों की रक्षा करने के लिए कहा गया। तब भी राजा ने कहा कि अभी भी अपनी बेटी की शादी उससे नहीं करेगा। फिर उसे दिन के छह बजे तक जंगल साफ करने के लिए कहा। तब छोटी राजकुमारी ने उसकी मदद की। अगले दिन उसे तालाब साफ करने के लिए कहा। तब भी छोटी बेटी ने उसकी मदद की फिर भी राजा ने शादी के लिए मना कर दिया। तब राजकुमार और राजकुमारी वहाँ से भागने लगे, तो राजा ने उनको पकड़ने के लिए उनका पीछा किया। लेकिन वे लोग अपनी सूझबूझ से वहाँ से निकल गए और उसकी माँ ने राजकुमारी को तीन अखरोट देकर कहा कि मुसीबत के समय यह तुम्हारी मदद करेंगे। राजकुमार राजकुमारी को महल छोड़कर घोड़ा बग्गी लेने अंदर चला गया। लेकिन जैसे ही वह अपनी माँ से मिला, राजकुमारी को भूल गया। उस दौरान राजकुमारी को एक कारखाने में काम करना पड़ा। राजकुमार की माँ ने राजकुमार की शादी तय कर दी। शादी में राजकुमारी भी बढ़िया पोशाक पहनकर गई। शादी होने वाली थी होने वाली दुल्हन ने राजकुमारी से उसकी पोशाक माँगी। तब उसने एक शर्त रखी कि वह अपनी पोशाक तब देगी यदि राजकुमार के बगल वाले कमरे में उसे एक रात रहने देगी। जब रात हुई तब राजकुमारी ने राजकुमार को सब कुछ याद दिला दिया। तब राजकुमार ने राजकुमारी से शादी की और वे एक साथ मिल जुलकर रहने लगे।

इतनी सुंदर पोशाक पहनकर बाहर निकली कि सभी लोगों इसे देखने दौड़ पड़े और उन्होंने दुल्हन की राह में फूल बिछा दिये। इसके बाद, राजकुमार और

> राजकुमारी की शादी हो गई और दुष्ट रानी माँ और ईर्ष्यालु लड़की को हमेशा के लिए वहाँ से भगा दिया गया। (86)

इसी तरह एक अन्य स्थान पर दिनकर कुमार द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *दादा और पोता* में संकलित 11वाँ किस्सा 'बुद्धू राजा के मुख्यमंत्री' में भी ऐतिहासिकता के दर्शन होते हैं। जिसमें एक राजा था। उसके पड़ोसी राजा ने एक खत में एक पहेली लिख कर भेजी और उसका हल करने के लिए कहा। सवाल थे- बुद्धू राजा कौन है? और बुद्धू राजा के मुख्यमंत्री कौन है? अच्छा का बुरा, बुरा का अच्छा और राजा के दरवाजे के कुत्ते कौन है? (42)

खत पढ़कर राजा को पहेली समझ नहीं आई। तब उसने अपने मंत्री को बुलाया और उसे वह पहेली सुलझाने के लिए कहा। तब मंत्री कुछ दिनों का अवकाश लेकर उनके प्रश्नों का उत्तर ढूंढने निकल पड़े और उसी पड़ोसी राजा के राज्य में जाकर रहने लगा। वह रोजाना राजसभा में जाता और चुपचाप बैठा रहता। तब एक दिन राजा ने उससे पूछा तो उसने बताया कि वह एक व्यापारी है और वह वहाँ पर व्यापार करने आया है। तब उसकी समझदारी को देखकर राजा ने उसे पहले सभासद फिर युवा मंत्री बना दिया व राजा ने खुश होकर उससे अपनी बेटी की शादी भी कर दी। और उसके लिए अलग से मकान बनवा दिया। एक दिन मंत्री व राजा का बेटा शिकार खेलने गए। तब वहाँ पर एक हिरण का शिकार किया तथा ज्यादा वजन के कारण मंत्री उसका सिर काट कर ले आया। रास्ते में ही राजा के बेटे का ससुराल था। वह वहीं रुक गया। मंत्री ने घर जाते ही अपनी पत्नी से फावड़ा माँगा और उसने गड्ढा खोदकर उसमें वह सिर गाड़ दिया। पत्नी के कसम खिलाने पर उसने बताया कि वह उसके भाई का सिर है, जो गलती से उसके हाथों मारा गया। लेकिन मंत्री ने कहा कि यह बात किसी को नहीं बताना। परंतु राजा की बेटी ने सुबह जल्दी उठकर रो-रोकर सारी बात राजा को

बता दी। राजा ने भी बिना सोचे समझे उसे प्राण दंड दे दिया। तब नटी ने आकर न्याय की दुहाई देते हुए बात की तह तक जाने के लिए कहा। तब उस सिर को निकाल कर लाया गया, तब पता चला कि वह तो हिरण का सिर है तब मंत्री ने राजा की पहेली सुलझाने के लिए बताया कि

> "उसने मुझे छूकर सौगंध खाई 'मैं कसम खाती हूँ किसी से नहीं कहूँगी।' मगर आज सुबह वह खबर देने के लिए आपके घर चली आई। दूसरी तरफ यह नटी है, मगर यह कितनी बुद्धिमान है, न्याय के प्रति निष्ठावान है, मुझे लगता है वैसे निष्ठा न तो सभासदों के पास है, न ही महाराज के पास है। महाराज ने मुझे मार डालने का हुक्म दिया, मगर नटी ने सारी बातें सुनकर महाराज की गलती को समझते हुए मुझे वापस यहाँ लेकर आई। इसकी वजह से मैं अब तक जिंदा हूँ। इसने मुझे जीवनदान दिया। इसलिए बुरा का अच्छा यह नटी है और अच्छा का बुरा महाराज की बेटी है। और राजा के दरवाजे का कुत्ता- महाराजा के नगर के दरवाजे के पास बैठा बूढ़ा है। जवानी में हुए काम करता था। बूढ़ा होने पर महाराज ने उसे भगा दिया। महाराज, जरा सोचिए, सच है न। (48)

इस तरह से मंत्री ने राजा की पहेली सुलझाई राजा ने भी उसे ढेर सारा धन देकर सम्मानित किया मंत्री हंसी-खुशी जीवन बिताने लगा।

4.1.2 कथ्य विश्लेषण

कथ्य विश्लेषण का अर्थ है जिस कथा का हम अध्ययन कर रहे हैं उसका क्या उद्देश्य है ? उसका क्या प्रयोजन है? लेखक उसमे क्या कहना चाहता है? और वह समाज के लिए किस तरह से सहायक है।

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित कहानी संग्रह नेपाली लोक कथा भाग 1 में संकलित कहानी राजकुमारी पद्मा ऐतिहासिकता सुंदर आधारित है इस कहानी में बताया गया है कि कभी भी अपने पड़ोसी से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए और इंसान अपनी बुद्धि व सूझबूझ से हर मुसीबत का हल निकाल सकता है।

> उधर, राजा पद्मसेन की सभा में बीरबाहु से शांति के पैगाम पर सभी खुश हुए कि चलो, युद्ध का संकट तो टल गया। इधर राजकुमारी पदमा की बुद्धि और प्रतिभा से प्रभावित होकर राजा पद्मसेन ने उसे मंत्री बनाने की विधिवत् घोषणा की। (82)

इसी कहानी संग्रह में 'बड़ा कौन' कहानी में बताया गया है कि किसी के भी साथ कुछ भी हो सकता है। केवल लक्ष्मी और सरस्वती का साथ होने से कुछ नहीं हो सकता। मनुष्य के साथ जो कुछ घटित होता है, वह उसके आसपास के वातावरण, उसके आसपास की परिस्थितियाँ, उसके आसपास की दशा के कारण होता है। लेकिन फिर भी प्राणी अपनी सूझबूझ व समझदारी से सब कुछ सही कर सकता है, और वह हँसी-खुशी अपने परिवार के साथ जीवन यापन कर सकता है।

> पद्मावती के पति, जिनका नाम रतिजंग था, कहने लगे, "आप अपनी गलतियों को स्वीकार कर मुझसे क्षमा माँग रही हैं, यह बहुत अच्छी बात है। मैं आपको क्षमा कर रहा हूँ, लेकिन अपंग होकर ही मुझे रहना होगा न!"
>
> तीनो देवियों ने कहा, हम अपनी गलतियों को सुधार कर आप को नया जीवन देते हैं।" इतना कहते हुए उन्होंने रतिजंग का कायाकल्प कर दिया। (87)

एक अन्य कहानी संग्रह प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित *नेपाली लोक कथाएँ भाग-2* में संकलित कहानी 'त्यागी राजा' में भी ऐतिहासिकता को दर्शाया गया है।

राजा महाराजाओं के युग में लोग एक दूसरे से युद्ध करते रहते थे। लेकिन प्रमुख था अपने राज्य की रक्षा करना और उसके लिए प्रत्येक मनुष्य चाहे वो राजा हो, चाहे वो पंडित हो, चाहे वो राजगुरु हो या चाहे वह सैनिक हो, अपने राज्य की रक्षा करता था। इस कहानी में भी राजा और वहाँ का हर एक सदस्य मिलजुल कर अपने राज्य की रक्षा करता है। लेकिन राजा का मानना था कि राज्य का कार्यभार उन हाथों में होना चाहिए, जिन्होंने उसकी रक्षा की है। इससे राजा के त्याग की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।

> मैं उन्हें देश का राजा घोषित करता हूँ। हमें जीवन में दूसरों के उपकार को नहीं भूलना चाहिए। अगर हम ऐसा करते हैं तो यह महापाप होगा। हमारी प्रजा भी इस बात को जीवन के मूल मंत्र के रूप में जान ले और नए राजा के साथ भी उतना ही सहयोग करे, जितने वे मेरे साथ करते थे। (55)

इसी कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'राजकुमारी का इशारा' में सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया गया है। हमारे इतिहास में कितनी ही जगह अपने संदेश को सुरक्षित पहुँचाने के लिए व गुप्त रूप से पहुँचाने के लिए राजा-महाराजा इस तरह की भाषाओं का प्रयोग करते थे। इससे संदेश सुरक्षित हाथों में जाता था। अपनी सूझबूझ, समझदारी, सहनशीलता व साहस से मनचाही चीज पाई जा सकती है। इस कहानी में भी राजकुमारी, राजकुमार और मंत्री के बेटे की समझदारी, सूझबूझ व साहस को दर्शाया गया है। जिसके कारण राजकुमार को बुद्धिमान राजकुमारी का साथ मिला।

> थोड़ी देर बाद मतलब निकालते हुए कहने लगा, "राजकुमार! यह कोई साधारण पहेली नहीं है। यह बहुत तेज और बुद्धिमान लड़की लगती है। इसका अर्थ भी बहुत गूढ़ है। नहीं जाने तो ही अच्छा है।" (60)

इसी कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'राजा और चोर' में बताया गया है कि सच्चे गुरु का साथ होना बहुत जरूरी है। सच्चे गुरु के उचित मार्गदर्शन से सभी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। चाहे फिर वह नींद पर विजय पाने पाने की बात हो या फिर पत्नी की जिद्द को तोड़ना हो। राजा ने अपने गुरु की मदद से नींद पर भी काबू पाया। उसी के कारण जानवरों की भाषा समझने का मंत्र जान पाया, तथा पत्नी के वह मंत्र पूछने पर योगी बाबा की मदद से पीछा भी छुड़वाया।

> इस तरह योगी के मंत्र से राजा को एक और मुसीबत से मुक्ति मिली और उसे लगा कि आदमी को हमेशा ही ऐसे गुरु की आवश्यकता होती है, जो उसे सही राह दिखाएँ और संकट से उबारे। (72)

अमर गोस्वामी द्वारा आयोजित कहानी संग्रह सुकुमार राय चुनिंदा कहानियों में संकलित कहानी 'राजा की बीमारी' कहानी में बताया गया है कि इंसान जैसा सोचता है वह वैसा ही महसूस करता है यदि हम सोचते हैं कि हम बीमार हैं तो ऐसे ही बीमार महसूस ही करने लग जाते हैं राजा भी ऐसे ही बीमार महसूस करने लग गया था लेकिन फिर जब उसने महसूस किया कि मैंने तो अपने मन से ही बीमारी कर रखी है तो उन्होंने अपने आप को सही किया।

> दूसरे ही दिन राजा ने सुबह उठने के बाद अपने खास दरबारियों को बुलाकर कहा, "तुम सब के सब बेवकूफ और निकम्मे हो। तुम लोगों से कुछ करते नहीं बना। लेकिन देखो, अपनी बीमारी मैंने खुद ही ठीक कर ली है। आज से मैं फिर से पहले की तरह दरबार में बैठूंगा, और जो जरा भी बेअदबी करेगा, उसकी गर्दन उड़ा दूंगा।" (78)

एक अन्य कहानी संग्रह हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-2 में संकलित कहानी 'हिमानी' भी ऐतिहासिकता पर आधारित है। इस कहानी में

बताया गया है कि कभी भी एक दूसरे से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। भगवान की बनाई गई हर वस्तु सुंदर है। आवश्यक नहीं कि एक ही चीज सुंदर हो। माँ को अपने बच्चों से सौतेला व्यवहार भी नहीं करना चाहिए। बुरा करने वाले के साथ हमेशा बुरा ही होता है।

> वह गुस्से और बदले की भावना से इस तरह भर गई कि उसके पैर जमीन में ही गड़ गए। इसी समय सौतेली माँ के सामने लाल जलते लोहे के जूते ला कर रखे गए और उसे उन्हें पहनकर तब तक नाचना पड़ा, जब तक वह गिर कर मर नहीं गई। (30)

इसी कहानी संग्रह में रचित एक अन्य कहानी 'राजकुमार और राजकुमारी' भी ऐतिहासिकता पर आधारित है। यह कहानी रुचिपूर्ण व मनोरंजन से परिपूर्ण कहानी है। इसमें पहले तो बताया गया है कि यदि आदमी ईमानदार हो तो हर कोई उसकी सहायता करता है। इस कहानी में छोटी राजकुमारी राजकुमार की हर जगह मदद करके उसे हर मुसीबत से बाहर निकालती है और राजकुमार को एक बुद्धिमान और समझदार जीवन संगिनी मिलती है। और बुरा करने वालों के साथ हमेशा बुरा ही होता है।

ऐतिहासिक बाल कहानियाँ बालकों के मनोविज्ञान को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। इन कहानियों को ऐतिहासिक संदर्भों के साथ-साथ कल्पना के माध्यम से रोचक, सार्थक व मनोरंजक बनाया गया है। जिससे बालकों में ऐतिहासिक कहानियों के प्रति अधिक लगाव एवम् रुचि उत्पन्न हुई है, तथा बालकों में व्यवहारिक रूप से परिलक्षित होते हैं। इन कहानियों के माध्यम से बालक में वीरता, साहस, शौर्य और पराक्रम के महत्व को बताने और उनमें आत्मविश्वास की भावना जगाने का प्रयास किया गया है,

तथा दूसरी ओर समाज में व्याप्त धोखाधड़ी, वैमनस्य, विश्वासघात जैसी बुराइयों से उन्हें आगाह एवम् होशियार करने का काम किया गया है।

4.2 पौराणिक संदर्भ

पौराणिक कहानियों का कालखंड आमतौर पर पुराणों की रचना काल को दिया जाता है। जिसमें मूलत: देवताओं के परस्पर संबंधों को आधार बनाया जाता है या मनुष्य एवं देवताओं का वर्णन भी किया जाता है।

पौराणिक कहानियों में धार्मिक ज्ञान, सामाजिक संरचना के साथ-साथ शिक्षा का तत्व भी विद्यमान रहता है। बच्चों के लिए पौराणिक एवं धार्मिक कहानियाँ मुख्यतः रामायण एवं महाभारत से ली गई है। ये दो ग्रंथ भारतीय जनजीवन को न सिर्फ सदियों से प्रभावित कर रहा है अपितु प्रेरणा स्रोत भी है। धार्मिक कथाओं में बौद्ध ग्रंथों की "जातक कथाएँ" एवं जैन धर्म ग्रंथों की कथाएँ भी बालकों के लिए महत्वपूर्ण रही है। जातक कथाओं में भी पशु पात्र है जो बच्चों के लिए अत्यंत रुचिकर है। पौराणिक कथाओं के माध्यम से बालकों में साहस, निडरता, प्रकृति प्रेम, वस्तुओं एवं व्यक्तियों की उपादेयता परस्पर सहयोग की भावना का विकास होता है। साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित कहानियों में कोई भी कहानी महाभारत या रामायण पर आधारित नहीं है। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा गया है देवी-देवताओं से संबंधित कहानियाँ भी इसी वर्ग में आती है। उन्हीं का अध्ययन एवं विश्लेषण हम यहाँ करेंगे।

4.2.1 कथा विश्लेषण

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *नेपाली लोक कथाएँ भाग-2* में संकलित कहानी 'नियति' धार्मिक संदर्भ पर आधारित है। जिसमें एक बूढ़ी औरत अपने बेटे के साथ अकेली रहती है। बेटे का पिता उसके बचपन में मर गया था। बूढ़ी औरत शिव जी की भक्त थी। हर बात पर हे शिव कहा करती थी। वह अपने बेटे को

पढ़ा लिखा नहीं सकती थी, क्योंकि उसके पास इतना धन नहीं था। वह औरत जब भी उदास होती थी, एक ही बात बोलती थी- हे शिव, इस नन्हीं जान को कैसी मुसीबत में डाल दिया है। बेटे ने भी यह तकिया कलाम अपनी माँ से सीख लिया था। एक दिन जंगल में वह पत्ते तोड़ने गया। पत्ते तोड़ते वक्त वह पेड़ से नीचे गिर गया और दर्द में चिल्लाता हुआ कहने लगा- हे शिव इस नन्ही जान को कैसी मुसीबत में डाल दिया है। तभी शिव पार्वती भेष बदलकर, बुड्ढा बुढ़िया का रूप धारण करके, जंगल में घूम रहे थे। जब पार्वती ने बच्चे का दर्द देखा तब पार्वती ने उसे संभल कर रहने को कहा

> "हाँ, मुझसे गलती तो हुई, अम्मा! मैं समझ रहा हूँ। कहते हैं- जिसका इस दुनिया में कोई नहीं होता उसका सहारा भगवान होते हैं। मेरी माँ को भोलेनाथ शिव के ऊपर बहुत विश्वास है फिर भी हम अभागो के ऊपर न तो ईश्वर की कृपा होती है, न ही आदमी की। किस्मत में जंगल में भटकना लिखा है, सो भटकते रहते हैं। दुख तकलीफ उठाते रहते हैं।" (20)

पार्वती ने शिवजी को कहा यह तो आपका भक्त है। आप इसकी मदद क्यों नहीं करते। तब शिवजी ने कहा कि अभी इसके भाग्य में सुख नहीं है। तब पार्वती के बार-बार जिद करने पर शिवजी ने एक अशर्फी उसके सामने गिरा दी। लेकिन उसके भाग्य में तो वह अशर्फी थी ही नहीं, इसलिए हाथ धोते समय अशर्फी पानी में गिर गई। अगले दिन फिर पार्वती के कहने पर शिव जी ने उसके सामने हीरो का हार गिरा दिया। लेकिन पखाना जाने पर वह हार भी उस लड़के से झाड़ियों में गिर गया। तब अगले दिन ब्रह्मा, शिव, पार्वती तीनो जाते हैं। तब ब्रह्मा लकड़हारे का वेश धारण करके उस लड़के से मिले। उसका दुख देखकर ब्रह्मा का दिल भर आया। तब उन्होंने कहा बेटे कोई बात नहीं, दिन सबके फिरते हैं। तुम्हारे भी अच्छे दिन आएँगे। तब एक तांबा का सिक्का उसके सामने गिरा कर वे चले गए। लड़के ने खुश होकर माँ को

सिक्का दिया और उन्होंने खाने के लिए एक मछली खरीदी। जब उसकी माँ मछली साफ कर रही थी, तब उसे मछली के पेट से वह अशर्फी मिली। एक दिन सूखी लकड़ी तोड़ने के लिए लड़का जब पेड़ पर चढ़ा तो उसे वहाँ पर एक चिड़िया का घोंसला दिखाई दिया। चिड़िया के बच्चों को देखने के लिए जब उसने घोसले में देखा तो वहाँ पर हीरो का हार रखा हुआ था। जिसे देखकर लड़का और उसकी माँ खुश हो गए और सुख पूर्वक दिन बिताने लगे।

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित पुस्तक *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1* में संकलित कहानी 'तथास्तु' पौराणिकता पर आधारित कहानी है। जिसमें एक साधु एक आश्रम में कुछ गायों के साथ रहते थे। वहाँ पर चरवाहे गायों का खुशी-खुशी दूध दोहते थे। साधु की झोपड़ी में एक छिपकली रहती थी। एक दिन एक बूँद दूध की छिटककर छिपकली के मुँह में पहुँच गई। उसे दूध का स्वाद बहुत अच्छा लगा। तब उसे लगा कि अगले जन्म में मुझे बछड़ा बनना चाहिए। ताकि मुझे ढेर सारा दूध मिल सके। जब उसने साधु को यह बात बताई तो उन्होंने अपने कमंडल से जल लेकर उस पर छिड़का और तथास्तु कहा। वह अगले जन्म में बछड़ा बनी। लेकिन उसे भरपेट दूध नहीं दिया जाता था और बड़े होने पर उसे बैलगाड़ी के लिए जोता जाता था। तब उसने सोचा अगले जन्म में चरवाहे के घर जन्म लेना चाहिए। तब साधु ने फिर अपने कमंडल से जल छिड़ककर तथास्तु कहा और वह चरवाहे के घर पैदा हुई। लेकिन उसे चरवाहे के रूप में धूप में, बारिश में, गर्मी-सर्दी सभी में बहुत काम करना पड़ता था। तब उसने सोचा मैं तो छिपकली ही ठीक थी। तब फिर साधु ने जल छिड़कते हुए उसे तथास्तु कहा।

> उसके मन में जब यह बात आई तो उसने एक दिन साधु से फिर अपनी इच्छा बताई और उसे फिर छिपकली की जिंदगी वापस करने के लिए विनती की।
>
> दयालु साधु ने कलश से पानी गिराते हुए उसके शरीर पर पानी छिड़का और कहा, "कामचोर जीव ही छिपकली की जिंदगी पाते हैं। तुम इसी लायक हो। लो तुम्हारी यह इच्छा भी पूरी हो। तथास्तु।" (40)

आलमा सुहिल्या द्वारा अनुदित पुस्तक *सूरज और मोर* में, मोर व सूर्य देवी की प्रेम कहानी को दर्शाया गया है। एक बार सूर्य देवी महल के अंदर चली गई कि सब लोग अपने प्रेमी के साथ रहते हैं। अगर मैं अंदर चली जाऊँगी तो पृथ्वी से कोई ना कोई जरूर आएगा। जब पृथ्वी पर अँधेरा छा गया, तब पक्षियों ने सूर्य देवी को मनाने के लिए मोर को उसके पास भेजा। लेकिन मोर वहाँ की सुख सुविधाओं और सूर्य देवी के प्यार में खोकर पृथ्वी की समस्या को भूल गया। तब पक्षियों ने बुढ़िया की मदद लेकर सरसों का खेत उगाया और वह खेत स्त्री के आकार में उगाया। जब उसमें पीले रंग के फूल लगे तो वह एक बहुत सुंदर स्त्री लग रही थी। मोर ने जब ऊपर से देखा तो उसे सुंदर स्त्री समझकर सूर्य देवी को छोड़कर वापस धरती पर आ गया और सूर्य देवी भी जिस कर्तव्य को भूल गई थी, उसने भी अपने उस कर्तव्य को निभाया।

> धरती का हर प्राणी इतना खुश था कि इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सभी अपने हाथों को ऊपर उठाकर ताकने लगे जैसे सूर्य माता का स्वागत कर रहे हों। वे ईश्वर को धन्यवाद दे रहे थे, क्योंकि ईश्वर ने उनकी प्रार्थना पर ध्यान दिया। सभी इधर-उधर भागकर एक-दूसरे को आलिंगन करने लगे। सूर्य माता को फिर से पाने की खुशी में पेड़-पौधे ऊपर चढ़ने लगे और तन कर

> खड़े हो गए। खुशी के कारण जानवरों और पक्षियों की मीठी आवाज चारों ओर गूंजने लगी। (33)

एक अन्य कहानी तीन नदियों की 'दु, तांग और रेंम' पौराणिकता पर आधारित कहानी है। यह कहानी जयंतिया पहाड़ी पर स्थित जोवाई शहर के पास ही मूलांग गाँव की है। वहाँ पर एक विधवा बुढ़िया रहती थी, जो कि बहुत अच्छी थी। एक दिन उसके पास तीन लड़कियाँ आई और उन्होंने अपने मीठी आवाज में बुढ़िया को उसके साथ रहने के लिए कहा। बुढ़िया को वे लडकियाँ बहुत सुंदर लग रही थी। उसने उन तीनों को अपने घर में रख लिया। घर का सारा काम वे तीनों ही कर लेती थी। तब उनके लिए कई शादी के प्रस्ताव भी आए। लेकिन वे उसके लिए मना कर देती थी। एक दिन उन्होंने बताया कि हम भगवान की बेटियाँ हैं हमारे पिताजी वज्र और हमारी माता बिजली है। और वह धरती पर आकर यहाँ के लोगों को नजदीक से देखना व समझना चाहती थी। फिर वे तीनों गायब हो गई। लेकिन आज भी वहाँ इनके नाम से तीनों नदियाँ हैं। जिससे वहाँ के लोग सुख पूर्वक जीवन बिता रहे हैं और अपने जीवन में उन्नति कर रहे हैं।

> यह तीनों नदियाँ मूलांग गाँव के पास से ही बहती हैं। यह सच है कि मनुष्य भगवान की बहुत बड़ी देन है। मिण्टदु नदी जोवाई के चारों ओर से घूमकर बहती है और दो समतल स्थानों को जल प्रदान करती है। मितांग नदी मुखहलाई वाह जाजेर नारटियाँग और नंगजीभजी को जल प्रदान करती है। ऊमरेम नदी शांगपुंग के चारों ओर घूमकर बहती है। (37)

रेखा व्यास द्वारा अनुदित पुस्तक *लघुकथा संग्रह भाग-2* में संकलित कहानी 'सरस्वती का पृथ्वी पर आगमन' पौराणिक कथा पर आधारित कहानी है, जिसमें देवी सरस्वती के मृत्युलोक में आगमन की कथा है। ब्रह्मा अपने आसन पर विराजमान

थे। मनु, दक्ष चाक्षुष आदि प्रजापति व सप्तऋषि सभी भगवान ब्रह्मा की सेवा में लगे हुए थे। यजुर्वेद और सामवेद के मंत्र गाए जा रहे थे। लेकिन ऋषि दुर्वासा अपने क्रोधांध के कारण स्वर भंग कर बैठे। जिसको देखकर देवी सरस्वती की हंसी छूट गई। तभी दुर्वासा ने उसे श्राप देने के लिए अपना कमंडल उठाया। लेकिन तीनों लोकों के स्वामी ब्रह्मा की पत्नी देवी सावित्री भी वही बैठी थी। उन्होंने दुर्वासा ऋषि को यह कुकृत्य करने से रोका भी लेकिन फिर भी दुर्वासा ऋषि ने देवी सरस्वती को मृत्युलोक में जाने का श्राप दे ही दिया, “ वे बोली, "अरे पापी, क्रोध से मारा हुआ, दुरात्मा अज्ञानी, अपने-आपको न जानने वाला, पतित पाखंडी साधु, नीच, तू अपनी गलती से लज्जित होकर, सुर-असुर, मुनि, मनुष्य द्वारा वंदित तीनों लोगों की माता देवी सरस्वती को शाप देना चाहता है?" (25)

तब देवी सावित्री भी प्रतिशाप देने के लिए अपना कमंडल उठाती है, लेकिन देवी सरस्वती उन्हें रोक लेती है।

साइजो माकिनो द्वारा अनुदित पुस्तक *जापान की कथाएँ* में संकलित पौराणिक कहानी ‘यामाता का भयानक साँप’ है। इस कहानी में सुसानाओ नाम का व्यक्ति तोराकामी पहाड़ पर आया। वहाँ उसे एक वृद्ध दंपति अपनी पुत्री की यामाता के भयानक साँप जिसके आठ मुँह एवं आठ पूंछ थी से रक्षा हेतु रोते हुए पाया। युवती के अति सुंदर होने के कारण सूसानाओं ने उससे विवाह करने एवं उसकी रक्षा करने की योजना बनाई। जब वृद्ध व्यक्ति अपनी पुत्री का विवाह सुसानाओ से करने के लिए राजी हो गया तो सुसानाओ ने उसे छूकर कंगी बना दिया। सूसानाओं ने वृद्ध दंपत्ति की सहायता से आठ द्वार वाला एक बड़ा बाड़ा बनाया जिसके आठों द्वारों पर शराब के मटके रखवाए। यामाता का साँप आठों मुँह से शराब पीकर बेहोश हो गया। जिसके बाद सूसानाओं ने अपनी तलवार से उसके आठ मुंहो को काट दिया। वृद्ध ने

अपनी पुत्री का विवाह सूसानाओं से कर दिया। सूसानाओं विद्या एवं वीरता के प्रतीक देवता के रूप में प्रसिद्ध है।

4.2.2 कथ्य विश्लेषण

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *नेपाली लोक कथाएँ भाग-2* में संकलित कहानी 'नियति' धार्मिक संदर्भ पर आधारित है। इस कहानी में बताया गया है कि कोई प्राणी किसी भी वस्तु को पाने के लिए कितनी भी कोशिश कर ले लेकिन जब तक उसके भाग्य में वह नहीं है तो वह उसको नहीं मिलेगी। जब तक उस वस्तु के लिए उसके लिए सही समय नहीं आएगा, उसको वह चीज नहीं मिलेगी। सही समय आने पर खोई हुई चीज भी मिल जाती है। भाग्य से ज्यादा और समय से पहले किसी को कुछ नहीं मिलता।

> "देखा पार्वती! समय अनुकूल होने पर मनुष्य के जीवन में खुशियाँ लौट आती हैं। हाथ से निकली संपत्ति भी मिल जाती है। इसलिए आदमी को धीरज रखना चाहिए। अब इनके अच्छे दिन आ गए। चलो, हम भी अब चलते हैं।" (24)

प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित पुस्तक *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1* में संकलित कहानी 'तथास्तु' पौराणिकता पर आधारित कहानी है। इस कहानी में बताया गया है कि जो जीवन हमें भगवान ने दिया है, वह उत्तम है और काम चोरी तो बिल्कुल नहीं करनी चाहिए।

> दयालु साधु ने कलश से पानी गिराते हुए उसके शरीर पर पानी छिड़का और कहा, "कामचोर जीव ही छिपकली की जिंदगी पाते हैं। तुम इसी लायक हो। लो तुम्हारी यही इच्छा भी पूरी हो। तथास्तु।" (40)

परिश्रम हमें हर जन्म में ही करनी पड़ेगी। पुराने समय में साधु सन्यासियों की तपस्या, त्याग और मेहनत के कारण वे इतने सक्षम होते थे कि वे जो चाहते थे वह हो जाता था। तभी इस कहानी में साधु के तथास्तु कहने पर छिपकली ने अनेक रूपों में जन्म लिया।

> एक दिन उसने इस जिंदगी से छुटकारा पाने की सोच कर साधु से अपने मन की बात बताई। साधु को भला क्या एतराज होता! इसलिए उसकी बातें मानकर साधु ने उसके ऊपर कलश से पानी छिड़कते हुए कहा, "तथास्तु। तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो और तुम्हारा दूसरा जन्म बछड़े के रूप में हो।" (38)

अलमा सुहिल्या द्वारा अनुदित पुस्तक सूरज और मोर में, मोर व सूर्य देवी की प्रेम कहानी को दर्शाया गया है। इस कहानी में बताया गया है कि चाहे कोई प्राणी हो या भगवान, अपने कर्तव्य को कभी नहीं भूलना चाहिए और अपनी सुंदरता पर कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। हमेशा दूसरों की सहायता करनी चाहिए जो कार्य उसको सौंपा गया है उसे निस्वार्थ भाव से पूरा करना चाहिए।

> धरती पर इतना आनंद देखकर सूर्यमाता का दिल भर आया और खुशी के आंसू टपकने लगे। वह बहुत खुश थी कि वह फिर से धरती पर खुशी और स्फूर्ति ला सकी। वह सोच रही थी, "सच्चा जीवन तो यह है कि दूसरों को सुख देकर सुख पाना। दूसरों की सहायता करके, दूसरों की भलाई करके और अच्छे काम करके, सुख पाना ही जीवन है। वह जीवन भी क्या है, जो अपने लिए ही जीता, आनंद और मौज करता है। ऐसा जीवन व्यर्थ होता है।" (33)

एक अन्य कहानी तीन नदियों की दु, तांग और रेंम पौराणिकता पर आधारित कहानी है। इस कहानी में तीन नदियाँ दु, तांग और रेम जो कि जयंतिया पहाड़ियों से

निकलती है। उनके उद्गम को पौराणिक कथा से जोड़ रखा है। उनके उद्गम स्थल का वर्णन व उनका कारण एक पौराणिक कथा के माध्यम से बताया है।

> ये तीनों बहनें भी प्यार और आशीर्वाद भरी आँखों से उस स्त्री की ओर ताकते रहीं। अचानक तीनों वहाँ से अदृश्य हो गई। लेकिन ठीक इस घटना के बाद उसी गाँव में तीन नदियाँ निकल आई- मिण्टदु नदी, में मितांग नदी और ऊमरेम नदी। (37)

रेखा व्यास द्वारा अनुदित पुस्तक *लघुकथा संग्रह भाग-2* में संकलित कहानी 'सरस्वती का पृथ्वी पर आगमन' पौराणिक कथा पर आधारित कहानी है। इस कहानी में बताया गया है कि मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन क्रोध होता है। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो हमें क्रोध नहीं करना चाहिए। इस कहानी में ऋषि दुर्वासा के क्रोधित स्वभाव के कारण ही देवी सरस्वती को मृत्युलोक में आना पड़ा। वहीं देवी सरस्वती की सहनशीलता के कारण ऋषि दुर्वासा को शापित होने से बचा लिया और उन्होंने बता कि एक ब्राह्मण चाहे जितना भी संस्कारहीन हो वह सब के लिए पूजनीय ही होता है।

> सावित्री प्रतिशाप देने को तैयार हो गयी। सरस्वती ने उसे रोकते हुए कहा, "सखी, तुम अपने क्रोध को समेट लो! संस्कारहीन होने पर भी जाति के कारण ब्राह्मण पूजनीय है।" (26)

साइजो माकिनो द्वारा अनुदित पुस्तक *जापान की कथाएँ* में संकलित पौराणिक कहानी 'यामाता का भयानक साँप' है। सूसानाओं ने अदम्य वीरता का परिचय देते हुए योजनाबद्ध तरीके से ज्ञान का प्रयोग करके युवती के प्राणों की रक्षा की है तथा यामाता के भयानक साँप का वध कर दिया। युवती के वृद्ध पिता की सहमति से

युवती से विवाह किया। अपनी पत्नी के साथ सुखी जीवन बिताते हुए जापान देश पर शासन किया।

पौराणिक कहानियाँ मूलतः देवी देवताओं के परस्पर संबंधों या देवताओं के साथ मनुष्यों के संबंधों के आधार पर लिखा गया है। पौराणिक कहानियों में प्रकृति के अनेक गूढ़ रहस्य को समझने का प्रयास किया गया है। इन कहानियों में पशु पात्र भी लिए गए हैं। जिससे बच्चों के लिए यह अत्यंत रुचिकर बन गई है, तथा उनके मनोविज्ञान को प्रभावित करने में सक्षम रही हैं। इन कहानियों के माध्यम से बालक साहस, मित्रता, प्रकृति प्रेम, परस्पर सहयोग, वस्तु एवम् व्यक्ति की उपादेयता की भावना विकसित हुई है।

ऐतिहासिक एवं पौराणिक दोनों कहानियाँ ही बालकों के मनोविज्ञान को प्रभावित करती हैं। ऐतिहासिक कहानियाँ इतिहास का प्रतिबिंब होती है। उनसे बालक समाज में व्याप्त धोखाधड़ी, विश्वासघात के प्रति सजग एवम् होशियार होने के साथ वीरता, साहस, शौर्य व पराक्रम की भावना को विकसित किया गया है। पौराणिक कहानियों में प्रकृति के प्रति विशेष लगाव पैदा किया गया है। इन के माध्यम से अलौकिक घटनाओं का वर्णन भी किया गया है। पौराणिक कहानियाँ विशेष रूप से अपनत्व, भाईचारा, प्राणी मात्र के प्रति प्रेम को विकसित करती हैं।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची -</u>

उपाध्याय, प्रकाश, प्रसाद. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-2* . साहित्य अकादेमी, 2019.

*ग्रिम बंधुओं*कार्ल ग्रिम, जैकोब लुडविग. कार्ल ग्रिम, विल्हेम. देवसरे, हरिकृष्ण. *की कहानियाँ भाग-2*. साहित्य अकादेमी, 2018.

जीरवा, वेबस्टर डेविस. सुहिल्या, आलमा*. सूरज और मोर.* साहित्य अकादेमी, 2017.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह.* साहित्य अकादेमी, 2019.

माकीनो, साइजी. *जापान की कथाएँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह भाग- 1*. साहित्य अकादेमी, 2019.

राय, सुकुमार. गोस्वामी, अमर. *चुनिंदा कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2013.

अध्याय-5

5 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वैज्ञानिक, नैतिक व काल्पनिक संदर्भ

5.1 वैज्ञानिक संदर्भ

5.1.1 कथा विश्लेषण

5.1.2 कथ्य विश्लेषण

5.2 काल्पनिक संदर्भ

5.2.1 कथा विश्लेषण

5.2.2 कथ्य विश्लेषण

5.3 नैतिक संदर्भ

5.3.1 कथा विश्लेषण

5.3.2 कथ्य विश्लेषण

5 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वैज्ञानिक, काल्पनिक व नैतिक संदर्भ

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने प्रत्येक क्षेत्र में अकल्पनीय वृद्धि कर ली है। वर्तमान में आविष्कार होते नए-नए संसाधन, चिकित्सा के नए-नए उपकरण, अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र, ग्रहों नक्षत्रों तक पहुँचने में सक्षम यान सब विज्ञान की ही देन है। इन सब वैज्ञानिक प्रगति से बच्चों को अवगत कराना बहुत आवश्यक है। लेकिन बालक को यह सब ज्ञान देना बहुत ही बोझिल व असंभव हो जाता है। बच्चों को बाल कथाओं के माध्यम से इस ज्ञान का सुगमता से अवगत करवाया जा सकता है, जो कि अनिवार्य होने के साथ-साथ उचित भी है। अनुदित कहानियों में भी इसी तरह के वैज्ञानिक अविष्कार, उनके फायदे, सीमा से अधिक आविष्कार होने पर उनसे होने वाली क्षति का भी वर्णन किया गया है। बाल कथाओं के माध्यम से बच्चों को उचित ज्ञान देने के लिए नैतिक मूल्य सिखाने के लिए कल्पना का भी सहारा लिया गया है। कल्पना का सहारा लेकर बच्चे को यथार्थ से अवगत कराया जाता है और बच्चे इसे रुचि व मनोरंजन के साथ पढ़कर अपने जीवन में लागू करते हैं।

हरिकृष्ण देवसरे अपनी पुस्तक *बाल साहित्य मेरा चिंतन* में कहते हैं:

यहाँ पर स्मरण रखना होगा कि सैद्धांतिक जानकारी देने का काम तो पाठ्यपुस्तक करती ही है। अस्तु, बाल साहित्य का उद्देश्य उसी सैद्धांतिक जानकारी की पुनरावृति करना नहीं है, बल्कि मनोरंजन के साथ बाल मन में उठने वाले तत्संबंधी प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत करना है। दूसरे शब्दों में, बच्चों के लिए लिखा गया विज्ञान साहित्य बोझिल न हो, अपितु बच्चों में वैज्ञानिक अभिरुचि का विकास करने में सहायक हो, इसके लिए भले ही शैलीगत प्रयोग क्यों न किए जाए। इतना अवश्य है कि विभिन्न शैलियों में लिखे गए विज्ञान साहित्य में तथ्यात्मक जानकारी बिल्कुल सही देने के

संबंध में पूरी सतर्कता अपनाई जानी चाहिए। कहानी के माध्यम से बच्चों को कठिन से कठिन विषय भी सरलता से समझाया जा सकता है। (171)

बालकों को वैज्ञानिक ज्ञान देने के लिए वैज्ञानिक संदर्भों का, उनका मार्ग प्रशस्त करने के लिए, उन्हें एक बेहतर इन्सान बनाने के लिए नैतिक संदर्भों का एवं निराकार भावों को आकार देने के लिए, अतीत को वर्तमान का रूप देने के लिए कल्पनात्मक संदर्भों का अध्ययन इन अनुदित बाल कथाओं में व्याप्त बाल मनोविज्ञान के माध्यम से करेंगे और इन सब का अध्ययन करने पर उनके मनोविज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन करेंगे।

5.1 वैज्ञानिक संदर्भ

सेन समरेंद्र नाथ द्वारा रचित पुस्तक *विज्ञान का इतिहास* में संकलित वेबस्टर के अनुसार: संचित और सर्वजनस्वीकृत ज्ञान, जिसे सामान्य सत्यों की खोज या सामान्य नियमों की क्रिया के संदर्भ में व्यवस्थापित और निरूपित किया जाता है वह विज्ञान है। (4)

अत: नए-नए अविष्कार, नए रहस्यों को, नए नियमों को व्यवस्थापित करना ही विज्ञान कहलाता है।

5.1.1 कथा विश्लेषण

विज्ञान के माध्यम से बच्चों को यथार्थ का ज्ञान कराया जाता है और उनकी जिज्ञासाओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है। बालकों को विज्ञान का ज्ञान देना आसान कार्य नहीं है। लेकिन कथाओं के माध्यम से उनको इस तरह का ज्ञान देने की कोशिश की जाती है, जिसमें उन्हें अंतरिक्ष के बारे में, ग्रह नक्षत्रों के बारे में समय-समय पर होने वाले आविष्कारों के बारे में, आविष्कारों के फायदे, अति होने पर होने

वाले नुकसान के बारे में बताया जाता है, और इनका मनुष्य जीवन के साथ क्या संबंध है आदि से संबंधित जानकारी भी दी जाती है। इन सब का बाल मनोविज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, हमारी पृथ्वी पर विभिन्न जीव जंतु, पेड़ पौधों किस तरह अस्तित्व में आए इन सब विषयों का अध्ययन अनुदित बाल कथाओं के माध्यम से करेंगे।

आलमा सुहिला द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *सूरज और मोर* में संकलित कहानी चाँद पर राख में भी ग्रहों के बारे में बताया गया है। जिसमें एक कहानी के माध्यम से बताया गया है कि सूरज, जल व अग्नि तीन बहने थी और उनका एक भाई था चंद्र, जो कि दिखने में बहुत सुंदर था। सूरज और चाँद दोनों भाई बहनों में बहुत ही स्नेह था। लेकिन चंद्र बड़ा होने के साथ-साथ अपनी बहन सूरज से प्रेमिका की तरह प्यार करने लग गया। उसे अपने भाई का व्यवहार अच्छा नहीं लगा और उसने गुस्से में आकर चंद्र के मुँह पर गरमा गरम राख दे मारी। चंद्र की मनोदशा दुष्प्रवृत्ति की होने के कारण वह अपनी बहन को बहन की बजाय प्रेमिका के रूप में देखने लग गया।

चंद्र अपनी बड़ी बहन को सगी बहन के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रेमिका के रूप में चाहने लगा। अपने मन मंदिर में वह उसे बसाने लगा। चंद्र अब सूरज के साथ उस तरह व्यवहार करने लगा जैसे एक प्रेमी अपनी प्रेमिका के साथ करता है। सूरज को अपने छोटे भाई का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। (64)

जिसके कारण चंद्र को सूरज के गुस्से का सामना करना पड़ा और उसके साथ-साथ उसे लज्जा व शर्म का भी सामना करना पड़ा।

इसी प्रकार हरीश नारंग द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *अचरज ग्रह की दंतकथा* में संकलित कहानी अचरज ग्रह की दंतकथा दंत कथा पर आधारित है, लेकिन फिर भी इसमें यथार्थ की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। इस कहानी में अचरज ग्रह के वासी

पृथ्वी ग्रह वासियों को बहुत ही बुद्धिमान मानते हैं और उनकी नजर में पृथ्वी ग्रह एक ऐसा ग्रह है जिसमें पानी है वहाँ हरे-भरे पौधे हैं। इस ग्रह के वासियों को पृथ्वी ग्रह देखने का बहुत बड़ा सपना है। वहाँ के आविष्कारों व अनुसंधानों को भी सराहतें हैं।

"वे ही लोग

पृथ्वी निवासी

खगोल के सभी निवासियों में

अपने हाथों से कमाल की चीजें बनाने वाले

जिनके विचारों में इतना विवेक है।" (27)

एक दिन कोई चमकती हुई रॉकेटनुमा चीज अचरज ग्रह की ओर आई। तब वहाँ के वासियों ने इसे पृथ्वी ग्रह की तरफ से उपहार मानकर उसे अथक प्रयासों से अपने ग्रह पर उतार लिया। फिर वहाँ के सभी लोग व राजा इकट्ठे होकर उसका परीक्षण करने लगे। जब उसको खोला गया तो उसमें एक जहरीला पाउडर निकला, जिसको सूंघते ही राजा और उसके आसपास खड़े सभी लोगों के चेहरे पर काले दाग से बन गए और उनका साँस लेना भी मुश्किल हो गया। अचरज ग्रह के लोगों की मानसिकता थी कि पृथ्वीलोक के लोग बहुत ही बुद्धिमानी हैं, उन्होंने हमारे लिए कोई सुंदर सा उपहार भेजा है। जब वे उस उपहार को खोलकर देखते हैं तो उसमें एक जहरीला पाउडर निकलता है। उस पाउडर के जहरीला होने के कारण वहाँ के लोगों का साँस लेना दूभर हो जाता है। एक लड़की भी अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण उस पाउडर के पास चली जाती है और पाउडर के जहरीला होने के कारण उसे भय व पीड़ा के साथ अपनी जान से हाथ धोने पड़ते हैं।

> उसकी आंखों के सामने राजा का चेहरा था, चेहरा जो अब कई छोटे -छोटे काले दागों के चलते फूलकर नीला पड़ गया था और जिस पर दाग फैलते जा रहे थे। इसी तरह चारों सलाहकारों के शरीर पर भी वह काले दागों को उभरता और फैलता देख सकते थे। अफसोस, तभी उस लड़की ने देखा कि उसके अपने हाथों पर छोटे छोटे काले दाग उभर आए थे। उसका शरीर काँपने लगा और फिर उसके लिए साँस लेना भी मुश्किल हो गया। दर्द और डर के साथ तड़पती हुई वह वहीं गिर पड़ी। (31)

धीरे-धीरे वह पाउडर वहाँ के सारे वातावरण में फैलने लगा और वहाँ के लोगों का साँस लेना मुश्किल हो गया। तब वहाँ के लोग गड्ढा खोदकर उसमें छुपने की कोशिश की। लेकिन वहाँ भी वह पाउडर पहुँच गया। तब उन्होंने एक बड़े पतंग के आकार का अंतरिक्ष यान बनाकर उस में बैठकर अंतरिक्ष में रवाना हो गए और फिर पृथ्वी ग्रह के नजदीक पहुँच गए। जिस ग्रह को वे लोग हरा-भरा समझ रहे थे। उसके पास जाने पर अलग ही सच्चाई उनके सामने आई। वहाँ पर इतने ज्यादा नए-नए आविष्कार हो गए थे कि वहाँ पर प्रदूषण बहुत बढ़ गया था और वहाँ का कूड़ा करकट निपटाने के लिए जगह ही नहीं बची थी। उस कूड़े को खत्म करने के लिए राकेटों में भरकर अंतरिक्ष में छोड़े गए थे: धरती और सागर, गंदगी और विकिरण-प्रसारण से इतने दूषित हो रहे हैं कि पृथ्वी के निवासियों के पास अंतरिक्ष में भाग जाने के सिवा और कोई चारा नहीं। (34)

और इसी तरह के कूड़े करकट से भरा यान अचरज ग्रह के पास आया था। पृथ्वी पर इतना प्रदूषण फैल गया कि कहीं कोई स्थान ही नहीं बचा और इसके कारण वहाँ की संस्कृति भी धीरे-धीरे नष्ट हो रही है: वहाँ बहुत-से रॉकेट बनाए जा रहे थे--- वैसे ही रॉकेट जैसा कि उनके ग्रह पर आया था। कारखानों के बाहर उनका पहाड़-सा ढेर लगा

था। उन्होंने देखा कि एक पाइप उन रॉकेटों में जुड़ा था जिसमें से एक सफेद पाउडर उनमें जा रहा था। (34)

पृथ्वी की यह हालत देखकर अचरज ग्रह के वासी एक अन्य साफ सुथरे ग्रह की तलाश में निकल पड़े।

अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *सुकुमार राय की चुनिंदा कहानियाँ* में संकलित ऐसी ही एक कहानी व्योमकेश का माँझा भी वैज्ञानिकता पर आधारित है, जिसमें एक बच्चा व्योमकेश है, जिसमें प्रतिस्पर्धा में जीतने की प्रवृत्ति है। वह डॉक्टर के बेटे को पतंगबाजी में हराना चाहता है इसके लिए वह अलग अलग वैज्ञानिक तरीके से माँझा को मजबूत बनाने की सोचता है।

वह इस वक्त कक्षा में बैठा-बैठा पतंग की डोर के लिए एक बढ़िया माँझा बनाने की चिंता में डूबा हुआ था। चाइना सरेस गलाकर उसमें पिसा हुआ शीशा और एमरी पाउडर मिलाकर धागे में लेपने से जबर्दस्त माँझा तैयार हो जाएगा- यह बात ध्यान में आते ही वह बेहद खुश हो गया। (68)

डॉक्टर के बेटे द्वारा अलग-अलग रंग देने वाली तिल्लियों के लिए बनाया गए मसाले को यह सोचकर चुरा लेता है कि यह मसाला उसने माँझा को मजबूत बनाने के लिए बनाया है, और फिर उसे अपने डोर पर लगा देता है।

पांचू बोला, "डॉक्टर के बेटे ने खुद अपने हाथों से दियासलाई बनाई है। लाल-नीली लौ देने वाली तीलियाँ भी बनाई है।" (71)

लेकिन जब उसे सच्चाई का पता चलता है तो उसे बहुत बुरा लगता है उसकी मनोदशा बहुत खराब हो जाती है और वह उदास हो जाता है।

अब व्योमकेश ने अपने माँझे को गौर से देखा। वाकई उसमें दियासलाई का मसाला लगा हुआ था। वह आंखें फाड़ कर उसे ही देखता रहा, तभी डॉक्टर साहब के मकान की छत से एक लाल रंग की पतंग उड़कर जैसे उसका मजाक उड़ाने लगी।

व्योमकेश का चेहरा लटक गया। वह उदास होकर अपने बिस्तर पर जाकर लेट गया। (71-72)

सुरेखा पाणदीकर द्वारा अनुदित उपन्यास *अंतरिक्ष में विस्फोट* भी वैज्ञानिक संदर्भ पर आधारित उपन्यास है। जिसमें अलग-अलग तीन समय की बात की गई है पहली घटना सन 632 राजा हर्षवर्धन की काल की है। जिसमें गौतम बुद्ध के एक अनुयायी सरिपुत व उनके शिष्य रोहित ने अंतरिक्ष में एक विस्फोट को होते हुए देखा। तब उन्होंने अंतरिक्ष का निरीक्षण किया और उसके आधार पर यह अनुमान लगाया कि इस विस्फोट के परिणाम काफी सालों बाद दिखाई देंगे। तब उन्होंने जितनी भी जानकारी इकट्ठी की थी, उसको ताम्रपत्र पर अंकित कर बिहार के थानेश्वर में जमीन में अलग-अलग स्थानों पर गाड़ दिए।

"सारिपुत ने जो लिखा है, उसके अनुसार जैसे हमारी आयु बढ़ती है, ठीक वैसे ही तारों में भी बदलाव होते हैं, वह बड़े हो जाते हैं। सूर्य बढ़ते-बढ़ते पृथ्वी को निगल लेगा और उस समय वह भरत तारे की तरह लाल हो जायेगा।" (25)

वही सरिपुत का एक शिष्य जिसे अंतरिक्ष के निरीक्षण का कार्यभार सौंपा गया था। वह अंतरिक्ष के बारे में जानने के लिए बहुत ही उत्साहित था। उसने बहुत सा ज्ञान भी प्राप्त किया और लोगों में फैले अंधविश्वास का भी खंडन किया।

प्रकृति की इस अद्भुत घटना को दैवी प्रकोप क्यों कह रही हो। कल उस तेजस्वी पुंज ने अंधेरी रात को शुक्ल पक्ष की रात में बदल दिया। लग रहा था जैसे पूर्णमासी के

सैकड़ों चंद्र आकाश में आ गए हो। बाणभट्ट जैसे श्रेष्ठ कवि ने वह दृश्य देखा होता तो वह एक महाकाव्य रच डालते। मैं उन्हें कल वह दृश्य दिखाऊंगा। (33)

वही इस उपन्यास में दूसरी घटना सन 1996 की है, जिसमें प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ अविनाश नेने ने भागवत व रामनाथ की मदद से उन ताम्रपत्रों की खोज की व अंतरिक्ष में हुए विस्फोट के बारे में नए-नए यंत्रों की मदद से जानकारी इकट्ठी की। तब उन्होंने कुछ कालपत्रों पर इस जानकारी को लिखकर बताया कि यह लगभग सन् 2080 की बात है:

> यह मानवी संस्कृति जो तुर्किस्तान, बेबिलोन, चीन और सिंधु के काल से चली आ रही है, जिसने अनेक मानवी आक्रमणों को सहा--- अणुयुद्ध या प्रदूषण के संकट जिसे नष्ट नहीं कर पाये--- वह संस्कृति अब एकाध वर्ष में ही समाप्त होने वाली है। संतोष इसी बात का है कि इसका अंत किसी मानवी दुर्बुद्धि और दुष्कृत्य से नहीं हो रहा। यह प्राकृतिक आपत्ति या संकट है जिसका मुकाबला करने की ताकत आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के पास नहीं है। (84)

तीसरी घटना सन 2710 की है, उस समय तक अन्तरिक्ष में विस्फोट के कारण ओजोन परत का क्षय हो गया था, जिसके कारण काफी जन संहार हुआ और उस समय तक कुछ ही लोग बचे थे। उनमें से एक दादाजी जो कि पढ़े लिखे थे, चार पाँच बच्चों के माध्यम से उन्होंने उन काल पात्रों को प्राप्त किया।

> लोग कैसे रहते थे, उनके पास कैसी-कैसी चीजें थी... हवा में उड़ने वाले विमान, दूर दराज से बातें कर सके, ऐसे दूरभाष, बीमार को जल्दी स्वस्थ बनाने वाली दवाइयाँ, हाथ-पाँव टूट जाने पर दुबारा जोड़ सकने वाली विद्या, ढेर सारी जानकारी संजोकर रखने वाले और मिनटों में विचार करने वाले कंप्यूटर। (89)

बच्चों को अपने अतीत की संस्कृति के बारे में, उस समय के संसाधनों के बारे में, उपकरणों के बारे में जानने की इच्छा थी। "बच्चों के उत्कंठा से फूले चेहरों को देखकर दादा जी को लगा कितना अच्छा होता परी की तरह छड़ी घुमा कर पलक झपकते इक्कीसवीं सदी की मानवी संस्कृति दोबारा साकार हो जाती।" (92)

उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति को देखकर दादाजी के मन में यही प्रश्न उठ रहे थे।

क्या सदियों से अंधेरे में पड़ी मानवीय संस्कृति भी दोबारा ऊपर उठेगी? इस विराट विश्व में क्षणिक लगने वाले एक छोटे-से विस्फोट से मानव चाहे बर्बाद हो गया, पर उसकी हस्ती नहीं मिटी। उसकी संस्कृति नष्ट हो रही थी, फिर भी उसने आशा और उम्मीद छोड़ी नहीं। उसकी बची हुई संतति दोबारा प्रगति करें, इसलिए उसने योजना शुरू की। उस योजना को कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी उसके वंशधर पर है। क्या वे उस जिम्मेदारी को निभाएँगे? (92)

Macmill अपनी पुस्तक The Social Relations of the Science में विज्ञान को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

विज्ञान व्यवहार की वह पद्धति है जिसके द्वारा मनुष्य अपने पर्यावरण पर आधिपत्य स्थापित करता है पशु से मनुष्य के रूप में उसका विकास प्रकृति के प्रति एक नई अभिवृत्ति द्वारा हुआ जिसमें उसने अपने पर्यावरण की अंतर्वस्तु का अध्ययन अपने हित के लिए उनके इस्तेमाल, उनका प्रयोग करने के उद्देश्य से करना आरंभ किया उसकी इस क्रिया के उपकरण ने विज्ञान को जन्म दिया। (1)

वर्तमान युग में नए-नए कारखाने स्थापित किए जा रहे हैं। जिनके कारण पेड़ पौधों को काटा जा रहा है और कुछ लोग अपनी रोजी-रोटी के कारण भी पेड़ पौधों को काट रहे हैं। हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित उपन्यास *वनदेवी* में भी एक कथा के माध्यम

से इस विषय को बहुत ही रोचक तरीके से दिखाया गया है। पेड़ों में भी जीवन होता है। पेड़ों को काटकर वन्य जीवन व पर्यावरण का हनन किया जा रहा है जो कि उचित नहीं है। पृथ्वी पर पेड़ पौधों के बिना किसी भी प्राणी का जीवन संभव ही नहीं है। पेड़ पौधों के कारण ही सृष्टि का सृजन हुआ है।

> "सृष्टि के आरंभ में इस पृथ्वी पर न पौधे थे न पशु। फिर धीरे-धीरे पौधों ने जन्म लिया, लेकिन बहुत समय तक कहीं कोई प्राणी नहीं जन्मा। इसका कारण यह था कि पृथ्वी के वायुमंडल में ऑक्सीजन नहीं थी। वह केवल कुछ ही पदार्थों में, एक हिस्से के रूप में थी--- जैसे पानी और कुछ हद तक चट्टानों में। पौधों ने इन पदार्थों से ऑक्सीजन को निकालकर पृथ्वी के वायुमंडल में फैलाने में मदद की। पृथ्वी के वायुमंडल में पहले से विद्यमान हाइड्रोजन, नाइट्रोजन और कार्बन डाइऑक्साइड गैसों के अलावा अब ऑक्सीजन उपलब्ध हो गई थी। तब बहुत धीरे-धीरे जैसे-जैसे हवा में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ी, इसमें साँस लेनेवाले एक कोशिकीय जीवों ने धरती पर जन्म लेना शुरू किया। फिर नव ऑक्सीजन की मात्रा और बढ़ी, तो बहुकोशिकीय जीवों ने जन्म लिया। इन्हीं जीवों ने समय बीतने के साथ, धीरे-धीरे अपना आकार बढ़ाया और भी पशु-जगत के विभिन्न प्राणियों के रूप में प्रकट हुए।" (8)

इस उपन्यास में गजाधर बाबू जिसे पता ही नहीं था कि पेड़ पौधों में भी जीवन होता है। उसे पौधों की देवी वनदेवी ने बताया कि पेड़ पौधों के बिना इस पृथ्वी पर किसी भी प्राणी का जीवन असंभव है। पेड़ पौधों में भी जीवन होता है। वे भी मनुष्य की तरह ही सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में अपना खाना बनाते हैं। फिर उन्होंने बीजों के अंकुरण की विधि, उनके बढ़ने की विधि, उनकी जड़ों के बारे में और किस तरह वे अपना भोजन बनाते हैं के बारे में बताया। उनके बीज कैसे एक स्थान से दूसरे स्थान

पर पहुँच जाते हैं। जिस तरह से एक बच्चे को अपने सर्वांगीण विकास के लिए उचित वातावरण, उचित परिवेश, उचित खानपान की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार इन्हें भी अपने विकास के लिए उचित जलवायु और उचित वातावरण की आवश्यकता होती है।

> "इस तरह मादा-पौधा अपने बच्चे को इतनी बड़ी दुनिया में भेजती है। इस शिशु को अपना जीवन शुरू करने के लिए उचित वातावरण की जरूरत होती है--- जैसे अपनी जड़ें उगाने के लिए अच्छी-सी जमीन, उचित मात्रा में पानी और अनुकूल मौसम तथा जलवायु। यदि इनमें से एक की भी कमी हुई तो पौधा उग नहीं सकता।" (15)

बीजों के जीवन चक्र को भी इस उपन्यास में बहुत ही सहज तरीके से दर्शाया गया है। अलग-अलग किस्म के पौधों के बारे में, उनके अलग-अलग हिस्सों व उनके फल के बारे में भी विस्तार पूर्वक बताया गया है।

> कुछ आरोही पौधों के तने इतने कमजोर होते हैं कि वे अपने आप खड़े नहीं हो सकते, उन्हें दूसरे पौधों या पेड़ों का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे कुछ तने अपने ऊपर प्रतान (नये कल्ले) उगा लेते हैं। कुछ ऐसे भी तने होते हैं, जो काटे उगा लेते हैं। इन कांटों या प्रतानों के सहारे वे उस तने पर चढ़कर अपने को फैला लेते हैं। इसके साथ ही कुछ कमजोर तने भी होते हैं जिन पर न प्रतान होते हैं न कांटे। ऐसे तने को 'वल्लरी' या लता कहते हैं। वे बस सहारा देनेवाले तने के चारों और अपने को लिपटा लेते हैं। (34)

इन सब के बारे में विस्तार से जानकर गजाधर बाबू की मानसिकता ही बदल गई। उसने कभी भी पेड़ न काटने की शपथ ली और खेती करके अपना जीवन यापन करने लगा।

> उस दिन से गजाधर ने न केवल स्वयं पेड़ काटना बंद कर दिया, बल्कि वह दूसरों को भी रोकने लगा। उसने पेड़ काटने का काम छोड़ दिया और खेती करने लगा। अब उसका उद्देश्य केवल यही था कि वह दुनिया को बताये कि पौधे किस प्रकार जीवन को बनाये रखने और इस सृष्टि के चलते रहने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। (56)

5.1.2 कथ्य विश्लेषण

हर एक मनुष्य को सामाजिक दायरे में रहकर रिश्तो का निर्वाह करना होता है। अगर हम उन रिश्तो का आदर सत्कार उचित ढंग से नहीं करेंगे तो हमें इसके दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं। यही प्रवृत्ति आलमा सुहिल्या द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *सूरज और मोर* में संकलित कहानी चाँद पर राख में भी दिखाई गई है। जिसमें चंद्र अपनी बहन को प्रेमिका के रूप में देखने पर उसे दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं और उसके साथ-साथ आज तक अपनी दुष्प्रवृत्ति के कारण लज्जित होकर शर्मिंदगी के साथ जीवन बिताना पड़ रहा है।

> एक दिन चंद्र सूरज के साथ ऐसी हरकत करने लगा कि सूरज आग बबूला हो उठी। वह अपने को रोक न सकी, वह आग बन कर जल उठी। उसने गरम-गरम राख उठाकर अचानक चंद्र के मुँह पर दे मारा और बोली, "बेशर्म तुझे लाज नहीं आई! अपनी बड़ी बहन के साथ ऐसी बुरी हरकत करते। हम दोनों सगे भाई-बहन हैं। हमने एक ही माँ का दूध पिया है।" चंद्र गर्म राख की जलन और लज्जा से

> वहाँ से भाग खड़ा हुआ। तब से वह अपना चेहरा सूरज के सामने नहीं दिखाता। तब से सिर्फ रात को ही घूमने फिरने लगा। (64)

पृथ्वी ग्रह एक मात्र ऐसा ग्रह है,जहाँ पर जीवन संभव है। क्योंकि यहाँ पर ही हवा, पानी व पेड़ पौधे हैं। निसंदेह पृथ्वीवासियों ने बहुत सारे अविष्कार किए हैं। नए-नए कारखाने, नए-नए अनुसंधान, जिसके कारण यहाँ के लोगों ने बहुत प्रगति की है, लेकिन इन नए-नए अविष्कारों व नए-नए कारखानों के कारण ही यहाँ पर प्रदूषण इतना अधिक बढ़ गया है और यहाँ की संस्कृति भी मिट्ती जा रही है। हरीश नारंग द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *अचरज ग्रह की दंतकथा* में संकलित कहानी अचरज ग्रह की दंतकथा में भी यही दर्शाया गया है:

> पृथ्वी के निवासियों की संस्कृति प्रगति करते करते इतनी जल्दी बदल गई है कि खगोल में हममें से बहुतों ने इस पर उम्मीदें लगा रखी हैं। हजारों सालों की तरक्की और मेहनत के बाद ऐसी संस्कृति का निर्माण करना जो अपने बनानेवालों का ही विनाश कर दे... फिर तो सारी तरक्की बेकार साबित होगी----एक झूठी कामयाबी! ओह, इंसानों! अपने हाथों से बनायी गयी चीजों से भी ज्यादा हैरतअंगेज जो तुम खुद ही थे। (35)

विज्ञान के युग में अविष्कार करने आवश्यक हैं। तरक्की की सीढ़ी चढ़ना भी जरूरी है, लेकिन हर चीज की एक सीमा होती है। अगर उससे बाहर कार्य किया जाए तो हर किसी के लिए घातक सिद्ध होती है। बच्चे भी जान पाएँगे कि तरह-तरह के आविष्कार भी एक सीमा तक ही ठीक है। उन्हें अपने ग्रह पर बढ़ते प्रदूषण के बारे में भी जानकारी मिलेगी। इस कहानी का उद्देश्य यह है कि नए नए अविष्कार करने आवश्यक है, लेकिन इसके साथ-साथ अपनी सभ्यता संस्कृति की रक्षा करनी भी उतनी ही आवश्यक है। इसका प्रभाव हमारी आने वाली पीढ़ी पर भी पड़ता है।

अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *सुकुमार राय की चुनिंदा कहानियाँ* में संकलित ऐसी ही एक कहानी व्योमकेश का माँझा में एक बच्चे में प्रतिस्पर्धा की व जीतने की प्रवृत्ति को दिखाया गया है। जिसके लिए वह अलग-अलग वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करता है। लेकिन बच्चे, बच्चे होते हैं। जब उनकी इच्छा पूरी नहीं होती तब वह हतोत्साहित व उदास हो जाता है। वहीं एक अन्य बच्चे के अविष्कार को भी दर्शाया गया है: "यह सुनकर पांचू ने खींझते हुए कहा, "मैं अपनी आंखों से देख कर आ रहा हूँ कि वह लाल-नीली लौ वाली सलाइयाँ जला रहा था, और तू अपने माँझे की हांके जा रहा है। एकदम गोबर गणेश है तू!" (71)

हरीश नारंग द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *अचरज ग्रह की दंतकथा* में संकलित कहानी अचरज ग्रह की दंतकथा दंत कथा पर आधारित है। इस कहानी का मूल उद्देश्य अंतरिक्ष में हुए विस्फोट के बारे में बताना है कि किस तरह सदियों से चली आ रही संस्कृति नष्ट हो गई। लेकिन फिर भी अतीत में हजारों वर्षों पहले हमारे कुछ विद्वानों ने इस विस्फोट के बारे में जानकारी देने के लिए उसे ताम्रपत्र पर अंकित करके जमीन में थानेश्वर के पास गाड़ दिए थे। इस उपन्यास में बताया गया है कि किस तरह हजारों वर्षों पहले के प्राप्त किए गए ज्ञान को भी प्रयोग किया जा सकता है। दूसरा लोगों में अंतरिक्ष में हुई किसी भी घटना को अपशकुन माना जाता था। यह एक बहुत बड़ा अंधविश्वास लोगों में फैला हुआ था इस उपन्यास में उस अंधविश्वास का खंडन भी किया गया है। अंतरिक्ष में होने वाले विस्फोट हो या कोई भी ग्रह से संबंधित होने वाली घटना को एक प्राकृतिक प्रतिक्रिया बताकर रोहित ने इस अंधविश्वास का खंडन किया है।

"कुछ बड़े और प्रसिद्ध लोगों की अचानक मृत्यु हो जाती है।" रोहित ने बताया।

"पर धूमकेतु न होने पर क्या ऐसा नहीं होता? पिछले वर्ष ज्वर की बीमारी फैली। सिरदर्द, बदन दर्द और वेदना से सैकड़ों लोग मरे, तब धूमकेतु कहा था? मृत्यु तो अटल है... वह बुढ़ापे से आती है। रोग या तो बीमारी से आती है या फिर अपघात से आती है। चार वर्ष पूर्व महाराज हर्षवर्धन के बड़े सरदार घोड़े से गिरकर मरे, उस समय धूमकेतु तो नहीं आया था। तात्पर्य यह है कि अपघात, रोग, बीमारी या युद्ध के कारणों से मृत्यु आती ही रहती है, उस समय चाहे धूमकेतु हो या नहीं। (11)

इसके साथ-साथ सूर्य ग्रहण के बारे में भी जानकारी दी गई है।

मैंने तुम्हें ग्रहण के बारे में बताया था। सूर्य ग्रहण कब होता है? जब चंद्र, सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाता है तब कुछ समय के लिए सूर्य चंद्र के पीछे हो जाने के कारण ढक जाता है। लोग समझते हैं सूर्य को किसी राक्षस ने निगल लिया। सूर्य के ढक जाने से उजाला कम हो जाता है। असमय ही अंधेरा हो जाता है। लोग डर जाते हैं। लेकिन जब सत्य का पता चल जाय तो इसमें डरने की कोई बात है क्या? (11)

इसके साथ-साथ मानव संस्कृति लुप्त प्राय होने पर भी पिछले ज्ञान विज्ञान के आधार पर फिर से विकास किया जा सकता है, यह सब सोच बच्चों में व्याप्त उत्साह व जिज्ञासु की प्रवृत्ति को दर्शाता है: दादा जी के इस कथन से चारों बच्चों में उत्साह उमड़ गया। सचमुच वे सारी चीजें प्राप्त हो सकती हैं! फिर तो यह नली वास्तव में खजाने से भी ज्यादा चमत्कारी है। मगर वह तहखाना है कहां? दादाजी एक काग़ज़ खोल कर देख रहे थे। (89)

बच्चों में वही चीजें, वही सुख सुविधाएँ जो भूतकाल में थी, उसको प्राप्त करने का उत्साह देखते ही बनता है। बड़े जब बच्चों का उत्साह देखते हैं, तो उन्हें यकीन हो जाता है कि अब वे सब मिलकर वो सब प्राप्त कर सकते हैं जो वो चाहते हैं।

बैलगाड़ी के आगे के हिस्से से आने वाले बच्चों का उत्साह भरा कोलाहल सुनकर दादाजी का चेहरा खिल उठा और वह अपने से ही बोले---

"अवश्य निभाएँगे। अगर आज नहीं तो कल... नहीं... तो परसों।" (92)

हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित उपन्यास *वनदेवी* में एक कथा के माध्यम से बच्चों व बड़ों को पेड़ पौधों के जीवन चक्र के बारे में बताना है। इस उपन्यास में बताया गया है कि हर एक प्राणी को जीवन जीने के लिए अपने जलवायु में वातावरण के अनुकूल होना पड़ता है।

फिर भी मैं दुबारा कहूँगी कि अपने को पर्यावरण के अनुकूल बनाना, सभी जीवधारियों के लिए बहुत जरूरी है। इस संसार में जीना, बढ़ना और विकसित होना केवल उन्हीं के लिए संभव है, जो पर्यावरण के अनुकूल अपने को बना लें और अपनी जीवन-शैली परिवर्तित कर लें। साथ ही, जो ऐसा नहीं कर सकते, उनको नष्ट होना ही पड़ेगा। (41)

ज्यादातर प्राणी पेड़ों के महत्व व उनकी उपयोगिता को जानते हैं लेकिन फिर भी स्वार्थवश व आधुनिकीकरण की होड़ में इनका हनन किए जा रहे हैं।

> इस तरह पौधों की दुनिया द्वारा दी जाने वाली सेवाओं की उपयोगिता और महत्व की कहानी तो बराबर चलती रहेगी... चलती रहेगी। लेकिन इसका कोई फायदा नहीं है, अगर सिर्फ तुमने ही इसे जाना और समझा। वास्तव में इसकी समझ तो पूरी मानवजाति में पैदा करने की जरूरत है। अगर मनुष्य समझदारी से पौधों के जीवन को सुरक्षित रखें और उनका पोषण करें तो इससे सभी जीवधारियों सहित सारी दुनिया की भलाई होगी। (55)

बच्चे को अपने पर्यावरण अपने पेड़ पौधों के महत्व की उपयोगिता के बारे में जानकारी होना अनिवार्य है। इसी ज्ञान का अर्जन वे इस उपन्यास के माध्यम से कर पाएँगे।

इस तरह से हम कह सकते हैं कि विज्ञान में तरक्की करना बहुत आवश्यक है लेकिन यह अविष्कार एक सीमा तक होने चाहिए। जहाँ एक स्थान पर कहा गया है कि अविष्कार एक सीमा से अधिक होने पर हमारी संस्कृति का धीरे-धीरे ह्रास हो रहा है और वह मिटने की कगार पर है। वहीं दूसरे उपन्यास अंतरिक्ष में विस्फोट में बताया गया है कि हमारी संस्कृति जो कि नए नए आविष्कारों या प्रदूषण इन सब से नष्ट नहीं हुई, वहीं एक प्राकृतिक आपदा से नष्ट हो गई। बच्चे इन कथाओं के माध्यम से इन आविष्कारों के बारे में उनके आवश्यकता से अधिक होने पर, होने वाले नुकसान के बारे में और हमारे पर्यावरण में इसके प्रभाव को जान पाएँगे और बालकों की मानसिकता पर क्या-क्या प्रभाव पड़े यह भी जान पाएँगे।

5.2 काल्पनिक संदर्भ

बाल कहानियाँ जिसमें प्रमुख रुप से परियों की कथाएँ बोलने वाले पशु पक्षियों की कथाएँ दानव दैत्य तक जादूगर से संबंधित कथाएँ काल्पनिक संदर्भों में शामिल होती हैं। जिसमें वे यथार्थता से कोसों दूर होकर, स्वप्नलोक में विचरण करते हैं। वे जिस तरह से चीजों को, जिस तरह के वातावरण में देखना चाहते हैं वे अपनी कल्पना के माध्यम से उसी तरह के वातावरण में विचरण करते हैं।

डॉ. भागीरथ मिश्र अपनी पुस्तक *साहित्य शास्त्र* में इस विचार का समर्थन करते हुए कहते हैं:

> रूप सृष्टि करने वाली शक्ति कल्पना है। जीवन के विविध दृश्यों को सामने प्रस्तुत करना कल्पना का ही काम है। निराकार वस्तुओं और भावों को आकार

देना, तथ्य को चित्रमय बनाना, चरित्र या पात्र के व्यक्तित्व को साक्षात करना, घटना की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करना और भाव को जगाने वाले चित्र अंकित करना कल्पना के द्वारा ही संभव होता है। अतीत को वर्तमान बनाना, सुदूरस्थ को प्रत्यक्ष करना और जीवन के अनुभव और ज्ञान को एक निश्चित रूप प्रदान करना कल्पना का प्रभाव है। (22)

5.2.1 कथा विश्लेषण

कल्पना बच्चों के लिए कथाओं को रुचिकर व मनोरंजक बनाने के साथ-साथ उनके मनोविज्ञान को भी प्रभावित करती है। बालक जब अपने मनचाहे वातावरण में विचरण करता है तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता।

इस विचार का समर्थन करते हुए W.James अपनी पुस्तक *Principal of Psychology* में कहते हैं: "Sensations, Once experienced, modify the nervous organism, so that copies of them arise again in the mind after the original outward stimulus is gone. No mental copy, however can arise in the mind of any kind of sensation which has never been directly excited from without." (4)

ऐसे ही अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित उपन्यास *गोसाई बागान का भूत* में भी कल्पना का सहारा लिया गया है। जिसमें बुरुन, भुतुम नाम के शरारती बच्चे की खोज में हाबू के गोसाई बागान में चला जाता है। वहाँ हाबू उस्ताद उस पर जादू कर देता है और बुरून काल्पनिक दुनिया में खो जाता है। उसे वहाँ खंडहर की बजाय सुंदर फूलों से भरा बगीचा, चहकते हुए पक्षी, कलकल बहती हुई नदी और तैरते हुए बादलों से भरा बहुत ही मनमोहक दृश्य दिखा। "चारों तरफ ढेरों फूल खिले हुए थे, मीठी सुगंध फैली हुई थी। पेड़ों पर कोयल, मैना, गौरैया आदि चिड़िया बोल रही थी। फूलों पर नन्ही तितलियाँ की तरह परियाँ उड़ती फिर रही थी। वहाँ एक छोटी नदी कलकल करती हुई बह रही थी।" (65)

उसे वहाँ ढेरों बातें करने वाले खिलौने मिले। वहाँ के जंगल में किसी भी छोटे जानवर को कोई डर नहीं था। सभी छोटे बड़े जानवर मिलजुल कर रह रहे थे और उसे वहाँ उसका दोस्त भुतुम भी मिला जो कि उससे माफी माँग रहा था। बुरुन उस काल्पनिक व जादुई दुनिया से बाहर निकलना ही नहीं चाहता था।

"भुतुम को सुधरते देखकर बुरुन को बड़ी खुशी हुई। उसने उससे दोस्ती कर ली। इतना सुंदर देश छोड़कर अब बुरुन को कहीं भी नहीं जाना था। उसने मन-ही-मन यह फैसला कर लिया।" (67)

ऐसे ही शांता ग्रोवर द्वारा अनुदित एक अन्य कहानी संग्रह *जंगल टापू* में भी जंगल का काल्पनिक दृश्य दिखाया गया है। जो कि एक अलग ही अनोखी दुनिया है-पेड़, पौधे, बंदर, खरगोश, कछुए, चील, गीद्ध शेर, भालू, चूहे और चीटियों की दुनिया है। जिसमें सभी पशु पक्षी मनुष्य की तरह बोलते हैं और सभी हँसी खुशी मिल जुल कर रहते हैं। यह एक काल्पनिक दुनिया सी लगती है। वहाँ एक बालक रब्बू का भी पालन पोषण होता है, जो कि एक हवाई जहाज से गिर गया था। वह वहाँ बहुत ही खुश रहता है, लेकिन वहाँ उसके जैसा प्राणी कोई नहीं था। जिससे वह दुखी हो जाता है। उसका मनोविज्ञान यहाँ दर्शाया गया है।

"'रब्बू के दिन इसी तरह हँसते-खेलते गुजर रहे थे। लेकिन कभी-कभी रब्बू उदास हो जाता था। वह जंगल के सभी जानवरों से अलग था। उसका मन करता था कि जंगल टापू में उस-जैसे कुछ दूसरे जानवर भी होते। वह भी सब मिलकर रहते, जैसे खरगोश रहते हैं या बंदर रहते हैं।" (53)

हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित पुस्तक *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4* में संकलित कहानी सुनहरे गुलाब के फूल भी कल्पना पर आधारित कहानी है। इस कहानी में एक लड़का जंगल में शिकार खेलने जाता है। वह रास्ता भटक जाता है और भूख प्यास से व्याकुल हो जाता है। तभी उसे एक पेड़ दिखाई देता है। जिसके पास जाते ही वह पेड़

ऊपर उठ जाता है। उसके हाथ फल नहीं लगता। उसके बाद उसे उसे एक वृक्ष दिखाई देता है जिसके फल तोड़ने पर खींचते ही चले जाते हैं, टूटते ही नहीं है। फिर उसे जंगल में गाने की आवाज सुनाई देती है, जब वह उसे खोजता है तो उसे गाने वाली मछली के बारे में पता चलता है। वह उसे अपने घर ले आता है। तब उस मछली ने बताया कि वे पेड़ व फल इच्छा व लालच के थे।

> वह सोचने लगा कि ऐसी चीज उसने पहले कभी नहीं देखी थी। सोने की मछली और वह पानी में तैरती हुई मानवीय आवाज में गाती हो। उसने अपने वस्त्र उतारे और पानी में कूद गया। ताल छोटा था और पानी स्वच्छ था और मछली भी सुनहरी थी। यही कारण था कि उसे मछली पकड़ने के लिए अधिक कोशिश न करनी पड़ी। जब उसने मछली को पकड़ लिया तो वह बहुत खुश हुआ। वह अपनी भूख और प्यास को भूल गया। (25-27)

बालक जैसा अनुभव करता है जिस प्रकार के विचार उसके मन में चलते रहते हैं उसी अमूर्त विचार को वह अपनी कल्पना में मूर्त रूप में देखता है। लालजी राम शुक्ल अपनी पुस्तक *बाल मनोविज्ञान* में इस विचार का समर्थन करते हुए कहते हैं: "कल्पना वास्तविक जगत की मौलिकता को बढ़ाती है। जिस व्यक्ति की जिस प्रकार की कल्पना होती है, उसको उसी प्रकार का संसार दिखाई देता है। हम अपनी कल्पना द्वारा वास्तविक संसार के कष्टों का सरलता से निवारण कर सकते हैं।" (215)

इस प्रकार की कल्पना अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *सुकुमार राय की कहानियाँ* में संकलित कहानी यतिन की चप्पल में भी दिखाई गई है। जिसमें यतिन नाम का बालक अपनी चीजों के बारे में बहुत ही लापरवाह था। वह अपनी किसी भी चीज को संभाल कर नहीं रखता था।

> यतिन को हर महीने एक नई चप्पल की जरूरत पड़ती थी। उसकी धोती भी दो दिन बीतते-न-बीतते ही फट जाती थी। वह किसी भी चीज को ठीक से

> संभाल कर नहीं रख पाता था। उसकी सभी किताबों की जिल्दें फटी हुई थी, कोई मुड़ी-तुड़ी थी, स्लेट में भी ऊपर से नीचे तक दरार थी। स्लेट की पेंसिलें भी हमेशा उसके हाथों से गिरती रहती थी, जिससे सभी के छोटे-छोटे टुकड़े हो गए थे। उसकी एक और बुरी आदत थी कि वह पेंसिलों के पिछले हिस्से को चबाता रहता था। (13)

उसको अभी अभी नई चप्पल ला कर दी थी। अपनी आदत के कारण यतिन दो दिनों तक तो बहुत ही संभल संभल कर चलता है, लेकिन फिर आदत से मजबूर होकर वहीं उछल कूद करना शुरू कर देता है। वह सारे दिन पतंग के पीछे पीछे रहता था। लेकिन फिर भी मन मस्तिष्क में चप्पल टूटने वाली बात तो चलती ही रहती थी। जब वह बेहोश हो जाता है तो उसे अर्धचेतन अवस्था में भी वही दिखाई देता है। तब मोची उससे चप्पल सिलवाता है, दरजी उससे उसकी फटी धोती सिलवाते हैं। इन सबके बीच उसे बहुत तेज भूख लग जाती है। तब उसे पेंसिल खाने को दी जाती है। जब सब मिलकर उसके पीछे भागते हैं, तब पतंग ही उसे बचाती है।

> थका-माँदा यतिन रोते-रोते जमीन पर लेट गया। तभी आसमान में सन्-सन् करके न जाने कैसी आवाज आई और यतिन ने जिस पतंग को बड़े शौक से निप्पियाँ लगाकर दुरुस्त किया था वह आसमान में गोता लगाकर सीधे उसकी गोद में आकर गिर पड़ी। पतंग ने फुसफुसाकर उससे कहा, "तुमने मेरा ध्यान रखा था, इसलिए मैं तुम्हारी सहायता करने आयी हूँ। तुम जल्दी से मेरी दुम पकड़ लो।" यतिन ने ऐसा ही किया।
>
> पतंग उसे लेकर सर्र से आसमान में चली गयी। (16)

जब उसे होश आया तो उसे पतंगे कहीं दिखाई नहीं दी और वह अपने आप को बहुत ही कमजोर महसूस कर रहा था।

"कुछ दिनों की तकलीफ के बाद यतिन स्वस्थ हुआ। उसकी माँ कहती, "बेचारा! सीढ़ियों से गिरकर इतना भुगतने के बाद मेरा लाल बड़ा कमजोर हो गया है। न उसमें पहले जैसी फुर्ती रही, न वह उछलते-कूदते हुए चलता है। पहले जैसा कुछ भी नहीं वरना एक जोड़ी चप्पलें चार महीने चल पाती?" (17)

5.2.2 कथ्य विश्लेषण

अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित उपन्यास *गोसाई बागान का भूत* में भी कल्पना का सहारा लिया गया है। इस उपन्यास में बताया गया है कि जब हम किसी जादुई व काल्पनिक दुनिया में खो जाते हैं, तो हम खुद ही अपने मन पर काबू करके उससे बाहर आ सकते हैं: "अगर किसी तरह बुरुन अपने मन के जोर से वशीकरण मंत्र को काट दे, तभी उसका उद्धार हो सकता है। बाहरी व्यक्ति इसमें कुछ भी नहीं कर सकता। जो करिएगा, सोच समझकर करियेगा।" (71)

पशु पक्षियों की अपनी दुनिया होती है वो मनुष्यों की तरह ही वार्तालाप करते हैं। वे मनुष्यों की तरह ही मिलजुल कर रहते हैं, लेकिन वहाँ पर यदि एक बालक का विकास होता है तो उस पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। ऐसे ही शांता ग्रोवर द्वारा अनुदित एक अन्य कहानी संग्रह *जंगल टापू* में भी इस तरह का दृश्य दिखाया गया है। इस कहानी में जब रब्बू बड़ा हो जाता है तो उसे वहाँ पर अपने जैसे प्राणी न दिखने पर वह वहाँ से अपनी दुनिया में जाने की कोशिश करता है।

> "यह बात नहीं है बाबा! मेरा दिल तो तुम्हारे साथ रहने को ही करता है, लेकिन मेरा दिल यह भी चाहता है कि वे भी साथ हों, जो मेरे-जैसे हैं।"
>
> बुढा खरगोश कुछ देर सोचता रहा और फिर भरे गले से बोला, "रब्बू, तुमने जाने की बात उस समय कही है, जब तू हमारा अपना हो गया है। मुझे तो याद भी नहीं रहा था कि तू किसी आदमी की औलाद है।" (54)

हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित पुस्तक *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4* में संकलित कहानी सुनहरे गुलाब के फूल पूरी तरह से कल्पनात्मक है। यह कहानी कल्पनात्मक होते हुए भी बहुत बड़े यथार्थ से रूबरू करवाती है। जिसमें बताया गया है कि कभी भी मनुष्य को लालच नहीं करना चाहिए।

> मछली ने उसको बताया कि यह 'इच्छा' का वृक्ष है, जिसकी तार कभी नहीं टूटती और जिसके सहारे मनुष्य सदा जीवित रहता है। यदि यह फल तुमसे टूट जाता तो तुम्हारी इच्छा भी खत्म हो जाती है और तुम मेरे पास भी नहीं पहुँच सकते थे---यही कारण है कि इच्छा का वृक्ष सदैव ऊंचे से ऊंचा होता रहता है। मछली के ज्ञान से वह बहुत हैरान हुआ और उसे अपने साथ लेकर आगे चलता गया। आगे जाकर उसके मार्ग में फिर वह वृक्ष आ गया, जिसके फलों की शाखाएँ रबड़ की तरह लंबी होती जाती थी। उसने मछली से उस वृक्ष के बारे में भी पूछा। मछली ने बताया कि यह लालच का फल है, जिसे पाने की तुम जितनी कोशिश करोगे उतना ही बढ़ता है यही कारण है, इसके फल की शाखाएँ हैं रबड़ जैसी लंबी होती गई थी। (27)

मनुष्य की इच्छाएँ कभी खत्म नहीं होती। ये इच्छा ही हैं जो मनुष्य को जीने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। किसी को भी कभी लालच नहीं करना चाहिए लालच के कारण उसे बहुत बुरे परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं: "घबराए हुए लोग मछली को लेकर चल पड़े और उसी तालाब में छोड़ आए, जहाँ वह बड़े आराम से गाती थी। जिसका अर्थ यह होता था कि जो भी लालच में फंसेगा, उसका अंत बुरा ही होगा।" (34)

बच्चे बहुत ही लापरवाह होते हैं। वे किसी भी चीज का कोई भी ख्याल नहीं रखते। लेकिन फिर भी बड़ों की डांट का, उनकी मार का, उनकी सजा का भी हमेशा मन ही मन डर लगता रहता है। जो उनके मन मस्तिष्क में चलता है उसे ही वे अपनी

कल्पना में भी महसूस करते हैं। ऐसा ही अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *सुकुमार राय की कहानियाँ* में संकलित कहानी यतिन की चप्पल में भी यतिन एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में पहुँच जाता है, जहाँ पर मोची, दर्जी सभी मिलकर उससे काम करवाते हैं और आखिर में उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ते हैं तब उन सब से पतंग उसकी रक्षा करती है।

अचानक पतंग और यतिन एक दूसरे से लिपटकर नीचे की ओर गिरने लगे। गिरते-गिरते जैसे ही यतिन का सिर जमीन से टकराया, वह अचानक जोर से चौक पड़ा। पतंग न जाने कहाँ गायब हो गयी? (16-17)

स्वप्ना दत्त द्वारा रचित कहानी संग्रह *बुलबुल की किताब* की कहानियाँ भी काल्पनिकता पर आधारित हैं, जिनमें पशु पक्षी मनुष्यों की तरह व्यवहार करते हैं। समस्या आने पर एक दूसरे की सहायता करते हैं। प्रीति पंत द्वारा आयोजित कहानी संग्रह *जंगल कथा* में संकलित कहानियाँ- विशाल कछुआ, बगुलों की जुराबें, गंजा तोता, घड़ियालों की लड़ाई, अंधी हिरणी, कहानी दो कोआती के बच्चों की और दो आदमी के बच्चों की, आलसी मधुमक्खी भी कल्पनिकता पर आधारित है। जिसमें पशु पक्षी सभी मिलकर परिवार की तरह रहते हैं। हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग 1* में संकलित कहानियाँ बहादुर टीन का सिपाही, शर्ट का कॉलर, शैतान बच्चा, नन्ही इडा और उसके फूल, पवनचक्की, बुलबुल, माचिस वाली बच्ची, तितली भी कल्पना पर आधारित कहानियाँ है। हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग 2* में संकलित रफू की सुई, लाल जूते कहानियों का कल्पना के माध्यम से बहुत सुंदर चित्रण किया गया है। हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित एक अन्य कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 1* में संकलित कहानी तितलियों के देश में भी काल्पनिक परिदृश्य का वर्णन किया गया है। वही देवसरे द्वारा अनुदित इसी कहानी संग्रह का *भाग 4* में संकलित मोटा

अखरोट भी अपने त्याग और कुर्बान होने की कहानी कल्पनात्मक तरीके से कहता है। हरिकृष्ण देवसरे द्वारा अनुदित एक अन्य कहानी संग्रह *ग्रीम बंधुओं की कहानियाँ भाग 1* में संकलित कहानियाँ सिंड्रेला, बहादुर दर्जी, तीन पक्षी, बोतल में आत्मा, राक्षस और दर्जी आदि लगभग सभी कहानियों में कल्पना का सहारा लिया गया है। वहीं देवसरे द्वारा अनुदित इसी कहानी संग्रह का *भाग 2* में भी संकलित कहानियाँ पशु पक्षी व जादू टोने पर आधारित है। आलमा सुहिल्या द्वारा अनुदित उपन्यास जलपरी का मायाजाल भी जल परी के जादू पर आधारित कहानी है। जिसमें जलपरी के जादू के कारण इस कहानी के मुख्य पात्र फंसा को पहले अपने प्यार से वंचित होना पड़ता है और फिर उसके वश में होकर अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *नेपाली लोक-कथाएँ भाग 1* में संकलित कहानियाँ सियार का फैसला, अच्छा मित्र, बुद्धि में बल, रंगीन मछली और मछुवा पशु पक्षियों पर आधारित कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ कल्पना का पुट लिए हुए है लेकिन बालकों के लिए बहुत ही ज्ञानवर्धक कहानियाँ है। कल्पना से इन कहानियों की रोचकता में और चार चाँद लग गए हैं। हरीश द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *अचरज ग्रह की दंतकथा* में संकलित कहानी रेगिस्तान में डायनासोर को भी काल्पनिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में दिखाया गया है कि किस तरह से मनुष्य एक दूसरे से आगे जाने की होड़ में अपनी अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। ये कहानियाँ काल्पनिक परिदृश्य पर आधारित होने के बावजूद बच्चों के मनोविज्ञान को प्रभावित करने के साथ-साथ उन्हें सही दिशा प्रदान करती हैं। कल्पना से कथाओं की रोचकता बढती है। ये कहानियाँ बालकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं। इनसे बच्चों में भाईचारा, सहयोग, मित्रता जैसी चारित्रिक विशेषताओं को बढ़ावा मिलता है।

5.3 नैतिक संदर्भ

भारत देश में नैतिक कथाओं का प्रचलन प्राचीन काल से ही है। पंचतंत्र को अगर प्रथम नीति कथा पुस्तक कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पंचतंत्र के रचनाकार विष्णु शर्मा ने राजा के मूर्ख पुत्रों को नीति की शिक्षा देने के लिए पंचतंत्र की रचना की थी। नीति की बातें बच्चों के लिए शुष्क, नीरस व बोझिल बन जाती है। लेकिन बाल कथाओं के माध्यम से यह कार्य बहुत ही सहजता से किया जा रहा है। व्यक्ति अपने गुणों के कारण ही जन जन का प्रिय और आदर्श बन जाता है। नैतिक कथाएँ बच्चों के मेहनत, परोपकार, सहनशीलता, दया, क्षमा, श्रद्धा, सत्य, ईमानदारी, पवित्रता, सादगी, व्यवहारशीलता आदि चारित्रिक गुणों का विकास करती है।

भारती शेलके अपनी पुस्तक *महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य* में नैतिकता को परिभाषित करते हुए कहती हैं: "समाज, धर्म और राज्य द्वारा निर्मित नियमों के अनुकूल चलना ही नीति है, और उन नियमों के अनुकूल आचरण से संबंधित नियति ही नैतिक मूल्य हैं। (72)

सुरेश चंद्र अपनी पुस्तक *समकालीन मूल्य बोध और संशय की एक रात* में नैतिकता को परिभाषित करते हुए कहते हैं: "नैतिकता मनुष्य के व्यवहार के विषय में सत्यासत्य का निरीक्षण करते हुए मनुष्य को शुभ की ओर प्रेरित करती है।" (77)

जब किसी घटना का नैतिक शिक्षा को लक्ष्य में रखकर वर्णन किया जाता है तो वह कहानी नीति कथा कहलाती है।

<u>5.3.1 कथा विश्लेषण</u>

बाल कथाओं के माध्यम से बच्चों में नैतिक गुणों का विकास आसानी से किया जा सकता है। सच्चाई की राह पर चलना आसान कार्य नहीं है लेकिन यदि कोई सत्य के मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ निश्चय कर ले तो उसे मुसीबतों का सामना तो बहुत करना पड़ता है लेकिन परिणाम हमेशा अच्छा ही होता है। ऐसे ही हरिकृष्ण देवसरे

द्वारा संकलित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग1* में संकलित अनंत देव शर्मा द्वारा अनुदित कहानी विजय भी प्रभात नामक बालक के सच्चाई के पथ पर चलने की कहानी है। उसके अध्यापक बिना सच को जाने उसको सजा देते हैं: "तुम लोगों को इस तरह से सजा क्यों देनी पड़ती है, जानते हो? तुम लोग बुरे काम करते हो न, इसी कारण। कोई छात्र झूठ बोले, यह बात मैं बिल्कुल सह नहीं सकता।"

लेकिन सच का अहसास होने पर वे अपनी भूल पर पछताते भी हैं। और उन्हें सत्य की राह पर चलने वाले अपने शिष्य पर गर्व महसूस होता है।

> तू जिंदगी में यह बात कभी न भूलना- सत्य की निश्चित ही विजय होती है बेटे।" कहते-कहते हलधर मास्टर ने आंखें अधमुंधी कर मुँह के अंदर ही बिर-बिर' करते कोई आशीर्वाद दिया। लगा कि अपने अनुचित व्यवहार की क्षमा माँगते हुए और उस सत्यवादी लड़के के कल्याण हेतु ईश्वर से वे कोई प्रार्थना ही कर रहे हैं। (22)

तेरी बात से मुझे बड़ी खुशी हुई। इतना मारने पीटने के बावजूद, मार के डर से तूने सच को झूठ नहीं माना और झूठ कहा भी नहीं। तेरी इस बात से मुझे बड़ी शांति मिली है। मेरी कामना यही है कि मेरा हर छात्र तेरे जैसा बने। सत्य के लिए अपने जीवन को भी जो तुच्छ माने, वहीं छात्र देश का गौरव होता है। (20)

एक अन्य स्थान पर हरि कृष्ण देवसरे द्वारा संकलित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4* में संकलित बुलाकी शर्मा द्वारा अनुदित कहानी अनोखी परीक्षा भी सच्चाई पर आधारित कहानी है। जिसमें रवि नाम का लड़का अपने अध्यापक के गलत पढ़ाने पर उनका विरोध करता है। लेकिन जुनेजा सर कभी भी किसी बच्चे को बीच में नहीं बोलने देते थे। सारे बच्चे उनके गुस्से के डर से सहम जाते थे, लेकिन रवि फिर भी अपनी बात पर डटा रहता है। जुनेजा सर को बहुत खुशी मिलती है कि उनका शिष्य मार के डर से भी अपने सच पर डटा रहा।

पिछले चार-पांच वर्षों में तुम पहले छात्र हूँ, जिसने सच्ची बात कहने का साहस किया है। हम यही परीक्षा करना चाहते थे कि इतिहास पढ़ते सभी हैं, लेकिन इतिहास रचने की सामर्थ्य किसमें है, वह तुम मिले। (51)

इसी कहानी संग्रह में पूवण्णन द्वारा अनुदित कहानी मेरा कथानायक में एक बालक में विद्यमान दया व सहानुभूति का वर्णन भी किया गया है। बच्चों में दया और सहानुभूति के गुण उसके आसपास के वातावरण, उसके आस पास रहने वाले लोगों के व्यवहार को देखकर, अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनकर आते हैं। इस कहानी में स्कूल जाते समय एक लड़के ने रास्ते में एक बच्ची को रोते हुए देखा। एक साइकिल वाले के टक्कर मारने के कारण उसका तेल सड़क पर बिखर गया था। लोगों ने लड़की को तो खड़ा कर दिया लेकिन उस पर किसी को दया नहीं आई। एक बारह तेरह साल के लड़के को उस पर दया आई। उसने अपनी समझदारी से दो रुपए देकर और बाकी लोगों की मदद से रूपए इकट्ठे किए और उसको तेल खरीद कर दिया।

"यह देखिए मेरे पास दो रूपए हैं। इसे मैं लड़की को दे रहा हूँ, आप लोगों में से हर व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार इसे कुछ पैसे दे सकेंगे तो पांच ही मिनट में बारह रूपए हो जाएँगे। इस लड़की की चिंता भी मिट जाएगी। दीजिए! जो कुछ आपसे हो सके दे दें।" (64)

इसी कहानी संग्रह में संकलित पुवई अमुदन द्वारा अनुदित कहानी दरोगा अंकल में भी इसी तरह की दया और सहानुभूति के दर्शन होते हैं। इस कहानी में एक कुत्ता का बच्चा यानी पिल्ला सड़क के बीच में पहुँच जाता है। लोग उसे अनदेखा करके इधर उधर से निकले जा रहे थे। लेकिन किसी को भी उस पर दया नहीं आई।

मगर सभी लोग उस पर ध्यान दिए बिना क्यों आगे बढ़ रहे हैं? इस बात पर विचार करते विनायकम् दु:खी हुआ। उसके मन में यह वेदना थी कि कोई भी व्यक्ति इस

पिल्ले की रक्षा करने के लिए आगे क्यों नहीं आता अथवा उसे अपने घर ले जाकर क्यों नहीं पालता? (69)

तभी विनायकम् नाम का बच्चा उसे बचाता है व उसे दरोगा अंकल की सहायता से ब्लूक्रॉस सोसाइटी में सुरक्षित पहुंचाता है।

मनुष्य को अपने जीवन में ईमानदारी से कार्य करना चाहिए। ईमानदार व्यक्ति के मन में किसी तरह का छल कपट नहीं होता। इसी तरह की ईमानदारी का वर्णन हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संकलित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 1* में संकलित धीरू बेन पटेल द्वारा अनुदित कहानी हीरों की खेती में भी किया गया है। जिसमें एक किसान को ज्ञान कम होने के कारण वह अपने भोलेपन के कारण हीरों की खेती करने के लिए खेत में हीरे बोता है। घुड़सवार उनमें से एक हीरा देख लेता है। तब वह लालच में आकर किसान को ढेर सारे चांदी के सिक्के देकर किसान से खरीद लेता है। लेकिन अपनी ईमानदारी के कारण किसान उसे यह सौदा करने से रोकता भी है। लेकिन घुड़सवार नहीं मानता। लेकिन जब घुड़सवार को सच्चाई का पता चलता है तो वह पछताता है। लेकिन किसान फिर भी हिम्मत नहीं हारता और मेहनत करके उसको तब तक खोदता रहता है। जब तक कि उसे सचमुच में हीरों की खान नहीं मिल जाती।

उसकी तो हिम्मत नहीं थी, पर किसान मन में आई बात को मन में ही क्यों रहने देता? वह तो अगले ही दिन से गहरे और गहरे खोदने में लग गया और बस खोदता ही गया। ऊपर सिर उठाकर देखा ही नहीं। खोदते खोदते एक दिन सचमुच ही हीरो की खानों से मिल गई। (82)

इसी तरह से हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संकलित कहानी संग्रह भारतीय बाल कहानियाँ भाग 2 में राजकुमार भुवसना द्वारा अनुदित कहानी तेलहइबा का युद्ध भी तेलहइबा की ईमानदारी व साहस पर आधारित है। बचपन में तेलहइबा के हाथ बहुत

तेजी से चलते थे। जिसके कारण उसकी माँ ने उसका नाम तेलहइबा रखा था, लेकिन लोग मानते थे कि वह धनुष बाण चलाने में अच्छा है। इसलिए उसका नाम तेलहइबा है। एक बार उनके राज्य पर हमला हो गया। लोगों के कहने पर तेलहइबा को अच्छा तीरंदाज समझकर युद्धक्षेत्र में भेजा गया। तब उसकी माँ उसकी मदद करती है और वह अपनी माँ की समझदारी और अपनी ईमानदारी और साहस के बल पर शत्रुओं को हरा देता है।

तरकसों में से उसके बाग की सारी मधुमाखियाँ निकल आई। मधुमक्खियाँ शत्रुओं को बुरी तरह काटने लगीं। घबराहट और पीड़ा के कारण शत्रुओं को भागने के सिवाय कुछ न सूझा। लेकिन तेलहइबा के राजा ने उन सब सैनिकों को पकड़ लिया।

अपनी जीत से राजा खुश हुए। तेलहइबा को बहुत बड़ा इनाम दिया और तेलहइबा आनंदमय जीवन बिताने लगा।(104)

हम सभी जानते हैं कि पंचतंत्र व हितोपदेश की कहानियाँ ही थी जो सर्वप्रथम नीति कथाओं के रूप में जानी जाती थी। रेखा व्यास द्वारा अनुदित कथा संग्रह *लघुकथा संग्रह भाग 1* में संकलित पंचतंत्र व हितोपदेश की कथाएँ भी नीति कथा पर आधारित हैं। इन पशु पक्षियों की कहानियों के माध्यम से बच्चों को नैतिक मूल्यों का ज्ञान दिया जाता है। वही प्रीति पन्त द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *जंगल कथा* में परोपकार व सहयोग की भावना को दर्शाया गया है। कल्पना का भी इसमें सहारा लिया गया है, लेकिन बच्चों के मन पर इन कहानियों का गहरा प्रभाव होता है। इन कहानियों के पठन व अध्ययन से उनमें नैतिक गुणों का विस्तार होगा। इसी तरह से प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुदित कहानी संग्रह *नेपाली लोक कथाएँ भाग 1, भाग 2* की कहानियाँ भी नैतिकता पर आधारित कहानियाँ है। प्रकाश प्रसाद उपाध्याय अपनी कहानी संग्रह नेपाली लोक कथाएँ भाग 1 की भूमिका में कहते हैं:

ये कहानियाँ हमारे जीवन के शुरू के दिनों से लेकर आज तक के लोक जीवन के सारे पक्षों से परिचित कराती रही हैं। इन कथाओं का उद्देश्य श्रोताओं को मनोरंजन प्रदान करने, उनमें नैतिक मूल्यों का संचार कराने, आसपास के प्राणी-जगत के प्रति सहानुभूति जगाने, 'जियो और जीने दो' के सह-अस्तित्व के सिद्धांत के प्रति आस्था उत्पन्न कराने, सभी से मिलजुल कर रहने और संकट तथा चुनौतियों से न घबराने का संदेश देना रहा है। (5)

5.3.2 कथ्य विश्लेषण

कहते हैं सच हमेशा कड़वा होता है, इसलिए ही सच की राह पर चलना आसान नहीं होता। लेकिन सच की राह पर चलने वाला व्यक्ति कभी भी परिणामों से घबरा कर अपनी सच्चाई की राह को नहीं छोड़ता बल्कि अडिग बना रहता है। सच सामने आने पर परिणाम हमेशा बेहतर ही होते हैं। इसी तरह की सच्चाई का वर्णन हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संकलित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग-1* में संकलित अनंत देव शर्मा द्वारा अनुदित कहानी विजय में भी वर्णन किया गया है।

ऐसे ही एक अन्य स्थान पर हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संकलित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4* में संकलित बुलाकी शर्मा द्वारा अनुदित कहानी अनोखी परीक्षा में भी सच्चाई दिखाई गई है। बच्चे ज्यादातर अध्यापक की मार के डर से अपनी बात से फिर जाते हैं, लेकिन कुछ बच्चे होते हैं जो सत्य के कठिन रास्ते पर डटे रहते हैं। मार के डर से सच की राह पर चलना नहीं छोड़ते।

समय सबको अपने में समेट लेता है। लोग भूल जाते हैं उन्हें, लेकिन जिसमें सही को सही और गलत को गलत करने का साहस है, जो सत्य कहते डरते नहीं हों, इतिहास में उसी व्यक्ति का नाम अमिट रहता है। आज हमें लगा कि हमारा पढ़ाना सार्थक हुआ। शाबाश, बेटे रवि।" (51)

लोग अपने कार्यों में इतने व्यस्त होते हैं कि उनके आस पास क्या चल रहा है उन्हें इससे कोई मतलब ही नहीं है। लेकिन बाल मन पर यह सब भाव असर डालते हैं। उनके मन में व्याप्त दया और सहानुभूति के कारण वे आवश्यकता पड़ने पर अपनी समझदारी से किसी भी समस्या का हल करते हैं। इस तरह से उनमें सहयोग व निस्वार्थ की भावना के दर्शन होते हैं। यही भावना इसी कहानी संग्रह में पूवण्णन द्वारा अनुदित कहानी मेरा कथानायक में दर्शाई गई है।

> सम्मान पाने वाला बाल साहित्यकार, मैं तो केवल तमाशबीन बनकर ही रह गया, मगर लड़की का दुख दूर करने का रास्ता नहीं निकाल पाया।
>
> बिना मेरी कहानियाँ पढ़े ही, संस्कारी और सदाचारी बननेवाले ऐसे अनगिनत बालक अवश्य होते ही हैं। यह देखिए! तुरंत ही बारह रूपए वसूलकर रोती हुई उस लड़की का दुख दूर करनेवाला वह लड़का उनमें से ही एक तो है। (67)

इसी कहानी संग्रह में संकलित पुवई अमुदन द्वारा अनुदित कहानी दरोगा अंकल में भी इसी तरह की दया और सहानुभूति के दर्शन होते हैं। इस कहानी में एक बच्चे की समझदारी व उसके मन में व्याप्त दया व प्रेम को दर्शाया गया है। इन कहानियों के पठन से बच्चों में कुछ नया करने का जज्बा और प्रेरणा मिलती है तथा वे अपने समाज के लिए, अपने देश के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।

"बेटा! तुम अच्छे लड़के हो। भविष्य में तुमने अच्छे गुण विकसित होंगे। उनसे तुम्हारा और तुम्हारे माँ -बाप का ही नहीं, तुम्हारे स्कूल का नाम भी रोशन होगा। क्यों?..... तुम्हारे जैसे लड़कों के कारण ही देश का भला होगा।" कहते हुए उसको शाबाशी देकर दारोगा जी आगे बढ़ गए। (72-73)

अगर ईमानदारी से आदमी अपने भोलेपन में कोई मूर्खता भरा कार्य भी करता है तो उसकी ईमानदारी के कारण उसे परिणाम अच्छे ही मिलते हैं। इसी तरह की ईमानदारी का वर्णन हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संकलित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग*

1 में संकलित धीरू बेन पटेल द्वारा अनुदित कहानी हीरों की खेती में भी किया गया है। इस कहानी में भी किसान की मेहनत व ईमानदारी के कारण एक दिन उसे हीरो की खान मिल ही जाती है।

किसान बोला, "तुम मुझे नरक में भेजना चाहते हो? यह खेत तुम्हारा है, इसीलिए हीरे भी तुम्हारे हुए। मुझे तो हीरों की खेती करने का चाव था। आखिर वह पूरा हुआ और क्या चाहिए?" (82)

इसी तरह से हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संकलित कहानी संग्रह में राजकुमार भुवसना द्वारा अनुदित कहानी तेलहइबा का युद्ध भी तेलहइबा की ईमानदारी व साहस पर आधारित है। समझदारी व ईमानदारी से किए गए कार्य में हमेशा जीत हासिल होती है।

अतः उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि इन कहानियों के माध्यम से बच्चों में ईमानदारी, साहस, वीरता, शौर्य, पराक्रम, सच बोलना परोपकार की भावना, लालच न करना, निस्वार्थ की भावना आदि गुणों का प्रसार होगा। जहाँ एक तरफ वैज्ञानिक कहानियों के माध्यम से बच्चों को नए-नए आविष्कारों की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त होगी। वही काल्पनिक कहानियों से बच्चों का मनोरंजन के साथ-साथ, उनको यथार्थ की जानकारी भी होगी। तथा वे नैतिक गुणों के महत्व को समझ सकेंगे एवम् समाज के लिए एक अच्छे व बेहतर नागरिक बनेंगे तथा जीवन में आने वाली किसी भी मुसीबत का डटकर मुकाबला करेंगे।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची -</u>

<u>आधार ग्रंथ -</u>

उपाध्याय, प्रकाश, प्रसाद. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

कार्ल ग्रिम, जैकोब लुडविग. कार्ल ग्रिम, विल्हेम. देवसरे, हरिकृष्ण. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---.---. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

किरोगा ओरासियो, पंत प्रीति, *जंगल- कथा,* साहित्य अकादेमी,अकादमी 2019.

गोपालकृष्णन, कल्वी. देवसरे, हरिकृष्ण. *वनदेवी.* साहित्य अकादेमी, 2017.

जीरवा, वेबस्टर डेविस. सुहिल्या, आलमा*. जलपरी का मायाजाल.* साहित्य अकादेमी, 2019.

जीरवा, वेबस्टर डेविस. सुहिल्या, आलमा.सूरज और मोर. साहित्य अकादेमी, 2017.

देवसरे, हरिकृष्ण. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी , 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:2.* साहित्य अकादेमी , 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:4.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

नारलीकर, जयंत विष्णु. पाणंदीकर, सुरेखा*. अंतरिक्ष में विस्फोट.* साहित्य अकादेमी, 2019.

भुल्लर, जसवीर.ग्रोवर, शांता. *जंगल टापू.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मुखोपाध्याय, शीर्षेंदु. गोस्वामी, अमर. *गोसाई बागान का भूत.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

राय, सुकुमार. गोस्वामी, अमर. *सुकुमार राय की चुनिंदा कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2013.

रायचौधुरी उपेंद्रकिशोर, दत्त.*स्वप्ना बुलबुल की किताब.* साहित्य अकादेमी, 2017.

शिन्जी, ताजीमा. नारंग, हरीश. *अचरज ग्रह की दंतकथा.* साहित्य अकादेमी, 2018.

<u>सहायक ग्रंथ (हिन्दी)-</u>

दिव्याल, विभांसु. *नैतिकता के नये सवाल.* वाणी प्रकाशन, 2006.

देवसरे, हरिकृष्ण.*बाल साहित्य-मेरा चिंतन.* मेधा बुक्स प्रथम संस्करण,2000.

नाथ, सेन समरेंदर. *विज्ञान का इतिहास.* बिहार हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी, 1972.

मिश्र, भागीरथ*. साहित्य शास्त्र.* नवले संजय,

राय, रविंद्र प्रसाद.*वैज्ञानिक अनुसंधान और अविष्कार.*विश्वविद्यालय प्रकाशन, द्वितीय संस्करण,1962.

शुक्ल, लालजी राम. *बाल मनोविज्ञान.* नंदकिशोर एँड ब्रदर्स, 1952.

शेलके, भारती. *महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य.* राजकिशोर प्रकाशक,

सुरेशचन्द्र. *समकालीन मूल्यबोध और संशय की एक रात.*

<u>सहायक ग्रंथ(अंग्रेजी)-</u>

James, W.. Principal of Psychology. Vol. 2,

Macmillan. *The social relations of the science*. J. G. Growther, 1941.

अध्याय 6

6 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन: कलात्मक संदर्भ

6.1 भाषा

6.1.1 सरल और सहज वाक्यों का प्रयोग

6.1.2 ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग

6.1.3 मुहावरों का प्रयोग

6.1.4 लोकोक्तियों का प्रयोग

6.1.5 युग्म शब्दों का प्रयोग

6.1.6 कविता की लाइनों का प्रयोग

6.1.7 अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग

6.1.8 संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग

6.1.9 उर्दू के शब्दों का प्रयोग

6.1.10 सुविचारों का प्रयोग

6.1.11 ग्राम्य शब्दों का प्रयोग

6.1.12 वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग

6.1.13 संस्कृत के शब्दों का प्रयोग

6.1.14 मूल भाषा को इंगित करने वाले शब्दों का प्रयोग

6.1.15 सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग

6.1.16 ग्लानि सूचक शब्दों का प्रयोग

6.1.17 वैमनस्य सूचक शब्दों का प्रयोग

6.2 शैली

6.2.1 चित्रात्मक शैली

6.2.2 किस्सागोसाई शैली

6.2.3 संवादात्मक शैली

6.2.4 आत्मकथात्मक शैली

6.2.5 खंडों में विभक्त शैली

6.2.6 लोककथात्मक शैली

6.2.7 काव्यात्मक शैली

6.2.8 पत्रात्मक शैली

6.2.9 वर्णनात्मक शैली

कोई भी लेखक, साहित्यकार, कवि यह चाहता है कि उसके द्वारा रचित कृति को पाठक के लिए उत्साहवर्धक, रुचि पूर्ण एवं प्रेरणादायक तथा उसकी कल्पनाओं को सीमाओं में रखकर प्रस्तुत कर सके जो कि उसके लिए समाज के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर लोकप्रियता की नई चुनौतियों को छूने में सक्षम हो। इस कृति के माध्यम से लेखक अपने निहित उद्देश्यों को, भाषा को, सरल, समन्वित एवं धारा प्रवाह बनाकर प्रस्तुत करके प्राप्त करने का प्रयास करता है अर्थात यदि कोई लेखक अपनी कृति के माध्यम से पूर्व निर्धारित उद्देश्य को पूर्ण करने में जिन गुणों से अपनी कृति को सजाता एवम् संवारता है, वे गुण ही उस लेखक की कलात्मकता को प्रदर्शित करते हैं।

6 अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययनः कलात्मक संदर्भ

किसी भी कृति को सुंदर तरीके से पाठक के सामने प्रस्तुत करना उस कृति का कलात्मक संदर्भ कहलाता है। उस कृति में, उस रचना में किस तरह की भाषा का प्रयोग किया गया है, किस तरीके से, किस ढंग से, कौन सी शैली में उसको लिखा गया है, यह उस कृति के कलात्मक पक्ष को उजागर करते हैं। आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित प्रमाणित हिन्दी कोश में कलात्मक को इस तरह से परिभाषित किया गया है: "जिसमें कला का सुंदर प्रदर्शन हो या कलापूर्ण।" (143)

अतः हम कह सकते हैं कि किसी भी कृति को सुघड़ भाषा एवं सुंदर तरीके से, सहज तरीके से प्रस्तुत करना वह उस कृति का कलात्मक संदर्भ कहलाता है। कलात्मक संदर्भ में दो पक्ष सम्मिलित होते हैं- पहला भाषा पक्ष, दूसरा शैली पक्ष। भाषा जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को दूसरे के सामने प्रस्तुत करते हैं, वही शैली जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को एक बेहतरीन तरीके से दूसरे के सामने प्रस्तुत करते

हैं। हरिकृष्ण देवसरे अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन* में इस विचार का समर्थन करते हुए कहते हैं:

> बच्चों के मानसिक विकास को समझने में भाषा का विशेष महत्व होता है। बच्चे भाषा के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्ति ही नहीं देते बल्कि भाषा से उनके विचारों में परिपक्वता भी आती है।..... साहित्यिक सौदर्य तथा ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए विभिन्न शैलियों के माध्यम से लेखक, कवि अपनी बात कहते रहे हैं। इनसे न केवल सामग्री रोचक तथा मनोरंजक बनती है। बल्कि वह उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक भी सिद्ध होती है। (342)

6.1 भाषा

अपने विचारों एवं भावों को सशक्त व प्रभावशाली तरीके से दूसरों के सामने प्रस्तुत करने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण साधन है। इसके बिना मनुष्य, समाज व साहित्य के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भाषा ही वह माध्यम है, वह सेतु है जो मानव व साहित्य को एक दूसरे से जोड़े हुए है। भाषा के माध्यम से ही कथाकार अपनी कथा को एक सुघड़, संप्रेषणीय तथा सशक्त तरीके से प्रस्तुत कर सकता है। आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित *प्रमाणित हिन्दीकोश* में भाषा को इस तरह से परिभाषित किया है: "भाषा- 1) मुँह से निकलने वाली व्यक्त ध्वनियों या सार्थक शब्दों और वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरे पर प्रकट किए जाते हैं, बोली, जबान, वाणी। 2) किसी देश के निवासियों में प्रचलित बातचीत करने का ढंग, बोली।" (663)

धीरेंद्र वर्मा द्वारा संपादित *बृहत हिन्दी शब्दकोश* में भाषा को इस तरह से परिभाषित किया है: "भाषा- 1) भाष्+अ+टाप् 2) बोलकर लिखकर या ध्वनि संकेतों में भावों और

विचारों को प्रकट करने का साधन, मनुष्यों के परस्पर विचार-विनिमय में प्रयुक्त ध्वनि-चिन्हों की समष्टि।" (1874)

कर्णसिंह अपनी पुस्तक *भाषा विज्ञान* में भाषा को परिभाषित करते हुए कहते हैं: "जिन यादृच्छिक तथा विभिन्न अर्थों में रुढ़ ध्वनि संकेतों के द्वारा मनुष्य अपने भावों विचारों को अभिव्यक्त करता है, उन्हें भाषा कहते हैं।" (20)

इसी पुस्तक में संकलित हेनरी स्वीट के अनुसार: Language may be defined as the expression of thoughts by means of speech sounds." (20)

जब हम बाल कथाओं की भाषा की बात करें तो बालकों के लिए जो कथा साहित्य लिखा जा रहा है, वह उनकी रूचि, उनके मनोरंजन, उनके मनोविज्ञान के अनुसार ही होने चाहिए ताकि वह बालकों के लिए सुगाह्य हो और वे रुचि के साथ उसका पठन कर सके।

हरिकृष्ण देवसरे अपनी पुस्तक *हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन* में कहते हैं:

> वास्तव में यह मनोवैज्ञानिक तथ्य ही इस बात का प्रमाण है कि बाल साहित्य में केवल ऐसी भाषा का महत्व है जो बच्चे सरलता से समझ सकें। स्कूल की किताबों की अपेक्षा बाल साहित्य की पुस्तकों में अधिक रुचि लेने का कारण यही है कि वह पहले की अपेक्षा अधिक सरल एवं मनोरंजक होती है। बालक बाल साहित्य को अकेले बैठ कर पढ़ सकते हैं और उसे समझने के लिए अध्यापक या माता-पिता की आवश्यकता नहीं पड़ती। (1347)

उपर्युक्त विद्वानों के विचारों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि भाषा अपने विचार और मन के भावों को प्रकट करने का माध्यम होती है बाल कथाओं में भाषा का प्रयोग बालक के स्तर के अनुरूप तथा उसमें सरल शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। प्रस्तुत बाल कथाओं में सरल व धान्यात्मक शब्दों के साथ-साथ कहीं-कहीं

अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। इन बाल कथाओं में प्रयुक्त भाषा के विविध रूपों की विवेचना इस प्रकार है-

6.1.1 सरल और सहज वाक्यों का प्रयोग

बाल कथाएँ बालकों के लिए लिखित कथाएँ हैं जो कि बालोपयोगी, सहज व सरल भाषा में होनी चाहिए। ये अनुदित बाल कथाएँ भी सरल, सहज, सुरुचिपूर्ण, भावपूर्ण व सीधी सादी भाषा में सृजित है। उदाहरणार्थ-

जंगल कथा कहानी संग्रह में संकलित कहानी विशाल कछुआ में सरल व सहज वाक्यों का प्रयोग किया गया है:

> एक बार की बात है। बुएनोस आइरेस शहर में एक आदमी रहा करता था। वह बहुत मेहनती था और अपने आप में संतुष्ट था। लेकिन एक दिन वह बीमार पड़ गया। सभी डॉक्टरों की यही राय थी कि वह ठीक होने के लिए खुले प्राकृतिक वातावरण में जाकर रहे। पर वह नहीं जाना चाहता था, क्योंकि उसके छोटे-छोटे भाई-बहन उस पर निर्भर थे। इस कारण से वह और बीमार होता चला गया। (11)

इसी तरह *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-1* में संकलित कहानी बुद्धिबल में भी सरल एवं सहज वाक्यों का प्रयोग किया है:

> पुराने समय की बात है। किसी प्रदेश में एक राजा रहता था। अत्यंत धनवान होते हुए भी वह दयालु था, जनता का हित चाहता था, धार्मिक विचारवाला था। उसके राज्य की जनता भी मेहनती होने के कारण खुशहाल थी। देश में किसी वस्तु की कमी नहीं होने के कारण मवेशी भी हृष्ट-पुष्ट थे। खेतों में अनाज की भरपूर फ़सल होने के कारण किसान भी चिड़ियों और चूहों द्वारा खड़ी फ़सलों को हानि पहुँचाने पर एतराज नहीं करते। (15)

उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से हम कह सकते हैं कि ये कथाएँ बाल कथाएँ होने के कारण इनमें सरल व सहज शब्दों के साथ-साथ सरल व सहज वाक्यों का प्रयोग किया गया है।

6.1.2 ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग

बालकों के लिए इन कथाओं को रोचक व मनोरंजक बनाने के लिए अनेक ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग यथा स्थान किया गया है। ये ध्वन्यात्मक शब्द किसी भी यातायात के साधनों की आवाजें, पशु पक्षियों की आवाजें हो सकती हैं। जिनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

जापान की कथाएँ नामक पुस्तक में: हा हा हा हा (29), *वनदेवी* पुस्तक में खचाक, अरे-रे... मार... डाला.... रे1 (3), *सुकुमार राय की चुनिंदा कहानियाँ* में: आ-आ-आ, गेंक-गेंक-गेंक-देख-देख-देख, खट-खट, मच-मच, घेंच-घेंच (32), टिप-टिप, कुटुर-कुटुर, टिप-टिप, टुप-टुप, टाप-टाप, टपाटप-टपाटप, उन हूँ, उं हूँ(47), *भारतीय बाल कहानिया भाग-1* में: खड़बड़-खड़बड़ बिर-बिर (22) मिऊं-मिऊं (23) कुक्कड़ूं-कूं। टर्र-टर्र, क्रोक-क्रोक (35), *भारतीय बाल कहानिया भाग-4* में: टिक-टिक, टप-टप, तड़-तड़, तिड़- तिड़ (21), *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1* में: हुआं, हुआं (43), *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग-1* में क्रोक! क्रोक! ब्रेक केक-केक! (132) हूँ...हूँ! टू..व्हू! कूं! कूं! (208), गोसाई बागान का भूत में: आक्... आक्... आक् छीं। (71) घेड़ ड़ा म्। हू...ऊ.... म ...। (81) *बिल्ली हाउसबोट पर* में: क्वैक-क्वेक, छपछप (11) म्याऊँ-म्याऊं (30) आदि।

उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से हम कह सकते हैं कि धव्न्यात्मक शब्दों के प्रयोग से कथाएँ और ज्यादा रोचक एवं मनोरंजक हो जाती हैं।

6.1.3 मुहावरों का प्रयोग

जिस प्रकार सजावट के लिए आभूषणों का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार भाषा को श्रृंगारित, स्पष्ट, जोरदार व प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। इनके प्रयोग से भाषा में विलक्षणता प्रवाहमयता, सरलता आदि गुण सहज ही आ जाते हैं। मुहावरे भाषा की शुष्कता को दूर करके उसमें नयापन ले आते हैं और पाठक के लिए कथाओं को मनोरंजक भी बना देते हैं। किसी भी घटना को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने में भी सहायक होते हैं।

राधा दीक्षित अपनी पुस्तक राग दरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन में मुहावरे को परिभाषित करते हुए कहते हैं: "मुहावरे का सही-सही अर्थ केवल वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही जाना जा सकता है। मुहावरे में अमूर्तता की अपेक्षा मूर्तता, व्याकरणिक व्यवस्था की अपेक्षा सामाजिकता. तर्क की अपेक्षा शक्ति की प्रधानता होती है। मुहावरे भाषा की यौवन संपन्न शक्ति और समर्थता के प्रतीक होते हैं।" (223)

इन अनुदित कथाओं में भी भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया गया है। जिनमें से कुछ इस प्रकार है-

> *सुकुमार राय की चुनिंदा कहानियाँ* नामक पुस्तक में: अकल का अंधा, सब मिट्टी में मिलना (18) रंगे हाथों पकड़ना (19) भौंहें सिकोड़ना (22) डींग हांकना (67), *भारतीय बाल कहानियाँ भाग-1* में: आग बबूला होना (20) चेहरे का रंग उतरना (52), भारतीय बाल कहानियाँ भाग-4: में टाय टाय फिश होना, आंखें निकालना (50), *बिल्ली हाउसबोट पर* में: रोगटे खड़े होना, सहम जाना (9), *गोट्या* में: आग बबूला होना (12), *अंतरिक्ष में विस्फोट* में: डींग मारना (14), *पक्या* में: नाक में दम करना (5) आपे से बाहर होना, दांत पीसना (6)

इस तरह अनेक स्थानों पर इन कथाओं में मुहावरों का प्रयोग किया गया है। जिनसे इन कथाओं की भाषा में नयापन आने के साथ-साथ भाषा की शुष्कता भी समाप्तप्राय: हो गई है।

6.1.4 लोकोक्तियों का प्रयोग

लोकोक्ति का अर्थ है -लोक में प्रचलित उक्ति। बरसों के ज्ञान और अनुभव के आधार पर लंबी चौड़ी बात को एक पंक्ति में कह देना लोकोक्ति कहलाती है। किसी भी भाषा को समृद्ध, सशक्त व चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए लोकोक्तियों या कहावतों का प्रयोग किया जाता है। उनके प्रयोग से विचार व उसका अर्थ भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। ये लोक चलन को वाणी प्रदान करने के साथ-साथ जीवन के किसी सत्य पर आधारित होती हैं। इनके पीछे कोई कहानी या घटना होती है। इनसे निकला निष्कर्ष या कोई बात जब बाद में लोगों की जुबान पर चल निकलती है तो वह लोकोक्ति का रूप धारण कर लेती है। भोलानाथ तिवारी अपनी पुस्तक *वृहत हिन्दी लोकोक्ति कोश* में लोकोक्तियों को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

> विभिन्न प्रकार के अनुभवों पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोकविश्वासों आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, सजीव, संक्षिप्त लोकप्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं जिनका प्रयोग बात की पुष्टि या विरोध, सीख तथा भविष्य कथन आदि के लिए किया जाता है। (10)

ये बाल कथाएँ बालकों के लिए रचित कथाएँ हैं इसलिए उनके लिए भाषा को क्लिष्ट व दुरुह न बनाकर, सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। जिसके कारण लोकोक्तियों का बहुत ही कम प्रयोग किया गया है। इन कथाओं में प्रयोग की गई कुछ लोकोक्तियों के उदाहरण इस प्रकार हैं-

अचरज ग्रह की दंतकथा में: जिसकी लाठी उसकी भैंस (47) बंदर का सूखा माँस (61), *अंतरिक्ष में विस्फोट* में: नाहे जाने नैव जाने न जाने (13), *नेपाली लोक कथाएँ भाग-1* में: दाल में कुछ काला नजर आना (7) राम भजन को आलसी भोजन को तैयार (21)

6.1.5 युग्म शब्दों का प्रयोग

बाल कथाओं में अभिव्यक्ति का कौशल बढ़ाने के लिए रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में युग्म शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया है। बाह्य तौर पर देखने पर शब्दों की पुनरावृति नजर आती है। लेकिन इससे अभिव्यक्ति अधिक धारदार हो जाती है। शब्दों के बार-बार प्रयोग करने से भाषा पर अतिरिक्त प्रभाव पड़ रहा है। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

> *लघु कथा संग्रह भाग 2* में मंद-मंद (38) अम्ब-अम्ब (79) *भारतीय बाल कहानियाँ भाग-1* में अटक-अटक कर देखते-देखते, बैठे-बैठे (60) गहरी-गहरी अंधेरी-अंधेरी खोदते-खोदते(82) *जंगल कथा* में: छोटे-छोटे, भाई-बहन, चौड़े-चौड़े (11) छपा-छप, उछल-उछलकर (27) किनारे-किनारे, टुकड़े-टुकड़े, बीचो-बीच, मीटर-मीटर(31) मार-मारकर, मोटी-मोटी, माँ-माँ, धीरे-धीरे, आ-आकर (34)

6.1.6 कविता की लाइनों का प्रयोग

अनुदित बाल कथाओं को बालकों के लिए रुचिपूर्ण एवम् मनोरंजक बनाने के लिए इनमें कविता की लाइनों का भी प्रयोग किया गया है। इन लाइनों के माध्यम से बच्चे किसी भी बात को आसानी से समझ जाते हैं। प्राथमिक स्तर पर कोई भी ज्ञान बालकों को कविताओं के माध्यम से ही दिया जाता है, क्योकि वे उसको सहज ही

ग्रहण कर लेते हैं। इन कथाओं में प्रयोग की गई कविता की लाइनों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4 में:

वायदा तोड़ने की सजा

पाकर जो है मर गया।

रक्त उसका इस मिट्टी में है मिल गया

ले मुसीबत घर आया था जो

उन्हीं हाथों से स्वयं का अंत कर लिया (33)

हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग 2 में:

गुलाब खिलेंगे और फिर मुरझा जाएँगे,

लेकिन हम ईश्वर के शिशु एक दिन आएँगे। (147)

ग्रिम बन्धुओं की कहानियाँ भाग -1 में:

हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो

झांसी वाली रानी थी। (52)

जंगल की एक रात में:

सिलो सिलो अपनी सुई तोड़ो

खींचो, खींचो, खींचो अपना धागा

लगाओ, लगाओ, मोम लगाओ,

और फिर सिर पर मारो हथौड़ा। (166)

सूरज और मोर में:

मोर, ओ मोर। मेरे सबसे प्यारे,

क्यों मेरा कहना न माना और मुझे छोड़ कर चले गए।

अब मैं कैसे जियूं, कैसे तुमको ढूं ढूं?

सोचा भी न था कि तुम बिछड़ जाओगे मुझसे। (32)

जापान की कथाएँ में:

याद आती है अंजू की,

याद आती है जुसिओ की।

अगर पक्षी में है जीवन,

भाग ले जल्दी यहाँ से। (44)

6.1.7 अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग

अनुदित बाल कथाओं में अनेक स्थानों पर हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये सामान्यतः वे शब्द हैं जिन्हें हिन्दी में स्वीकार्यता प्राप्त हो गई है और आमजन के बोलचाल में भी निरंतर प्रयुक्त किए जाते हैं। इन शब्दों को अनुदित बाल कथाओं में सहज ही वाक्यों को पूर्ण करने के लिए एवं वाक्य की सार्थकता बढ़ाने के लिए प्रयोग किया गया है।

लघु कथा संग्रह भाग 1 में ऑलराइट! थैंक यू (64) मेलोडियस् वायस्...! फैन रेण्डरिंग...! डिलाइटफुल कंसर्ट (66) *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 1* में: टाउन, रूटीन (15) एप्लाई, ऐण्ड्रवेड, रोबोट (37) पीरियड, शार्पनर, डेस्क (61) *भारतीय बाल कहानियाँ भाग २* में: शर्टे, टाई, हाफ पैंट, स्कर्ट, टिफिन बक्स, हेडमास्टर (74) गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, गवर्नमेंट लोअर मिडिल स्कूल, जीरो-क्रॉस, नेहरू मेमोरियल गवर्नमेंट लोअर मिडिल स्कूल, रिटायर (81) *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग* 2 में: वॉलबर्ग, विन्कलरीड (35) जैक, टिन, हैंडल, क्लर्क, हेड-क्लर्क, जैक-द- ड्यूलार (55) पासपोर्ट, कार्निवल, कोट, होल, मार्च, अप्रैल फूल (77) एँड्रेस सैन्डो, हैंस क्रिश्चियन, डेनमार्क (115)

गोसाईं बागान का भूत में: माई लिटिल फ्रेंड्स, (33) वेरी सिंपल अर्थमैटिक (35) फाइनल, फर्स्ट, ब्रैडमैन रिकॉर्ड (56) रेलवे स्टेशन, प्लेटफार्म, ट्रेन डोनाल्ड, डक (65)

बिल्ली हाउस बोट पर में: पपाया, किंग फिशर, गुड बाइ, टापू कुकबोट (11) डिजाइन, पोपलर, विलो, ट्राउट (28) *अचरज ग्रह की दंतकथा* में: गोल्फ कोर्स, बिजनेसमैन, स्मार्ट नेकटाइज़ (7) माउंटेन फैशन्स कंपनी लिमिटेड, गुड आफ्टरनून, बिजनेसमैन, कंपनी प्रेजीडेंट सर (11) टेलीस्कोप, साइकल, बिस्कुट, सरप्राइज (23) नॉर्थ विंड, स्नो स्नो स्पिरिट, ओल्ड मैन फ्रास्ट, आइस जायट, जनरल विंटर (37) *पक्या* में: साइकिल, स्क्रु ड्राइवर, एम आर एफ (7) फर्स्ट एड, काऊ बॉय, टॉर्च, डेटॉल (23)

सुकुमार राय की चुनिन्दा कहानियाँ में: हेडमास्टर, टिफिन (19) मजिस्ट्रेट (60) लैबोरेट्री (66) *कबूतरों की उड़ान* में: परेड ग्राउंड, मैस, अफसर, बाउलिंग, कोच, बॉक्स, डॉक्टर, चर्च (13)

6.1.8 संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग

अनुदित बाल कथाओं में अनेक स्थानों पर संस्कृत श्लोकों को हिन्दी में अनुदित करने की अपेक्षा उन्हें यथावत स्थान दिया गया है, ताकि पाठक लेखक के उद्देश्य को पूर्णतया समझ सके और उसे लेखक की भावना के अनुरूप ही ग्रहण कर सकें। इन श्लोकों के यथावत प्रयोग करने से बाल कथाओं की जीवंतता वैसे ही बनी रहती है जैसे कि मूल भाषा में लिखने के दौरान थी।

लघु कथा संग्रह भाग 2 में "परहिंसा-परद्रव्य-परदार-पराङ्मुखः।

गंगाप्याह कदागत्य मामयं पावयिष्यति।।" (33)

सर्वसहा वसुमति बसुधोर्वी वसुंधरा।

इति भूमि वर्गस्थ श्लोकम्।

अंतरिक्ष में विस्फोट में: बुद्धम् शरणम् गच्छामि।

धम्मम् शरणम् गच्छामि।

संघम् शरणम् गच्छामि। (8)

स्थाणीश्वर बिहारस्थः हर्षदेवेन प्रेरितः।

लिखामि सारिपुतोइहम् अद्भुतम् सेमहर्षणम्।।

तथागत प्रदत्तेन ज्ञानविज्ञान चक्षुषा।

मया दुष्टे महारूपम् तारका स्फोटमेवखे।। (44)

<u>6.1.9 उर्दू के शब्दों का प्रयोग</u>

हिन्दी में अनुदित की गई बाल कथाओं में अनेक शब्द उर्दू भाषा के प्रयोग किए गए हैं। ये वे शब्द हैं जिन्हें कालांतर में हिन्दी भाषा ने स्वीकार कर लिया है या वे हिन्दी की प्रकृति में ढल गए हैं। इन शब्दों के प्रयोग से अनुवाद रुचिपूर्ण एवं यथार्थ को प्रकट करते हैं। इन के माध्यम से पाठक के लिए भाषा का तालमेल एवं प्रभाव बढ़ जाता है।

भारतीय बाल कहनियाँ भाग 1 में: जहन्नुमी (74) जमात, मौलवी, दरवाज़े, शराफ़त (81) *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4* में: हिमायत, ज़हीन, तालीम, ज़हन (91) इत्मीनान, फ़िज़ूलखर्च, सख्त मुखालिफ, ख्याल, सिकंदर जहीन, किस्से-दास्तानें, मुहम्मद इस्लाम, फिल्मिस्तान, इस्लाम (99) आखिरी जुमला, चंदा मियाँ, उस्ताद, अख़लाक, लिफ़ाफ़ा, खुशामदें (104) *अचरज ग्रह की दंतकथा* में: ताल्लुक, लहजा, दफ्तर, तनख़्वाह (18) बुज़ुर्ग, खुदा, खरीद-

फरोख्त, शुक्रगुजार (46) लाल-सुर्ख़, मशविरा (58) गैरकानूनी, बुजुर्ग खिलाफ (60) *कबूतरों की उड़ान* में: खालिस उर्दू, तहज़ीब, जज्बातों, मरियम, खान बेगम, मुहाफ़िज (47) *सूरज और मोर* में: कीमती, खूबसूरत (29) ताज्ज़ुब (38) वक्त, हाज़िर, मुनादी (50) *सुकुमार राय की चुनिन्दा कहानियाँ* में: हाज़िर, फ़क़ीर, मुसाहिब (51) ईर्ष्यालु, फर्माइश, बेवकूफ़, वक्त, अंदाज (55)

6.1.10 सुविचारों का प्रयोग

पंचतंत्र एवम् हितोपदेश की कहानियाँ मूल रूप में संस्कृत भाषा में रचित हैं। प्रस्तुत शोध में इन हिन्दी में अनुदित कथाओं का अध्ययन किया गया हैं। ये सर्वविदित है कि ये कहानियाँ नैतिकता पर आधारित है। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए इन कहानियों के प्रारंभ में सुविचारों का प्रयोग किया गया है। इन सुविचारों के कारण इन कहानियों में चार चाँद लग गए हैं। ये कहानियाँ नैतिकता पर आधारित होने के कारण ये पाठक में नैतिक मूल्यों का संचार करने के साथ साथ उन मूल्यों को अपने जीवन में उतारने में भी सहायक हैं और ये उनके मनोविज्ञान को भी प्रभावित करती हैं।

लघु कथा संग्रह भाग 1 में:

"जो आकाश में उड़ता है, वह पृथ्वी तल पर गिरता है।" (12)

"कृपण भी, अकुलीन भी सज्जनों द्वारा वर्जित है। संसार में वही व्यक्ति शोभा पाता है जिसके पास धन का भंडार है।" (15)

"मार्ग में अकेला होने पर कायर भी कल्याणकारी होता है।" (19)

"महासत्त्वशाली प्राण देकर भी प्राप्त कार्य को साधे बिना लौटते नहीं है।" (32)

6.1.11 ग्राम्य शब्दों का प्रयोग

हिन्दी में अनुदित इन कहानियों में विभिन्न भाषाओं के शब्दों के साथ-साथ स्थानीय अर्थात् ग्राम्य भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है। ये शब्द स्थानीय बोलियों से

उपजते हैं। ये ग्राम्य भाषा के शब्द भाषा को रोचक बनाते हैं। जिनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

लघुकथा संग्रह भाग 2 में: कंडे (125) *सूरज और मोर* में:बीट (पखाना) (8) चटनी (तुरुम्बाय) (54) *अंतरिक्ष में विस्फोट* में: यहाँ जास्ती देर टैक्सी कड़ी नहीं करना माँगता (42)

6.1.12 वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग

आधुनिक युग विज्ञान का युग है इसलिए बाल कथाओं में वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग जहाँ तहाँ मिल ही जाता है जिनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

गोसाईं बागान का भूत में: गुरुत्वाकर्षण, स्पेसिफिक ग्रेविटी, विज्ञान (13) वाइब्रेशन, एनर्जी, एबसेंस ऑफ एनर्जी (72) मोमेंटम, वेलोसिटी (74) *वनदेवी* में: पृथ्वी, वायुमंडल, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड, ऑक्सीजन, बहु कोशिकीय (8) प्रकृति प्रवर्धन, पर्यावरण प्रवर्धन, अनुकूल, सर्वश्रेष्ठ की उत्तरजीविता (सरवाइकल ऑफ द फिटेस्ट) (21) एँजाइम, कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, चर्बी, पदार्थों, भोजन पोटली, खनिज लवण, अंकुरित पत्तियाँ, पोषक तत्व, कार्बन डाइऑक्साइड गैस, सूर्य की रोशनी, स्वादिष्ट (25) काली मिर्च, डंठल, आरोही जड़ें, परजीवी, जीवन शैली, पर्यावरण, भोजन भंडार, मिट्टी का खनिज जल, शाखाओं, पत्तियों, बाकला, कुमड़ा, कद्दू (पेठा), गुलदाउदी, तना अंतर्भूस्तारी (35) संगठक परमाणुओं, अणु संघटकों में विभाजन, क्लोरोफिल, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन (43) जंगलों के पेड़, बादलों, वर्षावन, ठंडी उमसभरी हवा, अकाल भुखमरी, जीवधारियों, बैक्टीरिया, पोषण (55) *गोट्या* में: खगोल शास्त्र, दूरबीन, मीटर वेवलेंथ (57) टेलीस्कोप, कंप्यूटर फोटोग्राफिक, सी.सी.डी., इलेक्ट्रॉनिक, सॉलिडस्टेट फिजिक्स, चार्ज कपल्ड डिवाइस, बी.टी.बी.

प्राइम फोकस (66) *अंतरिक्ष में विस्फोट* में: धूमकेतु, घटिका, शुक्र, चंद्र, आकाश, भ्रमण-कक्ष (9) क्रेबनेब्युला, क्रैब अभ्रिका, वृषभ राशि अतिथि तारा, नवाटो केनियन, रेड इंडियन (38) विश्व किरण ओजोन, अल्ट्रावायलेट, रसायनिक, वायु, खगोलशास्त्रीय (49) आयुका, इंटरयूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्टॉनोमी एँड एस्ट्रोफिजिक्स, खगोलशास्त्र, दूरबीन, मीटर बेवलेंथ (57)

6.1.13 संस्कृत के शब्दों का प्रयोग

कई कहानी संग्रह संस्कृत से अनुदित होने के कारण प्रस्तुत अनुदित बाल कथाओं में संस्कृत के श्लोकों का अनेक स्थानों पर प्रयोग किया गया है, जिनमें से कुछ उदाहरण हम पहले प्रस्तुत कर चुके हैं। लेकिन फिर भी हिन्दी में तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। इन अनुदित कथाओं में भी संस्कृत के श्लोकों के अलावा भी अन्य कई कथाओं मे संस्कृत के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, जिनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

लघु कथा संग्रह भाग 1 में वज्रवणिक (107) *लघु कथा संग्रह भाग 2* पुष्पोदभ(30) रुद्रकल्प (35) परित्राण 36 *गोट्या* में: शुभस्व शीघ्रम (19) सुकुमार *राय की चुनिन्दा कहानियाँ* में: योग्यश्चेति हासश्यासो (22) रविन्द्रनाथ का बाल साहित्य भाग-1 यत्र विश्वम्भवत्येकनीडम् (11)

6.1.14 मूल भाषा को इंगित करने वाले शब्दों का प्रयोग

प्रस्तुत बाल कथाएँ विभिन्न भाषाओं से हिन्दी में अनुदित की गई है। इन कथाओं को अनुदित करते समय हिन्दी के सभी नियमों का पालन किया गया है। लेकिन इसके साथ-साथ कहानी के मूल को भी बनाए रखने का पूरा प्रयास किया गया है। जिसमें कुछ शब्दों को मूल भाषा के रूप में ही प्रयोग किया गया है। जिसमें पात्रों के नाम

प्रमुख रूप से मूल भाषा की ओर संकेत करते हैं। लगभग सभी कथाओं में पात्रों के नाम मूल भाषा के अनुरूप ही हैं। उनके कुछ उदाहरण इस प्रकार है:

भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4 में तमिल भाषा में अनुदित कहानी दरोगा अंकल में विनायकम्, तिरुवल्लुवर (72) तमिल भाषा के नाम है। वहीं इसी कहानी संग्रह में तमिल भाषा से अनुदित कहानी बछड़ा में मट्टू पोंगल व जल्लिकट्टू (77) तमिल भाषा के हैं। *जंगल कथा* कहानी संग्रह स्पेनिश भाषा से अनुदित है। जिसमें वही की भाषा के शब्दों का प्रयोग किया गया है। कोरल वाइपर फ्लामेन्को (19) लापाचो, केब्राचो (26) ताबानो, ऊरा (34) गार्सा,ताकुआरा, गामीता (37) कासकारूदोस, कोआती, पारागुआई, मिसियोनेस, तुकान, तोरतोला(39) अंग्रेजी भाषा से अनुदित कहानी संग्रह *अचरज ग्रह की दंतकथा* में डैन्डेलियन, तानपापो, बटरबर, सुकी-नो-टु (40) मराठी भाषा से अनुदित बाल उपन्यास *पक्या* के पात्रों के नाम मराठी भाषा को इंगित करते हैं: खंड्या, पक्या (50) ऐसी ही एक अन्य कहानी संग्रह खांसी भाषा से अनुदित *जलपरी का मायाजाल* में फंसा, फेरी पात्रों के नाम खांसी भाषा की ओर इंगित करते हैं। पृष्ठ 6 में कांटा (बंसी) तथा पृष्ठ 7 में नप (बड़े-बड़े सूखे पत्तों को बांस से बांधकर छाते की तरह बनाया जाता है) खांसी भाषा के मूल शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार एक अन्य कहानी संग्रह *सूरज और मोर* खांसी भाषा से अनुदित है में: दु, तांग, रैम, जयंतिया जोवाई शहर (35) मिण्टदु नदी, मितांग नदी, ऊमरेम नदी, मुखहलाई वाह जाजेर, नारटियाँग, नंगजीभजी, शांगपुंग (37) लौ रीनडो, वाईकिरवाय, ली मछली(38) खासी जाति, चेरापुंजी, सुईदन्ह(41) माटुर मास्कट, किल्लोंग(56) मोराई गुफा, लाईटकर (71) क्षेत्रीयता को दर्शा रहे हैं। जापानी भाषा से अनुदित कहानी संग्रह *जापान की कथाएँ* में पात्रों के नाम: लोकाअमाहारा, अमेनोमिनाकानुकि, इजानागि, अमेनोहोको, आवाजि(9) सिकोकु, जुसिओ,

संश्योहायू, गासामिचि, क्योटो, ओएयामा, तम्बा, जापान, मिनामोटो राइको (58) आदि वहाँ के स्थानों के नाम मूल भाषा जापान के ही प्रयोग किए गए हैं। क्योंकि मूल भाषा के शब्दों का प्रयोग न करने पर इन कहानियों का मूल ही खत्म हो जाता है।

6.1.15 सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग

सम्मान सूचक शब्द वे शब्द होते हैं जब किसी को भी सम्मान देने के लिए उनके नाम के आगे या पीछे कुछ सम्मानीय शब्दों को जोड़कर बोला जाता है। जैसे डॉक्टर या मास्टर को डॉक्टर साहब या मास्टर साहब। किसी के नाम के साथ श्री, श्रीमान, श्रीमती जोड़कर या फिर बाबू आदि शब्दों का प्रयोग करके भी सम्मान दिया जाता है। जिससे बोलने में सुनने वाले को वह भाषा सम्मानीय लगती है। ऐसे ही शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर अनुदित कहानियों में भी किया गया है। जिनमें से कुछ इस प्रकार है:

हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संपादित कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियां भाग 1* में निकुंज बाबू (40), विनय बाबू, मिस्टर भौमिक (41), पूज्य पिताजी (50), शूरवीर, साहसी, चतुर जतिन (72), *भारतीय बाल कहानियां भाग 2* में शाबाश (47) सुकुमार राय चुनिंदा कहानियां में मास्टर साहब(9), हेड मास्टर साहब(12), मास्टर साहब (13), योगेश बाबू (18), पंडित जी(22), डॉक्टर साहब(28) हारान बाबू(73) आदि ।

6.1.16 ग्लानि सूचक शब्दों का प्रयोग

गलानी सूचक शब्दों में होते हैं जिनमें किसी भी इंसान को कोई गलत काम करने पर या फिर किसी गलत कार्य करने का एहसास होने पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इन अनुदित कहानियों में भी अनेक स्थानों पर ग्लानि सूचक शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिनमें से कुछ इस प्रकार है:

भारतीय बाल कहानियां भाग 1 में नफरत (18), थर थर काँपता(20), आंसू पोंछते हुए, पछतावे (87),तिल मिलाकर(86) *भारतीय बाल कहानियां भाग 2* में ओह गोड (32), पश्चाताप (25), *सुकुमार राय की चुनिंदा कहानियां* में छी: छी: छी: (35), बाप रे बाप! बाप रे बाप! (36), गिड़गिड़ाना (64) *भारतीय बाल कहानियां भाग 4* में हूं हूं (63), रोने लगी (25), क्षमा करना (27), पछतावा (34)

6.1.17 वैमनस्य सूचक शब्दों का प्रयोग

जब किसी भी प्राणी का किसी से झगड़ा हो जाता है, जब कोई भी दो प्राणियों के बीच किसी बात को लेकर असहमति होती है या फिर कोई किसी की बात पर विरोध करता है या किसी भी दो प्राणियों के बीच में मतभेद या अनबन हो जाती है तो उसे वैमनस्य कहते हैं। वैमनस्य प्रकट करने वाले शब्दों को वैमनस्य सूचक शब्द कहते हैं। इन अनुदित कहानियों में भी अनेक स्थान पर इस तरह के शब्दों का प्रयोग किया गया है जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

भारतीय बाल कहानियां भाग 1 में आग बबूला (20), बेरहमी, गरजकर(89) , हैवान (7), दांत पीसकर (6), *भारतीय बाल कहानियां भाग 2* में अपमान, भय(60), राग द्वेष (50) *बुलबुल की किताब* में काट डालो(11), नाराज होकर, बदतमीजी(18), बेवकूफ(20) आदि।

6.2 शैली

शैली न सिर्फ कथानक में जान फूंक देती है बल्कि एक लेखक को भी श्रेष्ठ लेखक बनाती हैं। लेखक का सामान्य विचारों को प्रस्तुत करने का तरीका या ढंग ऐसा होता है कि वह पाठक के द्वारा कथानक को आत्मसात कर लिया जाता है परंतु यदि शैली उपयुक्त नहीं है या निम्न स्तर की है तो श्रेष्ठ कथानक भी पाठक को आकर्षित नहीं कर पाता है। शैली किसी लेखक की भाषा संबंधी विशेषताओं या व्यक्तिगत योग्यताओं का प्रतिबिंब होती है।

श्रीमती ओम शुक्ला अपनी पुस्तक *हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास* में शैली को परिभाषित करते हुए कहती है:

> 'शैली का सम्बन्ध साहित्यकार के व्यक्तित्व से है, वहीं दूसरी ओर इसका संबंध भावाभिक्ति एवं भाषा के विशिष्ट परिधान से भी है। शैली के इन दोनों गुणों के सम्बन्ध में श्री मिलटन मरे ने कहा है " शैली से अभिप्राय उस विशिष्ट एवम् वैयक्तिक अभिव्यक्ति के ढंग से है, जिससे हम किसी लेखक को पहचान लेते हैं।" (32)

अलग-अलग रचनाओं में रचनाकारों ने विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। डॉ. भालचंद्र गोस्वामी 'प्रखर' अपनी पुस्तक *कहानी दर्शन: एक विवेचनात्मक अध्ययन* में इस मत का समर्थन करते हुए कहते हैं:

> प्रत्येक लेखक अपनी साहित्यगत वस्तु को अपने ढंग से व्यक्त करता है, इसी कारण समग्र साहित्य की एक निश्चित शैली नहीं हो सकती, प्रत्येक लेखक की शैली भिन्न होती है। शैली की यह भिन्नता शब्द संकलन, वाक्याशों का प्रयोग, वाक्यों में शब्दों का स्थान, क्रियापदों का चुनाव, वाक्यों अथवा शब्दों की ध्वनि तथा समुच्चय अर्थात् वाक्य में किस बात पर लेखक विशेष बल देना चाहता है आदि कई बातों को लेकर होती है। (101)

श्री प्रखर जी के मतानुसार हर लेखक की शैली अलग-अलग होती है। यह अलग शब्द प्रयोग, वाक्य प्रयोग, वाक्यभेद, शब्द, ध्वनि आदि को लेकर होता है। प्रस्तुत शोध में प्रयोग की गई अनुदित पुस्तकों मे अलग- अलग स्थानों पर विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया गया है। जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं-

6.2.1 चित्रात्मक शैली

समस्त घटनाक्रम का बिम्ब जब पाठक के सामने, उसकी आंखों के समक्ष घूमने लगता है, जब पाठक और रचना के एकाकार होने में कम समय लगता है तब वह

चित्रात्मक शैली कहलाती है। उषा सक्सेना अपनी पुस्तक *हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास* में चित्रात्मक शैली को परिभाषित करते हुए कहती हैं: "शिल्प की दृष्टि से चित्रात्मक शैली वही सफल है जिसका चित्र यथार्थ तथा सजीव प्रतीत हो।" (111)

सुरेश सिन्हा अपनी पुस्तक *उपन्यास: शिल्प और प्रवृतियाँ* में चित्रात्मक शैली को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

> जिसमें उपन्यासकार एक फोटोग्राफर का रूप धारण कर लेता है और किसी स्थान-विशेष के रीति-रिवाजों, संस्कृति, सभ्यता, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों, धार्मिक रूढियों, प्रगतिशील तत्वों, नारी और पुरुष की दृढ इच्छाओं, उद्देश्यों, संघर्षों, पराजय एवं विजय, अतृप्त इच्छाओं एवं वासनाओं आदि के स्नैप-शॉट प्रस्तुत करता चलता है, चित्रात्मक शैली कहलाती हैं। (60)

इन अनुदित कथाओं में भी अनेक स्थानों पर इस शैली प्रयोग किया है। *गोंसाईं बागान का भूत* उपन्यास में जंगल के दृश्य का इतने सुन्दर तरीके से वर्णन किया है कि सब कुछ सजीव हो उठता है:

> उसने देखा एक सुन्दर बगीचे में वह खड़ा था। चारों तरफ़ ढेरों फूल खिले हुए थे, मीठी सुगंध फैली हुई थी। पेड़ों पर कोयल, मैना, गौरैया आदि चिड़ियाँ बोल रही थीं। फूलों पर नन्हीं तितलियाँ की तरह परियाँ उड़ती फिर रही थीं। वहाँ एक छोटी नदी कलकल करती हुई बह रही थी। पक्के घाट पर एक रंगीन नाव बँधी हुई थी। वहाँ की सारी चीजें छोटे-छोटे खिलौनों की तरह थीं। लेकिन सब बड़ी सुन्दर लग रही थीं। वहाँ के आकाश का रंग हरा था। रंग के डिब्बे में जितने तरह के रंग होते हैं, उतने तरह के विभिन्न आकार के रंगों वाले बादल आसमान में तैर रहे थे। कोई-कोई बादल बहुत नीचे आकर लगभग सिर को

छूता हुआ गुज़र जाता था। उन बादलों पर बैठने की छोटी-छोटी खूबसूरत गद्दियाँ थीं। (65)

एक अन्य कहानी *बिल्ली हाउसबोट पर* में कश्मीर के एक टापू का वर्णन में इसी शैली का प्रयोग किया है: "यह एक बहुत छोटा-सा टापू था। जिसके एक किनारे पर विलो के पेड़ उगे थे। वहीं उनकी 'स्टार ऑफ कश्मीर' हाउसबोट टोहकर लगा दी गयी थी। दूसरे तट पर छरहरे, ऊँचे-ऊँचे चिनार के तीन पेड़ थे।" (9) *जंगल कथा* कहानी संग्रह में न सिर्फ शब्दों के माध्यम से चित्र प्रस्तुत किए गए हैं बल्कि चित्रों को इस में स्थान देकर सोने पर सुहागा का काम कर रखा है। इसमें पृष्ट संख्या 13,19,23,30,35,43,49,57 पर चित्र प्रस्तुत करके चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। जलपरी का मायाजाल नामक उपन्यास में विवरणात्मक शैली के साथ-साथ अनेक चित्र पृष्ठ संख्या 8,12,21, 25,28,39,42 में प्रस्तुत करके चित्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है।

अतः इन कथाओं में चित्रात्मक शैली का अद्भुत समावेश हुआ है जो पाठक को बिम्बात्मक रूप की अनुभूति से उन्हें रोमाँचित एवं जिज्ञासु बना देती है।

6.2.2 किस्सागोसाई शैली

प्राचीन काल में किसी भी कथा को मौखिक रूप से प्रस्तुत किया जाता था। मनोरंजन के साधनों के अभाव के कारण शाम को लोग अपने आप से कोई भी बात जोड़ कर एक दूसरे के सामने कहकर अपना व दूसरों का मनोरंजन करते थे। अगर किसी को वो बात ज्यादा अच्छी लगी तो वह उस बात को एक दो जगह और बढ़ा चढ़ाकर कह देता था, जिससे वह किस्सा बन जाता था। इन कहानियों को लोक कथाओं के नाम से भी जाना जाता है। इन किस्से कहानियों के माध्यम से बच्चों को नीतिगत शिक्षा देने का प्रचलन रहा है। बच्चों के लिए यह शैली सर्वाधिक रुचिपूर्ण एवं मनोरंजक होने के

साथ-साथ उनके मानसिक विकास में भी सहायक है। हरिकृष्ण देवसरे अपनी पुस्तक *हरिकृष्ण देवसरे का बाल साहित्य* में कहते हैं:

> मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो बच्चों को कहानी सुनाना उनके मानसिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इससे उनकी कल्पनाशीलता को बल मिलता है। यही कारण है कि बच्चों को कहानी सुनाने की परम्परा विश्व की सभी सभ्यताओं में और समाजों में मिलती है। यह परम्परा लोक कथाओं के रूप में हजारों सालों से चली आ रही है। इसके माध्यम से प्रत्येक समाज अपनी परम्पराओं, मूल्यों और आदर्शों को भावी पीढ़ी में सम्प्रेषित करता रहा है। हर भाषा के इतिहास में कहानी सुनाने की परम्परा का उल्लेख मिलता है। (246-247)

प्रस्तुत अनुदित बाल कथाओं में *दादा और पोता* कहानी संग्रह कुल 29 किस्सों का संग्रह हैं, जिसमें संपूर्ण पुस्तक में किस्सागोंसाई शैली का प्रयोग किया गया है। इस कहानी संग्रह में दादा अपने पोते को इन किस्सों के माध्यम से बड़ी से बड़ी सीख को भी सहज तरीके से प्रस्तुत करके उसे शिक्षा देता है तथा उसे अच्छी बातें किस्सों के माध्यम से बताता है जिसे उनका पोता रुचिपूर्ण होने के कारण अच्छे से सुनता भी है और उसे अपने जीवन में लागू करने का कारण भी देता है इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

दादा, “मुझसे वादा कर। डरकर या मजाक में भी कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। झूठ के समान पाप नहीं होता। सच के बराबर पुण्य नहीं होता। आज से मेरे बच्चे, तू कभी झूठ मत बोलना। तूने वादा किया है, इसीलिए अब मैं तुझसे नाराज़ नहीं हूँ। आओ, अब क़िस्सा सुनाता हूँ।” (37)

इसी पुस्तक में एक अन्य स्थान पर पन्द्रवें किस्सें में: ” दादा, “बाहरी पोशाक देखकर किसी की पहचान नहीं की जा सकती। संन्यासी या फ़क़ीर की पहचान करना और

कठिन है। इसीलिए अच्छी तरह परखने के बाद ही ऐसे लोगों की ख़ातिरदारी करनी चाहिए। एक संन्यासी का क़िस्सा है। कहता हूँ, सुन... "(60)

अत: किस्सों के माध्यम से बड़ी से बड़ी सीख को भी आसानी से समझाया जा सकता है।

6.2.3 संवादात्मक शैली

जब दो या दो से अधिक लोगों के बीच आपस में वार्तालाप या सीधे भावों का आदान-प्रदान होता है तब हम उसे संवाद कहते हैं और जब साहित्य में इस शैली का प्रयोग किया जाता है, तो उसे संवादात्मक शैली की संज्ञा दी जाती है। इन अनुदित कथाओं में इस शैली का बहुतायत मात्रा में प्रयोग किया गया है। संवाद जितने छोटे व सरल भाषा में होंगे, पाठक उतनी ही सहजता से उसे आत्मसात कर पाता है। कहानी को सफल बनाने के लिए संवाद, पात्रों व कहानी के कथानक के अनुकूल होने चाहिए। तभी कहानी की सफलता निश्चित होती है। प्रस्तुत बाल कथाओं में अनेक स्थानों पर कथानक के अनुसार संवादों का प्रयोग किया गया है। भाषा बाल पाठकों के मानसिक स्तर के अनुकूल व आम बोलचाल वाली है।

राधा दीक्षित द्वारा रचित पुस्तक *रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन* में संकलित योगेश गोकुल के अनुसार:

> दो या अधिक पात्रों के बीच हुई बातचीत के माध्यम से कथा को प्रस्तुत करना वार्तालाप या संवाद शैली है। कथ्य को गतिशील बनाने तथा चरित्रों के कार्यकलाप को स्पष्ट करने में संवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। संवाद छोटे-बड़े, गम्भीर-रोचक पात्र-प्रसंग, भाव तथा विषय के अनुरूप कई प्रकार के होते हैं। (9)

इन अनुदित कहानियों में अनेक स्थानों पर इस शैली का प्रयोग किया गया है:

जंगल टापू कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में गीतात्मक शैली के साथ साथ संवादात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है। अलविदा, जंगल टापू कहानी में:

> बूढ़े खरगोश ने पूछा, "रब्बू, रब्बू, तू आज चुप क्यों है?"
>
> "बाबा, क्या जंगल टापू में मेरे-जैसा कोई दूसरा जानवर नहीं है?"
>
> "नहीं बेटा, यहाँ तेरे-जैसा कोई भी नहीं है।"
>
> "वे कहां मिलेंगे।"
>
> मैंने कौओं से सुना है कि तुम्हारे-जैसे जीव तो बाहर वाले जंगल में होते हैं।"
>
> "बाहरवाला जंगल कहाँ है।" (53)

इसी तरह एक अन्य कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 2* में संकलित कहानी अगले दिन में सुला और मखने की पढ़ाई से दूर भागने व उसके बाद मिलने वाली सजा को संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है:

> कल यानी अगले दिन 'प्रार्थना' के बाद जब बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं में जाने लगे, चौथी श्रेणी के सुले ने मखने से कहा, "नीलकंठ का पहाड़ा याद किया?"
>
> "नहीं तो तूने याद किया?"
>
> "किया था, पर याद ही नहीं आता।"
>
> "अब क्या होगा! वह तो यमदूत है!" मखने का चेहरा नीला पड़ गया।
>
> सुला निश्चिंतता की हँसी हँसा। फिर उसने चुपके से कोई चीज़ मखने के हाथ में दी, "ले इसे हाथों पर मल ले।"
>
> "क्या है?" भेड़ की चर्बी। हाथों पर मल लोगे तो फिर 'कैनिंग' से कुछ भी नहीं होगा।"
>
> "वो तो मैं अपने हाथों पर पहले से मल रहा हूँ।" (89)

लघुकथा संग्रह भाग 2 में संकलित अनुभव कहानी संवादात्मक शैली में लिखी गई है, जिसमें निशिथ, चित्रा व कुमुदिनी के मध्य का संवाद इस प्रकार प्रस्तुत किया है:

निशिथ: आपको देखकर प्रसन्नता हुई।

चित्रा: आपसे भी अधिक हमें हुई।

निशिथ: तो आइये। हिम दुग्धधवल रात्रि में हम नौका विहार का आनंद लें।

कुमुदिनी: अभी देर हो रही है। हमारी अध्यापिका क्रोधित होंगी। अभी हम जा रहे हैं। फिर यही मिलेंगे।

सुधांशु: ठीक है ऐसा ही करेंगे। (114-115)

भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4 में संकलित कहानी वह आ रहा है में भी संवादात्मक शैली का प्रयोग किया गया है:

थोड़ा ठहर कर सोलन हरिण ने पूछा, "अजगर दादा! यह जंगल को क्या हो गया? क्या सचमुच हम सब मारे जाएँगे?"

एक लंबी साँस छोड़कर अजगर ने कहा, हाँ, हम सब मारे जाएँगे?"

"पर ? कौन मारेगा हम सबको?" चंपू हंस ने पूछा।

"वह मारेगा हम सबको, वह आ रहा है।" यह कहते-कहते अजगर दादा डर से काँप उठे। (40)

वहीं इसी कहानी संग्रह में संकलित कहानियाँ मरजानी, रूपा व अनोखी परीक्षा सभी संवादात्मक शैली में लिखी गई हैं।

<u>6.2.4 आत्मकथात्मक शैली</u>

आत्मकथात्मक शैली का शाब्दिक अर्थ है- आत्मकथा की शैली में लिखा हुआ। यह शैली 'स्व' की अभिव्यक्ति करने का माध्यम है। जब किसी कथा का आत्मचरितात्मक, आत्मपरक व आपबीती घटना के रूप में विस्तार किया जाता है, तो आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इस शैली में लिखी गई कथाओं में एक पात्र की ओर से संपूर्ण कथा कही जाती है।

हरिकृष्ण देवसरे अपनी पुस्तक *बाल साहित्य : रचना और समीक्षा* में कहते हैं:

> इस शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि सारी बातचीत प्रथम पुरुष के रूप में होती है। विषय का विवेचन रोचक होने के साथ-साथ बोधगम्य भी होता है। बच्चे इस शैली की पुस्तकें पढ़कर चर्चित विषय अथवा पात्रों से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं।... ऐसी आत्मकथा शैली वाली पुस्तकें बच्चों की कल्पना शक्ति भी बढ़ाती हैं। जिन वस्तुओं, जीव-जंतुओं या स्थानों से परिचित होते हैं, उनकी कथा उनके ही मुख से सुनकर बच्चे जिस कल्पनालोक का निर्माण करते हैं वह बहुत दिलचस्प और अनोखा होता है। कल्पना की ये ऊँचाइयाँ उन कविताओं में भी होती है जिन्हें आत्मकथा शैली में रचा गया है।" (208)

प्रस्तुत अनुदित कथाओं में अनेक स्थानों पर इस शैली का प्रयोग किया गया है जिसमें से कुछ के उदाहरण इस प्रकार हैं :

> *लघु कथा संग्रह भाग 2* में संकलित कहानी सर्वसहा आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है: मैं जब पाठशाला में पढ़ने के लिए गया तो गुरु महानुभाव ने मुझे अमरकोश याद करने के लिए कहा। मैंने भी ज्ञान और दया के सिंधु गुरु के आदेश को मानकर तोते की तरह श्लोक रटना आरंभ कर दिया, परंतु मैं उनका अर्थ नहीं समझ पा रहा था। एक बार मन में यह भाव आया कि श्लोक याद करने में अर्थ भी जाना जाए तो रसबोध अच्छी तरह होने लगेगा।(59)

इसी कहानी संग्रह में संकलित एक अन्य कहानी हाट-बाजार में भी आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया गया है:

> एक दिन बीज बोने के समय खेत सींचने जब मैं गया, तब मैंने अपने खेत में दो-तीन हाथ मिट्टी पड़ी देखी। 'यह उस धनिक का ही काम है' यह सब जानकर मैं उसके पास जाकर बोला, आर्य, यह अन्याय है। कृपया आप हमारे खेत से वह मिट्टी हटाइये।' इस प्रकार मैंने उससे प्रार्थना की। लेकिन वह उपेक्षापूर्वक बोला,

"आज संभव नहीं है।... बहुत जरूरी है तो खेत बेच दो। जितना चाहोगे उतने रुपए मैं दे दूंगा।" (82)

इसी कहानी संग्रह में संकलित एक अन्य कहानी सुकन्या में भी आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया गया है:

इसी बीच मुझे आवाज सुनाई पड़ी। मैंने उधर देखा तो पाया कि थोड़ी ही दूर एक पेड़ के नीचे कोई आकृति खड़ी है। यह कैसी आकृति है, यह सोच-सोचकर मेरे मन में तर्क-वितर्क होने लगे। मेरे पैर वहीं जम गये। अभी अकेला शस्त्ररहित था, इसलिए अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए मैं धीरे-धीरे पैर उठाकर वहाँ गया तो मैंने एक स्त्री को खड़े पाया। (130)

<u>6.2.5 खंडों में विभक्त शैली</u>

जब एक ही कथा को विभिन्न खंडों या भागों में विभक्त करके प्रस्तुत किया जाता है तो वह शैली खंडात्मक शैली कहलाती है। इसमें कहानी के अलग-अलग संदर्भों को भिन्न-भिन्न भागों में विभक्त कर लिखा जाता है। लेकिन ये खंड एक उचित क्रम में विभक्त होते हैं तथा एक दूसरे से संबंधित होते हैं। इन अनुदित बाल कथाओं में भी कई कथाओं को कई खंडों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है, जिनमें से कुछ के उदाहरण इस प्रकार हैं:

लघुकथा संग्रह भाग 2 में सर्वसहा कहानी को एक, दो, तीन, चार, पांच भागों में विभक्त कर के प्रस्तुत किया गया है।(59-65), *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग 1* में संकलित कहानी ओल-लक-वी को सात खंडों- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार में विभक्त करके इस शैली का प्रयोग किया गया है।(155-166), *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग 2* में संकलित कहानी टावर का पहरेदार -ओले को चार भागों में पहली मुलाकात, दूसरी मुलाकात, तीसरी मुलाकात, चौथी मुलाकात में विभक्त किया गया है,

जिसमें इस शैली का प्रयोग किया गया है।(162-173), इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर बर्फ की रानी की सात कहानियाँ को सात कहानियों में विभक्त कर के प्रस्तुत किया गया है इसलिए यह कहानी सात भागों में विभक्त होने के कारण खंडात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।(116-149), एक अन्य कहानी संग्रह *गोट्या* भी गोट्या नामक बालक की कहानी है, लेकिन इसे अनेक भागों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है। *अंतरिक्ष में विस्फोट* कथा संग्रह तीन अलग-अलग समयावधि को दर्शाने वाली तीन भागों में विभक्त उपन्यास है। इसमें खंडों में विभक्त शैली के साथ-साथ संवादात्मक व कई स्थानों पर विवरणात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है। बाल उपन्यास *पक्या* को भी कई खंडों में विभक्त करके प्रस्तुत किया है। इसमें इस शैली के अलावा विवरणात्मक व संवादात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है। *जापान की कथाएँ* कहानी संग्रह में संकलित कहानी इक्कू की कहानियाँ जैसा कि नाम से ही प्रतीत हो रहा है में खंडात्मक शैली का प्रयोग किया है इक्कू की कहानियों को विभिन्न खंडों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है।(27), *वनदेवी* कथा संग्रह को भी कुल 18 भागों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है जो कि खंडों में विभक्त शैली में लिखी गई है।

6.2.6 लोककथात्मक शैली

लोककथा सामाजिक परिदृश्य का एक सरल, सहज और साधारण शब्दों में अभिव्यक्त की हुई वह कहानी है, जो बच्चों को न सिर्फ लुभाती है बल्कि उसे समाज से परिचित करवाती है। इन कथाओं में अक्सर राजा-रानी, कभी-कभार जंगल के प्राणियों को भी लोक कथाओं में स्थान दिया जाता है, जो कि एक बालक के लिए प्रेरणा स्रोत होती है। वह बालक इन कथाओं के माध्यम से वर्तमान समाज की संरचना को समझने का प्रयास करता है और उस अंतर को समाप्त करने की कोशिश करता है, जिसे वह

लोककथा व वर्तमान के बीच पाता है। यहाँ अनुदित बाल कथाओं में से *नेपाली लोक कथाएँ भाग 1, नेपाली लोक कथाएँ भाग 2, हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग 1 और भाग 2, ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग 1 और भाग-2, बुलबुल की किताब* में संकलित कहानियों में लोककथात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

6.2.7 काव्यात्मक शैली

जब कोई रचनाकार या कथाकार अपनी कथा में सौंदर्य, प्रभावोत्पादकता व मार्मिकता का संवर्धन करना चाहता है तो वह उसमें बीच-बीच में काव्य पंक्तियों, कवितांशो, श्लोकों, गजलों के शेर आदि का यथासंभव उल्लेख करता है, ताकि रचना अधिक पठनीय, माननीय, रोचक, सरस व आल्हाद- प्रदारक बन जाए। इस शैली को काव्यात्मक शैली कहते हैं। प्रस्तुत कथाओं में विभिन्न स्थानों पर इस शैली का प्रयोग किया गया है:

जंगल टापू कहानी संग्रह एक तरफ कई खंडों में विभक्त होने के कारण खंडात्मक शैली का प्रयोग किया गया है, वहीं जगह-जगह कविता की पंक्तियों के प्रयोग के कारण काव्यात्मक शैली का प्रयोग भी किया गया है :

गोलू-मोलू, झबरे भालू यई, यई, यई।
नटखट निखट्टू, भालू यई, यई, यई।
दढ़ियाल मोटू भालू यई, यई, यई। (8)

एक अन्य स्थान पर:

"लुक छिप जाना, मकई का दाना
बाँट के खाना, छुप जाओ आलओ, भोलओ।
छोटू खरगोश आया रे।" (17)

एक अन्य स्थान पर:

"मैं आसमान से गिरा रब्बू, बंदरिया मेरी माता।

मैं आसमान से गिरा रब्बू, खरगोश मेरा पिता।" (57)

हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग 1 में संकलित कहानी सफर का साथी में विवरणात्मक शैली के साथ साथ गीत गाकर काव्यात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है।

"यहाँ बहुत-सी सुन्दर लड़कियाँ हैं नाचने के शौक वाली

देखो कैसे घूमती हैं, चरखे-सी और आती हैं वापस

मुड़ों मेरी प्यारी, जब तक गिरे न जूते का तला तुम्हारा।" (94)

वहीं एक अन्य कहानी में:

गीत को बढ़ने दो तेज़ हवा की तरह,

उनके लिए जो जुड़े हैं आज के दिन।

हालाँकि वे यहाँ खड़े हैं अंधों-से गुम सुम।

क्योंकि वे दोनों ही हैं बड़े निर्मम

हुर्रा .. हुर्रा हालाँकि वे हैं बहरे और अंधे

गीत को बढ़ने दो तेज़ हवा की तरह ।" (163)

गोंसाई बागान का भूत में

प्रथम वंदना करहुँ देवमहेश्वर।

फिर करहुँ वंदना देव चराचर ॥

फिर मैं पूजूँ वाग्देवी के चरन।

मात- तात चरणों में सर्व प्राण- मन ॥

उत्तर में हिमालय दक्षिण में वन।

इसके बीच गाँव- शहर अनगिन॥

क़स्बों में श्रेष्ठ भैटागुड़ी बागान ।

जहाँ विराजे श्री हाबू पुण्यवान ।। (52)

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग 1 में संकलित सिंड्रेला नामक कहानी में कविता की लाइनों का प्रयोग करके काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

पीछे देखो, पीछे देखो,

जूते पर है ख़ून लगा,

जूता तो है ठीक नहीं

ये लड़की तुम्हारी बीवी नहीं ।" (33)

एक अन्य कहानी तीन पक्षी में भी काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है:

मरने को तैयार हो जाओ,

दुनिया से सदा के लिए जाओ।

इन सुन्दर-सुन्दर फूलों जैसे

ऐ बहादुर बच्चे, तुम ठीक तो हो ?" (39)

एक अन्य कहानी संग्रह *ग्रिम बंधुओं की कहानी भाग 2* में संकलित कहानी हिमानी में भी काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

अब जब रानी ने दर्पण से पूछा-

"दर्पण, दर्पण बोलो दर्पण,

कौन है सबसे सुन्दर ?"

दर्पण बोला-

"रानी पहले आप थीं सबसे सुंदर,

अब है हिमानी सबसे सुन्दर ।" (22)

बुलबुल की किताब कहानी संग्रह में संकलित कहानियाँ बुलबुल और राजा (11), बुढ़िया और बगुला (20) चिड़िया और कौवा में भी काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

सूरज और मोर कहानी संग्रह में विवरणात्मक शैली के साथ-साथ कहीं-कहीं संवादात्मक शैली के भी दर्शन हो जाते हैं। इसी कहानी संग्रह में संकलित कहानी सूरज और मोर में काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है।

मोर, प्यारे मोर, तुम उछलते नाचते हो,

सूर्य देख, खुशी से अपने पंख फैला देते हो, क्यों ऊपर नीचे भाग रहे?

क्यों आँखमिचौनी खेल रहे?

क्यों तुमने सूर्य को इतना दुःख पहुँचाया?

प्यार की ख़ातिर उस ने अपनी आँखों से आँसू टपकाया। (34)

उपर्युक्त कथाओं का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत अनुदित कथाओं में अनेक स्थानों पर काव्य की लाइनों का प्रयोग करके काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

6.2.8 पत्रात्मक शैली

जब किसी कथा में पात्र अपने विचार प्रत्यक्ष न प्रस्तुत कर के चुने हुए कुछ पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता है तो वहाँ पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। पत्रात्मक शैली नई प्रकार की शैली है। इन अनुदित कथाओं में भी अनेक कथाकारों ने इस शैली का प्रयोग किया है:

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य भाग-1 में संकलित भानुसिंह की पत्रावली की पाँचवी चिट्ठी में पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है:

आज इससे अधिक कुछ लिखने का समय नहीं है, —-क्योंकि आज तीन बजे की गाड़ी से रवाना हो जाना है। यों तो गाड़ी पकड़ना चूक जाने में मैं इतना कुशल हूँ कि बड़े-बड़े दंग रह जाएँ, मगर वह कुशलता आज मेरे लिए सुभीते की चीज़ साबित नहीं होगी। इसलिए यह लो, तुम्हें नये वर्ष का आशीर्वाद देकर मैं टिकट लेने को यह दौड़ा। इति। (19)

एक अन्य स्थान पर भानुसिंह की पत्रावली की तीसरी चिट्ठी में भी पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है:

> तुम्हारा खयाल है कि मजे की बातें सिर्फ तुम्हारे स्कूल में ही हुई। इसीलिए तुमने पुरस्कार बाँटने के दिन की मजेदार बातों का चिट्ठा मेरे पास लिख भेजा है ! है न ? लेकिन मुझसे हार मनवा लेना इतना सहज काम नहीं है। मजे की एक से एक बातें हमारे यहाँ भी होती हैं और काफी ज्यादा-ज्यादा ही होती है। (49)

एक अन्य रचना पोत्री श्री नंदिनी के नाम (पत्रसंख्या तीन) में भी पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है:

> पुपुमणि,
>
> मैं जहाँ हूँ, वहाँ की बात तुम सोच भी नहीं सकोगी। बहुत बड़ा मकान है, शानदार बाग़ है, दूर-दूर जहाँ तक भी नज़र जा पाती है, बड़े-बड़े पेड़ों के जंगल हैं। आसमान पर बादल छाये हैं, बड़े कड़ाके की ठंड पड़ रही है। .....
>
> ..... बादल अब बहुत-कुछ छँट गये हैं, - धूप निकल आयी है, पेड़ों की डालें हवा में डोल रही हैं और पत्ते झिलमिल झिलमिल चमक उठे हैं, और न जाने कितनी तरह की चिड़ियाँ गा रही हैं। इन चिड़ियों को मैं पहचान नहीं सका हूँ। आज और कुछ लिखने का समय नहीं रह गया है । इति
>
> २० सितम्बर सन् १६३० - - दादाजी (60-61)

अत: हम कह सकते हैं कि यहाँ पर पत्रात्मक शैली का सफल प्रयोग किया गया है।

<u>6.2.9 विवरणात्मक शैली</u>

विवरणात्मक शैली का अर्थ है: किसी भी कथा का वर्णन विस्तार से प्रस्तुत करने का ढंग। इस शैली के द्वारा जीवन के विस्तृत क्षेत्र का चित्रण, विवरण रूप में अर्थात् विस्तार रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली में लेखक अपनी कथा का माध्यम

जीवन के किसी भी क्षेत्र को बना सकता है। इससे घटनाओं का बाहुल्य, पात्रों का आधिक्य, लंबे संवाद आदि अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। इसमें पात्रों को अंतर्द्वंद चित्रण की आवश्यकता नहीं होती। लेखक अपनी ओर से घटना का वर्णन करता है। हिन्दी में अनुदित कथाओं में अनेक स्थानों पर इस शैली का प्रयोग किया गया है। *गोंसाईं बागान का भूत* उपन्यास इसी शैली में लिखा गया है। इसमें हेडमास्टर सचिन के बारे में वर्णन किया है:

> हेडमास्टर सचिन सरकार बरीसाल के रहने वाले थे। वे जितने रोब-दाब वाले थे उतने ही क्रोधी थे। मगर वे अपने विद्यार्थियों को बिल्कुल नहीं पीटते थे। लेकिन अपने कमरे से निकलकर उनके बरामदे में खड़े होते ही स्कूल में सुई गिरने की आवाज़ सुनाई देने वाला सन्नाटा छा जाता था। अपने स्कूल के हर विद्यार्थी को वे अच्छी तरह जानते थे, उन सबके नाम-धाम, आचार-व्यवहार, स्वास्थ्य वगैरह की सारी बातें उन्हें मुँहजबानी याद रहती थीं। (5)

इसी उपन्यास में एक अन्य स्थान पर हाबू के बारे में विस्तार से बताया गया है:

> जब हाबू कुल चौदह बरस का ही था तब वह अपने पिता के संदूक से लगभग पाँच हजार रुपये और माँ के गहने चुराकर घर से भाग गया। उस शोक में दासू ज़्यादा दिनों तक जिंदा नहीं रहा। दो साल बाद हाबू की माँ ने भी आँखें मूँद लीं। इसके कई साल बाद अपने कुछ गुंडे-बदमाश चेलों सहित लौटकर हाबू ने गोसाईं बागान में डेरा जमा लिया। उसका चेहरा बेहद भारी-भरकम हो गया था। उसकी दोनों आँखें हमेशा लाल रहतीं। किसी की रत्ती भर भी परवाह नहीं करता था। कभी किसी को पीट देता, किसी को पकड़ कर उसका सारा रुपया-पैसा छीन लेता। उसके आने के बाद से कस्बे और आसपास के इलाके में चोरी डकैती और खून खराबी की घटनाएँ बढ़ने लगीं, भयानक सपने की तरह। कोई

> आदमी निश्चिन्त होकर बाहर निकल नहीं पाता था। शाम ढलते ही सड़कें सूनी हो जाती थीं। घरों में बैठे हुए लोग भी आशंका से डरे-सहमे रहते थे। (23)

बिल्ली हाउसबोट में हाउसबोट का वर्णन करते हुए लिखा है:

> रात को बेल-बूटों से तराशी गयी नीची छत वाले छोटे कमरे में बहुत ही गरमी थी। सब अपने सँकरे पलंगों पर करवट बदलते-बदलते सो गये, लेकिन पपाया को नींद नहीं आयी। पहले वह नीरा के पलंग के पास बैठी रही, जैसी कि उसे घर में आदत थी लेकिन वहाँ बहुत ही गर्मी थी। तब वह नीचे सफ़ेद क़ालीन के ऊपर चढ़ गयी। वह भी बहुत गर्म थी। उसने कमरे के एक कोने में लकड़ी के फ़र्श पर लेटने की कोशिश की। वहाँ कुछ ठण्डक थी लेकिन हवा का नाम तक नहीं था। (14)

इसी प्रकार *गोट्या* कथा श्रृंखला में अनेक जगह विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया है *अचरज गृह की दंतकथा* कहानी संग्रह में भी इसी शैली का प्रयोग किया गया है। *जंगल टापू* कहानी संग्रह में जंगल व उसमें रहने वाले पशु पक्षियों का वर्णन इसी शैली में किया गया है। इसी प्रकार एक अन्य उपन्यास *जंगल की एक रात* में भी जंगल के दृश्य का और वहाँ पर घटित घटनाओं का वर्णन भी इसी शैली में किया गया है। इसी प्रकार एक अन्य उपन्यास *चंद्र पहाड़* में भी इसी शैली का प्रयोग किया गया है। इस उपन्यास में अफ्रीका के विभिन्न स्थानों की भौगोलिक और प्राकृतिक स्थितियों तथा प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन करने के लिए इसी शैली का प्रयोग किया है। एक अन्य उपन्यास *वनदेवी* में भी पेड़ पौधो के बारे में विस्तार से बताया गया है, जिसके कारण इसमें भी इसी शैली का प्रयोग किया है।

इन अनुदित बाल कथाओं के भाषा व शैली पक्ष का अच्छे से अवलोकन, विवेचन और विश्लेषण करने के बाद हम कह सकते हैं कि इन कथाओं में विषय के अनुकूल सरल व सहज भाषा का प्रयोग किया गया है। इनमे प्रयोग की गई भाषा की सहजता,

सरलता, सुगम्यता व भाव प्रवणता बालकों के मन को हर लेती है। ये अनुदित कथाएँ, अनुदित होने के बावजूद अपने मूल को नहीं छोड़ने के साथ-साथ, इनमें बालकों की रुचि व उनके मानसिक स्तर के अनुरूप शैली का सुगम नियोजन भी दृष्टव्य है। संवादात्मक, चित्रात्मक एवं काव्य की लाइनों के प्रयोग के संतुलित निर्वाह से इन कथाओं में चार चाँद लग गए हैं। विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से शब्द संरचना में वृद्धि हुई है वही भिन्न-भिन्न शैलियों में लिखी होने के कारण ये कथाएँ रोचक और मनोरंजक भी हो गई हैं। अतः भाषा एवं शैली के सभी तत्वों का संतुलित संयोजन विलक्षण, अतुलनीय, अनुपम बन पड़ा है।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची -</u>

<u>आधार ग्रंथ -</u>

उपाध्याय, प्रकाश, प्रसाद. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-2* . साहित्य अकादेमी, 2019.

कार्ल ग्रिम, जैकोब लुडविग. कार्ल ग्रिम, विल्हेम. देवसरे, हरिकृष्ण. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---.---. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

किरोगा ओरासियो, पंत प्रीति, *जंगल- कथा,* साहित्य अकादेमी,अकादमी 2019.

गोपालकृष्णन, कल्वी. देवसरे, हरिकृष्ण. *वनदेवी.* साहित्य अकादेमी, 2017.

गाडगिल, गंगाधर. देशपांडे, माधुरी. *पक्या और उसका गैंग.* साहित्य अकादेमी, 2019.

जीरवा, वेबस्टर डेविस. सुहिल्या, आलमा*. जलपरी का मायाजाल.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---. सूरज और मोर. साहित्य अकादेमी, 2017.

ताम्हनकर, ना. धो..पाणदीकर, सुरेखा. *गोट्या.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देवसरे, हरिकृष्ण. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी , 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:4.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देसाई, अनीता. मोहन, विमला. *बिल्ली हाउसबोट पर.* साहित्य अकादेमी, 2016.

नारलीकर, जयंत विष्णु. पाणंदीकर, सुरेखा*. अंतरिक्ष में विस्फोट.* साहित्य अकादेमी, 2019.

बांड, रस्किन. मोहन, सौमित्र. *कबूतरों की उड़ान.* साहित्य अकादेमी, 2019.

बंधोपाध्याय, विभूतिभूषण. गोस्वामी, अमर. *किशोर कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. गोस्वामी, अमर. *चंद्र पहाड़.* साहित्य अकादेमी, 2019

भागवत, लीलावती. देवस्थले, अरुंधति. *जंगल की एक रात.* साहित्य अकादेमी, 2019.

भुल्लर, जसवीर.ग्रोवर, शांता. *जंगल टापू.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मुखोपाध्याय, शीर्षेंदु. गोस्वामी, अमर. *गोसाई बाबा का भूत.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह.* साहित्यअकादेमी, 2019.

मजूमदार, लीला राय क्षितिश. नवलपुरी, युगजीत. *रविंद्रनाथ का बाल साहित्य भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. नवलपुरी, युगजीत. *रवींद्रनाथ का बाल साहित्य भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

माकीनो, साइजी. *जापान की कथाएँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

राय, सुकुमार. गोस्वामी, अमर. *चुनिंदा कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2013.

रायचौधुरी उपेंद्रकिशोर, दत्त.*स्वप्ना बुलबुल की किताब.* साहित्य अकादेमी, 2017.

शिन्जी, ताजीमा. नारंग, हरीश. *अचरज ग्रह की दंतकथा.* साहित्य अकादेमी, 2018.

<u>सहायक ग्रंथ (हिन्दी)-</u>

कर्णसिंह. *भाषा विज्ञान.* साहित्य भंडार, 1997.

कश्यप, ओमप्रकाश. *हरिकृष्ण देवसरे का बाल साहित्य.* 2021.

दीक्षित, राधा. *रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन.* साहित्य भंडार, 1991.

देवसरे,हरिकृष्ण. *बाल साहित्य : रचना और समीक्षा.* शकुन प्रकाशन, 1997.

---. *हिन्दीबाल साहित्य एक अध्ययन.* आत्माराम एँड संस, 1969.

प्रखर, भालचन्द्र गोस्वामी. *कहानी दर्शन: एक विवेचनात्मक अध्ययन.*

शुक्ला, ओम. *हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास.* अनुसंधान प्रकाशन, 1964.

सक्सेना, उषा. *हिन्दी उपन्यायों का शिल्पगत विकास.*

सिन्हा, सुरेश. *उपन्यास शिल्प और प्रवृतियाँ.* रामा प्रकाशन, 1965.

<u>हिन्दी शब्दकोश-</u>

तिवारी, भोलानाथ. *वृहत हिन्दी लोकोक्ति कोश.* किताबघर प्रकाशन, 2007.

बाहरी, हरदेव. *हिन्दी शब्दकोश.* राजपाल एण्ड सन्स, 2015

वर्मा, आचार्य रामचन्द्र. *प्रमाणिक हिन्दी कोश.* लोकभारती प्रकाशन, 1998.

वर्मा, धीरेंद्र. *वृहत हिन्दी शब्दकोश.* प्रभात प्रकाशन, 2010.

.

अध्याय 7

अनुदित हिन्दी बालकथाओं में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का व्यावहारिक अध्ययन

7.1 अहं की समस्या

7.2 प्रतिबल की समस्या

7.3 समायोजन की समस्या

7.4 कुंठा की समस्या

7.5 अंतर्द्वन्द्व की समस्या

7.6 चोरी की समस्या

7.7 पिछड़ेपन की समस्या

7.8 झूठ बोलने की समस्या

7.9 हीन भावना की समस्या

7 अनुदित हिन्दी बालकथाओं में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का व्यावहारिक अध्ययन

ये समस्याएँ मनोवैज्ञानिक समस्याओं के नाम से अभिहित की जा सकती हैं, जो कि बालक के आचार-विचार, व्यवहार, व्यक्तिगत एवं सामाजिक दृष्टिकोण में स्पष्टत: परिलक्षित होती हैं। अनुदित कथाओं में से अनेक कथाओं में बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं को लक्ष्य बनाकर कथाएँ लिखी गई हैं। जिनमें से समायोजन की समस्या, प्रतिबल की समस्या, अंतर्द्वंद की समस्या, कुंठा की समस्या, अहं की समस्या, चोरी की समस्या आदि प्रमुख हैं।

7.1 अहं की समस्या

एक बालक की जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है वैसे-वैसे वह अपने आस-पास के वातावरण, वास्तविकताओं व यथार्थ की और उन्मुख होने लगता है। आयु बढ़ने के साथ ही उसे मेरा और मुझे का अर्थ स्पष्ट होता है। इदम् वंशानुक्रम की देन है और आस पास या बाह्य वातावरण के अभाव में यही इदं, अहम् का रूप धारण कर लेता है। लेकिन अहम् से ग्रसित व्यक्ति कभी कभी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न कर देता है।

इस प्रकार की समस्या को *भारतीय बाल कहानियाँ भाग: 1* में संकलित सहेली में भी दिखाया गया है। जिसमें प्रेरणा नामक लड़की को सही गलत व अच्छा बुरा की पहचान के बिना अपनी सुन्दरता पर अहंकार हो जाता है। जिसके कारण उसकी कक्षा में उसे कोई पसंद नहीं करता।

> सबके अज्ञात में प्रेरणा का कोमल सुंदर सरल मानस जटिल होता गया। "अपनी सहेलियों से वह अलग है" यह भावना उसके मन में बढ़ती गई और वह अब खुद ही एकदम अकेले रहने लगी। अपनी ख़ूबसूरती को लेकर भी वह

> धीरे-धीरे अधिक सचेतन हो उठी थी। उसमें आत्माभिमान बढ़ गया और उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह स्वयं बिलकुल बदल गई। अपनी सहेलियों को वह बहुत तुच्छ समझने लगी। उसके ऐसे व्यवहार के कारण अन्य लड़कियाँ भी उससे कटी-कटी रहने लगीं। (27-28)

स्कूल में शेवाली नाम की एक नई लड़की आती है जो प्रेरणा से ज्यादा खूबसूरत होती है। लेकिन वह प्रेरणा की तरह अहंकार नहीं करती। जब कक्षा का परीक्षा परिणाम आया तो उसमें प्रेरणा हर बार की तरह प्रथम नहीं आई बल्कि अबकी बार शेवाली ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस लिए प्रेरणा उदास रहने लगी। तब शेवाली उसके पास आई, और प्यार से उसकी उदासी का कारण पूछा। तब प्रेरणा को अपनी गलती का अहसास हुआ।

> एक दिन प्रेरणा बड़े उदास मन से कक्षा में बैठी हुई थी। उसे देखकर शेवाली को बड़ा बुरा लगा। प्रेरणा के पुराने बर्ताव को भूलकर अचानक वह पूछ बैठी, "प्रेरणा, बताओ तो तुम्हें क्या हो गया है? तुम भला हम लोगों के साथ खेलती-बोलती क्यों नहीं?" इतने प्यार से पूछी हुई बात से प्रेरणा का मन जैसे पिघल गया। उसे बड़ा अचरज भी हुआ। यह शेवाली जो रूप-गुण में उससे काफी बढ़कर है, वही इतनी विनम्रता से उससे प्यार भरी बातें कर रही है।.....ज़बान से कुछ कहने के पहले ही प्रेरणा की आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। (29)

एक अन्य कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग: 4* में संकलित कहानी रूपा में भी यही समस्या दिखाई गई है। जिसमें रूपा नाम की लड़की को बैलगाडी में बैठकर दशहरे का मेला देखने जाना था। वह एक साल से इस मेले का इंतजार कर रही थी। दशहरे के मेले वाले दिन उसके मम्मी पापा का झगड़ा हो जाता है। इसलिए वह उन्हें

बिना बताए ही मेले में चली जाती है। रूपा मेले से आकर अपने पापा से रावण के बारे में पूछती है तो उसके पापा उसे बताते हैं कि वह बहुत ज़ालिम व अत्याचारी था। तब रूपा कहती है कि क्या वह आपसे भी बड़ा अत्याचारी था? तो उसके पापा उसे जोर से थप्पड़ मारते हैं। जिससे रूपा के अहं को चोट पहुँचती हैं।

> “जब उसके पास इतना दिमाग़ था तो उसे जलाते क्यों हैं?"
>
> "वह ज़ालिम था, जुल्म करता था -अत्याचार करता था, वह बहुत बड़ा अत्याचारी था।"
>
> “आपसे भी ज़्यादा ?” रूपा के मुँह से अचानक यह शब्द निकल पड़े थे।
>
> एक ज़ोर का थप्पड़ रूपा के गाल पर पड़ा। रूपा सुबक-सुबककर रोने लगी। वह कुछ न बोल सकी, क्योंकि वह तो नन्ही-मुन्ही बच्ची थी- रूपा नहीं । (21)

7.2 <u>प्रतिबल की समस्या</u>

जब बालक समाज में तनाव, अशांत तथा उपेक्षित महसूस करता है और इन परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए दबाव महसूस करता है, परंतु बाहर नहीं निकल पाता है, उस स्थिति में वह दबाव ही प्रतिबल कहलाता है। ये परिस्थितियाँ अत्यंत भयानक व हानिकारक हो सकती हैं, जिनका वह सामना नहीं कर पाता, साथ ही वे शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार की हो सकती हैं-

डॉ. प्रीति वर्मा व डी. एन. श्रीवास्तव द्वारा रचित पुस्तक *बाल-मनोविज्ञान-बालविकास* में संकलित कोलमैन के अनुसार "कोई भी परिस्थिति जो व्यक्ति पर दबाव डालती है तथा जिसके कारण व्यक्ति को समायोजन करना पडता है, यही प्रतिबल है। (417)

इसी तरह की प्रतिबल की समस्या का वर्णन भारतीय बाल कहानियाँ भाग-2 में संकलित कहानी अगले दिन में भी किया गया है। इस कहानी में सुला व मखना नामक बालकों को गणित विषय में पहाड़े याद नहीं होते। लेकिन नीलकंठ मास्टर की पिटाई के डर के कारण वे दोनों बच्चे उनसे बचने के लिए तरह-तरह के तरीके ढूंढते रहते हैं।

> सुला भी मास्टर जी की आँखों में धूल झोंकता हुआ क्लास में ही पहाड़े का पारायण कर रहा था। वह पहाड़ा तख़्ती के नीचे छिपाकर उठा और मखने की ओर देखकर दबे होंठों से मुस्कराया। आदेश का पालन करते हुए उसने मखने को पीठ पर लादा। नीलकंठ ने उसकी निकर नीचे की और उसके नर्म- नर्म अंगों पर बेंत लगाने लगे। मखना चिल्लाने लगा, "बाप रे, मर गया! मास्टर जी! आप देख लीजिए कल जरूर याद होगा.....। (73)

फिर भी नीलकंठ मास्टर प्रतिबल से डंडे की मार से उनको वे पहाड़े याद करवाने की कोशिश करते हैं। लेकिन वे बालक उस प्रतिबल के कारण पहाड़े याद करने की बजाय नीलकंठ मास्टर की मार से बचने के लिए नए-नए तरीके ढूंढता है। इसी तरह एक अन्य कहानी संग्रह *सुकुमार राय चुनिंदा कहानियाँ* में संकलित कहानी यतिन की चप्पल में भी प्रतिबल की समस्या को दिखाया गया है। जिसमें यतिन, बहुत ही लापरवाह किस्म का बालक था। वह अपनी चीजों को कभी भी संभाल कर नहीं रखता था। वह हर चीज को तोड़ता-फोड़ता रहता था। वह हर महीने एक जोड़ी चप्पल तोड़ देता था। अब की बार चप्पलों का नया जोड़ा देते समय उसको यह हिदायत दी गई थी कि अब की बार यदि उसने चप्पलें जल्दी तोड़ी तो उसे टूटी हुई चप्पलें ही पहननी पड़ेगी। जब उसकी चप्पलें टूट गई तो वह अपने माता-पिता के डर के कारण स्वप्न लोक में पहुँच जाता है, और वहाँ पर उसे बहुत से लोगों के डर का सामना करना

पड़ता है। इन सब का उसके मनोविज्ञान पर इतना बुरा असर पड़ता है कि वह बहुत ज्यादा बीमार हो जाता है।

7.3 समायोजन की समस्या

समाज में किसी भी व्यक्ति को अपने आप के लिए एक सम्मानजनक स्थिति स्थापित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए व्यक्ति कठोर परिश्रम करता है एवं अपेक्षा करता है कि परिस्थितियाँ उसके अनुकूल हो, जिससे वह अपने परिश्रम व योग्यता के आधार पर उचित स्थान प्राप्त कर सके। परंतु सामान्य तौर पर बहुत से लोगों को अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता। विशेषकर बालकों के साथ ही अधिक होता है कि जब आशा अनुरूप परिणाम नहीं होता है तो वह बालक अपने आपको समाज में समायोजित करने में असमर्थ पाता है। इसके लिए फिर उसे अतिरिक्त श्रम की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार समायोजन की समस्या एक गतिशील प्रक्रिया है जो बालक की परिस्थितियाँ अनुकूल होने तक या बालक अपने आपको स्वयं परिस्थितियों के साथ समायोजित ना कर ले तब तक चलती रहती हैं। इससे ज्ञात होता है कि केवल सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों या वातावरण में ही परिवर्तन नहीं होता है, अपितु बालक के समायोजन की प्रक्रिया के तहत स्वयं के व्यवहार एवं दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होता है।

डॉ. प्रीति वर्मा व डी. एन. श्रीवास्तव द्वारा रचित पुस्तक *बाल-मनोविज्ञान-बालविकास* में संकलित बोरिंग ने समायोजन को परिभाषित करते लिखा है कि "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।" (417)

जब एक बालक वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको नहीं ढ़ाल पाता और जब वह अपने आप को बाकी सभी से अलग महसूस करने लगता है, तब समायोजन

की समस्या आती है। इसी तरह की समस्या का सामना *जंगल टापू* नामक कहानी संग्रह में संकलित कहानी अलविदा जंगल टापू में रब्बू नामक बालक को भी करना पड़ता है। वह किसी हवाई जहाज के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण जंगल में गिर गया था। जंगल के जानवरों ने उसका पालन पोषण बहुत ही प्यार से किया था: "रब्बू के दिन इसी तरह हँसते-खेलते गुजर रहे थे। लेकिन कभी-कभी रब्बू उदास हो जाता था। वह जंगल के सभी जानवरों से अलग था। उसका मन करता था कि जंगल टापू में उस-जैसे कुछ दूसरे जानवर भी होते। वह भी सब मिलकर रहते, जैसे खरगोश रहते हैं या बंदर रहते हैं।" (53)

लेकिन फिर भी बड़ा होने पर जब उसे वहाँ पर अपने जैसे मानव नहीं दिखाई दिए तो वह दुखी हो जाता है और जंगल को छोड़कर, अपने जैसे इंसानों के पास जाने का निर्णय करता है।

> यह बात नहीं है बाबा! मेरा दिल तो तुम्हारे साथ रहने को ही करता है, लेकिन मेरा दिल यह भी चाहता है कि वे भी साथ हों, जो मेरे जैसे हैं।
>
> बूढ़ा खरगोश कुछ देर सोचता रहा और फिर भरे गले से बोला, "रब्बू तुमने जाने की बात उस समय कही है, जब तू हमारा अपना हो गया है। मुझे तो याद भी नहीं रहा था कि तू किसी आदमी की औलाद है।" (54)

इसी तरह से एक अन्य उपन्यास *गोट्या* में भी गोट्या को भी इसी तरह की समस्या का सामना करना पड़ता है। जिसमें गोट्या के माता-पिता का देहांत उसके बचपन में ही हो जाता है। उसके चाचा चाची उसका पालन पोषण करते हैं। वे रुपयों के लालच में आकर दिलखुश होटल के मालिक वायुनाना को बेच देते हैं। वायुनाना उसके साथ जानवरों जैसा व्यवहार करता है। बहुत से ढेर सारा काम करवाने के साथ-साथ उसकी पिटाई भी करता है। तब लेखक गोट्या की रक्षा करता है। वह उसे अपने साथ अपने

घर ले जाता है और उसका लालन-पालन बहुत ही प्यार से करता है। जो गोट्या हमेशा दुखी रहता था, बहुत शरारती था, वही उसको प्यार व अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर बहुत ही अच्छा बालक बन जाता है वह इनाम भी जीतता है।

> "रो नहीं बेटा! ऑंसू पोंछ डालो, डरने की बात नहीं। अब वायुनाना यहाँ आकर तुम्हें मार नहीं सकते। चुप हो जाओ।" उसकी पीठ सहलाते हुए मेरी पत्नी ने कहा।
>
> वायुसेना के डर से नहीं, परंतु मेरी पत्नी की ममता, से उसे रोना आ रहा था। आज तक उसे ऐसे प्यार या ममता का अनुभव ही नहीं था और इसलिए खुशी या प्यार से ऑंसू आ रहे थे। (8)

7.4 <u>कुंठा की समस्या</u>

हर बालक का अपना एक लक्ष्य होता है। उसे अपने लक्ष्य को पाने के लिए विभिन्न क्रियाकलाप करने पड़ते हैं। जब तक ये क्रियाएँ सही दिशा में चलती रहती हैं तब तक सब कुछ ठीक रहता है, लेकिन जब इन क्रियाओं के करने में कोई समस्या उत्पन्न हो जाती है तथा बालक को अपने गंतव्य लक्ष्य को प्राप्त करने में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है और ये समस्याएँ काफी लंबे समय तक चलती रहती हैं तब उसे इन समस्याओं को दूर करने के लिए कष्ट उठाने की क्षमता, अडिग आत्मविश्वास, निष्ठा, उत्साह और धैर्य की आवश्यकता होती है। चिंता के कारण जब ये सभी क्षमताएँ कुंठित हो जाती है, तब उसके मन में कुंठा का आविर्भाव होता है।

सोनिया सित्साट द्वारा लिखित *राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन* में संकलित माइर के अनुसार:

कुंठित व्यक्ति का व्यवहार रोदन रहित, गन्तव्य हीन, समाधान के विमुख तथा असमायोजित होता है। समस्या जिस बिन्दु पर संघर्ष का रूप धारण करती है, वह आक्रामक प्रवृत्ति के प्रादुर्भाव का काल होता है। यदि किसी स्थिति में सभी विकल्प प्रबल रूप से नकारात्मक हैं और व्यवहार के सभी द्वार अवरुद्ध हैं, तो शांत न होने वाला संघर्ष उदित होता है। इस प्रकार का संघर्ष तन-मन में तनावों का निर्माण करता है। जिनके बहुत काल तक समूह होने पर 'कुंठा' का प्रादुर्भाव होता है। (97)

7.5 अंतर्द्वंद्व की समस्या

जब बालक के मन मस्तिष्क में दो या उससे अधिक प्रेरणाएँ समानांतर रूप से चलती रहती हैं परंतु जब बालक अपने लिए एक श्रेष्ठ विकल्प चुनने में अपने आपको असमर्थ पाता है, उन परिस्थितियों में वह बालक अंतर्द्वंद्व का शिकार होता है। अंतर्द्वंद्व चेतन एवं अचेतन मन दोनों स्थितियों में हो सकता है किंतु ज्यादातर अंतर्द्वंद्व, चेतन स्तर पर ही होता है।

इसी तरह की समस्या का वर्णन *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 2* में संकलित कहानी क्रॉसरोड्स में भी किया गया है। जिसमें चिन्तन अपनी दीदी चेतना के साथ रहता है। उनके माँ -बाप का देहांत हो चुका है। वे दोनों अपने जीवन में बहुत से संघर्षों का सामना करते हैं, फिर भी चिन्तन की दीदी उसे हमेशा सत्य बोलने तथा ईमानदारी के पथ पर चलने की सीख देती है। लेकिन चिंतन के सच बोलने व ईमानदारी के पथ पर चलने पर उसकी कक्षा के विद्यार्थी उसका मजाक उड़ाते हैं। तब चिन्तन अंतर्द्वंद्व का शिकार हो जाता है। वह समझ नहीं पाता कि क्या सही है? क्या गलत है?

"दीदी बोलो ना, समय के साथ चलने के लिए महात्मा जी को भुला दूँ, दूसरों की तरह परीक्षा में कॉपी करके पास हो जाऊँ? अपने दोस्त को छोड़ दूँ, क्योंकि वह मुझसे अलग धर्म का है? अगर हम सब मनुष्य समान हैं तो हमारे पास के मोहल्ले में आग क्यों लगी थी? दीदी, क्या आपके पास मेरे सवालों का कोई जवाब है?" (94)

लेकिन उसकी दीदी अपनी समझदारी से उसकी समस्या का समाधान करती है।

हमें यह नहीं सोचना कि हमारा देश हमारे लिए क्या कर सकता है, पर हमें तो यह सोचना चाहिए कि हम अपने देश के लिए क्या कर सकते हैं?"

"सिर्फ सोचता ही रहेगा?"

"नहीं दीदी। टॉर्च जलाऊँगा, मशाल जलाऊँगा..... आज की बहुरंगी दुनिया के रास्तों पर चलकर अपना चौराहा मैं ख़ुद तलाश करूँगा। इतना तो कर ही सकता हूँ।" और चिंतन मुस्कुरा दिया। (97)

इसी तरह एक अन्य कहानी संग्रह *सुकुमार राय चुनिंदा कहानियाँ* में संकलित कहानी नंदलाल का दुर्भाग्य में भी नंदलाल अंतर्द्वंद्व का शिकार हो जाता है।

नन्दलाल इतिहास और भूगोल में पढ़ने में बहुत अच्छा था। लेकिन उस विषय में पुरस्कार न मिलने के कारण वह अबकी बार संस्कृत में अच्छे अंक लाकर पुरस्कार जीतना चाहता है, और वह अपनी मेहनत से अच्छे अंक ले भी आता है, लेकिन अचानक हेड मास्टर के नियम बदलने पर कि इस बार संस्कृत विषय में नहीं बल्कि इतिहास व भूगोल में प्रथम आने पर पुरस्कार दिया जाएगा, यह सुनकर नन्दलाल बहुत ही उदास हो गया और अपने भाग्य को कोसने लगा:

नंद का चेहरा उस वक्त देखने लायक था। उसका मन कर रहा था कि वह दौड़ कर खुदीराम को दो-चार गुस्से जड़ दे। यह किसे पता था कि इस बार इतिहास के लिए पुरस्कार दिया जाएगा, मगर संस्कृत के लिए नहीं। इतिहास में मेडल तो उसे अनायास ही मिल सकता था। मगर उसकी इस तकलीफ को किसी ने नहीं समझा- सभी कहने लगे, "बिल्ली के भाग्य में छींका टूटा है। बिना पढ़े ही नंदलाल को नंबर मिल गये।" नंद ने गहरी साँस लेकर कहा, " मेरा दुर्भाग्य!" (12)

7.6 चोरी की समस्या

यह समस्या आमतौर पर छोटे बच्चों में पाई जाती है। यह समस्या तब उत्पन्न होती है जब या तो बालक की कोई इच्छा या माँग पूरी नहीं होती या फिर वह किसी नई वस्तु को देखकर उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है। अक्सर छोटी कक्षा में देखा जाता है कि बच्चे कभी रबड़, कभी पैन, कभी पेंसिल की चोरी करते हैं। कई बार बच्चा अपने आप को श्रेष्ठ दिखाने के लिए भी चोरी करता है।

इसी तरह की समस्या को *सुकुमार राय चुनिंदा कहानियाँ* में संकलित कहानी व्योमकेश का माँझा में दिखाया गया है। जिसमें व्योमकेश पतंगबाजी में अपने आप को डॉक्टर के बेटे से ज्यादा पारंगत दिखाने के लिए डॉक्टर के बेटे द्वारा बनाए गए मसाले को माँझा को मजबूत बनाने वाला पाउडर समझकर चुरा लेता है। लेकिन बाद में जब उसे सच्चाई का पता चलता है कि वह माँझा को मजबूत बनाने का मसाला नहीं बल्कि डॉक्टर के बेटे द्वारा स्वयं बनाया गया दियासलाई का मसाला था तो वह बहुत ही उदास हो जाता है।

इसी तरह एक अन्य कहानी संग्रह *भारतीय बाल कहानियाँ भाग 4* में संकलित कहानी किताब का चोर में भी चोरी की समस्या को दर्शाया गया है। जिसमें सिकंदर नाम का

बालक जिसको कहानियाँ व किस्सों की किताब पढ़ने का बहुत ज्यादा शौक है। लेकिन उसके पिता को उसका इस तरह की किताबें पढ़ना पसंद नहीं है इसलिए सिकंदर वह किताब खरीदने के लिए अपने सहपाठियों की किताबों की चोरी करता है, तथा उन्हें बेचकर कहानियों व किस्सों की किताब खरीदता है। परंतु चोरी करना बहुत गलत बात है और वह सबके सामने आ ही जाती है। इस तरह से एक दिन सिकंदर भी चोरी करते हुए पकड़ा जाता है और उसे इसके लिए बहुत बड़ी सजा मिलती है।

7.7 पिछड़ेपन की समस्या

कुछ बच्चे अपनी बुद्धि उपलब्धि और मानसिक स्तर के औसत से कम होने के कारण या कुछ बच्चे अपनी लापरवाही व शरारतों के कारण अपने स्तर के बच्चों से बिछड़ जाते हैं। बच्चों में पिछड़ेपन की समस्या के कारण इसके अलावा शारीरिक रोग, निर्धन परिवार, सामूहिक परिवार, माता-पिता का कम शिक्षित होना या फिर उसके परिवार के सदस्यों की या बच्चे के आस-पास विद्यालय का दूषित वातावरण भी हो सकते हैं। :

सिरिल बर्ट ने अपनी पुस्तक *The Backward Child* (P.77) में पिछडे बालक का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "एक पिछडा बालक वह जो दस वर्ष का होता है और जो अपनी कक्षा का कार्य अपनी आयु के अन्य बालकों की गति से नहीं कर पाता है।"(468)

बी. कुप्पूस्वामी ने अपनी पुस्तक *Advanced Educational Psychology* में लिखा है कि -

> पिछडे बालकों की रोकथाम में शिक्षकों, अभिभावकों, समाज सेवकों और विद्यालय चिकित्सक आदि सबको सम्मिलित रूप से कार्य करना चाहिए

> जिससे कि पिछडे बालकों के कारणों को सही-सही खोज की जा सके और प्रत्येक पिछडे बालक के उपचार के लिए उपयुक्त उपचारों का उपयोग किया जा सके। (469)

समस्या का निवारण अभिभावक, शिक्षक, समाज सेवक और चिकित्सक सभी के सामूहिक प्रयास से हो सकता है।

इसी तरह की समस्या का उल्लेख *भारतीय बाल कहानियाँ भाग: 2* में संकलित कहानी अगले दिन में भी किया गया है। जिसमें सुला और मखना नाम के बालक, मास्टर नीलकंठ के द्वारा बताए गए पहाड़े याद नहीं कर पाते हैं। वे पहाड़े को याद करने की कोशिश करते हैं लेकिन याद नहीं कर पाते।

> 'प्रार्थना' के बाद जब बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं में जाने लगे, चौथी श्रेणी के सुले ने मखने से कहा, "क्यों? नीलकंठ मास्टर का पहाड़ा याद किया है?"
>
> "नहीं तो! .....तूने याद किया है?"
>
> "किया था, पर याद ही नहीं आता ।"
>
> "अब क्या होगा? वह तो यमदूत है।" मखने का चेहरा पीला पड़ गया। (72)

तब वे अपनी पिछड़ेपन की समस्या के कारण पहाड़े याद करने की अपेक्षा पिटाई से बचने के लिए तरह-तरह के तरीके खोजते हैं।

7.8 <u>झूठ बोलने की समस्या</u>

बच्चे जब कोई गलतियाँ करते हैं तो उसे छिपाने के लिए एवं माता-पिता के डर के कारण झूठ का सहारा लेते हैं। कुछ बच्चे अपना झूठा मान सम्मान को प्रतिष्ठा बनाने के लिए झूठ का सहारा लेते हैं। इस समस्या को कहानी संग्रह सुकुमार राय

चुनिंदा कहानियाँ में संकलित कहानी यज्ञदास के मामा में भी दिखाया गया है। जिसमें यज्ञदास अपने आपको बाकी बच्चों से श्रेष्ठ दिखाने के लिए तरह-तरह के झूठे किस्से बताता रहता था। एक बार वह स्कूल की छुट्टियों में अपने मामा के घर गया। वहाँ से आकर उसने ढेर सारे झूठे किस्से सुनाए। एक बार यज्ञदास ने किसी लंबी चौड़ी कद काठी वाले देहाती सज्जन को अपना मामा बताया और बाकि बच्चों ने उसके इस झूठ पर यकीन भी कर लिया। इससे कक्षा में उसका रुतबा और बढ़ गया। लेकिन एक दिन उसके मामा स्कूल में आ गए, तब उसका झूठ पकड़ा गया।

> हम सभी उसके मामा को देखने के लिए उतावले हो गये। मगर वहाँ जाकर देखा तो पाया कि एक दुबले-पतले काले रंग के छोकरे जैसे महानुभाव चश्मा चढ़ाए गोबर गणेश की तरह बैठे हुए थे । यज्ञदास ने उन्हें जाकर प्रणाम किया।
>
> उस दिन सचमुच हमें बेहद गुस्सा आया था। ऐसा धोखा! हमें एक झूठमूठ के मामा के बारे में बताता रहा? उस दिन हम लोगों की खिंचाई से यज्ञदास के आँसू निकल आये। उसने मान लिया कि वह फ़ोटो वास्तव में किसी पुरबिया पहलवान की थी। उस दिन उसने गाड़ी में बैठे जिस व्यक्ति को अपना मामा बताया था, उसे वह खुद भी नहीं जानता था। (24)

लेकिन बालक के झूठ बोलने पर उसको सत्य बोलने वाले बालक का उदाहरण देकर समझाना चाहिए। उनमें आत्मविश्वास की भावना का विकास करने के लिए उन्हें नैतिक विकास एवं निर्भीकता की शिक्षा देनी चाहिए। सत्य बोलने पर बच्चों की प्रशंसा एवम् झूठ बोलने पर दंड का प्रावधान होना चाहिए।

7.9 हीन भावना की समस्या

आमतौर पर बालक अपनी तुलना दूसरों बच्चों के साथ शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक क्षमता की अपेक्षा, उनके द्वारा प्रयोग किए जा रहे संसाधनों के माध्यम से या अन्य बच्चों के माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार तुलना करते हैं और पाते हैं कि उनके पास अन्य साथियों के बजाय बहुत ही कम संसाधन है या वे समाज में पिछड़ा हुआ या उपेक्षित जीवन यापन कर रहे हैं, ऐसी स्थिति में बालक किसी भी तरह के प्रयास से परिस्थितियों को बदलने में सक्षम नहीं हो पाता और उसे कोई इस अंतर का उचित कारण भी नजर नहीं आता तब वह हीन भावना का शिकार हो जाता है। इस समस्या को कहानी संग्रह *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग एक* में संकलित बच्चों की बकवास में भी दिखाया गया है। जिसमें एक अमीर व्यापारी के घर बच्चों की पार्टी को दिखाया गया है। इसमें काफी बड़े बड़े अमीर घरों के बच्चे शामिल हुए हैं। वहाँ पर उपस्थित अमीर घर के बड़े सदस्य तो फिर भी शालीन स्वभाव के हैं, लेकिन बच्चों को अपनी अमीरी पर अहंकार है। वे चर्चा करते हैं कि जिसके नाम के पीछे सन लगा होता है वे अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर पाते। वहाँ पर उपस्थित सभी बच्चे जो अमीर परिवार से थे, उनमें से हर कोई अपने आप को श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश कर रहा था। वहीं पर एक गरीब बच्चा जो कि दरवाजे के पीछे खड़ा था वह यह सब देख रहा था। उसने बावर्ची की मदद की थी इसलिए उसे दरवाजे के पीछे खड़े होकर उन सजे-धजे बच्चों को देखने दिया गया था। उसे उस पार्टी में शामिल होने की इजाज़त नहीं थी। वह ये सब बातें सुन रहा था। उसका व उसके पिता दोनों का नाम सन से खत्म होता था। तब वह उदास होकर अपने आपको तुच्छ समझकर हीन भावना से ग्रसित हो जाता है।

> कानों में वे शब्द पड़े जो उसे चिढ़ाने के लिए ही कहे गये थे। उसके माँ-बाप के पास, जो घर पर थे, अख़बार खरीदने तक के लिए पैसे नहीं थे, उसमें लिखने की बात तो अलग रही। और सबसे बुरी बात तो यह थी कि उसका और उसके पिता दोनों का नाम 'सन' से ख़त्म होता था। इसीलिए वह ख़ानदानी नहीं था। यह बहुत बुरा था। लेकिन इस सबके बाद भी उसे लगता था कि वह अच्छे खानदान से हैं। (40)

उपर्युक्त बाल कथाओं में समाहित बाल समस्याओं का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि बालकों को अपने जीवन में बहुत सी मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के समाधान हेतु सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उस समस्या की पहचान की जाए और उन कारणों को जानने का प्रयास किया जाए जिनके कारण यह समस्या विकसित हुई है तथा फिर उसका समग्र समाधान करने के लिए उपाय किए जाने चाहिए। ये उपाय भिन्न-भिन्न समस्याओं के लिए भिन्न भिन्न होते हैं तथा इनको प्रयोग में लाने से पूर्व बालक के मनोवैज्ञानिक स्तर, उसका आत्मविश्वास, उसकी अधिगम प्रवृत्ति, जिज्ञासा एवं किसी कारण विशेष के प्रति उपेक्षा का भाव या आकर्षण का अध्ययन आवश्यक है। इस अध्ययन के उपरांत बालक की समस्या निवारण को अधिक बेहतर तरीके से हल करते हुए उसके आचार व्यवहार में परिवर्तन के माध्यम से किया जा सकता है। बालक की उपर्युक्त समस्याओं का अध्ययन निरंतर उसके व्यवहारिक अवलोकन के साथ-साथ प्रश्नोत्तरी के माध्यम से भी किया जा सकता है। क्योंकि यह समस्या बालकों से संबंधित है और बालक अपने माता-पिता व अध्यापक से सर्वाधिक निकट होते हैं इसलिए इन समस्याओं का अध्ययन एवं उनके समाधान को हम प्रश्नोत्तरी के माध्यम से माता-पिता, अध्यापक, अभिभावक से जानने की कोशिश करेंगे।

सर्वेक्षण के लिए प्रश्नोत्तरी

अनुदित हिन्दी बालकथाओं में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का व्यवहारिक अध्ययन

प्रश्न 1 क्या आप बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं (Psychological Problems) से परिचित हैं?

क) बहुत कम।

ख) बिल्कुल नहीं।

ग) थोड़ी सी जानकारी हैं।

घ) अच्छे से जानकारी हैं।

प्रश्न 2 बच्चों में कौन कौन सी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ (Psychological Problems) होती हैं?

(क) चिंता, दबाव व तनाव की समस्या

(ख) समायोजन, अंतर्द्वन्द्व या कुंठा की समस्या

(ग) अंतर्द्वन्द्व, प्रतिबल, अहं की समस्या

(घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 3 यदि बच्चा गुमसुम व दुखी बैठा रहता है तो वह कौन सी मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रसित है?

(क) चिंता, दबाव व तनाव से

(ख) समायोजन, अंतर्द्वन्द्व या कुंठा से

(ग) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 4 यदि बच्चा दबाव, चिंता या तनाव की समस्या से ग्रसित है, तो इस समस्या को कैसे दूर किया जा सकता है?

(क) उसको ऐसा करने के लिए डाटेंगे।

(ख) उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे।

(ग) समस्या को बताने के लिए कोई लालच देंगे।

(घ) प्यार से उसकी समस्या को जानने की कोशिश करेंगे तथा उस समस्या को दूर करने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न 5 बच्चे में यदि चोरी करने की आदत है तो उसे यह आदत छुड़ाने के लिए क्या करना चाहिए ?

(क) बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखें।

(ख) उन्हें नैतिकता की शिक्षा देनी चाहिए।

(ग) उन्हें उचित - अनुचित कार्य से परिचित करवाएँ।

(घ) उन्हें आत्म नियंत्रण और अनुशासन का पाठ पढ़ाएँ।

आपके अनुसार उपयुक्त विकल्प कौन सा है-

1) क व ख

2) ख व ग

3) ग व घ

4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 6 यदि बच्चा अन्तर्द्वन्द्व (conflict) की समस्या से ग्रसित है तो माता-पिता होने पर आपका क्या उत्तरदायित्व बनता है?

(क) बच्चों को उचित अनुचित कार्य से परिचित करवाएँI

(ख) उन्हें अपने हाल पर छोड़ दें।

(ग) उन्हें किन्हीं भी दो परिस्थितियों में से एक सही का चुनाव करना सिखाएँ।

(घ) जीवनभर इसी तरह से ग्रसित रहे।

आपके अनुसार उपयुक्त विकल्प कौन सा है-

1) क व ख

2) ग व घ

3) क व ग

4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 7 यदि बच्चे को समायोजन (adjustment) की समस्या का सामना करना पड़ता है तो माता पिता होने के नाते आपकी क्या जिम्मेदारी बनती है?

(क) इस समस्या के कारणों का पता लगाना।

(ख) बच्चे को अपने हाल पर छोड़ देंगे।

(ग) कारणों का पता लगने पर उचित परामर्श देना।

(घ) बच्चे को इस योग्य बनाना कि वह खुद ही कारणों का पता करें व उसका समाधान करें।

आपके अनुसार उपयुक्त विकल्प कौन सा –

1) क व ख

2) ख व ग

3) ग व घ

4) क, ग व घ

प्रश्न 8 यदि बच्चा प्रतिबल (Stress) की समस्या से ग्रसित तो आप क्या करेंगें ?

(क) बच्चे का उचित मार्गदर्शन करें।

(ख) बच्चे पर किसी तरह का दबाव न डालें।

(ग) बच्चे को सही गलत का उचित ज्ञान दें।

(घ) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 9 कुण्ठा (Frustration) से ग्रसित बच्चे को आप इस समस्या से कैसे छुटकारा दिलवाएँगे?

1) उसे कुछ अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करके।
2) उसे अपने हाल पर छोड़ देंगे।
3) उसे डांट कर।
4) उसकी समस्या का कारण जानकर उसे दूर करने की कोशिश करेंगे।

उचित विकल्प का चयन करें-

1 व 2 (ग) 1 व 4

३ व 4 (घ) 2 व 4

प्रश्न 10 अहम् (Ego) से ग्रसित बच्चों को इस समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए बच्चों को इस से संबंधित बाल कथाएँ सुनाकर उन्हें प्यार से इस समस्या के बारे में अवगत कराएँ व प्यार से उन्हें समझाए।

क) आप सहमत हैंI

ख) आप पूर्णतः सहमत हैं।

ग) आप असहमत हैं।

घ) आप पूर्णतः असहमत हैं।

प्रश्न 11 क्या आप बाल कथाओं (Child Stories) से परिचित हैं?

क) परिचित हैं।

ख) कुछ ही बाल कथाओं से परीचित हैंI

ग) बिल्कुल भी परिचित नहीं हैं।

प्रश्न 12 सम्पूर्ण रूप में क्या बाल कथाएँ इन बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं (Psychological Problems) को दूर करने में सहायक हैं।

क) हाँ।

ख) थोड़ी मात्रा में सहायक हो सकती हैं।

ग) बिल्कुल नहीं।

प्रश्न 13 आपका बालक पढ़ाई में कमजोर है तो आप बाल कथाओं की सहायता से किस तरह से उसकी पाठ्य पुस्तकों में रुचि बढ़ा सकते हैं?

क) उसे बाल कथाएँ सुनाकर और उन्हें पाठ्यक्रम से संबंधित करके।

ख) बालकथाओं के माध्यम से प्रेरित करके।

ग) उसकी कमजोरी की समस्या जानने की कोशिश करेंगे।

(घ) उपर्युक्त सभी।

<u>बच्चों के लिए</u>

प्रश्न 1 अगर आप अकेलेपन (Lonelyness) की समस्या से ग्रसित है तो आप इसे कैसे दूर करना चाहोगे?

क) मैं सबसे दूरी बनाकर रखूँगा/रखूँगी।

ख) मैं अकेले ही सब कुछ ठीक कर सकता हूँ।

ग) मैं अपने बड़ों को अपनी समस्या के बारे में बताऊँगा /बताऊँगी और उनसे उचित सलाह लूँगा/लूँगी।

घ) मैं इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताऊँगा /बताऊँगी।

प्रश्न 2 अगर आप अपनी कक्षा में अपने सहपाठियों के साथ खुश नहीं रह पा रहे हैं अर्थात आपको समायोजन (Adjustment) की समस्या है तो आप इस समस्या को कैसे दूर करेंगे?

क) मैं सबसे दूरी बनाकर रखूँगा/रखूँगी।

ख) मैं अकेले ही सब कुछ ठीक कर सकता हूँ।

ग) मैं अपने बड़ों को अपनी समस्या के बारे में बताऊँगा /बताऊँगी और उनसे उचित सलाह लूँगा/लूँगी।

घ) मैं इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताऊँगा /बताऊँगी।

प्रश्न 3 अगर आपकी कक्षा में कोई बच्चा बुरी आदत से ग्रसित है तो आपका उसके प्रति क्या व्यवहार रहेगा?

क) में उससे बात नहीं करूँगा/करूंगी।

ख) मैं उससे दूरी बनाएँ रखूंगा/रखूँगी।

ग) मैं उससे बातचीत करके उसकी समस्या को दूर करने में उसकी सहायता करूँगा/करुँगी।

घ) मैं उसकी बुरी आदत के लिए उसे चिड़ाऊँगा/चिड़ाऊँगी।

प्रश्न 4 आप किन्हीं भी दो परिस्थितियों में से एक को नहीं चुन पा रहे हैं तो आप अंतर्द्वंद्व (Conflict) की समस्या से ग्रसित हैं। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

क) मैं सबसे दूरी बनाकर रखूँगा/रखूँगी।

ख) मैं अकेले ही सब कुछ ठीक कर सकता हूँ।

मैं अपने बड़ों को अपनी समस्या के बारे में बताऊँगा /बताऊँगी और उनसे उचित सलाह लूँगा/लूँगी।
मैं इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताऊँगा /बताऊँगी।

प्रश्न 5 आप हर वक्त अपने आप को श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश करते हैं ऐसे में आप अहम् (Ego) की समस्या से ग्रसित हैं आप इस समस्या को दूर करने के लिए क्या करेंगे?
मैं सबसे दूरी बनाकर रखूँगा/रखूँगी।
मैं अकेले ही सब कुछ ठीक कर सकता हूँ।
मैं अपने बड़ों को अपनी समस्या के बारे में बताऊँगा /बताऊँगी और उनसे उचित सलाह लूँगा/लूँगी।
मैं इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताऊँगा /बताऊँगी।

प्रश्न 6 आप की परीक्षा पास में है, आप दबाव, चिंता व भय से ग्रसित हैं इस समस्या को कैसे दूर करेंगे?
मैं सबसे दूरी बनाकर रखूँगा/रखूँगी।
मैं अकेले ही सब कुछ ठीक कर सकता हूँ।
मैं अपने बड़ों को अपनी समस्या के बारे में बताऊँगा /बताऊँगी और उनसे उचित सलाह लूँगा/लूँगी।
मैं इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताऊँगा /बताऊँगी।

प्रश्न 7 आपकी कक्षा में कोई बच्चा चुपचाप, गुमसुम सा, उदास व दुखी बैठा रहता है, तो इस समस्या को कैसे दूर किया जा सकता है?
क) मैं उससे बात नहीं करूँगा/करूंगी।
ख) मैं उससे दूरी बनाएँ रखूंगा/रखूँगी।
ग) मैं उससे बातचीत करके उसकी समस्या को दूर करने में उसकी सहायता करूँगा/करुँगी।
घ) मैं उसकी बुरी आदत के लिए उसे चिड़ाऊँगा/चिड़ाऊँगी।

प्रश्न 8 यदि आपकी कक्षा में आपका कोई सहपाठी शारीरिक या मानसिक रूप से कमजोर है तो आपका उसके प्रति कैसा व्यवहार रहेगा।
क) मैं उससे बात नहीं करूँगा/करूंगी।
ख) मैं उससे दूरी बनाएँ रखूंगा/रखूँगी।
ग) मैं उसकी हरसम्भव सहायता करूँगा/करुँगी।
घ) मैं उसे उसकी इस हालत के लिए चिड़ाऊँगा/चिड़ाऊँगी।

Dr. Sunil Kumar
Head of Hindi Department , Guru Nanak Dev University, Amritsar

Dr. Pallavi Sethi Ph.D in Psychology
Principal, D. A.V. Public School, Lawrence Road, Amritsar

Principal,
D.A.V. Public School,
Lawrence Road, Amritsar

Mrs. Gagan Bhatia
Psychology Teacher, D. A.V. Public School, Lawrence Road, Amritsar

Mrs. Soniya Sharma
Hindi Teacher in D. A.V. Public School, Lawrence Road, Amritsar

DR. RAJIV GUPTA
PEDIATRICS
29-5-23

Dr. Rajiv Gupta
M.D. Pediatrics (PMC 24553)
167 Shivala colony, Amritsar

सर्वेक्षण

अनुदित हिन्दी बाल कथाओं में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का व्यावहरिक अध्ययन

अनुदित बाल कथाओं में बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं के व्यावहारिक अध्ययन हेतू एक प्रश्नोत्तरी तैयार करके, अभिभावक एवं विद्यार्थी दोनों से सम्पर्क किया जिसके लिए, एक ऐसी प्रश्नोत्तरी तैयार की गई जिसमें इसके माध्यम से अभिभावक एवं उनके बालक अर्थात् विद्यार्थी दोनों ही उत्तर दे सकते है। इस प्रश्नोत्तरी में अभिभावक के लिए कुल 13 प्रश्न एवम् विद्यार्थियों के लिए कुल 8 प्रश्न रखें, जिसमें यह जानने की कोशिश की गई कि अभिभावक बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं से कितने अवगत हैं वो इनके बारे में कितने जागरुक हैं? और वे इन समस्याको के समाधान के लिए किस तरह के प्रयास करते हैं तथा बालकों से भी यह जानने का प्रयास किया गया कि बालक इन समस्याओं से अवगत है या नहीं। यदि वे इन समस्याओं से अवगत हैं तो वे इन समस्याओं का समाधान किन तरीकों से करते हैं? बालक स्वयं उसके प्रति उदासीन है या जागरुक हैं। यदि वो स्वयं इस तरह की किसी समस्या से पीडित हैं तो वो इस समस्या के समाधान के लिए सबसे पहले किसके पास पहुँचते हैं? ताकि उस समस्या का समाधान हो सके। इस प्रश्नोत्तरी के माध्यम से हमने यह भी जानने की कोशिश की कि बालक के जीवन में बाल कथाओं का क्या महत्त्व हैं? अभिभावक बाल कथाओं का प्रयोग अपने बालकों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाधान हेतू किस तरह कर सकता है? इसकी जानकारी भी इस प्रश्नोत्तरी के माध्यम से ली है। इसके साथ ही इस प्रश्नोत्तरी के माध्यम से हमने बाल्कों से भी यह जानने का प्रयास किया

है कि बाल कथाएँ उनके लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है और बाल कथाएँ बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाधान में कितनी कारगर है।

इस सर्वेक्षण में कुल 124 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिसमें अभिभावकों से मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बारे में पूछा गया। जिसमें से 66.4% लोगों ने बताया कि इन समस्याओं के बारे में उन्हें थोड़ी सी जानकारी है। 11.5% लोग अच्छे से जानते हैं व 11.5% लोग इन समस्याओं के बारे में बिल्कुल भी नहीं जानते।

51.6% अभिभावकों का मानना है कि चिंता, दबाव, तनाव, समायोजन, अंतर्द्वंद्व, कुंठा, प्रतिबल व अहम् सभी बच्चों की मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हैं। वहीं 19.4% अभिभावक अंतर्द्वंद्व, प्रतिबल, व अहम की समस्या को ही बाल मनोवैज्ञानिक समस्याएँ मानते हैं। वहीं 15.3% अभिभावक केवल चिंता, दबाव व तनाव की समस्या को ही मनोवैज्ञानिक समस्या मानते हैं।

यदि बच्चा गुमसुम व दुखी बैठा है तो इसके उत्तर में 60.2% अभिभावक इसे चिंता, दबाव, तनाव, समायोजन, अंतर्द्वंद्व या कुंठा की समस्या मानते हैं। 27.6% अभिभावक इसे चिंता, दबाव, व तनाव की समस्या मानते हैं। एवम् 12.2% अभिभावकों का मानना है कि यह समायोजन, अंतर्द्वन्द्व या कुंठा की समस्या है।

बच्चे को दबाव, चिंता या तनाव की समस्या से दूर करने के लिए 90.9% अभिभावकों ने राय दी कि प्यार से उसकी समस्या को जानने की कोशिश करेंगे तथा उस समस्या को दूर करने का प्रयास करेंगे।

बच्चे की चोरी करने की आदत को छुड़ाने के लिए 60.7% अभिभावकों ने सुझाव दिए कि बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उन्हें नैतिकता की शिक्षा देते हुए उन्हें उचित अनुचित कार्य से परिचित करवाएँ एवं उन्हें आत्म नियंत्रण एवं अनुशासन

का पाठ पढ़ाएँ। 22.1% अभिभावकों ने इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें उचित अनुचित कार्य से परिचित करवाते हुए नैतिकता की शिक्षा देने का सुझाव दिया।

बालक के अंतर्द्वंद्व की समस्या से ग्रसित होने पर 51.2% अभिभावकों ने सुझाव दिए कि बच्चों को उचित अनुचित कार्य से परिचित करवाते हुए दो परिस्थितियों में से एक का चुनाव करना सिखाए। वही 35.5% अभिभावकों ने सुझाव दिया कि उन्हें दो उचित अनुचित व परिस्थितियों में से एक का चुनाव करना सिखाएँ अन्यथा उन्हें अपने हाल पर छोड़ दें।

यदि बच्चा समायोजन की समस्या से ग्रसित है तो 77% अभिभावकों का मानना है कि बच्चों को इस योग्य बनाए कि वे खुद इस समस्या के कारणों का पता लगाएँ। माता-पिता उसमें उसकी सहायता करें व उसके उचित समाधान का परामर्श दें।

बालक की प्रतिबल की समस्या को दूर करने के लिए 80.3% अभिभावकों ने सुझाव दिया कि बच्चों को सही गलत का उचित ज्ञान देते हुए, उसका उचित मार्गदर्शन करें तथा उस पर किसी तरह का दबाव न बनाएँ। 9% अभिभावकों का मानना है कि बच्चे को सही गलत का उचित ज्ञान दे। 7.4% अभिभावकों का मानना है कि उनका उचित मार्गदर्शन करें।

कुंठा की समस्या को दूर करने के लिए 73.2% अभिभावकों ने सुझाव दिए कि बालक की समस्या का कारण जानकर उसे दूर करने का प्रयास करें व उसे कुछ अच्छा करने के लिए प्रेरित करें। 11.4% अभिभावकों का मानना है कि उसे अपने हाल पर छोड़ दें या उसे ऐसा करने के लिए डांटे।

अहं से ग्रसित बच्चे को इस समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए उसे इस समस्या से संबंधित बाल कथाएँ सुना कर उन्हें प्यार से इस समस्या के बारे में अवगत कराएँ व

प्यार से उन्हें समझाएँ। इस सुझाव से 42.7% अभिभावक पूर्णत: सहमत हैं। 37.9% सहमत है। 12% अभिभावक पूर्णत: असहमत हैं।

52.5% अभिभावक ही बालकथाओं से परिचित है। 40% अभिभावक परिचित है। जबकि 7.5% अभिभावक बालकथाओं से बिल्कुल भी परिचित नहीं है।

50% अभिभावकों का मानना है कि बाल कथाएँ, बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं को दूर करने में थोड़ी मात्रा में सहायक हैं। 42.7% अभिभावकों का मानना है कि हाँ बाल कथाएँ इन समस्याओं को दूर करने में सहायक है। 6.5% अभिभावकों का मानना है कि बाल कथाएँ इस समस्या को दूर करने में बिल्कुल भी सहायक नहीं है।

यदि बालक पढ़ाई में कमजोर है तो बाल कथाओं की सहायता से पाठ्य पुस्तकों में उनकी रूचि बढ़ा सकते हैं। इसका समर्थन 67.7% अभिभावकों ने किया है। 11.3% अभिभावक मानते हैं कि उन्हें बाल कथाएँ सुना कर और उसे पाठ्यक्रम से संबंधित करके इस समस्या को दूर किया जा सकता है। 11.3% अभिभावकों ने सुझाव दिया कि उन्हें बाल कथाओं के माध्यम से प्रेरित करें।

बच्चों के लिए

80.7% बालकों का मानना है कि अकेलेपन की समस्या को दूर करने के लिए अपने बड़ों को इस समस्या के बारे में बताएँगे एवं उनसे उचित सलाह लेंगे। 9.6% बालकों का मानना है कि वे इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

समायोजन की समस्या को दूर करने के लिए 79.8% बालकों का मानना है कि वे अपने बड़ों को इस समस्या के बारे में बताएँगे और उनसे इस समस्या को दूर करने के लिए उचित परामर्श लेंगे। 8.8% बालकों का मानना है कि वे इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

अगर कोई बच्चा किसी बुरी आदत से ग्रसित है तो 88.6% बच्चों ने सुझाव दिए कि वे उस बच्चे से बातचीत करके उस समस्या को दूर करने में उसकी सहायता करेंगे।

अंतर्द्वंद्व की समस्या को दूर करने के लिए 82.6 प्रतिशत बालकों ने सुझाव दिए कि वे अपने बड़ों से इस समस्या के बारे में बात करेंगे तथा उनसे इस समस्या को दूर करने के लिए उचित सलाह लेंगे। 8.7% बालकों ने कहा कि वे इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

अहं की समस्या को दूर करने के लिए 79.6 प्रतिशत बालकों ने सुझाव दिए कि वे अपने बड़ों से इस समस्या के बारे में बात करेंगे तथा उनसे इस समस्या को दूर करने के लिए उचित सलाह लेंगे। 8.8% बालकों ने कहा कि वे इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

अंतर्द्वंद्व की समस्या को दूर करने के लिए 82.6 प्रतिशत बालकों ने सुझाव दिए कि वे अपने बड़ों से इस समस्या के बारे में बात करेंगे तथा उनसे इस समस्या को दूर करने के लिए उचित सलाह लेंगे। 8.7% बालकों ने कहा कि वे इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

दबाव चिंता तथा भय की समस्या को दूर करने के लिए 79.6 प्रतिशत बालकों ने सुझाव दिए कि वे अपने बड़ों से इस समस्या के बारे में बात करेंगे तथा उनसे इस समस्या को दूर करने के लिए उचित सलाह लेंगे। 9.7% बालकों ने कहा कि वे इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

आपकी कक्षा में कोई बच्चा चुपचाप, गुमसुम, उदास व दुखी बैठा रहता है, इस समस्या को दूर करने के लिए 85.2% बालकों ने सुझाव दिए कि वे अपने बड़ों से इस समस्या

के बारे में बात करेंगे तथा उनसे इस समस्या को दूर करने के लिए उचित सलाह लेंगे। 6.1% बालकों ने कहा कि वे इस समस्या के बारे में किसी को नहीं बताएँगे।

यदि कक्षा में उनका कोई सहपाठी शारीरिक या मानसिक रूप से कमजोर है तो उसके लिए 86% बच्चों ने सुझाव दिए कि वे उसकी हर संभव सहायता करेंगे। 6.1% बच्चों ने कहा कि वे उस से दूरी बनाए रखेंगे।

प्रश्न 1 क्या आप बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं (Psychological Problems) से परिचित हैं?

123 responses

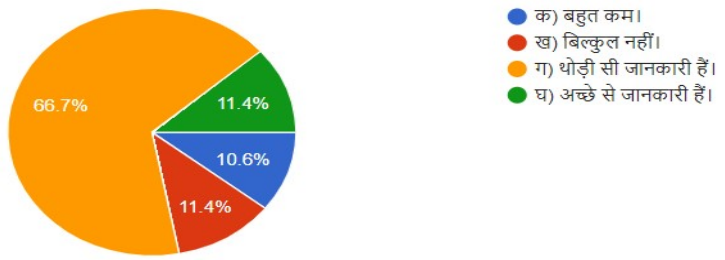

प्रश्न 2 बच्चों में कौन कौन सी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ (Psychological Problems) होती हैं?

125 responses

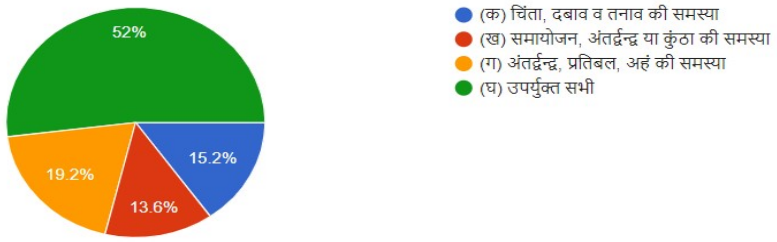

प्रश्न 3 यदि बच्चा गुमसुम व दुखी बैठा रहता है तो वह कौन सी मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रसित है?

124 responses

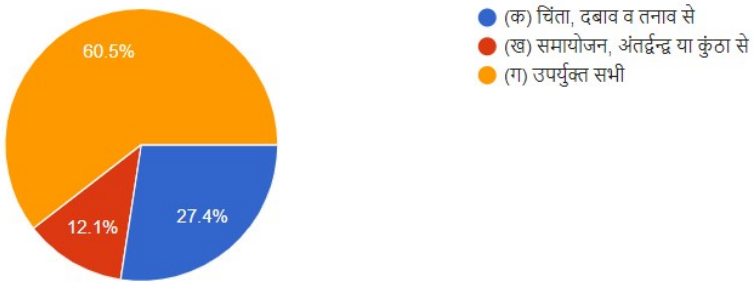

प्रश्न 4 यदि बच्चा दबाव, चिंता या तनाव की समस्या से ग्रसित है, तो इस समस्या को कैसे दूर किया जा सकता है?

122 responses

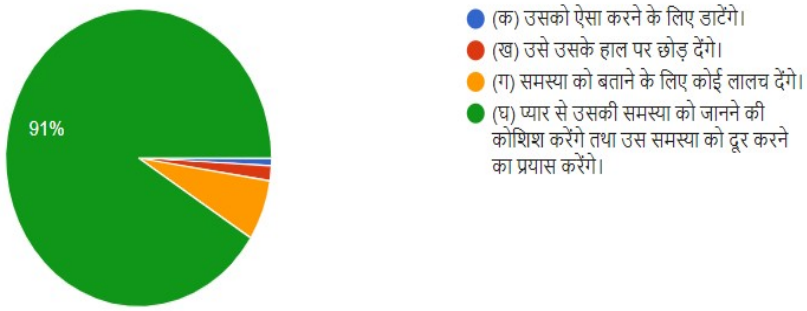

प्रश्न 5 बच्चे में यदि चोरी करने की आदत है तो उसे यह आदत छुड़ाने के लिए क्या करना चाहिए ?

(क) बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखें।

(ख) उन्हें नैतिकता की शिक्षा देनी चाहिए।

(ग) उन्हें उचित - अनुचित कार्य से परिचित करवाएँ।

(घ) उन्हें आत्म नियंत्रण और अनुशासन का पाठ पढ़ाएँ।

आपके अनुसार उपयुक्त विकल्प कौन सा है-

123 responses

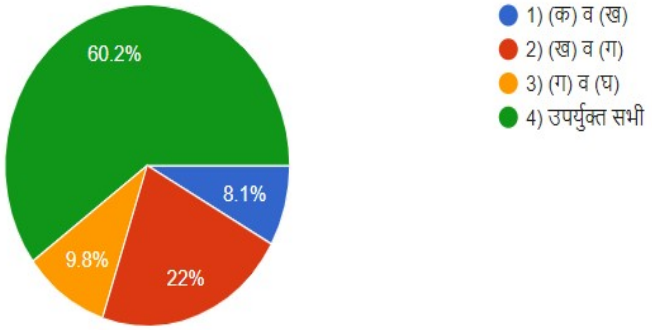

प्रश्न 6 यदि बच्चा अन्तर्द्वन्द्व (conflict) की समस्या से ग्रसित है तो माता-पिता होने पर आपका क्या उत्तरदायित्व बनता है?

(क) बच्चों को उचित अनुचित कार्य से परिचित करवाएँ।

(ख) उन्हें अपने हाल पर छोड़ दें।

(ग) उन्हें किन्हीं भी दो परिस्थितियों में से एक सही का चुनाव करना सिखाएँ।

(घ) जीवनभर इसी तरह से ग्रसित रहे।

आपके अनुसार उपयुक्त विकल्प कौन सा है-

122 responses

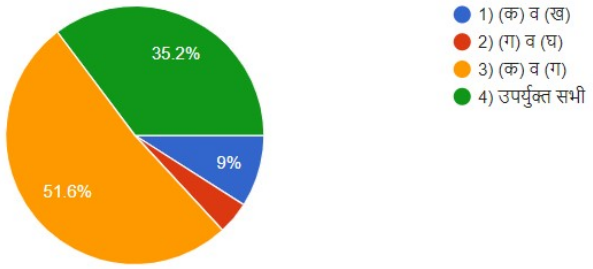

प्रश्न 7 यदि बच्चे को समायोजन (adjustment) की समस्या का सामना करना पड़ता है तो माता पिता होने के नाते आपकी क्या जिम्मेदारी बनती है?

(क) इस समस्या के कारणों का पता लगाना।

(ख) बच्चे को अपने हाल पर छोड़ देंगे।

(ग) कारणों का पता लगने पर उचित परामर्श देना।

(घ) बच्चे को इस योग्य बनाना कि वह खुद ही कारणों का पता करें व उसका

समाधान करें।

आपके अनुसार उपयुक्त विकल्प कौन सा है-

123 responses

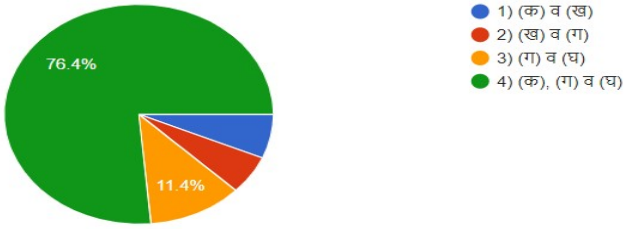

प्रश्न 8 यदि बच्चा प्रतिबल (Stress) की समस्या से ग्रसित तो आप क्या करेंगें ?

123 responses

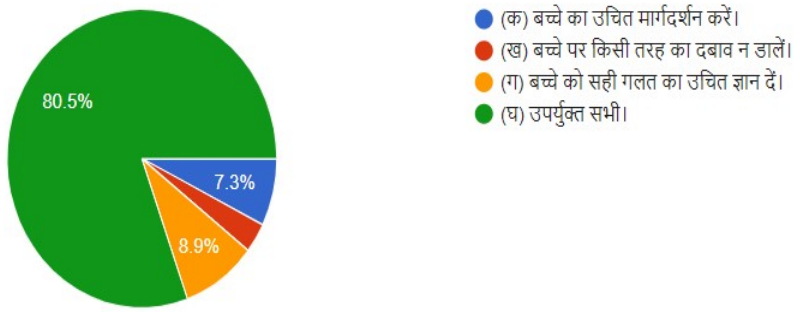

प्रश्न 9 कुण्ठा (Frustration) से ग्रसित बच्चे को आप इस समस्या से कैसे छुटकारा दिलवाएंगे?

1)उसे कुछ अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करके।

2)उसे अपने हाल पर छोड़ देंगे।

3)उसे डांट कर।

4)उसकी समस्या का कारण जानकर उसे दूर करने की कोशिश करेंगे।

उचित विकल्प का चयन करें-

123 responses

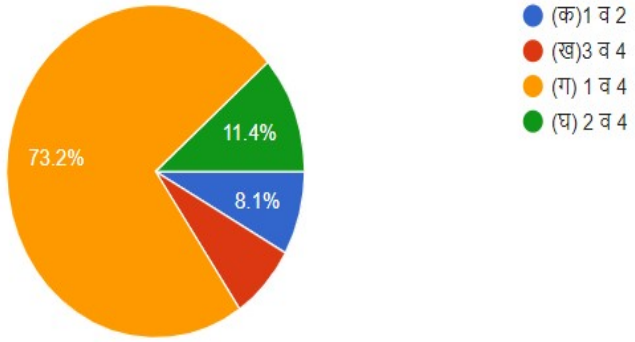

प्रश्न 10 अहम् (Ego) से ग्रसित बच्चों को इस समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए बच्चों को इस से संबंधित बाल कथाएँ सुनाकर उन्हें प्यार से इस समस्या के बारे में अवगत कराएँ व प्यार से उन्हें समझाए।

124 responses

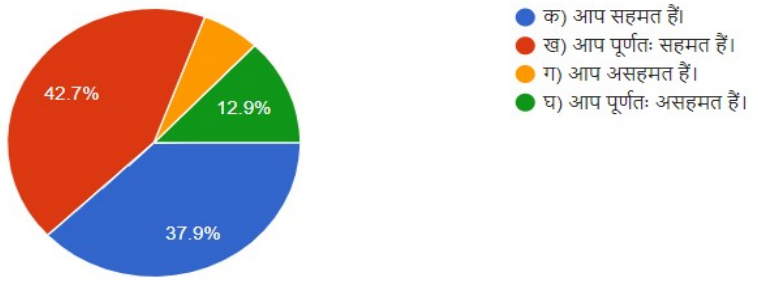

प्रश्न 11 क्या आप बाल कथाओं (Child Stories) से परिचित हैं?

Copy

120 responses

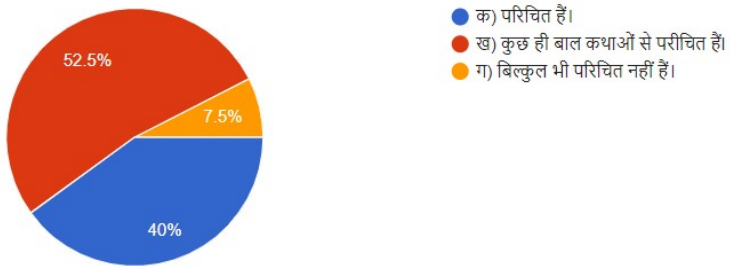

Copy

प्रश्न 12 सम्पूर्ण रूप में क्या बाल कथाएँ इन बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं (Psychological Problems) को दूर करने में सहायक हैं।

124 responses

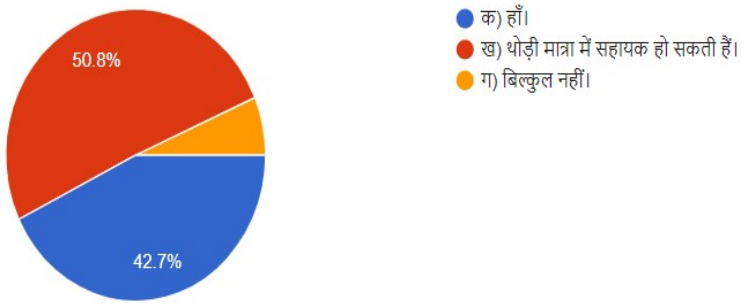

Copy

प्रश्न 13 आपका बालक पढ़ाई में कमजोर है तो आप बाल कथाओं की सहायता से किस तरह से उसकी पाठ्य पुस्तकों में रुचि बढ़ा सकते हैं?

124 responses

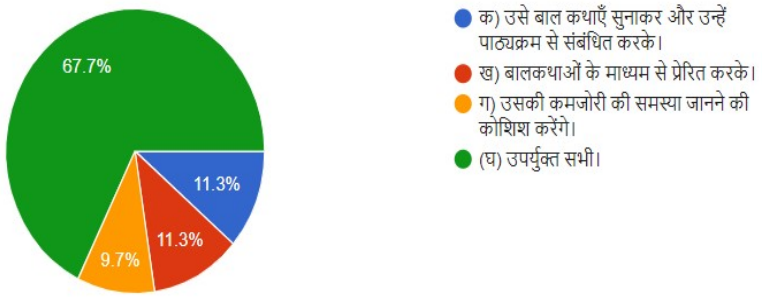

<u>बच्चों के लिए</u>

Cop

प्रश्न 1 अगर आप अकेलेपन (Lonelyness) की समस्या से ग्रसित है तो आप इसे कैसे दूर करना चाहोगे?

114 responses

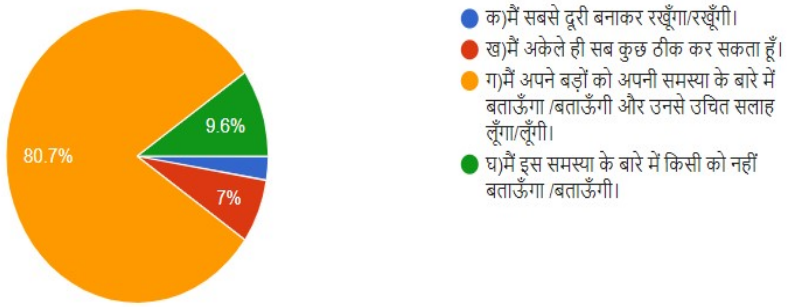

Cop

प्रश्न 2 अगर आप अपनी कक्षा में अपने सहपाठियों के साथ खुश नहीं रह पा रहे हैं अर्थात आपको समायोजन (Adjustment) की समस्या है तो आप इस समस्या को कैसे दूर करेंगे?

114 responses

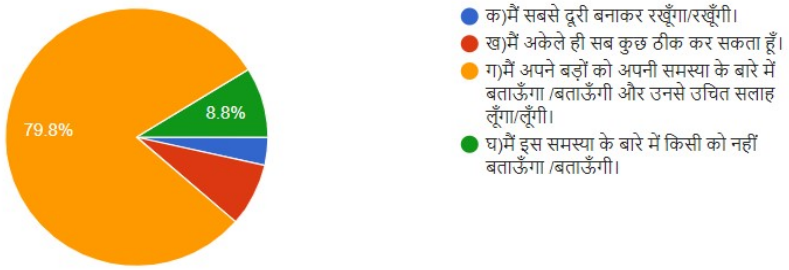

Cop

प्रश्न 3 अगर आपकी कक्षा में कोई बच्चा बुरी आदत से ग्रसित है तो आपका उसके प्रति क्या व्यवहार रहेगा?

114 responses

Co

प्रश्न 4 आप किन्हीं भी दो परिस्थितियों में से एक को नहीं चुन पा रहे हैं तो आप अंतर्द्वंद्व (Conflict) की समस्या से ग्रसित हैं। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

115 responses

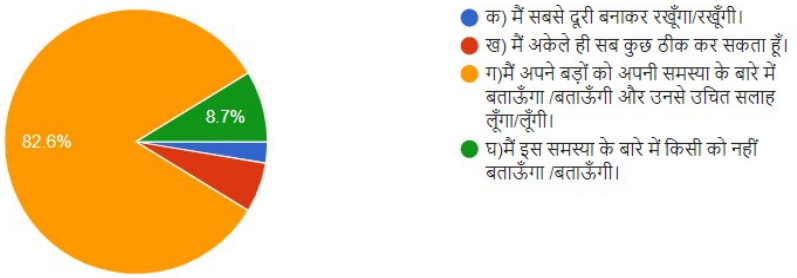

Cop

प्रश्न 5 आप हर वक्त अपने आप को श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश करते हैं ऐसे में आप अहम् (Ego) की समस्या से ग्रसित हैं आप इस समस्या को दूर करने के लिए क्या करेंगे?

113 responses

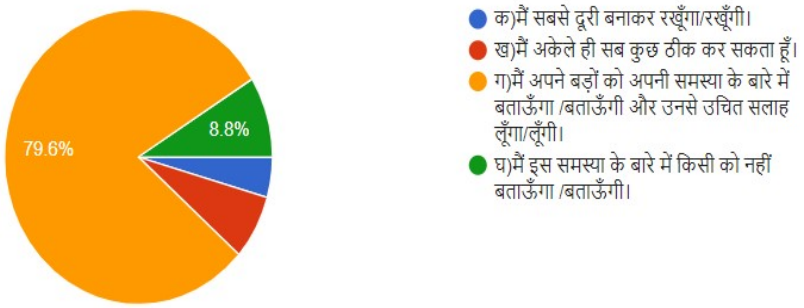

Cop

प्रश्न 6 आप की परीक्षा पास में है, आप दबाव, चिंता व भय से ग्रसित हैं इस समस्या को कैसे दूर ?

113 responses

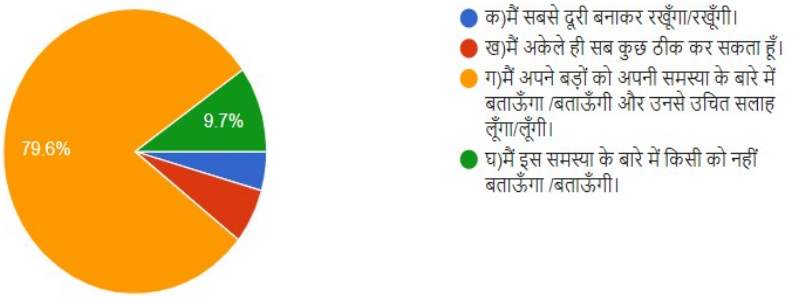

Copy

प्रश्न 7 आपकी कक्षा में कोई बच्चा चुपचाप, गुमसुम सा, उदास व दुखी बैठा रहता है, तो इस समस्या को कैसे दूर किया जा सकता ?

115 responses

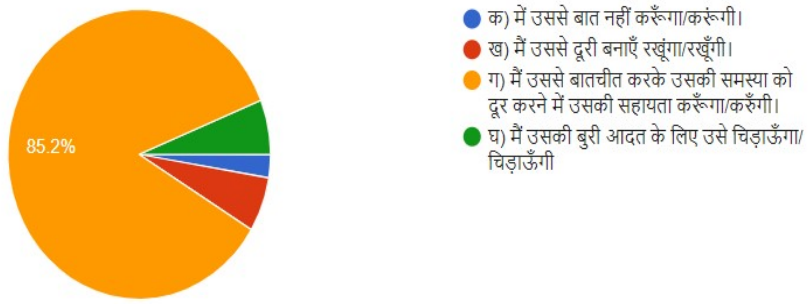

Cop

प्रश्न 8 यदि आपकी कक्षा में आपका कोई सहपाठी शारीरिक या मानसिक रूप से कमजोर है तो आपका उसके प्रति कैसा व्यवहार रहेगा।

114 responses

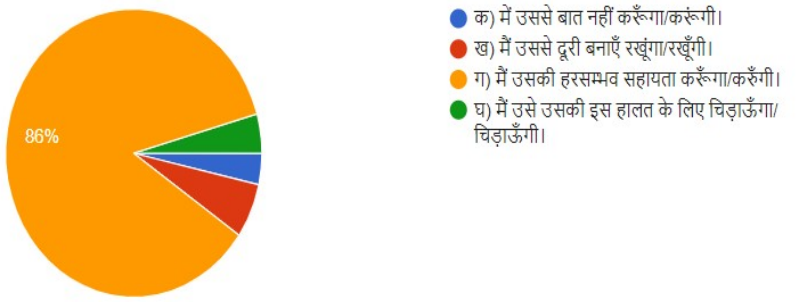

इस सर्वेक्षण के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि कुछ अभिभावकों को ही इन बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बारे में जानकारी है लेकिन वे कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बारे में जानते हैं। जिनका अध्ययन हमने बाल कथाओं में भी किया है।

ज्यादातर अभिभावकों ने सुझाव दिए कि अगर बालक किसी भी मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रसित है तो पहले उनको इन समस्याओं के कारणों का पता लगाना चाहिए तथा उसके बाद बालक को उचित सलाह देकर उसका समाधान करना चाहिए। इसके साथ-साथ बालक को भी इतना सक्षम बनाए कि वह भी अपनी समस्याओं के कारणों का पता लगा सके और उनका समाधान कर सके तथा उन्हें उचित अनुचित की शिक्षा अवश्य दें। बालक पर किसी भी तरह का दबाव न बनाएँ। अभिभावक कुछ बाल कथाओं से अवगत है लेकिन अभिभावकों ने माना है कि ये बाल कथाएँ बालकों की समस्याओं को दूर करने में सहायक हो सकती हैं। हमने बाल कथाओं में संकलित मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भी अध्ययन किया है जिनमें साफ साफ झलकता है कि बच्चे अपने अभिभावकों को पूरी बात नहीं बताते तथा उन्हें स्वयं उचित अनुचित का ज्ञान नहीं है। जिसके कारण उन्हें इन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बालकों से जब इन समस्याओं के बारे में प्रश्न किए गए तो अधिकतर बालकों ने यही उत्तर दिया कि उन्हें अपनी इन समस्याओं के बारे में अपने अभिभावकों को बताना चाहिए तथा इन समस्याओं के समाधान के लिए उचित परामर्श भी लेनी चाहिए। कुछ प्रतिशत बालकों का मानना है कि वह इन समस्याओं के बारे में किसी को नहीं बताएँगे, लेकिन जैसा कि कथाओं में भी परिलक्षित हो रहा है यदि वे इन समस्याओं के बारे में अपने अभिभावकों को नहीं बताएँगे तो वे इन समस्याओं का समाधान नहीं कर पाएँगे। जिससे वे काफी लंबे समय तक इन समस्याओं से ग्रसित रह सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

ताम्हनकर, ना. धो..पाणदीकर, सुरेखा. *गोट्या.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देवसरे, हरिकृष्ण. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी , 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:4.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

भुल्लर, जसवीर.ग्रोवर, शांता. *जंगल टापू.* साहित्य अकादेमी, 2019.

राय, सुकुमार. गोस्वामी, अमर. *चुनिंदा कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2013.

सहायक ग्रंथ (हिंदी)

श्रीवास्तव, डी.एन.. वर्मा, प्रीति. *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास.* श्री विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, 2019.

सहायक ग्रंथ (अंग्रेजी)

Bart, Cyril. *The Backward Child*. Hodder Arnold H & S, 1974.

Kuppuswami, B.. Advanced Educational Psychology. Sterling Publishers, 1980

उपसंहार

मनोविज्ञान अर्थात मन का विज्ञान। भारतीय विद्वानों ने मनोविज्ञान को दर्शन की ही शाखा मानते हुए कहा कि मानव मन का अध्ययन प्राचीन काल से ही किया जा रहा है, जिसका उल्लेख हम वेदों, उपनिषदों व दर्शन शास्त्रों में देख सकते हैं। उनका मानना है कि मनोविज्ञान के अंतर्गत मानव मन का, उनके व्यवहार के साथ-साथ मन की प्रकृति एवं क्रियाकलापों का, मन की विभिन्न अवस्थाओं का तथा उस पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। तत्पश्चात पाश्चात्य विद्वानों में Mc. Dougal ने मनोविज्ञान को दो शब्दों आत्मा और विज्ञान का योग बताते हुए इच्छाओं का विज्ञान एवं व्यवहार का विज्ञान कहा है। अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने इसे शुद्ध पश्चिमी पद्धति बताते हुए इसे मानसिक क्रियाओं, शारीरिक व्यवहार तथा उनका निरीक्षण, प्रतिक्रियाओं का अध्ययन, मानसिक जीवन की घटनाओं का अध्ययन मानते हुए इसे व्यवहार का विज्ञान माना है।

मनोविज्ञान की विभिन्न परिभाषाओं व अर्थ का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि मनोविज्ञान का अध्ययन प्राचीन काल से ही किया जा रहा था, लेकिन प्राचीन काल में इसे दर्शनशास्त्र की शाखा के रूप में जाना जाता था। विभिन्न विद्वानों एवं विचारकों के विचारों का अध्ययन करने के बाद हम यह कह सकते हैं कि 16वीं शताब्दी में इसे आत्मा का , 17वीं शताब्दी में मन का , 19वीं शताब्दी में चेतना का विज्ञान एवं 20वीं शताब्दी में व्यवहार का विज्ञान कहा गया। फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषण में काम प्रवृत्ति को महत्वपूर्ण माना है। उन्होंने अपने मन की संरचना को दो भागों में विभक्त किया है- गत्यात्मक एवं स्थल रूपरेखीय। फ्रायड की मूल भावना कामवासना को नकारते हुए मनुष्य में श्रेष्ठा की भावना को महत्व दिया। युंग ने अपने मनोविश्लेषण अपने सिद्धांत में अचेतन मन को दो भागों में विभक्त

करने के साथ-साथ मनुष्य को बहिर्मुखी व अंतर्मुखी दो भागों में विभक्त किया है। अत: मनोविज्ञान के अंतर्गत मन का, आत्मा का, चेतना का, व्यवहार का, व्यवहार की क्रियाओं का, मन की अवस्थाओं का मन पर पड़ने वाले प्रभाव का, मानसिक जीवन की घटनाओं का अध्ययन किया जाता है अर्थात इसके अंतर्गत किसी भी प्राणी के सर्वांगीण विकास का अध्ययन किया जाता है।

हिन्दी बालकथाओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अंतर्गत परिवेशगत अध्ययन में बालक के आसपास के परिवेश का आसपास के वातावरण का उस पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। सामाजिक संदर्भ के अंतर्गत बच्चे के आसपास के समाज का उसके मनोविज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव का, वहीं सांस्कृतिक मनोविज्ञान के अंतर्गत बच्चे के आसपास रहने वाले लोगों के रीति रिवाज वहाँ का रहन सहन, वहाँ के त्योहारों का अध्ययन किया गया है। हिन्दी बाल कथाओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अंतर्गत बालक के मन पर डालने वाले परिवेशगत, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संदर्भों का अध्ययन किया गया जिसमें वहाँ के वातावरण का, वहाँ के रीति-रिवाजों का, त्योहारों का, समाज में व्याप्त बुराइयों का, किसी भी प्राणी के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया गया। बाल कथाओं में संकलित विभिन्न ऐतिहासिक संदर्भों, पौराणिक संदर्भों, वैज्ञानिक संदर्भों का, नैतिक सन्दर्भों और काल्पनिक संदर्भों पर प्रकाश डाला गया। कलात्मक सन्दर्भ के अंतर्गत इन बाल कथाओं में प्रयोग की गई भाषा, उसमें प्रयोग की गए विभिन्न शैलियों का अध्ययन किया गया।

हिन्दी बाल कथाओं के मनोविज्ञान को दो भागों में विभाजित करके अध्ययन किया गया। हिन्दी कथाओं का बाल मनोवैज्ञानिक अध्ययन एवं हिन्दी बाल कथाओं का बाल मनोवैज्ञानिक अध्ययन। हिन्दी कहानी का प्रादुर्भाव 19वीं शताब्दी से पूर्व ही हो चुका

था, लेकिन हिन्दी कहानी में मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखने का सर्वप्रथम श्रेय मुंशी प्रेमचंद जी को दिया जाता है। मुंशी प्रेमचंद ने बड़े भाई साहब, रामलीला मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ लिखकर इसकी शुरुआत की। तत्पश्चात जयशंकर प्रसाद जी की बालक चंद्रगुप्त, मधुआ, छोटा जादूगर कहानियाँ मनोविज्ञान पर आधारित थी। जिनका उल्लेख अध्याय 2 में किया गया है। तत्पश्चात जैनेंद्र कुमार जैन, पांडे बेचन शर्मा उग्र, राघव साहनी, अमरकांत, कमलेश्वर आदि अनेक लेखकों ने बाल मनोविज्ञान पर आधारित विभिन्न कहानियाँ लिखी। कथाओं की शुरुआत तो दादी नानी की कहानियों से हो गई थी। फिर भी पंचतंत्र, हितोपदेश का भी इसमें बहुत बड़ा योगदान रहा है। इनके विकास का श्रेय बाल पत्रिकाओं को भी जाता है। इसके उपरांत हिन्दी बाल कथाओं ने इसके विकास में अपना योगदान दिया। बाल कथाओं में अनेक लेखकों ने बाल उपन्यास पर भी अपनी लेखनी चलाई। बच्चे के मनोविज्ञान पर परिवेश, सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भों का विशेष प्रभाव पड़ता है। हिन्दी बाल कहानियों में मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानियाँ कजाकी व ईदगाह, अमनदीप कौर द्वारा रचित कहानी परवरिश, मन्नू भंडारी द्वारा रचित कहानी सजा़, कुमार जैन द्वारा रचित कहानी खेल में साफ-साफ दर्शाया गया है कि बालक का लालन-पालन जिस तरह के परिवेश में होता है उसका सीधा प्रभाव उसके मनोविज्ञान पर परिलक्षित होता है। मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी गुल्ली डंडा में व्याप्त अमीर गरीब का अंतर, ईदगाह में अपनी दादी के लिए त्याग, बड़े भाई साहब में छोटा भाई का बड़े भाई के प्रति सम्मान, धरती अब भी घूम रही है में भ्रष्टाचार का, छोटा जादूगर कहानी में छोटा जादूगर की जिम्मेदारी को दर्शाया गया है, जिनसे स्पष्ट हो रहा है कि सामाजिक संदर्भ बच्चे के मनोविज्ञान को प्रभावित करते हैं। इसी तरह से मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी रामलीला में व्याप्त बुराइयों, ईदगाह में ईद का त्योहार, मुस्लिम संस्कृति, विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित कहानी रहमान का बेटा में हिंदू मुस्लिम

संस्कृति का मिलाजुला रूप, वही जैनेंद्र कुमार द्वारा रचित कहानी अपना-अपना भाग्य में पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं और इन कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भों का बालक के मनोविज्ञान पर गहरा प्रभाव होता है। संजीव द्वारा रचित आरोहण कहानी का एवं जैनेंद्र कुमार कुमार जैन द्वारा रचित अपना अपना भाग्य कहानी में पर्वतीय इलाके का बालक के मन पर पड़े प्रभाव को दर्शाया गया है।

आंतरिक परिवेश जो बच्चे के आसपास यानी उसके परिवार और उसके साथियों का एवं बाह्य परिवेश में परिवार से निकलकर समाज के अन्य लोगों का जो प्रभाव बच्चों के मनोविज्ञान पर पड़ता है वही सम्मिलित है। प्रकाश प्रसाद द्वारा अनुदित कहानी अच्छा मित्र में, हरीश नारंग द्वारा अनुदित कहानी कोनकिची होमहिल में आंतरिक परिवेश का प्रभाव दर्शाया गया है। अमर गोस्वामी द्वारा अनुदित उपन्यास गोसाई बागान का भूत, शांता ग्रोवर द्वारा अनुदित कहानी अलविदा जंगल टापू, अरुंधति देवस्थले द्वारा अनुदित उपन्यास जंगल की एक रात में बाह्य परिवेश का प्रभाव स्पष्ट दिखाया गया है। सुरेखा पांडे द्वारा अनुदित उपन्यास गोट्या में, हरीश नारंग द्वारा अनुदित कहानी कोनकिची होमहिल में, स्वप्ना दत्त द्वारा अनुदित कहानी दुष्ट बाघ आदि अनेक कहानियों में स्वार्थ की प्रवृत्ति, संघर्ष की भावना व सहयोग, प्रेम भाव का चित्रण, भूख गरीबी का चित्रण, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी आदि सामाजिक संदर्भ एवं उनका बालक के मनोविज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। इसके साथ-साथ पर्व, त्योहार, रीति रिवाज, मेले, किस्सा गोसाई, लोक कथाएँ आदि अनेक सांस्कृतिक संदर्भ , विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु, उद्योगों का बाल मनोविज्ञान पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया और इससे परिलक्षित हुआ कि इन बाल कथाओं में प्रयोग किए गए सामाजिक संदर्भ, सांस्कृतिक संदर्भ एवं भौगोलिक संदर्भों का बालक के मनोविज्ञान पर गहन प्रभाव पड़ा हैं।

बच्चों में किसी भी ज्ञान को बढ़ावा देना है तो कथाएँ उनके लिए बहुत अच्छा माध्यम है। उन के माध्यम से बच्चों को खेल-खेल में व बातों बातों में बहुत सी जानकारी दी जा सकती है। अगर बच्चों को ऐतिहासिक जानकारी पाठ्य पुस्तकों से ही दी जाए तो वह उनके लिए बहुत ही बोझिल बन जाती हैं। लेकिन वही जानकारी यदि कथाओं के माध्यम से दी जाए तो वे उनके लिए रुचिपूर्ण व मनोरंजक हो सकती हैं। अनुदित कथाओं में इतिहास के बारे में तो ज्यादा कहानियाँ नहीं दी गई लेकिन राजा महाराजाओं की कहानियाँ काफी मात्रा में दी गई है जिनके माध्यम से बच्चों को राजा महाराजाओं, उनकी शासन व्यवस्था, रहन-सहन, उनकी वीरता, साहस, त्याग, अनुशासन, कर्तव्य परायणता, जिम्मेदारी एवं भाईचारे की जानकारी दी जा सकती है। प्राचीन काल में पुराणों, वेदों एवं उपनिषदों की रचना हुई जिनके बारे में एक इंसान को जानकारी होनी चाहिए। हमारे पौराणिक कथाओं के बारे में बच्चों को मुख्यतः रामायण और महाभारत के माध्यम से जानकारी दी जाती है। इन अनुदित हिन्दी कथाओं में पौराणिक कथाओं में धार्मिक कथाओं को संकलित किया गया है, जिसमें प्रेम, सम्मान, वीरता, साहस, अपनत्व, भाईचारा को दर्शाया गया है। जिसका अध्ययन करने के बाद बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ प्रकृति के रहस्य व विकास के बारे में भी दृष्टिकोण विकसित होगा ।

इन बाल कथाओं में जहाँ एक तरफ यथार्थ से कोसों दूर परियों की, पशु पक्षियों की, जादूगर की कहानियों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें बच्चे एक कल्पनालोक स्वप्नलोक में विचरण करते हैं, वही वास्तविकता को दर्शाने वाली वैज्ञानिकता पर आधारित कहानियों को भी सम्मिलित किया गया है। बालक परियों की, राजा महाराजाओं की कहानियों को जितने उत्साह व रुचि के साथ पढ़ते हैं वही वैज्ञानिकता पर आधारित कहानियों से बच्चे दूर भागते हैं। लेकिन इन अनुदित बाल कथाओं में अचरज ग्रह की दंतकथा, वनदेवी, सूरज और मोर, अंतरिक्ष में विस्फोट में संकलित

कहानियाँ बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है। जिसके कारण बालक इन्हें पढ़कर सहज ही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इन कथाओं में ग्रह नक्षत्र, नए-नए आविष्कार, इन अविष्कारों के कारण पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभाव का, पेड़ पौधों की कटाई का प्रभाव आदि का वर्णन बहुत ही रोचक पूर्ण ढंग से किया गया है। कहानियों के माध्यम से बच्चों को नैतिकता का पाठ सहज ही दिया जा सकता है। इन अनुदित कथाओं में इसका निर्वाह बहुत ही अच्छे ढंग से किया गया है। जिनमें कहानियों के माध्यम से सच्चाई, ईमानदारी, मदद, समझदारी आदि अनेक नैतिक गुणों का विकास किया जा सकता है।

अनुदित बाल कथाओं में भाषा शैली को पाठक के अनुकूल एवं विशिष्ट बनाने के लिए अलग-अलग स्थानों पर सरल एवं सहज वाक्यों का, ध्वन्यात्मकता का, युग्म शब्दों का, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू के शब्दों का, सुविचारों का ग्राम्यता को दर्शाने वाले ग्राम्य शब्दों का, वैज्ञानिक शब्दावली का, मुहावरे और लोकोक्तियाँ का, कविता की लाइनों के साथ-साथ मूल भाषा को इंगित करने वाले शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। बालकों की रुचि व मनोविज्ञान को मध्य नजर रखते हुए इन कथाओं में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है। इन कथाओं को बच्चों के लिए रुचि पूर्ण व मनोरंजक बनाने के लिए इन कहानियों में शब्दों के चित्र प्रस्तुत करते हुए चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। बच्चों को कविताएँ बहुत पसंद है। इन अनुदित कथाओं में अनेक कहानियों में कविताओं का प्रयोग किया गया है। जिसके कारण यह बच्चों के लिए बहुत ही आकर्षक व रुचि पूर्ण बन गई है। जहाँ एक तरफ किस्सा गोसाई व बाल कथा का प्रयोग करके बालकों को नैतिकता का पाठ पढ़ाया गया है, वही संवादात्मक व खंडों में विभक्त शैली का प्रयोग करके इन्हें सरल व सहज एवं बच्चों के अनुकूल भी बनाया गया है। ये कथाएँ सरल, सहज, रुचिपूर्ण तथा मनोविज्ञान के अनुकूल होने के साथ-साथ उपदेशात्मक भी हैं।

अनुदित बाल कथाओं में समाहित बाल मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन किया गया, इन समस्याओं का व्यवहारिक अध्ययन करने के लिए अभिभावकों और बच्चों से प्रश्नोत्तरी के माध्यम से इन समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव माँगे गए। जिसमें अधिकतर बालकों ने यह सुझाव दिया कि वे इन समस्याओं को अपने अभिभावकों से साझा करेंगे और इनके समाधान के लिए उनसे उचित परामर्श लेंगे। अभिभावकों ने भी यही सुझाव दिया कि वे अपने बच्चों की इन समस्याओं के कारणों का पता लगाकर इनका समाधान करने की कोशिश करेंगे और बच्चे को इन समस्याओं को दूर करने के लिए इस योग्य बनाएँगे कि वे भी इन समस्याओं का उचित समाधान ढूंढ कर इन्हें दूर कर सकें।

चयनित अनुदित बाल कथाओं का अध्ययन, चिंतन-मनन करते हुए शोध के उद्देश्यों को पूरा किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अभी कुछ विशेष दिशाएं हैं जिनके ऊपर शोध की संभावनाएँ दृष्टिगोचर होती है:

साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं का मनौवैज्ञानिक अध्ययन की सम्भावनाएँ:

1 साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं में जीवन मूल्यों का अध्ययन।

2 साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं में सामाजिक एवम् सांस्कृतिक अध्ययन।

3 साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं में कल्पनात्मक अध्ययन

4 साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित हिन्दी बालकथाओं का परिवेशगत अध्ययन

संदर्भ ग्रंथ सूची

क) आधार ग्रंथ

ख) सहायक ग्रन्थ (हिन्दी)

ग) सहायक ग्रन्थ (अंग्रेजी)

घ) सहायक पत्र पत्रिकाएँ एवं शोध पत्र

ड).शब्दकोश

च) इंटरनेट सहायक सामग्री

छ) लेख

ज) मैंग्जीन

संदर्भ ग्रंथ सूची

क आधार ग्रंथ -

उपाध्याय, प्रकाश, प्रसाद. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *नेपाली लोक-कथाएँ भाग-2* . साहित्य अकादेमी, 2019.

कार्ल ग्रिम, जैकोब लुडविग. कार्ल ग्रिम, विल्हेम. देवसरे, हरिकृष्ण. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---.---. *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

किरोगा ओरासियो, पंत प्रीति, *जंगल- कथा,* साहित्य अकादेमी,अकादमी 2019.

गोपालकृष्णन, कल्वी. देवसरे, हरिकृष्ण. *वनदेवी.* साहित्य अकादेमी, 2017.

गाडगिल, गंगाधर. देशपांडे, माधुरी. *पक्या और उसका गैंग.* साहित्य अकादेमी, 2019.

जीरवा, वेबस्टर डेविस. सुहिल्या, आलमा*. जलपरी का मायाजाल.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---.---. सूरज और मोर. साहित्य अकादेमी, 2017.

ताम्हनकर, ना. धो..पाणदीकर, सुरेखा. *गोट्या.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देवसरे, हरिकृष्ण. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी , 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:2.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:4.* साहित्य अकादेमी, 2018.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. *हैंस एँडरसन की कहानियाँ भाग- 2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

देसाई, अनीता. मोहन, विमला. *बिल्ली हाउसबोट पर.* साहित्य अकादेमी, 2016.

नारलीकर, जयंत विष्णु. पाणंदीकर, सुरेखा*. अंतरिक्ष में विस्फोट.* साहित्य अकादेमी, 2019.

बांड, रस्किन. मोहन, सौमित्र. *कबूतरों की उड़ान.* साहित्य अकादेमी, 2019.

बंधोपाध्याय, विभूतिभूषण. गोस्वामी, अमर. *किशोर कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. गोस्वामी, अमर. *चंद्र पहाड़.* साहित्य अकादेमी, 2019

भागवत, लीलावती. देवस्थले, अरुंधति. *जंगल की एक रात.* साहित्य अकादेमी, 2019.

भुल्लर, जसवीर.ग्रोवर, शांता. *जंगल टापू.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मुखोपाध्याय, शीर्षेंदु. गोस्वामी, अमर. *गोसाई बाबा का भूत.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह.* साहित्यअकादेमी, 2019.

मजूमदार, लीला राय क्षितिश. नवलपुरी, युगजीत. *रविंद्रनाथ का बाल साहित्य भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

---. नवलपुरी, युगजीत. *रवींद्रनाथ का बाल साहित्य भाग-2.* साहित्य अकादेमी, 2019.

माकीनो, साइजी. *जापान की कथाएँ.* साहित्य अकादेमी, 2019.

मिश्र, जयमंत. व्यास, रेखा. *लघुकथा संग्रह भाग- 1.* साहित्य अकादेमी, 2019.

राय, सुकुमार. गोस्वामी, अमर. *चुनिंदा कहानियाँ.* साहित्य अकादेमी, 2013.

रायचौधुरी उपेंद्रकिशोर, दत्त.*स्वप्ना बुलबुल की किताब.* साहित्य अकादेमी, 2017.

शिन्जी, ताजीमा. नारंग, हरीश. *अचरज ग्रह की दंतकथा.* साहित्य अकादेमी, 2018.

<u>सहायक ग्रंथ-</u>

<u>ख सहायक ग्रंथ (हिंदी) -</u>

अग्रवाल, संजय. *महिला एवं मनोविज्ञान.* इशिका पब्लिशिंग हाऊस, 2011.

अमरनाथ. *हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली.* राजकमल प्रकाशन, 2009.

अवस्थी, देवीशंकर. *नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति.* राजकमल प्रकाशन, 1998.

अरोरा, सरोज. भार्गव, राजश्री. *बाल मनोविज्ञान.* राखी प्रकाशन, 2011.

आर्य, रमाशंकर. *हिन्दी बाल साहित्य में मनोरंजन एवं नैतिकता.* आराधना ब्रदर्स प्रकाशन, 2014..

उपाध्याय, देवराज. *आधुनिक हिन्दीकथा साहित्य और मनोविज्ञान.* साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, 1963.

---. *भाषा, साहित्य और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति.* वसुदेव प्रकाशन, 1977.

---. *कथा साहित्य के मनोवैज्ञानिक समीक्षा-सिद्धांत.* सौभाग्य प्रकाशन, 1974.

कर्णसिंह. *भाषा विज्ञान.* साहित्य भंडार, 1997.

कश्यप, ओमप्रकाश. *हरिकृष्ण देवसरे का बाल साहित्य.* 2021.

कुमार, जैनेन्द्र. *परख.* हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड, 1929.

---. *वातायन.* हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, 1931.

कालरा, शकुंतला. *बाल साहित्य का स्वरूप और रचना संसार.* भावना प्रकाशन, 2002.

गणेशन, एस. एन.. *हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन.,* राजपाल एँड संस, 1961.

चौबे, एस. पी.. *बाल विकास मनोविज्ञान के मूल तत्व.* कंसेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, 2005.

चौबे, सरयू प्रसाद. *शिक्षा मनोविज्ञान.* अनु प्रकाशन, 2006.

जायसवाल, सीताराम. *मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा.* हिन्दी समिति सूचना विभाग, 1902.

जैन, निर्मला. *प्रेमचंद भारतीय साहित्य संदर्भ.* वाणी प्रकाशन, 1981.

जैन, सुरेश कुमार. *हिन्दी साहित्य का इतिहास नये विचार नई दृष्टि.* वाणी प्रकाशन, 1998.

झा, गंगाधर. *आधुनिक मनोविज्ञान और हिन्दी साहित्य.* राधा कृष्ण प्रकाशन, 1977.

डीलामोर, वॉल्टर. *बाल साहित्य दिशा और दृष्टि.*

तिवारी, भास्कर नाथ. *हिन्दी में बाल साहित्य: कुछ महत्वपूर्ण सुझाव.* राष्ट्रभाषा सन्देश, 31जनवरी 1979.

..., गोविन्द. *शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधार.* विनोद पुस्तक मंदिर, 1979.

त्रिपाठी, आदित्य प्रसाद. *औपन्यासिक समीक्षा और समीक्षाएँ.* अनुभव प्रकाशन, 1981.

..., शालिग्राम. *शैक्षिक मनोविज्ञान.* श्री राजमणि त्रिपाठी वेंकटेश प्रकाशन, 1992.

थत्ते, यदुनाथ. *मराठी बालकुमार साहित्य स्मरणिका.* पंचम अधिवेशन.

दिनकर, रामधारी सिंह. *संस्कृति के चार अध्याय.* साहित्य अकादमी, 1956.

दिव्याल, विभांसु. *नैतिकता के नये सवाल.* वाणी प्रकाशन, 2006.

दीक्षित, राधा. *रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन.* साहित्य भंडार, 1991.

देवसरे, हरिकृष्ण.*बाल साहित्य-मेरा चिंतन.* मेधा बुक्स प्रथम संस्करण,2000.

..., ... *हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन.* आत्माराम एँड संज, 1969.

...,.... *बाल साहित्य : रचना और समीक्षा.* शकुन प्रकाशन, 1997.

..., ... *भारतीय बाल कहानियाँ भाग:1.* साहित्य अकादेमी, 2018.

देसाई, मंजुला. *कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन.* क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स, 2002.

द्विवेदी, हजारीप्रसाद. *विचार प्रवाह.* राजकमल प्रकाशन, 1959.

धवन, सुषमा. *हिन्दी उपन्यास.* राजकमल प्रकाशन, 1961.

नगेंद्र. *आस्था के चरण साहित्यिकी प्रेरणा.*नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1997.

.... *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2009.

---. *हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास.* भाग-16. नागरी प्रचारिणी सभा, 1984.

नाथ, सेन समरेंदर. *विज्ञान का इतिहास.* बिहार हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी, 1972.

नारायण लाल, जगत. *मानव विकास का मनोविज्ञान.* चतुर्थ संस्करण, प्रेमनारायण बेजल पुस्तक,

प्रखर, भालचन्द्र गोस्वामी. *कहानी दर्शन: एक विवेचनात्मक अध्ययन.*

प्रसाद, जयशंकर. *जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ.* प्रभात प्रकाशन, 2020.

पाठक, पी. डी.. *शिक्षा मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मंदिर, 2014.

पांडे, जगदानंद. बाल मनोविज्ञान. 1956.

बिष्ट, एच.बी. बाल मनोविज्ञान. अग्रवाल प्रकाशन,2012.

भारती,जयप्रकाश. *भारतीय बाल साहित्य का इतिहास.* अखिल भारतीय प्रकाशन, 2002.

मनु, प्रकाश. *हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास.* मेघा बुक्स, 2003.

महाजन, संजीव. *भारतीय समाज.* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस,

माथुर,एस.एस.*शिक्षा मनोविज्ञान.*विनोद पुस्तक मन्दिर प्रकाशन आगरा,1970.

मानधाने,धनराज.*हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास.*ग्रंथम प्रकाशन कानपूर, 1971.

मिलिंद, सत्यप्रकाश. *जैनेन्द्र व्यक्तित्व और कृतित्व.* सूर्यप्रकाशन, 1963.

मिश्र, भागीरथ. *साहित्य शास्त्र.* नवले संजय,

मूरजानी, जानकी. नारंग, दर्शन कौर. मोहन, मणिका. *बाल विकास का मनोविज्ञान.* अपोलो प्रकाशन, 2009.

यादव, राजेन्द्र. *एक दुनिया: समानांतर.* राधा कृष्ण प्रकाशन, 1997.

योगेन्द्रजीत. *विकासात्मक मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मंदिर, 2006.

रमाकांत. *भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम.* हिन्दी संस्थान, 1998.

राय, अमृत. *प्रेमचंद चुनिन्दा कहानिया भाग-1.* साहित्य अकादेमी, 2013.

राय, गोपाल. *हिन्दी कहानी का इतिहास.* राजकमल प्रकाशन, 2014.

..., रविंद्र प्रसाद. *वैज्ञानिक अनुसंधान और अविष्कार.*विश्वविद्यालय प्रकाशन, द्वितीय संस्करण,1962.

रेड्डी, बालशोरि. *श्रेष्ठ बाल कहानियाँ.* लोकभारती प्रकाशन, 2007.

लाभसिंह और तिवारी.*असामान्य मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मन्दिर, 1984.

लाल, डी.आई. . *आधुनिक बाल मनोविज्ञान* . राजपाल एण्ड सन्स, 1967 .

लाल, लक्ष्मीनारायण. *हिन्दी कहानी का शिल्प विधि विकास.* राजकमल प्रकाशन, 2019.

---. *हिन्दी उपन्यास का इतिहास.* राजकमल प्रकाशन, 2014.

विक्रम, सुरेंद्र. *हिन्दी बाल पत्रकारिता उद्भव एवं विकास.* वाणी प्रकाशन, 1992.

---. *हिन्दी बाल पत्रकारिता उद्भव एवं विकास.* साहित्य वाणी, 1992.

---. *भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम.* अनुभूति प्रकाशन, 1997.

वर्मा, प्रीति. *आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मंदिर, 1996.

वर्मा, रामकुमार. *हिन्दी साहित्य युग एवं प्रवृत्तियों का विकास.* वाणी प्रकाशन, 1997.

वाजपेयी, अनुराग. *बाल विकास* . अर्चना पब्लिशर्सज एण्ड डिस्ट्रीब्पूटर्स , 2012 .

वारेरकर, चित्रा. *बाल मनोविज्ञान: बाल मन की जिज्ञासा.* आरोग्य विधि प्रकाशन, 2006.

वालिया, जे. एस. *शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें* . अहम पाल पब्लिशर्ज , 2010 .

विक्रम, सुरेन्द्र. *हिन्दी बाल साहित्य पत्रकारिता: उद्भव और विकास.* साहित्यवाणी, 1994.

सिंह,अरुण कुमार. *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान.* मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन,2017.

शर्मा, गिरिधर प्रसाद. *हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन.* इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, 1978.

शर्मा, जे. डी.. *प्रायोगिक मनोविज्ञान.* मीनाक्षी प्रकाशन, 1989.

शर्मा, रेखा. *कमलेश्वर के उपन्यासों में मनोविज्ञान.* मिलिन्द प्रकाशन, 1991.

शर्मा, स्वाति. *हिन्दी बाल साहित्य: सुरेंद्र विक्रम का योगदान.* हिन्दी साहित्य निकेतन, 2012.

शास्त्री, हरिवंश सिंह. *सोंदर्य विज्ञान.* श्री काशी विद्यापीठ, 1992.

शुक्ला, ओम. *हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास.* अनुसंधान प्रकाशन, 1964.

शुक्ल, लालजी राम. *बाल मनोविज्ञान.* नंदकिशोर एँड ब्रदर्स, 1952.

... . काशी नागरी प्रचारिणी सभा , 1960 .

शेलके, भारती. *महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य.* राजकिशोर प्रकाशक,

सक्सेना, उषा. *हिन्दी उपन्यायों का शिल्पगत विकास.*

सिन्हा, सुरेश. *उपन्यास शिल्प और प्रवृतियाँ.* रामा प्रकाशन, 1965.

..., रमन. *बाल विकास मनोविज्ञान.* सुमित एँटरप्राइजेज, प्रथम संस्करण, 2012.

..., सी. पी.. *सामान्य मनोविज्ञान.* भावना प्रकाशन, 1978.

सुरेशचन्द्र. *समकालीन मूल्यबोध और संशय की एक रात.*

संजीव. *दस प्रतिनिधि कहानियाँ. किताबघर प्रकाशन,* 2003.

श्रीवास्तव, डी.एन.. *आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान.* आगरा साहित्य प्रकाशन, तृतीय संस्करण

श्रीवास्तव, डी.एन.. वर्मा, प्रीति. *बाल मनोविज्ञान: बाल विकास.* श्री विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, 2019.

श्री प्रसाद. *हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा.* लोकभारती प्रकाशन, 1985.

श्रीप्रसाद. *बाल साहित्य की अवधारणा.* हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश, 1998.

श्रीवास्तव, सीमा. *हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान.* प्रिय साहित्य सदन, 2013.

<u>ग सहायक ग्रंथ (अंग्रेजी) –</u>

Adler. *The science of living*. Martino fine books, 2011.

Akolkar, V. V.. *Social Psychology*. Asia Publishing House, 1960.

Bark, Laura E.. *Child Psychology*, Ph1 Learning Private Limited, 2001.

Bart, Cyril. *The Backward Child*. Hodder Arnold H & S, 1974.

Bharti, chetha . *sociological Bases Of Education* . Kalyani Publishars , 2019 .

Binet, A.. And Simon, T. *Le Development de' intelligence chez Ias Infants. L'Anel* Psychologique, 1908.

Benjamin, walman. *Contemporary theories and systems in psychology*. Harper and brothers, 1960

Crow and crow. *Child psychology*. Barnes and Noble, 1963.

Crow, L.D.. and Crow, A.. *Child Psychology*. Eurosia Publication House, 1993.

Donk, Din Kmeyer. *Child Development: The Emerging Self*. New Jersy Prentice Hall,

Dougall, William Mc.. *Psychological Psychology*. Psychology of religion , Yale University press, 1905.

Dougall, William M.C.. *An outline of psychology*. Methuen,1949.

Drawin, Charles(1877). *Biographical sketch of a infant mind. Journal of the History of the Neurosciences,* 2010.

Eyrenck, H. J.. *Encyclopedia of Psychology*. Vol.1&2. Search Press Fontain, 1975.

Freud, Sigmund. *A General Introduction of Psycho Analysis*. New york Square press, 1960.

Fordham, Frieda. *An Introduction to Jung's Psychology*. Penguin Books, Vol.3, 1953.

Girishbala, Mohanty. *Child psychology*. Kalyani Publishers, 2000.

Gerhard, Adler. *Collected Works of C.G. Jung: Psychology Types.* Pinceton University Press, 2014.

Henry, James. Mark, Twain. The Encyclopedia Britannica. Vol. 14, 1962.

James, William. *Principles of psychology*. Henry Holt and company, 1890.

James, W.. *Principal of Psychology.* Vol. 2,

---. and Ross. *Grand work of educational psychology*. G.G. Harrap &Co. Ltd. , 1931.

Jalota, S. A..*Text book of psychology*. Baimras Hindu University, 1950.

Jung, C.G.. *Psychological types collective works.*vol. 6, Routledge, 1992.

Kretch and Field, Crutch. *Social psychology*. Mcgraw Hill, 1943.

Kuppuswami, B.. *Advanced Educational Psychology*. Sterling Publishers, 1980

Locke, J. (1982). *Some thoughts concerning education in R.H. Quick (Ed.),* Locke on Educ , 1690

Lowken, P.V.. *Mental Hygiene in Public Health*. M.C. Grow Hill, 1949.

Macmillan. *The social relations of the science*. J. G. Growther, 1941Murphy, G.. *An Introduction to Psychology*. Greenwood Publishing Group, 1951.

Pillsbury, W.B. . *Essential of psychology*. The Macmillan Co. , 1901.

Prayer, W.(1888). *The mind of the Child (vol. 2).* Appleton, 2004.

Ranade. *A Constructive survey of Upanishadic philosophy*. Oriental Books Agency, 1926.

Rousseau, J. J.. *Emile or on Education: Trans.Allen Bloom*. Basic Books, 1979

Skinner, Charles E.. *Educational psychology*. Prentice-hall Inc., 1936.

Tichner, E.B.. *Text book of psychology*. The University of Michigan McMillan, 1909.

Valantine, C.W.. *Psychology and its bearing education*.Methuen publication, 1960

Watson, J. B..and Raynor, R.. *Conditioned Emotional Reactions*. Journal of Experimental Psychology, 1920.

Waran, Audition. Weluck, Rane. *Theory of literature*. Marina books publisher, 3rd edition, 1956.

Watson, John B.. *Behaviorism*. W.W. lncorporated, 1930.

Woodworth, Robert S. and Marry S.Sheehan. *Contemporary School of Psychology.* Methnen &Co. Ltd., 1956.

---. *Psychology*. Henry Holt and company, 1921.

Walman, Benjamin B. .*Contemporary theories & systems in psychology.* Plenum press , 1981.

Young, Kimball. *Hand book of social psychology*.

<u>घ सहायक पत्र पत्रिकाएँ एवं शोध पत्र –</u>

अली, मेहराब. *बालमन की अभिव्यक्ति और हिन्दी कहानियाँ,* प्राथमिक शिक्षक. 2017.

द्विवेदी, नीतू. *डॉ देवराज शरण अग्रवाल की कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण,* शोध समागम. दिसंबर 2019.

पांडेय, लल्ली प्रसाद. बालसखा मासिक पत्रिका. इंडियन प्रेस, अगस्त 1948.

बुधु, यंतुदेव. *मॉरीशस में बाल साहित्य सृजन,* हिन्दी प्रचारिणी सभा, पंकज. अगस्त 2018.

सारोठिया, सुरेश. राणा, संगीता. इक्कीसवी सदी का बाल साहित्य, शब्द ब्रह्म. दिसंबर 2016.

<u>ड. हिन्दी शब्दकोश-</u>

गौतम, सुरेश. *भारतीय साहित्य कोश.* संजय प्रकाशन, 2010.

तिवारी, भोलानाथ. *वृहत हिन्दीलोकोक्ति कोश.* किताबघर प्रकाशन, 2007.

दास, श्यामसुंदर (संपा.).*हिन्दी शब्द सागर भाग -8.* नागरी प्रचारिणी सभा,1971.

नगेंद्र. *मानविकी पारिभाषिक कोश.* राजकमल प्रकाशन, 1998.

प्रसाद, कालिका (संपा.).*वृहत् हिन्दी कोश.* ज्ञानमंडल लिमिटेड, 2020वि.

बाहरी, हरदेव. *हिन्दी शब्दकोश.* राजपाल एँड संस, 1996.

वर्मा, धीरेंद्र (संपा.).*हिन्दी साहित्य कोश भाग-1.* ज्ञानमंडल लिमिटेड,1985.

वर्मा, आचार्य रामचन्द्र. *प्रमाणिक हिन्दी कोश.* लोकभारती प्रकाशन, 1998.

वर्मा, रामचंद्र(संपा), *मानक हिन्दीकोश खंड -4.* हिन्दी साहित्य सम्मेलन,1965.

शर्मा, हरवंशलाल. *मनोविज्ञान परिभाषा कोश.* केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 1998.

शुक्ल, रामचंद्र. लोकभारती प्रमाणिक हिन्दी कोश. लोक भारती प्रकाशन', 2009.

च **इन्टरनेट सहायक सामग्री**

Shodhganga.inflibnet.ac.in 10/03/2020, 12:15, IST

Vishwahindijan.blogspot.com 25/03/2020, 13:10, IST

www.hindisahityaniketan.com 7/04/2020, 00:5, IST

www.hindisamay.com 6/04/2020, 23:55, IST

www.worldwideword.org 28/05/2023, IST

Stories based on child psychology.hindi.html 09/06/2023

www.motivationalstoriesin hindi.in 09/06/2023

छ लेख:

मनु, प्रकाश. बच्चों के दिल की बात कहते हैं बाल उपन्यास. आजकल, नवम्बर 2014.

ज मैग्जीन:

कौर, अमनदीप. दैनिक सवेरा. सन्डे सवेरा मैग्जीन. 8 अगस्त 2021.

परिशिष्ट

शोध पत्र प्रकाशन

एवं प्रस्तुतीकरण

POONAM 349

आलोचना

त्रैमासिक

Certificate of Publication

This is to certify that

पूनम

शोधार्थी (हिन्दी)

For the paper entitled

सुकुमार राय की अनुदित बाल कहानियों में मनोविज्ञान का विश्लेषण

Volume No. 51 No. 03, 2021

in

ALOCHANA

राजकमल प्रकाशन समूह

UGC-CARE Listed Group-I

ALOCHANA EDITOR IN CHIEF

आलोचना

त्रैमासिक

अंक 62, भाग –3, 2021

प्रधान सम्पादक
नामवर सिंह

सम्पादक
आशुतोष कुमार
संजीव कुमार

सहसम्पादक
आर. चेतनक्रान्ति

कला सम्पादक
हरीश आनन्द

प्रबन्ध सम्पादक
अशोक महेश्वरी

आलोचना
त्रैमासिक
ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

सुकुमार राय की अनुदित बाल कहानियों में मनोविज्ञान का विश्लेषण

पूनम
शोधार्थी (हिन्दी)

डॉ. विनोद कुमार
(निर्देशक), लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

बालकों के जीवन में कहानियों का विशेष महत्व होता है क्योंकि बालक का चरित्र निर्माण कहानियों के माध्यम से ही होता है इन कहानियों के पात्रों को आदर्श मानकर उन्हीं के अनुरूप वह अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं। कहानियों के माध्यम से ही उन्हें अपनी सभ्यता संस्कृति और सामाजिक परिवेश का पता चलता है। किशोरावस्था तक बाल कहानी में आनंद अनुभूति करते हैं। श्री प्रसाद के अनुसार: "ऐसी विधा है जिसमें बालक सर्वाधिक रुचि लेते हैं बौद्धिक के प्रत्येक स्तर पर शिशु अवस्था से लेकर किशोरावस्था तक बाल कहानी में आनन्दानुभूति करते हैं।" (बाल साहित्य की रूपरेखा 202)

बाल कहानी का अर्थ है- बालको के लिए लिखी गई कहानी। हरिकृष्ण देवसरे जी के अनुसार: "कहानी विधा बाल साहित्य की रीढ़ होती है, उसे सशक्त, रोचक और मनोरंजक बनाने का प्रयास बराबर होते रहे हैं।" (बाल साहित्य मेरा चिंतन 110)

सुकुमार राय जी बच्चों के मनोभाव व उनकी आकांक्षाओं को समझते हुए कहानियां लिखने में विख्यात है। उन्हें साहित्य के प्रति लगाव पिता उपेंद्र किशोर राय चौधरी से विरासत में मिली थी। सुकुमार राय जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। सुकुमार राय जी ने बाल साहित्य की हर विधा में लिखा- सिर्फ बाल कविताओं में ही नहीं बल्कि नाटक, कहानियां, ज्ञान, विज्ञान परकथा लेखन इन सब विधाओं में उन्होंने बच्चों के लिए रोचकता एवं मौलिकता बनाए रखते हुए अपने नन्हें बालकों को परंपरागत रुप कथाओं के आतंक से मुक्त किया। बच्चों के मनोविज्ञान से संबंधित विभिन्न मूल प्रवृत्तियां जैसे- स्पर्धा की भावना, डींग हांकने की प्रवृत्ति, झूठ बोलने की प्रवृत्ति, आत्म

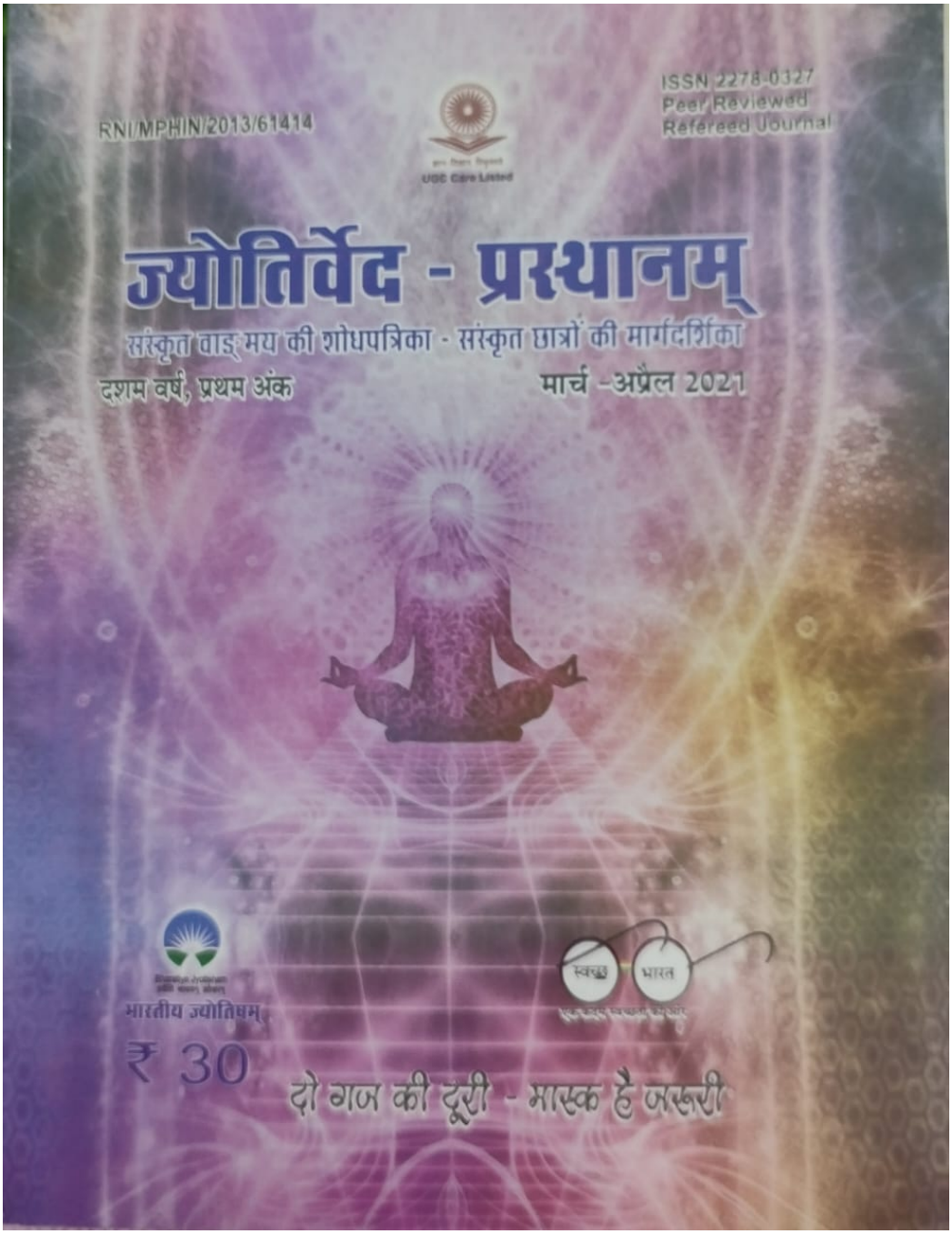
RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed
ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal
ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्
संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका
दशम वर्ष, प्रथम अंक
मार्च -अप्रैल 2021
भारतीय ज्योतिषम्
₹ 30
स्वच्छ भारत
दो गज की दूरी - मास्क है जरूरी

ISSN 2278 - 0327

हिन्दी बाल-साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

पूनम
(शोधार्थी हिन्दी)
लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

डॉ. विनोद कुमार
(निर्देशक)
लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्रस्तावना -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। शिशु जन्म के समय न तो सामाजिक होता है और न ही असामाजिक, बल्कि वह समाज के प्रति उदासीन, तटस्थ होने के साथ ही उसके प्रति निरपेक्ष भाव रखता है। उसका जीवन निष्कपट, निश्छल, निर्मल एवं कोरे कागज़ की तरह होता है। वह समाज में जैसे आचरण, व्यवहार तथा सामाजिक ताने बाने से बुने हुए वातावरण में, जो अनुसरण करता है उसका सामाजिक विकास भी उसी समाज के प्रथाओं, सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप होता है। उसे समाज में रहते हुए सामाजिक जीवन जीने के लिए एवं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे पर आश्रित रहना पड़ता है। उसे अपने व्यक्तिगत, मानसिक एवं बोधिक ज्ञानार्जन हेतु भी समाज पर ही निर्भर रहना पड़ता है। बालक समाज के भविष्य की न केवल नींव के पत्थर हैं बल्कि वे बालक ही भावी समाज की आकृति एवं स्वरूप निर्धारित करने वाले कर्णधार होते है। वे जितने ज्यादा समझदार, विवेकशील, बुद्धिमान, परिपक्व एवं गहन सोच तथा सर्वगुण सम्पन्न, व्यक्तित्व के धनी होंगे, समाज उतना ही अनुशासित, पारदर्शी, सुदृढ़, विकसित तथा प्रगतिशील होगा। परन्तु एक सुविकसित समाज की प्राप्ति हेतु उस तटस्थ एवं निरपेक्ष भाव वाले बालक के मनोविज्ञान का उचित अध्ययन करके, उसका सही निर्देशन व मार्गदर्शन करके, उसकी सोच को, उसकी रुचि को, उसकी क्षमताओं को उत्तम दिशा प्रदान की जाए तो वह एक प्रखर व्यक्तित्व का धनी बन सकता है। वह न सिर्फ स्वयं बल्कि समाज का सर्वांगीण विकास करने वाला सफल इन्सान बन सकता है।

बीज शब्द - व्यक्तित्व, बाल साहित्य, चरित्र निर्माण, व्यवहार, बाल मनोविज्ञान, अचेतन, अवचेतन तथा चेतन,

विषय-विश्लेषण

वर्तमान समय में बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाल साहित्य का विशेष महत्त्व है। बाल साहित्य बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके चरित्र निर्माण में भी सहयोग देता है। वर्तमान युग में भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, धन का बढ़ता महत्त्व, मनोरंजन के साधनों की कमी, धर्म का व्यवसायीकरण इतना बढ़ गया है कि बच्चे के चरित्र निर्माण की समस्या एक गहन समस्या बन गई है। आज का युग प्रयोग व जागरण का युग है आज बच्चों की मन:स्थिति वही नहीं रह गई जो पचास वर्ष पहले थी आज उसके जीवन, व्यवहार और सोचने के तरीकों में अंतर आ गया है। बाल साहित्य बच्चों के चरित्र निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ईसा से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व ग्रीक दार्शनिकों ने आत्मा के स्वरूप, व्यवहार तथा अनुभव को समझने का प्रयास किया। उनके निरंतर अध्ययन से जो ज्ञात हुआ उसका नाम मानसिक दर्शन रखा गया। यह मानसिक दर्शन ही मनोविज्ञान का प्रारंभिक रूप था। यद्यपि एक विषय के रूप में मनोविज्ञान को पाश्चात्य जगत की देन है, किन्तु मनोविज्ञान हमारे वेदों, उपनिषदों और पुराणों में भरा पड़ा है यह अलग से इसलिए प्रतिष्ठित न हो सका क्योंकि पहले इसका अध्ययन दर्शनशास्त्र के अंतर्गत होता था। भारतीय मनोविज्ञान एवं पाश्चात्य मनोविज्ञान दोनों का ही विकास दर्शनशास्त्र से हुआ है। मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से पृथक् विषय के रूप में सोलहवी शताब्दी तक पढ़ा जाने लगा। मनोविज्ञान के अर्थ का स्वरूप विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न रूपों में परिवर्तित होता आया है। समय विशेष में जो जो परिवर्तन मनोविज्ञान के स्वरूप में हुए वो इस प्रकार हैं।

16 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में जाना जाता था। इस विचार के समर्थक थे प्लेटो और अरस्तू। तत्कालीन मनोवैज्ञानिक आत्मा की स्पष्ट परिभाषा, उसके स्वरूप, उसके रंगरूप व आकार, उसकी स्थिति तथा आत्मा के अध्ययन करने की विधियों को स्पष्ट करने में असफल रहे, इसलिए मनोविज्ञान के इस स्वरूप को अस्वीकार कर दिया गया। 17 वीं शताब्दी में दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा। इस

POONAM 354

Shodhsamhita
शोधसंहिता

ISSN No. 2277-7067

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that

पूनम
शोधार्थी (हिन्दी)

For the paper entitled

कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में शोध के साधन एवं तरीकों में परिवर्तन

Volume No. VIII, Issue 1, 2021-2022

in

Shodhsamhita

UGC Care Group 1 Journal

Editor-in-Chief

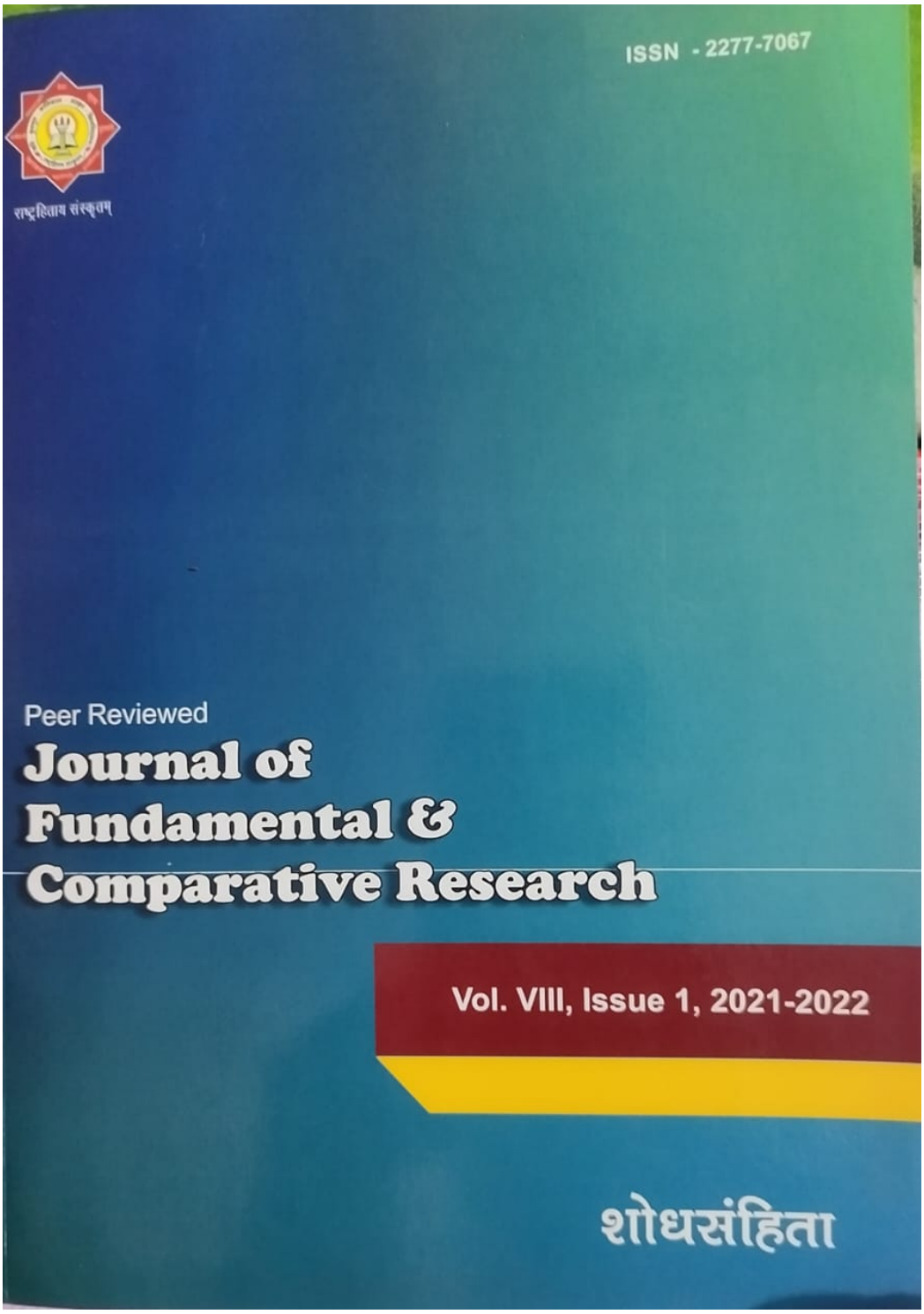
ISSN - 2277-7067
राष्ट्रहिताय संस्कृतम्
Peer Reviewed
Journal of
Fundamental &
Comparative Research
Vol. VIII, Issue 1, 2021-2022
शोधसंहिता

SHODHSAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में शोध के साधन एवं तरीकों में परिवर्तन

पूनम

शोधार्थी (हिन्दी)

डॉ. विनोद कुमार

(निर्देशक)

लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

भूमिका- मनुष्य सदैव जिज्ञासु प्रवृति का प्राणी रहा है। अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए, उनकी पूर्ति के लिए वह निरंतर नए प्रयोग एवं शोध के माध्यम से उन रहस्यों को जानने का प्रयास करता है जो मानव सभ्यता के लिए अब तक अनजान थे। शोध के माध्यम से वह या तो नई खोज करता है या तथ्यों के पुनर्सत्यापन के द्वारा एक सर्वमान्य निष्कर्ष तक पहुचने का प्रयास करता है, परन्तु वर्तमान वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण किसी भी शोधार्थी के लिए न सिर्फ संसाधनों की कमी हो गई है अपितु उन तक पहुंच भी सीमित हों गई है। इस महामारी के परिप्रेक्ष्य में शोधार्थी को शोध के लिए नए-नए साधनों एवं तरीकों की आवश्यकता है।

मूल शब्द - कोविड-19, शोध, साधन एवं तरीके, परिवर्तन।

शोध के नए-नए साधन एवं तरीके- शोध उस कार्य या प्रक्रिया को कहते हैं जिसमे अथक प्रयासों से विभिन्न तथ्यों व नवीन सामग्री को एकत्र कर उनका बोधात्मक विश्लेषण करने के बाद नए तथ्यों व सिधान्तों को प्रतिस्थापित किया जाता है।

इमोरी के अनुसार: "किसी समस्या को हल करने के लिए व्यवस्थित दंग से जाँच पड़ताल करना और सूचनाएँ उपलब्ध करना शोध है।" (संचार एवं मिडिया शोध 14)

POONAM 357

Kala Sarovar

KALA SAROVAR

UGC CARE Group - I Journal
ISSN : 0975-4520

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify the paper Entitled

जैन साहित्य और इतिहास: एक पुनर्मूल्यांकन

Authored By

पूनम
शोधार्थी (हिन्दी)

Published in

Vol-24 No.02(F) April-June 2021
Kala Sarovar
ISSN : 0975-4520
UGC Care Group 1 Journal

Editor
Kala Sarovar

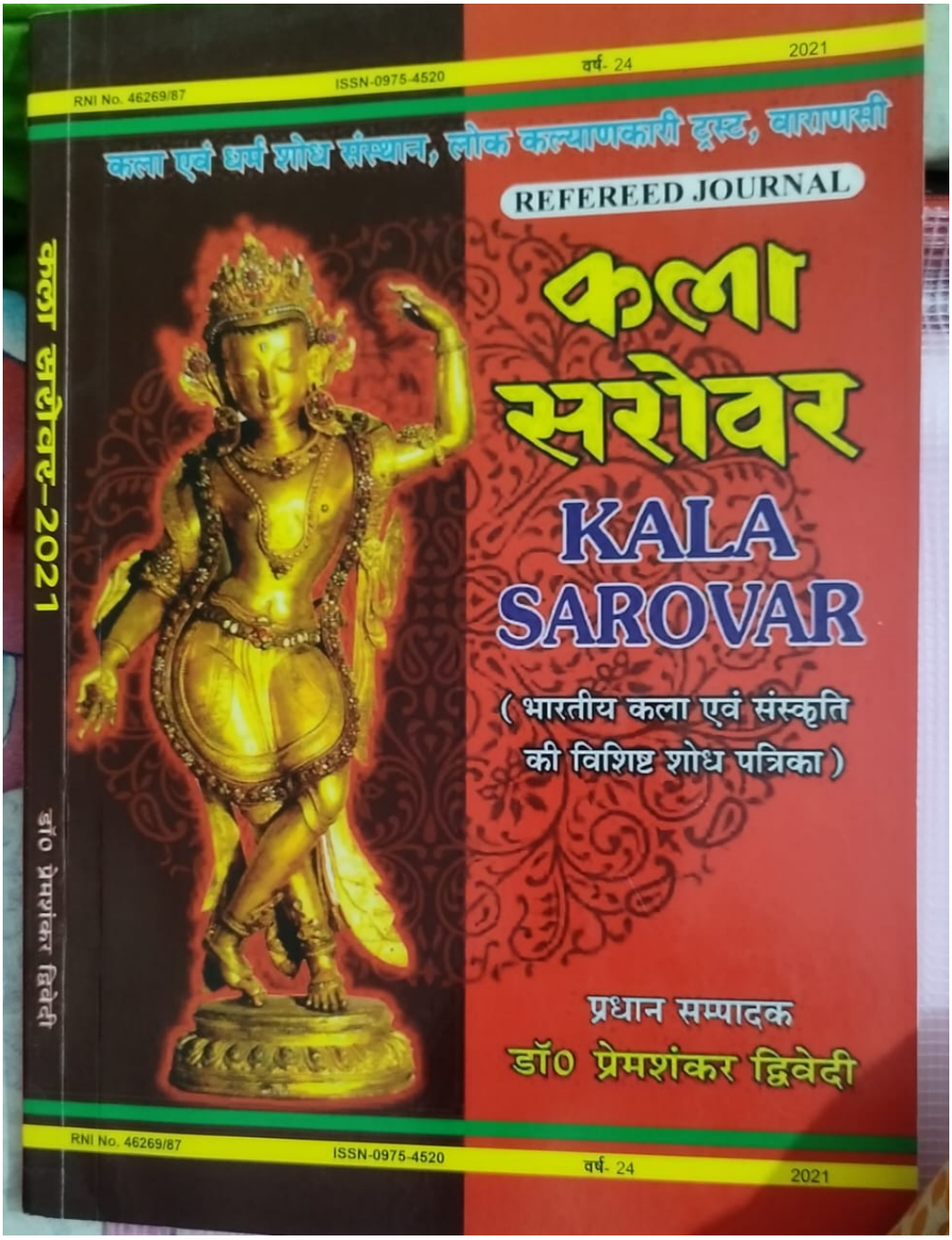
RNI No. 46269/87
ISSN-0975-4520
वर्ष- 24
2021
कला एवं धर्म शोध संस्थान, लोक कल्याणकारी ट्रस्ट, वाराणसी
REFEREED JOURNAL
कला सरोवर
KALA SAROVAR
(भारतीय कला एवं संस्कृति की विशिष्ट शोध पत्रिका)
प्रधान सम्पादक
डॉ० प्रेमशंकर द्विवेदी
कला सरोवर-2021
डॉ० प्रेमशंकर द्विवेदी
RNI No. 46269/87
ISSN-0975-4520
वर्ष- 24
2021

जैन साहित्य और इतिहासः एक पुनर्मूल्यांकन

पूनम

शोधार्थी (हिन्दी),

डॉ. विनोद कुमार

(निर्देशक), लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्रस्तावना-

जैन साहित्य और इतिहास का भारतीय संस्कृति की संरचना एवं विकास में एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय स्थान रहा है। जैन धर्म को मानने वाले, समझने वाले, उसके अनुयायी या उपासक जो भी साहित्यकार हुए हैं, उन्होंने भारतीय समाज के संरचनात्मक आधार तथा जनमानस के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित किया है, चाहे वह बौद्धिक दृष्टि से लिखा गया हो या आध्यात्मिक संदर्भ में उल्लेख किया गया हो। जैन साहित्य में समाज के सभी आधार बिंदुओं को सम्मिलित कर उच्च साहित्यिक मूल्यों का पालन किया गया है।

बीज शब्द- जैन धर्म, जैन साहित्य, भारतीय संस्कृति, शैव, वैष्णव, तीर्थंकर, लोकविभाग व तिलोयपण्णति, जैनेंद्र व्याकरण, श्वेताम्बर, दिगांबर, यापनीयों का साहित्य, पदमचरित, पउमचरिय, कृष्णचरित, रामचरित।

विधि-

विश्लेष्णात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

विषय-विश्लेषण-

जैन शब्द का मूल उद्गम जिन शब्द से है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- 'इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला' अर्थात जिसने अपने मानसिक एवं वैचारिक विकारों पर जीत हासिल करके अपने अंतर्मन पर नियंत्रण कर लिया हो। जैन शब्द का अर्थ- 'जिन का' से लिया गया है अर्थात जिन का मत, कथन या उपदेश। वे ऋषि, मुनि जिन्होंने यह उपदेश दिए हैं वे जिन कहलाए तथा उनके उपदेशों से जिस मत एवं धर्म का आविर्भाव हुआ वह जैन धर्म कहलाया।

मुनि प्रमाण सागर अपनी पुस्तक *जैन धर्म और दर्शन* में कहते हैं:

> जिस प्रकार बुद्ध द्वारा प्रवर्तित बौद्ध धर्म, ईसा द्वारा उपदिष्ट धर्म ईसाई धर्म कहलाता है। उसी प्रकार जिनेंद्र भगवंतो द्वारा प्ररूपित धर्म जैन धर्म है। शिव तथा विष्णु को इष्ट मानकर चलने वाले शैव और वैष्णव कहलाते हैं। उसी प्रकार जिन को इष्ट मानकर चलने

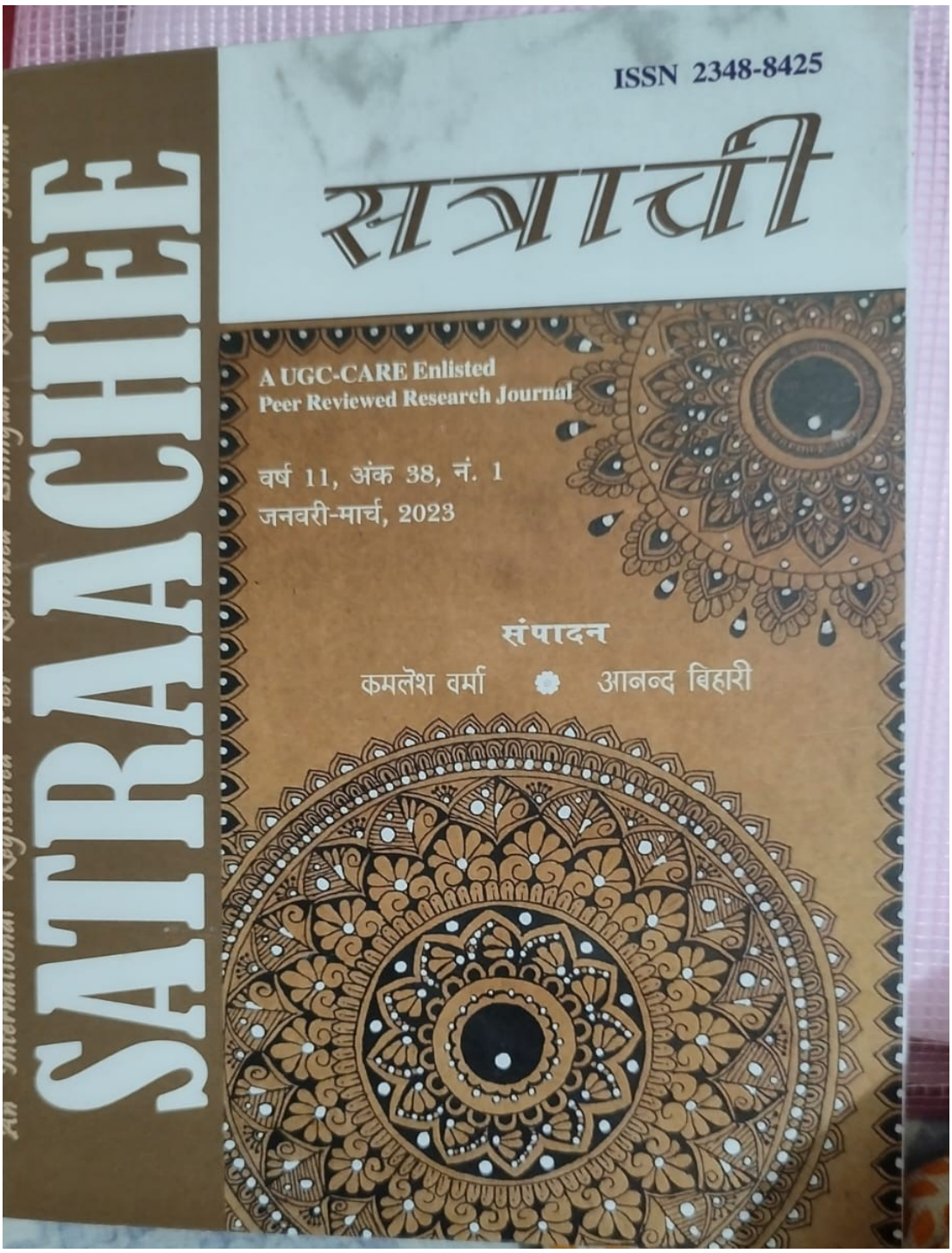
ISSN 2348-8425
सत्राची
SATRAACHEE
An International Peer Reviewed Research Journal
A UGC-CARE Enlisted
Peer Reviewed Research Journal
वर्ष 11, अंक 38, नं. 1
जनवरी-मार्च, 2023
संपादन
कमलेश वर्मा • आनन्द बिहारी

शोधालेख

पंचतंत्र एवं हितोपदेश की बाल कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

○ पूनम

प्रस्तावना :

पंचतंत्र ग्रंथ का संस्कृत नीति कथाओं में प्रथम स्थान माना जाता है। पंचतंत्र एक ग्रंथ होने के साथ-साथ एक विशाल साहित्य का परिचायक है। हालांकि यह पुस्तक मूल रूप में उपलब्ध नहीं है फिर भी अनुवादों के आधार पर इसकी रचना शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास मानी गई है। अब तक इसका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, जिनमें से सबसे प्राचीन अनुवाद 'करकटमढनक' नाम का है। इसके अब तक लगभग 50 विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के साथ लगभग 200 से ज्यादा संस्करण भी हो चुके हैं।

कृष्ण कुमार मिश्र के अनुसार :

पंचतंत्र को दुनिया के श्रेष्ठतम बाल साहित्य में गिना जाता है। इसकी लोकप्रियता यह है कि इस पुस्तक का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इटेलियन, अरबी, हिंब्रू, उर्दू, फारसी में हो चुका है। (*शिक्षा बाल साहित्य और विज्ञान 4*)

बीज शब्द : पंचतंत्र, हितोपदेश, बाल कहानियाँ, तुलनात्मक अध्ययन।

पंचतंत्र, जैसा कि इसके नाम से ज्ञात हो रहा है- यह पांच तंत्र या पांच विभागों का समूह है। ये तंत्र है- मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति (मित्रलाभ), काकोलुकीयम, (संधि विग्रह), लब्धप्रणाश एवं अपरिक्षितकारक। बालकों को राजनीति, लोकनीति और व्यवहार का उचित ज्ञान देने के लिए पंचतंत्र की ही तरह हितोपदेश की रचना हुई, जिसके रचनाकार नारायण पंडित थे। संवत् 1393 में इस पूर्ण ग्रंथ की रचना इन्होंने की थी। हितोपदेश में रचित कहानियाँ पंचतंत्र की कहानियों पर ही आधारित है। महाभारत सुख सप्तति इन कथाओं का स्रोत है। लेकिन उपदेशात्मक श्लोकों की रचना इन्होंने स्वयं की है। *श्री प्रसाद के अनुसार*, परवर्ती काल में पंचतंत्र और हितोपदेश में पशु-पक्षियों की कहानी के आधार पर ही विविध प्रकार के मनोरंजक बाल साहित्य का आयोजन हुआ और आज भी पशु-पक्षियों से संबंधित साहित्य का लेखन केवल हिंदी में ही नहीं विश्व के बाल साहित्य में हो रहा है। (*हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा 20*)

हितोपदेश की रचना के समय यह संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र से भी अधिक लोकप्रिय ग्रंथ था। लेकिन पंचतंत्र से गद्य और पद्य की स्वतंत्रता के साथ नौ सौ ईसवी के आसपास हितोपदेश की रचना हुई। पंचतंत्र में पांच तंत्र जबकि हितोपदेश में चार विभाग हैं। पंचतंत्र का पहला तंत्र मित्रभेद जो कि हितोपदेश में दूसरे स्थान पर है। विग्रह और संधि नामक विभाग की रचना नारायण भट्ट ने बहुत सी नई कथाएं जोड़कर नए ढंग से इसकी रचना की है। पंचतंत्र का तीसरा तंत्र काकोलूकीय हितोपदेश में उस रूप में नहीं मिलता बल्कि उसकी जगह

POONAM 362

राम चमेली चड्ढा विश्वास गर्ल्स कॉलेज, गाजियाबाद

एवं

गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी (हरियाणा)

संचालक : गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार 24 अप्रैल, 2023

समकालीन हिन्दी साहित्य और विमर्श

क्र.स. : HSV2423/48

प्रमाण-पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/श्रीमती/प्रो./डॉ. Poonam

संस्था LPU ने

प्रतिभागी के रूप में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय प्रतिभागिता की एवं अपना वैचारिक योगदान दिया।

इन्होंने साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित कहानियों में बाल विमर्श

विषय पर अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. नीतू चावला	डॉ. रेखा सोनी	डॉ. अंशु बत्रा	डॉ. आंचल कुमारी	डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
मुख्य संरक्षक	संरक्षक	संयोजिका	सह-संयोजिका	सचिव/आयोजक
प्राचार्या, आरसीसीवी	निदेशक जीडीएसएस	हिन्दी विभाग, आरसीसीवी	हिन्दी विभाग, आरसीसीवी	गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी

विशेषांक-समकालीन हिन्दी साहित्य और विमर्श

May 10, 2023

39. साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित कहानियों में बाल विमर्श – पूनम

By GINA JOURNAL

संगम Impact Factor : 4.553 Website : www.ginajournal.com ISSN : 2321-8037 SANGAM
A Peer Reviewed International Refereed Journal विशेषांक–समकालीन हिन्दी साहित्य और विमर्श Vol. 11, Issue 4
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

Page No.: 263-275

साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित कहानियों में बाल विमर्श – पूनम

आधुनिक युग में बच्चों को यथार्थ का अनुभव कराना बहुत आवश्यक है। इसी यथार्थ का आभास कराता हुआ उनकी रुचियों के अनुसार, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक साहित्य ही बल साहित्य है। बाल साहित्य उनके लिए ज्ञानवर्धक, उपदेशात्मक हो लेकिन साहित्य उबाने वाला न हो। भाषा अत्यंत सरल एवं उनके स्तर के अनुसार हो। बच्चे उसे उत्साह के साथ स्वीकार करें व उसे रुचि के साथ पढ़े। बाल साहित्य उनके लिए रुचिकर होने के साथ-साथ उनके ज्ञान को बढ़ाने वाला सदकार्य व सदगुणों से भरा होना चाहिए ताकि वह बालकों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ उनका बहुमुखी विकास भी कर सकें और वे जीवन में सदकार्य करते हुए एक अच्छे इंसान बन सके एवं एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकें। साहित्य अकादमी द्वारा अनुदित कहानियां इन सभी विशेषताओं से परिपूर्ण है ये कहानियां बच्चों के लिए उपदेशात्मक, ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ रुचिपूर्ण व मनोरंजक है।

POONAM 364

LOVELY FACULTY OF BUSINESS AND ARTS

[Under the Aegis of Lovely Professional University, Jalandhar-Delhi G.T. Road, Phagwara (Punjab)]

Certificate No. 208597

Certificate of Presentation

This is to certify that Dr./Mr./Ms. **Poonam**

of **Lovely Professional University, Phagwara**

presented a paper entitled **Covid-19 Ke Pariparekshay Me Shodh Ke Sadhan Ewm Tariko Me Pariwartan**

in **National E-Conference** on **Education and Development** : **Post COVID-19** organized on 26th September 2020 by School of Education, Lovely Professional University, Punjab.

Date of Issue : 05-10-2020
Place of Issue: Phagwara (India)

Prepared by
(Administrative Officer-Records)

Organizing Secretary

Conference Director